जनसेवक स्वामी गोपालदास जी
का
व्यक्तित्व एवं कृतित्व

गोविन्द अग्रवाल

नगर-श्री चूरू (राजस्थान)

पत्रों के प्रकाश में

जन सेवक स्वामी गोपाल दास जी
का
व्यक्तित्व एवं कृतित्व

गोविन्द अग्रवाल

प्रकाशक:——नगर-श्री, चूरू (राजस्थान)

प्रथम संस्करण
सं० २०२५ वि०

मूल्य——१०. रु०

मुद्रक : लीडर प्रेस इलाहाबाद,

अनुक्रमणिका

चित्र-सूची

पत्रों के प्रकाश में
स्वामी गोपालदास जी
का व्यक्तित्व एवं
कृतित्व

कीर्ति: यस्य स जीवति

पटना

१६-४-६८

स्व० स्वामी गोपालदासजी (चूरू) के सुकृत्यों के सम्बन्ध में जानकर हर्ष हुआ और बड़ी प्रेरणा भी मिली। "कीर्ति: यस्य स जीवति"। मानव अपनी कीर्ति के द्वारा अजर-अमर हो जाता है। जब स्वामीजी ने चूरू को जीवन एवं नवजीवन दिया तब भला वे नश्वर कैसे हो सकते हैं।

स्वामीजी के सम्बन्ध में पुस्तक-प्रकाशन का कार्य स्तुत्य है। एतदर्थ मैं श्री सुबोधकुमार जी अग्रवाल तथा श्री गोविन्द जी अग्रवाल को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देता हूं। इस पुस्तक से न केवल चूरू के लोगों को बल्कि सर्वत्र ही पाठक वृन्द को जनसेवापरायण तथा सत्पुरुष बनने की प्रेरणा मिलेगी। जहाँ तक साधु-सन्तों का प्रश्न है, उनमें से तो प्रत्येक को स्वामी गोपालदास जी की तरह लोकोपकारी होना ही चाहिए। मेरी शुभकामनाएं इस प्रकाशन के साथ हैं।

—रामदयाल पाँडेय

अध्यक्ष, बिहार-हिन्दी साहित्य सम्मेलन

जयपुर

२३-१-६८

आप स्वर्गीय स्वामी गोपालदासजी के प्रति "दीपदान" के रूप में सामग्री संग्रह कर रहे हैं, उसके लिए धन्यवाद। कार्य की सफलता के लिए शुभकामना।

—आपका अपना

कुम्भाराम आर्य

पिता श्री धनराजजी संभालते थे। खूब माल उठता था और धनराज जी की साख प्रसिद्ध थी। उस वक्त मेरी अवस्था लगभग ७ वर्ष की रही होगी जब चूरू में प्लेग की महामारी का प्रकोप हुआ, दुर्भाग्य से पिताजी का उस महामारी में देहान्त हो गया। उस वक्त हम चारों भाई वहुत छोटे-छोटे थे और हम सबको चूरू छोड़ कर गाछर में रहना पड़ा था। ताऊजी तिलोकचन्दजी कटनी से आये और उन्होंने दूकानों का सारा लेन-देन सलटाया। मुझे याद है कि कटनी से नकद रुपयों के पारसल आये थे। इसके बाद ताऊजी हम सब को कटनी ले गये और कुछ समय बाद जब चूरू में प्लेग का प्रकोप शान्त हो गया तो हम सबको फिर चूरू ले आये। लेकिन इसके तुरंत बाद ही तपकाली की महामारी फैली और उसमें माता जी का भी स्वर्गवास हो गया। अब हम चारों भाई मातृ-पितृ स्नेह से वंचित हो गये, परन्तु ताऊजी और भूआजी ने हमारा लालन-पालन बड़े स्नेह से किया। स्वामीजी ने प्लेग और तपकाली के समय देवदूत का काम किया। प्राणों की किंचित् भी परवाह न करके उन्होंने जनता की बड़ी सेवा की। जिसके मुंह से भी कोई बात सुनता, उसमें स्वामी गोपालदास का नाम अवश्य होता।

दूसरी-दूसरी सेवा-भावनाओं के साथ-साथ स्वामी जी को आयुर्वेद का ज्ञान तथा अनुभव पर्याप्त था, जिसका उपयोग वे बराबर निःस्वार्थ सेवा में करते थे। हमारी भूआजी भगवान् के दर्शन करने के लिए नित्य उनके मंदिर में जाया करतीं। भूआजी जब भी हम में से किसी के अस्वस्थ होने की सूचना स्वामीजी को देतीं, तभी वे घर पर आकर देखभाल करते और दवा की पूर्ण व्यवस्था करते। भूआजी के साथ हम भी मंदिर चले जाया करते थे, स्वामीजी हमें बड़ा प्यार करते और हमारी पूरी निगरानी रखते। हमारे प्रति उनकी पूर्ण आत्मीयता थी।

राज्य में भी स्वामीजी की अच्छी चलती थी और राज्य कर्मचारियों पर उनका खूब प्रभाव था। एक बार हमारे ताऊजी व कुटुम्ब के अन्य लोग कटनी से चूरू आये थे। रियासत के वाहर कहीं कोई बीमारी फैली हुई थी, जिसके कारण आने वाले मुसाफिरों को स्टेशन पर रोक लिया जाता था। ताऊजी व उनके साथ सभी कुटुम्बीजनों को सिपाहियों ने स्टेशन के रास्ते में रोक लिया। रात का समय था, सिपाहियों ने कहा कि रात भर स्टेशन पर रहना पड़ेगा, रात को घर नहीं जा सकते। संयोग से उसी समय स्वामीजी स्टेशन जाते हुए रास्ते में मिल गये, उन्होंने सिपाहियों से कहा कि इन्हें रोको मत, घर जाने दो। सिपाहियों की हिम्मत उन्हें रोकने की नहीं हुई। लेकिन दूसरे दिन तहसीलदार जी ने ताऊजी को गढ़ में बुलवा कर पूछा कि आप लोग सिपाहियों के रोकने पर भी शहर में क्यों आ गये? स्वामीजी भी वहाँ मौजूद थे, उन्होंने कहा कि मैं

मेरी अवस्था उस समय करीब १५ साल की होगी, मेरा ज्ञान भी विकसित नहीं हुआ था, फिर भी चूरू के बड़े मंदिर में स्वामी जी जब महंतजी के साथ बैठते थे, तब मेरा मन व उत्साह बढ़ाने के लिए मेरे साथ धार्मिक, सामाजिक व अन्य विषयों पर घंटों बातचीत व तर्क-वितर्क करते रहते थे। मेरे साथ उनका बर्ताव बड़ा प्रेमपूर्ण रहता था। बाद में हम लोग चूरू से आकर पटना रहने लगे थे, तब भी स्वामीजी से मेरा पत्र-व्यवहार बराबर चलता रहता था।

मेरे छोटे भाई स्व० केदारप्रसाद का भी स्वामी जी के साथ बहुत ज्यादा संपर्क रहा। उनका पत्र-व्यवहार भी स्वामी जी के साथ बराबर चलता था। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि स्वामी जी का जीवनचरित्र लिखा जा कर प्रकाशित कराया जावे, जिससे की जनता को उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त हो, लेकिन दैवगति से बहुत छोटी उम्र में ही उनका स्वर्गवास हो गया और उनकी वह भावना उनके साथ ही चली गई।

लेकिन कुछ दिनों पूर्व चूरू से अचानक भाई सुबोधकुमारजी का पत्र आया जिससे मालूम हुआ कि यद्यपि स्वामीजी के जीवन से सम्बन्धित बहुत सारी सामग्री नष्ट हो चुकी है, फिर भी जो बची है और खोजबीन करके प्राप्त की जा सकी है, उसके आधार पर स्वामी जी का एक प्रामाणिक जीवन-चरित्र तैयार किया गया है। यह पढ़ कर मुझे बड़ा हर्ष हुआ। मैंने इस संकलन को भाई सुबोध-कुमार जी से मंगवाकर पढ़ा और पढ़ने के बाद मन में प्रेरणा हुई कि इसे शीघ्र प्रकाशित करवाया जाए। इसके लिए मैंने श्री सुबोधकुमार जी को पटना बुल-वाया और उनसे सारी बातें समझ कर उन्हें इस जीवन-चरित्र को शीघ्र प्रकाशित करवाने की प्रेरणा अपनी ओर से दी।

स्वामी जी का जीवन संघर्षमय था। बहुत ज्यादा कर्तव्यपरायणता तथा सेवा भावना उनमें थी। पूरा जीवन ही उन्होंने जनता की सेवा में अर्पित कर दिया था जिसका दिग्दर्शन उनके इस जीवन-चरित्र से होगा। इसे पढ़कर लोगों को उनके जीवन से अपने कर्तव्य की प्रेरणा मिलेगी। स्वामी जी के प्रति मेरी अगाध श्रद्धा थी और अब भी है। जब भी उनका पुण्यस्मरण होता है मेरा मस्तक उनके प्रति श्रद्धा से झुक जाता है। मैं उनको अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे उनकी स्वर्गस्थ आत्मा को शान्ति प्रदान करें और मेरे को उनके जीवन से प्रेरणा मिलती रहे।

बद्रीप्रसाद सरावगी

पटना

उन दिनों बीड़ के काम पर बड़ा जोर था, क्या मजाल कि कोई एक तिनका भी बीड़ से तोड़ कर ले जाए। झाड़ी से बेर तोड़ने की मनाही तो न थी, लेकिन झाड़ी से बेर झाड़ने के लिए किसी की लाठी नहीं चल सकती थी। हरिजन कल्याण पर भी उन दिनों विशेष चेष्टा हो रही थी।

उस समय लगभग ४ महीने मुझे स्वामी जी के निकट बड़े मंदिर में बैठने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं उनकी अंग्रेजी की चिट्ठियाँ लिखा करता था। स्वामी जी का स्वभाव कड़े से कड़ा और मुलायम से मुलायम था। वे दृढ़ इच्छाशक्ति के व्यक्ति थे, वाजिब बात पर एकदम डट जाते थे, चाहे बात बड़ी हो या छोटी। उनकी निष्काम सेवा-भावना में भी एक आत्मीयता रहती थी। मेरे जीवन में भी सार्वजनिक सेवा की भावना उन्हीं के संसर्ग से अंकुरित हुई। उस निष्काम सेवा-भावी महापुरुष को मैं अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। नगर श्री ने उनका जीवन-चरित्र प्रकाशित कर बहुत ही स्तुत्य कार्य किया है।

सहकर्मियों की स्मृतियाँ

मेरे जेल के साथी स्वामी गोपालदास

स्वामी गोपालदास जी का नाम लेते ही मुझे उनसे अपने प्रथम परिचय का स्मरण हो आता है। सन् १९२०-२१ में जब कि मैं डी० ए० वी० कॉलेज, लाहौर का छात्र था और ग्रीष्मावकाश में भादरा आया हुआ था, उस समय मेरे चाचा लाला खूबराम जी सर्राफ के पास मिलने को दो साधु-जैसे ब्रह्मचारी आये और हमारे ही मकान पर ठहरे।

कुतूहलवश मैंने उनसे बातचीत की तो मैं आश्चर्यचकित सा-रह गया। इन दोनों अतिथियों में एक महन्त गणपतिदास थे तथा दूसरे सुप्रसिद्ध जन-सेवक स्वामी गोपालदास जी। स्वामी जी ने श्वेत खद्दर के वस्त्र पहन रखे थे। वे अन्न नहीं खाते थे तथा बातचीत में बहुत ही मृदु व मीठे बोल बोलते थे। मैं आज भी उनके प्रथम परिचय के प्रभाव को नहीं भूला हूँ। वे पूर्णतया देशहित में लगे पूर्ण निष्ठावान् पुरुष थे। मौलिक विचार और सूझ-बूझ के भण्डार थे। जैसा कि अपने बाद के परिचय और कालान्तर में "बीकानेर राजद्रोह षड्यन्त्र केस" के दोषी ठहराये जाने पर हम दोनों लगभग चार वर्ष तक एक ही जेल में रहे; उस समय मैंने स्वामी गोपालदास में एक अत्यन्त विनम्र जनसेवक के दर्शन किये। आश्चर्य होता है कि स्वामी जी एक मंदिर के महन्त होते हुए भी आदर्शों के पुतले थे।

चूरू में सर्वहितकारिणी सभा के द्वारा उन्होंने जो अनेकानेक समाज-सुधार की प्रवृत्तियाँ संचालित कीं—वे सभी उनकी समाज-सेवा के ज्वलन्त प्रमाण हैं। पुस्तकालय, वाचनालय, धर्मार्थ औषधालय, प्याऊ, इन्द्रमणि पार्क तथा धर्म-स्तूप आदि लोकोपकारी प्रवृतियों के अतिरिक्त उस दूरदर्शी जनसेवक ने सन् २० के पहले ही स्त्री-शिक्षा के महा-मंत्र को हृदयंगम कर लिया था और चूरू में पुत्री पाठशालाएँ तथा अछूतोद्धारक कबीर पाठशालाओं का श्रीगणेश करा दिया था।

धर्म-स्तूप और महिला पाठशालाओं के खर्चीले कार्यों में उन्होंने बिड़ला बन्धुओं तथा सूरजमल जालान जैसे करोड़पतियों से पूर्ण सहयोग लिया। महात्मा गाँधी तथा लाला लाजपतराय के अनुयायी इस स्वामी ने निर्धन व असहाय-जनों की सेवा में अपना तन मन धन लगा दिया।

स्वामी जी का सबसे बड़ा स्मारक तो वह हजारों बीघा भूमि पर फैल

स्वामी जी के तीन अभिन्न सहकर्मी महंत गणपतिदास जी,
श्रीरामजी मास्टर और वैद्य शान्त शर्मा

स्थिति में फसी मरुभूमि की निर्बोध जनता का उद्धार करने के लिए उस समय कठिन तपस्या की थी जबकि रियासत में महाराजा गंगासिंहजी का कठोर शासन चल रहा था। उनकी अविरत तपस्या को भग करने के लिए उन पर, उनके साथियों पर और सर्वहितकारिणी सभा पर दसों बार आक्रमण किये गये और अत में बीकानेर राज्य को वदनाम करने और लाखों रुपये खर्च कराने वाले बीकानेर षड्यन्त्र केस का प्रादुर्भाव हुआ। लेकिन ४ वर्ष की कठोर यातनाएं भी उनका तप भंग नहीं कर सकीं और स्वामी जी की मान्यता जनता में और अधिक बढ़ गई।

बेजोड़ निर्लोभी

स्वामी जी प्रयाग कुंभ पर सेवा कार्यार्थ गये थे तो सेठ सूरजमल जी जालान

अंगरखी पहने और लंगोटी बांधे पढ़ने आने लगे थे। पढ़ने के लिए मुझे पंडित जी ने एक अलग 'पिरंडा' दे रखा था जो शान्त शर्मा के 'परिंडे' के नाम से जाना जाता था। महंत जी जब सर्वप्रथम आये तो साफ सुथरा 'पिरंडा' देखकर उसी में आकर बैठ गये। गुरुजी ने जब कहा कि यह शान्त शर्मा का 'पिरंडा' है तो महंत जी ने उत्तर दिया कि जब शान्त जी मुझसे कहेंगे तो मैं बाहर बैठ जाऊँगा। लेकिन बाहर बैठना तो दूर किनार रहा संवत ६१ से आज तक यह पाणिनीय सूत्र "शान्त महंत संयोगस्य" अर्थात् ६२ वर्षों से शान्त-महंत का अटूट संयोग (संपर्क) चला आ रहा है।

स्वामी जी चूरू की नई पुरानी जनता के अग्रदूत तो थे ही, परन्तु हमारी पार्टी के तो वे धुरी थे। हमारी पार्टी में प्रातःस्मरणीय हमारे श्रद्धेय आचार्य पं० कन्हैयालाल जी ढूंढ़, मास्टर श्रीराम जी ओझा, पं० ठाकुरदत्तजी दायमा, पं० चोखराज जी, बाबू बालचंद जी मोदी, महंत गणपतिदास जी तथा मैं मुख्य थे। इनके अतिरिक्त अन्य कई मित्रों का सहयोग था। खादीधारी होने से यह पार्टी गाँधी-भक्त तो थी ही अतः सादगी में ओत-प्रोत भी थी, परन्तु स्वामी जी की सादगी तो हद दर्जे की थी। खादी की धोती और खादी का ही कुर्ता-साफा, हाथ में बाँस की लाठी और पैरों में देसी पंजाबी ढंग के जूते, बस यही उनकी सदा की वेश-भूषा थी। सर्वहितकारिणी सभा में बैठकर देश और समाज का हितचिंतन करना, दिन में बड़े मंदिर में बैठकर गरीबों के लिए रोज-गार आदि का चिंतन करना, आये हुए पत्रों का उत्तर देना आदि कार्य होते थे, अधिकतर पत्र वे मेरे से ही लिखवाते। ४ बजते ही बीड़ में चले जाते और वृक्षों की सार-संभार करते।

वैसे तो आर्य समाज के सिद्धान्तों का वे विशेष रूप से मनन करते थे, परन्तु मूर्ति-पूजा एवं श्रीमद्भागवत में उनकी पूर्ण आस्था थी। वे स्वयं बड़े तड़के नहा-धोकर ४ बजे भगवान् की आरती उतारते। न उनके पास पूंजी थी न

उन्होंने कभी पैसा इकट्ठा किया। यथालाभ संतोष का अद्भुत उदाहरण जैसा मैंने स्वामी जी में पाया वैसा अन्य किसी में नहीं देखा, उनकी त्याग-वृत्ति बेजोड़ थी।

ऐसे महापुरुष का जीवन-चरित्र अब तक प्रकाशित न हो सका यह बड़े दुर्भाग्य की बात है। स्वामी जी का जीवन-चरित्र प्रकाशित हो, इस बात की कल्पना मेरे दिमाग में बहुत समय से चक्कर लगा रही थी, किन्तु इस स्वप्न को पूरा करना साधारण बात नहीं थी। सर्वहितकारिणी सभा की बारंबार की तलाशियों में प्रायः सारा ही रेकार्ड जब्त हो गया था, स्वामी जी तथा हम सब पर जो उनके सहयोगी थे राजकीय आघात-प्रत्याघात बराबर होते रहे, जिससे स्वामीजी व सभा के पुनीत इतिहास की सामग्री दुर्लभ हो गई। इसके बावजूद भी कुछ सामग्री मैंने किसी प्रकार बचाखुचाकर रखी थी, किन्तु खेद है कि वह भी अपने ही आदमियों द्वारा गायब कर दी गई। अन्य भी कुछ प्रयत्न स्वामी जी का जीवन-चरित्र प्रकाशित करने के सम्बन्ध में किये गये, लेकिन कोई प्रयत्न सफल नहीं हुआ।

अब नगर-श्री चूरू के प्रमुख उद्योगी चि० सुबोधकुमार अग्रवाल को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ मैं बधाई देता हूँ कि उन्होंने अपना अमूल्य समय देकर तथा रात-दिन अनवरत और अथक परिश्रम करके इस दुर्लभ संग्रह को हमारे सन्मुख रखने का बड़ा ही स्तुत्य और अकल्पनीय सुन्दर कार्य किया है। साथ ही नगर-श्री द्वारा चूरू का इतिहास भी लिखा जा रहा है, जो चूरू की गौरव-गाथा के रूप में दो खण्डों में प्रकाशित होगा। जब हमारे चूरू का इतिहास बनकर प्रकाशित हो जाएगा, तब मैं तो चूरू में अपना जन्म होना सार्थक समझूंगा। चूरू की जनता का भी कर्तव्य है कि वह इस कार्य में आवश्यक सहयोग देकर इतिहास को अपने सुन्दरतम रूप में तैयार करने में भागीदार बने।

स्वामी जी के साथ रहकर मुझे जो प्रेरणायें मिली हैं, उनको मैं कभी विस्मृत नहीं कर सकता। मैं उनके महत्वपूर्ण कार्यों में यथाशक्ति सहयोगी रहा हूँ और उनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वे हमारी भावी पीढ़ी को उनके आदर्शों पर चलने की शक्ति दें।

शान्ति निवास
१० अप्रैल, १९६८

चूरू का स्वयंसेवक
वैद्य शान्त शर्मा, चूरू

श्रद्धा-सुमन

देश का ऐसा कौन-सा भू-भाग होगा जिसने भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम के महायज्ञ में अपनी आहुति न डाली हो और राष्ट्र के नव-निर्माण व सुन्दर भविष्य की कल्पनाओं से प्रेरित होकर त्याग व बलिदान न किया हो। राष्ट्र के उन सपूतों की कोई गिनती नहीं कि जिन्होंने स्वतंन्त्रता प्राप्ति की प्रबल भावनाओं से प्रेरित होकर अपने को राष्ट्र पर हँसते-हँसते न्योछावर कर दिया। आजादी की उमंग में तब चारों ओर यही सुनाई पड़ता था—

शहीदों की चिताओं पर, जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पे मिटने वालों का, यही बाकी निशाँ होगा।।

लेकिन हर वर्ष मेले लगने की बात तो दरकिनार, लोगों को उन शहीदों के नाम ही विस्मृत होते जा रहे हैं, जो एक बहुत ही दुःखदाई बात है।

स्वराज्य-प्राप्ति के बाद राष्ट्रीय सरकार का यह पुनीत कर्तव्य होना चाहिए था कि वह शुद्ध मन से भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम के अमर-शहीदों के स्मारक बनवाती और उनके बलिदानों की गौरवगाथाएं लिखवाती। यदि ईमानदारी-पूर्वक ऐसा किया गया होता तो भावी पीढ़ियाँ श्रद्धापूर्वक शहीदों की देवलियों पर सर झुकातीं व उनके बलिदानों की गौरवगाथाओं का धार्मिक ग्रंथों की तरह पाठ करतीं। देश में आज चारों ओर जो आपाधापी मची हुई है उसकी जगह स्वस्थ राष्ट्रीय भावना का विकास होता। लेकिन इसके विपरीत आज जो कुछ इस दिशा में किया जाता है वह अधिकतर राजनैतिक दृष्टिकोण से किया जाता है, शहीदों के प्रति आत्मीयता और श्रद्धा की भावना से नहीं। आत्मीयता बलिदान और त्याग का आवाहन चाहती है और इसके अभाव में सारा कार्यकलाप खोखला प्रदर्शन मात्र रह जाता है। इसी के परिणामस्वरूप शहीद स्मारक के उद्घाटन की रस्म पूरी होने के बाद, बाजीगर के तमाशे की तरह 'खेला खतम और पैसा हजम' वाला दृश्य ही शेष रह जाता है।

आज कुछ होशियार लोगों में यह प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ती जा रही है कि भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम से किसी न किसी रूप में अपने को सम्बद्ध करके अपने "शानदार बलिदानों और कार्यकलापों" का यशोगान आकर्षक और चमकते हुए अभिनन्दन ग्रंथों के माध्यम से करवाया जाए जब कि वास्तविक बलिदानियों, को जो आजादी की नींव के पत्थर हैं कोई जानता भी नहीं।

आज स्वामी गोपालदास स्मृति ग्रंथ के रूप में हम पाठकों के हाथों में एक

ऐसे ही तपस्वी के त्याग और बलिदान की गौरवगाथा सौंप रहे हैं जिसने अपना सारा जीवन निष्काम जनसेवा और जन-जागृति के कार्यों में अर्पित कर दिया। लोभ, स्वार्थ, भय और उत्पीड़न उसको अपने सत्यमार्ग से किंचित् भी विचलित न कर सके। श्रद्धेय स्वामी गोपालदास जी त्याग और सेवा की प्रतिमूर्ति, सच्चे जन-सेवक और स्वाभिमानी कर्मयोगी थे जिनका प्रत्येक क्षण समाज और राष्ट्र के हितचिंतन में ही व्यतीत होता था। नगर-श्री चूरू द्वारा इस स्मृतिग्रंथ के रूप में इस नरकेहरी की गौरव गाथा प्रस्तुत करते बड़ा हर्ष हो रहा है, जिसे पढ़ कर पाठक उनके प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सकेगा।

नगर-श्री की स्थापना इसी उद्देश्य से की गयी थी कि यह संस्था नगर की "श्री" को सुरक्षित रखे और बढ़ाये तथा संस्था स्वयं नगर की "श्री" हो। नगर श्री के अन्तर्गत इस वक्त मुख्य रूप से दो कार्य चल रहे हैं, जिनमें से एक है "चूरू चित्र-दर्शन"। इसके अन्तर्गत नगर के उन पुण्य पुरुषों के प्राप्य चित्र सजाये गये हैं जिन्होंने किसी भी रूप में नगर की श्री और कीर्ति में वृद्धि की है। इन पुण्य पुरुषों द्वारा संस्थापित सार्वजनिक, धार्मिक व औद्योगिक संस्थानों, प्राचीन स्मारकों, दर्शनीय स्थानों व नगर में समय-समय पर होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों व उत्सवों को भी चित्रों के माध्यम से संजोया गया है। आस-पास के गाँवों के प्राचीन दर्शनीय व ऐतिहासिक स्थानों के चित्र भी "चूरू चित्र-दर्शन" में सजाये गये हैं तथा चूरू निवासियों और प्रवासियों द्वारा जहाँ कहीं भी ऐसे संस्थान स्थापित किये गये हैं उनके चित्र भी प्रयत्नपूर्वक ला-ला कर इसमें लगाये गये हैं। संक्षेप में चूरू के व्यक्तित्व व कृतित्व की यह एक सचित्र झांकी है और नगर-श्री के चूरू चित्र-दर्शन में पहुँच कर इसका दिग्दर्शन सहज ही हो सकता है। इस स्थायी चित्र प्रदर्शनी में कुछ प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों व चित्रों का भी संग्रह किया गया है तथा इस क्षेत्र की कलापूर्ण व ऐतिहासिक वस्तुओं को भी एकत्र करने की योजना है।

नगर-श्री ने दूसरा मुख्य कार्य जो हाथ में ले रखा है वह है जन्मभूमि चूरू की गौरव-गाथा को लिख कर प्रकाशित करवाना, जिसमें इस समूचे क्षेत्र का राजनैतिक, भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास होगा। इस का प्रथम खण्ड लगभग तैयार हो चुका है और आशा है वह शीघ्र ही प्रेस में दिया जा सकेगा। इन दो मुख्य कार्यों के अतिरिक्त बाहर से पधारने वाले चूरू के विशिष्ट विद्वानों व कलाकारों का अभिनन्दन करना व राष्ट्रीय तथा सामाजिक पर्वों व जयंतियों आदि पर विशेष आयोजन समय-समय पर करते व करवाते रहना आदि भी इसके अन्तर्गत होते रहते हैं।

चूरू की गौरव गाथा के लिए सामग्री जुटाने हेतु मुझे अनेक गाँवों, कस्बों और शहरों में जाना पड़ा और बहुत से कड़वे-मीठे अनुभव भी हुए, लेकिन कार्य

कुछ समय पूर्व बाबू गंगाप्रसाद जी, नगर-श्री के अवलोकनार्थ स्वयं चूरू आये और उन्होंने संस्था के कार्य और प्रगति को देखकर हर्ष व संतोष प्रकट किया। जब वे चूरू चित्र-दर्शन का अवलोकन कर रहे थे तब उनकी दृष्टि कक्ष में सजे हुए स्वामी गोपालदास जी के पत्रों पर रुक गई। उन्होंने मुझसे कहा कि स्वामीजी का जीवन-चरित्र तो स्वतंत्र रूप से ही प्रकाशित किया जाए तो अधिक अच्छा हो। बुधिया जी ने तो मानो मेरे ही मन की बात कह दी, मैंने इसे तुरन्त स्वीकार कर लिया, इस पर बुधिया जी ने ही सर्वप्रथम ग्रंथ को तैयार करने हेतु कुछ आर्थिक सहयोग की भी व्यवस्था कर दी।

अब स्वामीजी के जीवन-चरित्र को तैयार करने का कार्य विशेष रूप से हाथ में लिया गया। सैकड़ों व्यक्तियों के पास इस सम्बन्ध की अपील डाक द्वारा भिजवाई गई व अनेकों व्यक्तिगत पत्र लिखे गये और अनेक सज्जनों से सम्पर्क साधा गया। जयपुर, भादरा, बीकानेर व अन्य कई जगहों पर जाना भी पड़ा। फलस्वरूप स्वामी जी से सम्बन्धित अनेक पत्र व अन्य सामग्री का संकलन हो सका। स्वामी जी के पुराने साथियों में से श्री बालचन्द जी मोदी के पास गिरीडीह विशेष आशा से गया। यद्यपि चूरू का नाम सुनते ही उनके मुंह पर नया तेज आ गया, लेकिन एक लम्बी बीमारी के कारण उनकी स्मृति लुप्तप्राय हो चुकी थी अतः आशीर्वाद के अतिरिक्त विशेष कोई जानकारी उनसे नहीं मिल सकी। स्वामी जी के अन्य साथियों में से स्वामी नृसिंहदेव जी सरस्वती, वैद्य शान्त शर्मा जी और महंत गणपतिदास जी आदि से कुछ जबानी जानकारियाँ प्राप्त हुई। वैद्य शान्त शर्मा जी ने इस कार्य में विशेष दिलचस्पी ली और बराबर हमें

प्रोत्साहन प्रदान करते रहे, उनसे स्वामीजी सम्बन्धी कुछ फोटो भी प्राप्त हुए। राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, सुराना पुस्तकालय चूरू व सर्वहित-कारिणी सभा से भी सामग्री प्राप्त की गई और इस प्रकार यह संकलन तैयार किया जा सका।

इससे पूर्व भी स्वामी जी का जीवन-वृत्त लिखने के लिए कई प्रयत्न हुए, लेकिन कोई प्रयास सफल नहीं हुआ। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से भी सन् ५४ में सम्मेलन के तत्वावधान में "भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम इतिहास निर्माण समिति" का गठन किया गया था जिसके संयोजक रायबहादुर सेठ रामदेव जी चोखानी थे। इसी के अन्तर्गत स्वामी जी के सम्बन्ध में भी यत्र-तत्र से सामग्री इकट्ठी की गई थी। सर्वहितकारिणी सभा की ओर से भी प्रयत्न हुआ, लेकिन वह भी सफल नहीं हो सका। स्वामी जी और सर्वहितकारिणी सभा सम्बन्धी बहुत-सी सामग्री तो बीकानेर राज्य षड्यंत्र केस के दरमियान सर्वहित-कारिणी सभा, स्वामी जी के मंदिर, बड़े मंदिर व स्वामी जी के साथियों की तला-शियों और धावों में जब्त हो गई और बहुत-सी पुलिस के आतंक से नष्ट कर दी गई तथा शेष सामग्री स्वामी जी के जीवन-चरित्र को तैयार करने के बार-बार के प्रयत्नों में अप्राप्य हो गई; जीवन-चरित्र तो तैयार नहीं हो पाया, किन्तु सामग्री लुप्त हो गई। अतः सामग्री प्राप्त करने में बड़ा श्रम उठाना पड़ा।

स्वामी गोपालदास जी के पत्रों का संकलन करते हुए स्व० श्री केदारप्रसाद जी सरावगी का भी एक पत्र हमें प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने स्वामी जी का जीवन-चरित्र तैयार करने की अभिलाषा व्यक्त की थी और स्वामी जी से भी इस कार्य में सहयोग माँगा गया था। किन्तु भाई केदारप्रसाद जी के असामयिक निधन से यह कार्य अपूर्ण रह गया। पत्रों के संकलन में स्व० केदार प्रसाद जी के जेष्ठ भ्राता बाबू बद्रीप्रसाद जी के भी कुछ पत्र हमें प्राप्त हुए जिनको पढ़ने से ज्ञात हुआ कि बाबू बद्रीप्रसाद जी की भी स्वामी जी में अगाध श्रद्धा थी। इस सम्बन्ध में जब उन्हें लिखा गया तो उन्होंने बड़ा हर्ष प्रगट किया और यह इच्छा व्यक्त की कि स्वामीजी का जीवन-चरित्र अवश्य ही प्रकाशित होना चाहिए। विशेष जानकारी प्राप्त करने हेतु उन्होंने मुझे पटना बुलाया और ग्रंथ की पांडु-लिपि देखकर वे बहुत संतुष्ट हुए। अपने अनुज स्व० केदारप्रसाद जी की आन्तरिक अभिलाषा को पूर्ण करने हेतु उन्होंने तुरन्त ही इसके प्रकाशन की व्यवस्था करने की स्वीकृति प्रदान कर दी जिसके फलस्वरूप स्वामी जी का यह जीवन-चरित्र आपके हाथों में दिया जा रहा है।

स्वामी जी के प्रति मेरे मन में बचपन से ही बड़ी श्रद्धा रही है। मुझे यह तो याद नहीं कि उस वक्त कौन-सा उत्सव मनाया जा रहा था, क्योंकि तब मैं

बहुत छोटा ही था किन्तु इतनी एक धुंधली-सी स्मृति अवश्य है कि सर्वहितकारिणी सभा के आगे एक बहुत बड़ी मीटिंग हो रही थी और किसी बात पर हाथ उठा कर वोट लिए जा रहे थे। पहले प्रस्ताव के समर्थन में वोट लिये गये और एक साथ हजारों हाथ उठ गये। अनन्तर विरोध में वोट माँगे गये तो किसी ने हाथ नहीं उठाया, किन्तु मैंने अपने दोनों नन्हें-नन्हें हाथ ऊपर उठा दिये। मुझे याद है कि स्वामी जी ने मुझे बड़े स्नेह से उठाकर सभापति की मेज पर खड़ा कर दिया और हँसते हुए बोले कि यह बालक विरोध में अपने दोनों हाथ उठा रहा है, अन्य किसी का विरोध नहीं है। दूसरी बार जब मैं कुछ बड़ा हो गया था और असाध्य रूप से बीमार था तब पिताजी मुझे दिखलाने के लिए स्वामी जी को घर पर लाये थे और उनके उपचार से ही मैंने नवजीवन पाया था। स्वामी जी में पिताजी की पूर्ण आस्था थी और वे उनके कार्यों में सहयोगी रहते थे। स्वामी जी का भी पिताजी पर पूर्ण स्नेह था, जेल में भी वे उन्हें याद करते रहते थे जैसा कि स्वामी जी के जेल से लिखे गये पत्रों से ज्ञात होता है।

राजस्थान के मूर्धन्य विद्वान् माननीय श्री नाथूराम जी खड़गावत, निदेशक राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर ने इस ग्रन्थ की भूमिका लिखकर हमें गौरवान्वित किया है। साथ ही अभिलेखागार से स्वामी जी के सम्बन्ध की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त करने की सुविधा उन्होंने प्रदान की, जिसके लिए उनका बहुत आभारी हूँ।

ग्रन्थ को तैयार करने में श्री मोहनलाल जी जालान से जो आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिए संस्था उनकी आभारी है। वैद्य शान्त शर्मा जी, वैद्य चन्द्रशेखर जी व्यास तथा श्री हनुमानप्रसाद जी सरावगी ने इस कार्य में हार्दिक सहयोग प्रदान किया है जिनके लिए उनका कृतज्ञ हूँ। उन संस्थाओं और उन सभी सज्जनों का भी आभारी हूँ जिन्होंने आवश्यक सामग्री या जानकारियाँ देकर ग्रन्थ रचना में सहायता की है। अन्त में उन सब सज्जनों के प्रति कृतज्ञता प्रगट करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिन्होंने ग्रन्थ के लिए अपने प्रेरणास्पद संदेश, संस्मरण व सम्मतियाँ देकर इसे मूल्यवान बनाया है।

चि० भाई गोविन्द अग्रवाल ने स्वयं बीकानेर में कई दिनों तक रहकर राजस्थान राज्य अभिलेखागार से सम्बन्धित सामग्री का चयन किया और फिर ग्रन्थ के लिए प्राप्त हुई सारी सामग्री को वर्गीकृत कर बड़े सुन्दर तथा वैज्ञानिक ढंग से संजोया और ग्रंथ को अधिकाधिक प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया, इसके लिए संस्था उनका पूर्ण आभार मानती है।

इस प्रकार नगर-श्री स्वामी गोपालदास जी के प्रति अपने पुनीत कर्तव्य का पालन करती हुई गौरव का अनुभव कर रही है। इस पुण्यपुरुष के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर यदि पाठक जनहित और राष्ट्र हित की दृष्टि से कुछ भी चिंतन करेंगे तो संस्था इस प्रयास को सार्थक समझेगी।

चूरू
दिनांक ६ मई १९६८

—सुबोध कुमार अग्रवाल
मंत्री—नगर-श्री

भूमिका

चूरू के ख्यातिप्राप्त भाई श्री गोविन्द जी अग्रवाल के अथक परिश्रम द्वारा तैयार किए गये प्रातः स्मरणीय स्वर्गीय महन्त श्री गोपालदास जी स्वामी से सम्बन्धित इस ग्रन्थ को साहित्य संसार के सम्मुख प्रस्तुत करते समय मुझे अपार हर्ष और गर्व अनुभव हो रहा है। प्रसन्नता इस बात की है कि उत्तरी पश्चिमी राजस्थान के एक महान् तपस्वी और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता की राजनैतिक, सामाजिक और सार्वजनिक सेवाओं और उपलब्धियों पर भरा-पूरा प्रकाश डालने का एक अत्यन्त सुन्दर प्रयास करके भाई श्री गोविन्द जी अग्रवाल ने एक स्वस्थ और अनुकरणीय परिपाटी का श्रीगणेश किया है। गर्व इस बात पर हो रहा है कि यह प्रयास बड़ी लगन, तत्परता और ईमानदारी के साथ अनेक असुविधाओं को उठाकर अत्यंत सफलतापूर्वक किया गया है। इसे सम्पन्न करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि तथ्य अपने सही रूप में बड़ी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किए जायँ।

इस ग्रन्थ में स्वामीजी द्वारा समय-समय पर लिखे गये पत्रों, दिये गये वक्तव्यों और विश्लेषणों को उनके वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया गया है। पत्रों का संग्रह, वर्गीकरण और सम्पादन एक अत्यन्त सुन्दर, वैज्ञानिक प्रणाली के द्वारा किया गया है। पत्रों के पूर्वापर सम्बन्ध, संदर्भ तथा काल-निर्णय से सम्बन्धित घटना-क्रम इस रूप में प्रस्तुत किये गये हैं कि उन्हें पढ़कर पाठक स्वामीजी के जीवन तथा आदर्शों, क्रिया कलापों, प्रमुख गतिविधियों और उपलब्धियों के क्रमिक विकास को स्पष्टतया समझ सकता है। ग्रन्थ में दी गई स्वामी जी की जीवनी संक्षिप्त होते हुए भी उनके व्यक्तित्व और विचारों को बड़े ही सुन्दर ढंग से व्यक्त करती है। अग्रवाल बंधुओं का यह प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय ही नहीं अपितु वन्दनीय भी है। आशा ही नहीं, अपितु दृढ़ विश्वास भी है कि राजस्थान के महापुरुषों पर इस प्रकार के ग्रंथों को प्रकाशित करने की यह परिपाटी और भी अधिक प्रभविष्णु ढंग से भविष्य में संपादित होती रहेगी।

अपने इस सुन्दर प्रयास के लिये श्री गोविन्द अग्रवाल बधाई के पात्र हैं। उनके इस ग्रंथ का साहित्य संसार में, जहाँ तक मैं समझता हूँ, अच्छा स्वागत होगा। राजस्थान बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में एक ऐसा प्रदेश रहा जहाँ प्रकाशन संबंधी सुविधाएं नहीं के बराबर थीं। इस वीरभूमि ने सदा की भांति इस युग में भी आत्मबलिदान की भावना से अनुप्राणित कितने ही ऐसे महापुरुषों को

जन्म दिया जिनके विचार इस प्रेस-पत्र-विहीन प्रदेश में उचित प्रकाशन और प्रचार के अभाव में विस्मृत-से हो गये। बीकानेर राज्य में महाराजा गंगासिंह जी का शासन-काल निरंकुश सत्ता और दमन का प्रतीक कहा जाता है। उनके इस लम्बे शासन-काल में जनमत निर्मित ही नहीं हो सका, सार्वजनिक संस्थाएं पनप नहीं पाईं, राजनैतिक संस्थानों की स्थापना तो दूर, सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थाओं तक को पनपने का अवसर नहीं दिया गया। निरंकुश शासन के उस कठोर नियंत्रण की छाया में सार्वजनिक संस्थाएं अपने ही आंसुओं में डूब गईं।

इस प्रकार के वातावरण में महंत,गोपालदास जी ने सार्वजनिक संस्थाओं की स्थापना कर के भयंकर दमन का सामना करते हुए सार्वजनिक सेवा के सहारे जनमत का निर्माण किया। छोटी-बड़ी अनेक संस्थाएं खोलीं और लोगों में सार्वजनिक हित से संबंधित मंगल कामना के बीज बोये। उनके ये प्रयास बड़ी कठिनाई से अंकुर प्राप्त कर सके तथा उन्हें जिस प्रकार के दमन द्वारा प्रताड़ित होना पड़ा उसका अनुमान हम केवल इस बात से लगा सकते हैं कि उन्हें प्रारम्भ से लेकर अन्त तक जन-जीवन की सुरक्षा के लिए लगातार संघर्ष करना पड़ा। ग्रंथ में स्वामी जी द्वारा किये गये जिस पत्र-व्यवहार का संपादन किया गया है वह उनके अदम्य उत्साह, कष्ट सहने की अपूर्व क्षमता और निर्मम निरंकुशता से लोहा लेने की अद्भुत शक्ति को व्यक्त करता है।

स्वामी गोपालदास जी ने अपने आप को सदा निर्दोष समझा। बीकानेर षड्यंत्र केस की समूची प्रक्रिया को उन्होंने प्रारम्भ से अन्त तक एक प्रहसन और न्याय के अभिनय के रूप में लिया। उनकी यह मान्यता थी कि राज्य ने षड्यंत्र केस चला कर मनमानी से काम लिया है। बड़े सरकारी कर्मचारी प्रतिहिंसा की भावना से अनुप्राणित होकर उनसे बदला लेने के लिए तुले हुए थे। नृशंस अत्याचार सहकर भी स्वामी जी ने कभी महाराजा गंगासिंह जी के व्यक्तित्व पर किसी प्रकार की छींटाकशी नहीं की। उन्होंने केवल यही कहा कि सरकारी अधिकारियों ने स्वयं बीकानेर नरेश को भी उनके विरुद्ध भड़का दिया है। वे मुकदमे से कभी नहीं डरे। उनकी तो केवल यही मान्यता थी कि राज्य यदि वास्तव में न्याय से प्रेम करता है और शुद्ध न्याय प्रदान करने को उत्सुक है तो उन्हें चाहिए कि वह समस्त संबंधित व्यक्तियों को सभी प्रकार की कानूनी सुविधाएं प्रदान करे। इन सुविधाओं के अभाव में उन्होंने सदा न्यायालय से असहयोग रखा। उन्होंने न्याय का आडम्बर देखा तो उनकी आत्मा चीख उठी। इस पर भी उन्होंने धैर्य और गुरुता से काम लिया। षड्यंत्र केस से संबंधित सभी व्यक्तियों ने समय-समय पर शिकायतें कीं, अर्जियाँ दीं और न्याय की भीख

मांगी; किन्तु स्वामी जी ने जब न्याय का ही मखौल होते देखा तो न्यायालय पर से उनकी आस्था उठ गई और उन्होंने ऐसे न्यायालय के समक्ष न्याय की माँग प्रस्तुत करना हास्यास्पद समझा। मौन रहकर उन्होंने अपने आँसू पी लिये और जेल से छूटने पर उन्होंने जो वक्तव्य दिया वह उनके अध्यात्म और आध्यात्मिक गरिमा का प्रतीक है।

स्वामी गोपालदास जी के जीवन का प्रारंभिक युग ऐसी संस्थाओं के उद्भव और विकास के प्रयत्न में बीता जो अकाल-ग्रस्त क्षेत्रों में पानी के अभाव को दूर करने के प्रयासों से संबंधित था। स्थान-स्थान पर प्याऊ खुलवाने; जौहड़ और तालाब निर्मित करवाने तथा पशुओं के लिए चारागाहों की व्यवस्था कराने में वे संलग्न रहे। राज्य सरकार को उनके द्वारा किये गये ये निर्दोष प्रयास भी आपत्तिजनक प्रतीत हुए। किसी न किसी बहाने से सरकार ने उन्हें दमनचक्र की लपेट में लेना प्रारंभ कर दिया। सार्वजनिक जनमत उन दिनों प्रबुद्ध चेतना के अभाव में पनप नहीं पाया था। लोग व्यक्तिगत श्रद्धा और सद्भाव से अनुप्राणित होकर ही उन्हें सहयोग प्रदान किया करते थे। उनके इन जन-कल्याणकारी प्रयासों को भी सरकार ने जब कुचलने का प्रयास किया तो स्वामी जी को सामूहिक जनमत तैयार करने के लिये विवश होना पड़ा। वे राजनीति से कोसों दूर थे, पर सरकार ने उनके सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों को जब राजनैतिकता का बाना पहनाना शुरू किया तो उनके श्रद्धालु भक्त अत्यंत दुःखी हो गये।

वह युग राजनैतिक दृष्टि से अत्यंत निराशा का युग था। शिक्षा नाममात्र को थी, सामूहिक जन-जीवन निर्मित ही नहीं हो पाया था तथा बीकानेर के इस प्रेस-पत्र-विहीन प्रदेश में निरंकुश प्रशासन का दमन नग्न नृत्य कर रहा था। स्वामी जी आध्यात्मिक प्रवृत्तियों वाले पुरुष थे। वे प्रचार और संगठन नहीं चाहते थे। उनका उद्देश्य तो सेवा के सहारे आक्रांत मानव की व्यथा को कम करना मात्र था। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि महाराजा गंगासिंह जैसे प्रबुद्ध चेतना संपन्न व्यक्ति भी स्वामी जी के विशुद्ध सामाजिक और आध्यात्मिक आदर्शों का महत्व नहीं समझ सके। दमनचक्र चला, लोग बंदी बना लिये गये, वर्षों जेलखाने में कैद-बंद मानवता सिसकती रही और अंत में असह्य पीड़ा सहकर स्वामी जी जेल-जीवन से मुक्त हुए। अपार कष्ट सह कर भी स्वामी जी में किसी प्रकार के प्रतिशोध की भावना नहीं पनपी, उन्होंने जेल से मुक्त होने के बाद भी किसी से बदला नहीं लिया; गहरे विषाद की छाया में ताड़ना सह कर भी उनके रक्त में उबाल नहीं आया। उनका अध्यात्म शारीरिक पीड़ा सह कर भी विचलित नहीं हुआ। वे अपने पवित्र कार्य में उसी शाँति और तत्परता से लगे रहे।

स्वामी जी का आदर बीकानेर में ही नहीं अपितु बीकानेर प्रदेश के बाहर भी था। उनके अनुयायी सर्वत्र थे, पर उन्होंने राजनैतिक प्रचार और संगठन का सहारा लेकर अपने अध्यातम को हलका नहीं किया। यह एक गौरव की बात है कि उनके द्वारा किया गया यह आत्म-बलिदान व्यर्थ नहीं गया। जाने में या अनजाने में उन पर किये गये नृशंस अत्याचारों की कहानी समूचे भारत में फैल गई। नृशंस अत्याचारों का वह घटना-क्रम निरंकुश शासन की नींव हिलाने में सफल सिद्ध हुआ। बीकानेर प्रदेश का जन-जीवन धीरे-धीरे संगठित होने लगा। राठोड़ी निरंकुशता की नींव हिलने लगी और २०वीं सदी के पूर्वार्द्ध में ही उत्तरदायी शासन की स्थापना हुई। यह था स्वामी जी के आत्मबलिदान का प्रभाव।

बीकानेर प्रदेश में राठोड़ी निरंकुशता के विरुद्ध चूरू ने ही सर्वप्रथम विद्रोह का नारा बुलंद किया। १८वीं सदी के अंतिम प्रहर में महाराजा सूरतसिंह के नृशंस अत्याचारों के विरुद्ध जिस विद्रोह का सूत्रपात हुआ था उसका नेतृत्व चूरू के अधिपतियों ने ही किया था। चूरू-विजय के बाद भी विद्रोह की यह आग शान्त नहीं हुई और चूरू, छापर, बीदासर आदि क्षेत्र निरंतर गति से विद्रोह करते रहे। यह सिंहनाद तभी शाँत हुआ जब अंग्रेजों ने इसे कुचलने के लिए सुजानगढ़ एजेंसी स्थापित की तथा तोपखाने के बल पर बीदासर का समूचा किला ही उड़ा दिया। १७९० ई० से लगाकर १८९० ई० तक यह क्षेत्र पूरे १०० वर्षों तक निरंकुशता से संघर्ष करता रहा। ब्रिटिश तोपों ने विद्रोह की आग ऊपर से तो शांत कर दी पर राख के नीचे अंगारे धधकते रहे। बीसवीं सदी में इसी क्षेत्र के एक महान् तपस्वी का आध्यात्मिक और सामाजिक प्रयास भी जब राठोड़ी सत्ता को प्रकंपित करने लगा तो बिना किसी प्रयास के ही राख के नीचे छिपे अंगारे उभर आए और क्रांति का सिंहनाद फिर से मुखरित हो उठा।

इतिहासकार आज भी इस तथ्य का विश्लेषण भली भाँति कर सकने में असमर्थ हैं। उन्हें आश्चर्य तो इस बात पर हुआ करता है कि महाराजा गंगासिंह जी जैसे नीतिकुशल शासक ने स्वामीजी के व्यक्तित्व को समझने में यह भूल क्यों की? इतिहासकार इस बात को भूल जाते हैं कि जिस प्रदेश के निवासियों ने १७९० ई० से १८९० ई० तक राठोड़ी सत्ता से डट कर लोहा लिया उस प्रदेश की स्वामीभक्ति पर राठोड़ी सत्ता को विश्वास क्यों कर हो पाता? दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है और महाराजा गंगासिंह जी भला इस तथ्य को क्यों कर भुला देते कि इस प्रदेश के रक्त की हर बूंद में संघर्ष समाया हुआ है। जिस प्रकार प्यार के प्रकारांतर नहीं होते ठीक उसी प्रकार

विद्रोह सदा विद्रोह ही कहा जाएगा, चाहे उसकी सृष्टि करने वाले प्रगतिशील हों अथवा प्रतिगामी। यही कारण था कि महाराजा गंगासिंह ने इस प्रदेश में जन-जागरण के बीज ज्योंही पनपते देखे उन्हें कुचलने की चेष्टा की।

स्वामी जी राजनैतिक कोलाहल से दूर रह कर सेवा के सहारे पनपने वाली मानवीय कल्याण की सृष्टि के समर्थक थे। उनका भारत के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों, विचारकों और समाजसुधारकों से संपर्क अवश्य था, पर उन्होंने राग-द्वेषपूर्ण आरोप-प्रत्यारोप से गठित राजनैतिक ताने-बाने का आश्रय कभी नहीं लिया। जनतंत्र और प्रजातंत्र की जिस परिपाटी का श्रीगणेश पाश्चात्य देशों में हुआ था तथा जिसको आधार मान कर भारतीय जन-जीवन संगठित होने के स्वप्न देख रहा था, स्वामी जी उस परिपाटी के पक्ष में नहीं थे। उन्हें यह स्पष्ट आभास हो गया था कि इस प्रकार की प्रतिशोधात्मक राजनीति का अंत हाहाकार में ही होगा। यही सोच कर उन्होंने सेवा का मार्ग अपनाया था। यदि सरकार उन्हें सहयोग प्रदान करती तो इस प्रदेश का जन-जीवन प्रबुद्ध चेतना और मंगल कामना के सहारे सेवा-भाव की सहायता से भलीभाँति संगठित हो जाता; किन्तु सरकार द्वारा अपनाई गई दमन नीति ने जिस प्रतिशोध की भावना को जन्म दिया उसने एक ऐसे तूफान को पनपाया जो राजाशाही को ले डूबा। स्वामी जी की इस तूफान के बारे में क्या धारणा थी हम नहीं जानते; पर वे इस प्रकार के प्रतिशोधात्मक तूफान के समर्थक नहीं थे।

स्वामी जी का व्यक्तित्व उनके पत्रों में पूर्ण रूप से व्यक्त हुआ है। उन्होंने अपने सिद्धान्तों और विचारों की कोई लम्बी-चौड़ी व्याख्या नहीं की तथा ना ही उन्होंने किसी सैद्धान्तिक विचारधारा का नवनिर्माण किया। वे तो मानव-मात्र के दुःख और विषाद को दूर करने के प्रयत्नों में ही संलग्न रहे तथा ऐसा करते समय उन्होंने कभी किसी व्यक्ति अथवा संस्था का विरोध नहीं किया। सृजनात्मक सेवा कार्य के द्वारा मानव मात्र की सेवा करना ही स्वामी जी का सिद्धान्त था। जिस प्रदेश में उन्होंने जन्म लिया उसमें निवास करने वाला जन-समुदाय अकालग्रस्त होने के कारण नाना प्रकार के अभावों से प्रताड़ित था। महाराजा गंगासिंह जी का सारा जीवन इस क्षेत्र के निवासियों को अकाल की भीषण ज्वाला से बचाने में बीता। स्वामी जी ने भी अपनी सामर्थ्यानुसार इसी संकट के निवारणार्थ प्रयास किया था। अब इसे यदि विडम्बना नहीं तो और क्या कहें कि समान उद्देश्यों को लेकर कार्य करने वाले इन दो महापुरुषों में समन्वय संस्थापित हो ही नहीं सका! स्वामी जी ने महाराजा गंगासिंह जी के विरुद्ध कभी कुछ नहीं किया तथा ना ही किसी प्रकार के षड्यंत्र की भूमिका निर्मित की। यह तो महाराजा गंगासिंह जी की भूल थी जो उन्होंने इस प्रकार के सेवारत तपस्वी को अकारण

संक्षिप्त जीवन झाँकी

आजादी के संघर्ष में देश के सभी भागों और वर्गों का योगदान रहा है। यद्यपि तत्कालीन ब्रिटिश भारत की अपेक्षा रियासती भूभागों में यह संघर्ष अधिक कठिन व कष्टपूर्ण था, क्योंकि ब्रिटिश प्रदेश की अपेक्षा देशी राज्यों में अशिक्षा, गरीबी, उत्पीड़न व शोषण अधिक था, यहाँ की जनता दुहरी गुलामी तथा रूढ़ियों, कुप्रथाओं और अन्धविश्वासों की शृंखलाओं में जकड़ी हुई थी और तिलक या गाँधी जैसे नेताओं का सीधा नेतृत्व इसे प्राप्त नहीं था। किन्तु फिर भी यहाँ के सपूतों ने अनेक कष्ट व दमन सहते हुए सहर्ष आजादी की नींव को अपने खून व पसीने से भर कर अपने कर्तव्य का यथोचित पालन किया। तत्कालीन बीकानेर राज्य के बाहर तब भी यहाँ के निवासी समस्त भारतवर्ष में स्थान-स्थान पर बसे हुये थे और उन प्रवासी भाइयों ने जहाँ भी वे थे, वहाँ रहते हुये ही आजादी के संघर्ष में शानदार योग दिया, उदाहरणार्थ श्री बैजनाथप्रसाद भाव सिंह का जिनका जन्म चूरू में संवत १९५३ में हुआ था और जो तब बिहार में (केसरिया, पो० रक्सौल, चम्पारन) में बसते थे उनके सम्बन्ध में जानकारी देते हुए श्री राधाकृष्ण नेवटिया ने लिखा है[1]—

सन् २१ से ही आप राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेते रहे हैं। कांग्रेस के सभी आन्दोलनों में आप जेलयात्रा कर चुके हैं। सन् २१, ३०, ३२ और ४२ में आप कभी ६ महीने, कभी डेढ़ और कभी ३ साल तक सरकार द्वारा जेल में बंद रहे। बयालीस के आंदोलन में आपका मकान लूट लिया गया जिसमें लाखों रुपयों का सामान चला गया।

लेकिन खेद इतना ही है कि आजतक आजादी के संघर्ष में चूरू के योगदान का मूल्यांकन करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। चूरू राजस्थान का एक प्रमुख और प्राचीन नगर है जो 28° 18′ N, और 74° 59′ E पर बसा हुआ है और रेल द्वारा दिल्ली, जयपुर, जोधपुर और बीकानेर से जुड़ा हुआ, है। वर्तमान में यह चूरू जिले का हैडक्वार्टर है।

चूरू की मिट्टी में आजादी के कण शायद कुछ विशेष रूप से मिले हुए हैं और इसी कारण चूरू अपनी आजादी और अधिकारों के लिए सतत संघर्षशील रहा है। भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से बहुत पहले भी चूरू की जनता ने अनेक बार सशस्त्र संघर्ष किया। जब बीकानेर महाराजा जोरावरसिंह जी बल-

स्वामी जी का जन्म चूरू तहसील के एक गाँव भैंहसर में जो कि चूरू से ७ कोस उत्तर की ओर है सन् १८८२ के लगभग चौधरी बींजाराम के घर हुआ था। अल्पावस्था में ही उनके सिर से पिता का साया उठ गया तो उनकी माँ नौजीदेवी बालक गोपालदास को साथ लेकर चूरू चली आईं और मेहनत-मजदूरी कर के उनका पालन-पोषण करने लगीं। नौजीदेवी ने बालक गोपालदास को छोटे मन्दिर के महंत मुकन्ददास जी को सौंप दिया। बालक को होनहार देखकर महंत जी ने उसे अपने पास बड़े स्नेह से रख लिया और शिक्षा प्राप्त कराने हेतु उसे चुरू के सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रातःस्मरणीय पं० कन्हैयालाल जी ढंढ की पाठशाला में भेज दिया, जहाँ कुशाग्र बुद्धि बालक गोपालदास ने विधिवत् शिक्षा प्राप्त की। आयुर्वेदीय चिकित्सा का ज्ञान भी उन्होंने यहीं प्राप्त किया।

बालक गोपालदास को सब प्रकार से योग्य समझ कर महंत मुकन्ददास जी ने उन्हें अपना पटशिष्य बनाया और वि०सं० १९५१ में उनका नाम बही-भाटों की बही में लिखा दिया। सं० १९५८ वि० में मुकन्दास जी का स्वर्गवास होने पर गोपालदास जी ने जेठ वदी ४ सं० १९५८ को उनका मेला किया और वे इस मन्दिर के महंत बने।

कहा जाता है कि इस मन्दिर को वि० स० १७२५ में गोलसिंहजी लखोटिया ने बनवाया था। पहले मन्दिर बहुत छोटा ही था और बाद में धीरे-धीरे-इसका विकास होता रहा। शुरू-शुरू में सलेमाबाद से नारायणदास जी यहाँ आये थे और उन्होंने ही यहाँ निम्बार्क सम्प्रदाय की गद्दी स्थापित की थी। लगभग उसी समय बड़े मन्दिर का भी निर्माण हुआ और नारायणदास जी ही बड़े मन्दिर के भी महंत बने और बड़े मन्दिर में भी निम्बार्क सम्प्रदाय की गद्दी स्थापित हुई। नारायणदास जी के बाद मोहनदास जी और उनके बाद अमरदास जी दोनों मन्दिरों के महंत बने। अमरदास जी के दो मुख्य शिष्य थे, सजरामजी और बेणीदास जी, जिनमें से सजराम जी छोटे मन्दिर के महंत रहे और बेणीदास जी बड़े मन्दिर की गद्दी पर आ गये। सजराम जी के बाद हरिदास जी, संध्यादास जी, जानकीदास जी और मुकन्ददास जी क्रमशः छोटे मन्दिर के महंत बने और मुकन्ददास जी के बाद स्वामी गोपालदास जी ने इस गद्दी को सुशोभित किया। उधर बड़े मन्दिर में बेणीदास जी के बाद क्रमशः गरीबदास जी, प्रभातीदास जी, सदाराम जी, ध्यानदास जी, सालगदास जी और गणपतिदास जी (वर्तमान) महंत हुए।

बालक गोपालदास जी की प्रवृत्ति शुरू से ही सार्वजनिक कार्यों की ओर बहुत थी। १२—१३ साल की अवस्था में ही वृक्ष लगाने और उनकी रक्षा करने में उनकी विशेष रुचि हो गई थी, ऐसा उनके लिखे हुए सन् १८९५ के एक पत्र

से प्रकट होता है। बीज रूप में उनके मन की यह भावना आगे चलकर वट-वृक्ष के रूप में पल्लवित हुई। वास्तव में वे प्रकृति के लाडले पुत्र थे और हरी-भरी भूमि व प्राकृतिक दृश्यों को देखकर गद्‌गद हो जाते थे। बालक गोपाल-दास अपनी माता को बहुत अधिक प्यार करते थे। स्वावलम्बन का पाठ भी उन्होंने बचपन में उन्हीं से सीखा था क्योंकि अत्यन्त कष्ट और अभाव के क्षणों में भी उन्होंने किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया था और मेहनत-मजदूरी करके आत्मनिर्भरता के मार्ग का ही अनुगमन किया था। सादगी का पाठ स्वामी जी ने अपने शिक्षा-गुरु पं० कन्हैयालाल जी ढ़ंढ़ के जीवन से सीखा था। गुरु जी के प्रति उनके मन में बड़ी श्रद्धा थी और हर गुरु पूर्णिमा को स्वामी जी उनके चरण-स्पर्श करने के लिए जाते थे।

जन-सेवा की भावना स्वामी जी के मन में बालकपन से ही विद्यमान् थी और सन् १९५६ के भयंकर अकाल और उसके बाद की महामारियों में उन्होंने जनता-जनार्दन की सेवा अवश्य की होगी, लेकिन खेद है कि उसका कोई विवरण प्राप्य नहीं है। समाज में फैली अशिक्षा और कुरीतियों के प्रति उनके मन में बहुत क्षोभ था और वे समाज से इन बुराइयों का उन्मूलन करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने अपने कतिपय उत्साही साथियों के सहयोग से वि० स० १९६४ में सर्वहितकारिणी सभा की स्थापना चूरू में की जो आगे चलकर अपने कार्यों की विशिष्टता के कारण चूरू की कांग्रेस कहलाई। इसी सभा के माध्यम से स्वामी जी ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये।

स्वामी जी का जीवन संघर्षों का जीवन था। शुरू से ही उन्हें अनेक मोरचों पर लड़ना पड़ा। मन्दिर के मालिक सेठ हरदेवदास जी लखोटिया स्वामी गोपालदास जी को मान्यता देने के लिए तैयार नहीं थे। यद्यपि कशमकश तो स्वामी जी के गुरु मुकन्ददास जी के समय से ही चल रही थी लेकिन स्वामी जी के गद्दी पर बैठते ही इसने उग्र रूप धारण कर लिया और बात न्यायालय तक पहुँची। स्वामी जी ने अपने पक्ष का बड़ी दृढ़ता के साथ समर्थन किया और अन्त में उनकी विजय हुई। इस सिलसिले में उन्हें कई बार बीकानेर जाना पड़ा और चूंकि मन्दिर में जो थोड़ी-बहुत आमदनी (चढ़ावे के रूप में) हो जाती थी वह भी मालिकों के विरोध के कारण बन्द हो गई थी अतः स्वामी जी ने चूरू से बीकानेर की ६० कोस की कठिन यात्रा कई बार पैदल ही की। ठाकुरसी-दास जी बजाज ने इस सम्बन्ध में एक संस्मरण सुनाते हुए कहा कि एक बार जब स्वामी जी बीकानेर जा रहे थे तो राजलदेसर और डूंगरगढ़ के बीच प्यास के मारे व्याकुल हो गये। ग्रीष्म ऋतु थी और मीलों तक कहीं पानी का नामो-निशान नहीं था। स्वामी जी ने सोचा कि आज निश्चय ही प्राण मुक्त होंगे।

लेकिन दैवयोग से एक चरवाहा उधर से आ निकला और उसने स्वामी जी को अपनी लोटड़ी में से पानी पिलाकर उनके प्राण बचाये। उसी दिन स्वामी जी ने इस मरु-भूमि में पानी के अभाव को सर्वाधिक अनुभव किया और इसके निवारणार्थ वे कृतसंकल्प हो गये। उस स्थान पर तो सेठ कन्हैयालाल जी बागला द्वारा स्वामी जी ने एक कुआँ बनवाया ही किन्तु आगे चलकर उन्होंने सैकड़ों गाँवों में कुएँ और कुण्ड बनवाये, तालाब खुदवाये और टूटे-फूटे जलाशयों का जीर्णोद्धार करवाया।

स्वामी जी बड़े आस्तिक और ईश्वर में सच्ची निष्ठा रखने वाले व्यक्ति थे। बड़े तड़के उठकर और नहा-धोकर नित्य प्रातःकाल ४ बजे नियमपूर्वक भगवान् की आरती उतारते थे, लेकिन धर्म के नाम पर संकीर्णताओं के लिए उनके मन में जरा भी स्थान नहीं था। सर्वहितकारिणी सभा की स्थापना के समय भी ऐसे नियम बनाये गये थे कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, जैन और बौद्ध सभी सभा के सदस्य बन सकते थे। सर्वहितकारिणी सभा के प्रयत्न से बनाये गये धर्म-स्तूप पर स्थापित भगवान् श्रीकृष्ण, महावीर और बुद्ध आदि की मूर्तियाँ आज भी सर्वधर्मों के प्रति स्वामी जी की समादर की भावना को व्यक्त कर रही हैं। लेकिन वे धर्म के नाम पर समाज में प्रचलित ढोंगों के सर्वथा विरुद्ध थे और इसी से संकीर्ण विचारधारा वाले कुछ लोग स्वामी जी व उनकी संस्थाओं के विरुद्ध प्रचार करने में संलग्न रहते थे। लेकिन यों दाल गलती न देखकर वे लोग गुप्त रूप से इस प्रकार की शिकायतें बीकानेर सरकार को पहुँचाने लगे कि स्वामी गोपालदास राज्य-विरोधी कार्यवाहियाँ करता है, इत्यादि। इसके फलस्वरूप सरकार की आँख स्वामी जी व सर्वहितकारिणी सभा पर लग गई और अनेक बार सभा को संकट की घड़ियों से गुजरना पड़ा।

समाज के पिछड़ेपन का पता तो इसी बात से लग जाता है कि जब स्वामी जी ने नारी-शिक्षा के लिए सर्वप्रथम चूरू में सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला की स्थापना की तो बहुत से लोगों ने इसे एक धर्म-विरुद्ध कार्य बतलाया और विरोध-स्वरूप शाला में पत्थर बरसाये। लेकिन स्वामी जी समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए नारी-शिक्षा को बहुत आवश्यक समझते थे अतः उन्होंने इस विरोध की जरा भी परवाह नहीं की और पुत्री पाठशाला का संचालन बड़े सुन्दर ढंग से होता रहा। पाठशाला का पाठ्यक्रम भी सभा की ओर से ही तय होता था और बालिकाओं को पुस्तकें व पढ़ाई का सारा सामान मुफ्त दिया जाता था। बालिकाओं को सीने-पिरोने आदि की भी शिक्षा दी जाती थी और उनमें राष्ट्रीय भावनाएं भरी जाती थीं, चर्खे के गीत भी उन्हें गवाये जाते थे। विधवा स्त्रियों को मासिक वृत्ति देकर शिक्षा दी जाती थी। स्वामी जी के प्रयत्न से शाला का

निजी मकान भी बन गया जिसमें उन्होंने शिल्प-भवन की स्थापना भी करवाई, बोर्डिंग हाउस भी खोला गया तथा बालिकाओं के लिए खेल-कूद व मनोरंजन के साधन भी जुटाये गये। नारी-शिक्षा के लिए न केवल चूरू में बल्कि अन्य बहुत से नगरों में भी उन्होंने पुत्री पाठशालाएं खुलवाईं, रिणी (अब तारानगर) की पुत्री पाठशाला का संचालन तो बहुत वर्षों तक सभा द्वारा ही होता रहा।

अछूतों को शिक्षा देकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने के अभिप्राय से स्वामी जी ने उनके लिए "कबीर पाठशाला" की स्थापना की। अछूतों (हरिजन शब्द तब इस रूप में प्रचलित नहीं हुआ था) के लिए राजस्थान में पाठशाला खोलना उन दिनों एक आश्चर्यजनक बात ही समझी गई क्योंकि अछूतोद्धार आन्दोलन के प्रवर्तक महात्मा गाँधी का अवतरण भी तब राजनीति में नहीं हुआ था। लेकिन स्वामी जी ने इस बात की आवश्यकता को बहुत पहले ही अनुभव कर लिया था और न केवल चूरू में बल्कि अन्य अनेक स्थानों में भी उन्होंने प्रयत्नपूर्वक हरिजन पाठशालाएं खुलवाई और उनको सहायता दिलवाई। बीकानेर राज्य में अनिवार्य शिक्षा की माँग भी सर्वप्रथम यहीं से की गई जिसके फलस्वरूप राज्य भर में अनेक प्राथमिक स्कूलें खोली गई।

इस प्रकार सभा के अन्तर्गत पुस्तकालय, वाचनालय, पुत्री पाठशाला, कबीर पाठशाला, उद्योगवर्द्धिनी सभा, आतुरालय तथा महिलाश्रम आदि स्थापित किये गये और सभा की शाखाएं बीकानेर और जयपुर राज्य के अनेक गाँवों और कस्बों में स्थापित की गई जिनके द्वारा जनसेवा और जन-जागृति का बहुत कुछ कार्य हुआ।

स्वामी जी अत्यन्त दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति थे और एक बार निर्णय कर लेने पर विघ्न-बाधाओं और विपदाओं के डर से अपने निश्चय को कभी बदलते नहीं थे। सर्वहितकारिणी सभा की स्थापना यद्यपि वि० स० १९६४ में वे कर चुके थे लेकिन सभा का निजी मकान नहीं बन पाया था, इसलिए राज्य की अप्रसन्नता और कुछ नासमझ लोगों के विरोध के कारण सभा को बार-बार स्थान बदलना पड़ता था। इससे क्षुब्ध होकर स्वामी जी ने प्रतिज्ञा की कि जब तक सभा का अपना मकान नहीं बन जाएगा तब तक अन्न ग्रहण नहीं करूंगा। और जब तक सभा का निजी मकान नहीं बन गया तब तक वे फलाहार ही करते रहे और अन्त में उन्होंने किले के ठीक सामने सभा का सतमंजिला मकान बनवाकर ही अन्न ग्रहण किया। इतनी थोड़ी सी जगह में ऐसी भव्य इमारत बना

१८ की महामारियों—शीत ज्वर, प्लेग और इन्फलुएन्जा के समय अपने प्राणों को हथेली पर रखकर निष्काम भाव से उन्होंने जो सेवा की उसकी मिसाल मिलना दुर्लभ है। इसी प्रकार अकाल व प्रकृतिजन्य प्रकोपों के समय वे तन-मन से जनता जनार्दन की सेवा करते रहे। मोगा मंडी के सुप्रसिद्ध नेत्र-चिकित्सक डा० मथुरादास जी माथुर को कई वर्ष तक चूरू में बुलवाकर उन्होंने हजारों नेत्रविहीनों को फिर से दुनिया की रोशनी देख सकने योग्य बनाया। सर्वहित-कारिणी सभा की ओर से सेवा कार्य करने के लिए नाशिक, कुंभ, थानेश्वर आदि तक स्वयंसेवक जाया करते थे। स्वामी जी की यह सेवा-भावना अन्त समय तक वैसी ही बनी रही। महाप्रयाण से लगभग महीने भर पूर्व दिनांक ५-१२-३८ को ही उन्होंने लक्ष्मण झूला से सेठ रामवल्लभ सरावगी को लिखा था, "तुम मुझे बार बार बुलाते हो, परन्तु मुझ से चूरू में कोई सेवा लेना चाहे तो आ सकता हूँ बाकी इस प्रकार मेरा आना व्यर्थ है।" जनसेवा से रहित जीवन को वे व्यर्थ समझते थे। उनकी सेवा में पूर्ण आत्मीयता होती थी।

स्वामी जी गोवंश को भारत के लिए बहुत आवश्यक मानते थे और गोवंश की वृद्धि, सुधार व रक्षा के लिए वे आजीवन प्रयत्नशील रहे। रुपये होते हुए भी अर्थ-कष्ट के कारण बन्द होती हुई चूरू गोशाला को उन्होंने नव जीवन प्रदान किया, यद्यपि इसके लिए उन्हें सम्बन्धित कुछ व्यक्तियों की नाराजी भी सहनी पड़ी। अकाल के समय वे सब कुछ भुला कर गायों की रक्षा के लिए तत्परता से जुट पड़ते थे। गायों के हित-साधन और नगर की ओर बढ़ते आ रहे टीलों की रोक-थाम के लिए उन्होंने वर्षों तक अपना खून-पसीना बहाकर हजारों बीघा गोचर भूमि तैयार की, जिससे प्रेरणा पाकर आस-पास के अनेक नगरों में भी गोचर भूमियाँ तैयार करवाई गई। कहना न होगा कि इन सब को तैयार कराने में स्वामी जी का पूर्ण योग रहा।

आयुर्वेद के प्रति स्वामी जी की बड़ी आस्था थी। वे स्वयं अच्छे चिकित्सक थे और बहुत से उलझे हुए रोगियों का उन्होंने सफलतापूर्वक इलाज किया था। उनका निदान बहुत सही होता था। आयुर्वेद को अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए उन्होंने आयुर्वेद विद्यापीठ आदि के परीक्षा-केन्द्र भी चूरू में चालू करवाये थे। लेकिन अपने लिए वे जितने कठोर थे उतने ही दूसरों के लिए कोमल भी थे, अतः रोगी किस प्रकार आरोग्य लाभ करे इस चिन्ता में वे स्वयं भी घुलने लगते थे।

नगर के विकास के लिए वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे। रेलवे स्टेशन से लगाकर शहर तक सड़क बनवाने और उसके दोनों किनारों पर छायादार वृक्ष लगवाने में उन्होंने बड़ा उद्योग किया। इसी प्रकार उन्होंने सड़क के ऊपर

सुन्दर धर्मस्तूप और उसके नजदीक रमणीक इन्द्रमणि पार्क बनवाया जिससे नगर की शोभा अत्यधिक बढ़ गई। नगर को वे एक सुन्दर टाउन हॉल भी देना चाहते थे और तत्कालीन बीकानेर राज्य के प्रधानमंत्री सर मनुभाई मेहता इसके लिए एक प्रकार से स्वीकृति भी दे गये थे, लेकिन बीकानेर राज्य षड्यंत्र केस के सिलसिले में स्वामी जी के जेल भेज दिये जाने से टाउन हॉल की योजना अधूरी रह गई जो आज तक भी पूरी नहीं हो सकी।

स्वामी जी को देशाटन का बड़ा चाव था। राजस्थान में तो उनके दौरे प्रायः होते ही रहते थे क्योंकि स्वामी जी और सर्वहितकारिणी सभा की ख्याति बहुत अधिक हो चुकी थी और स्थान-स्थान से स्वामी जी के पास निमंत्रण आते रहते थे। राजस्थान के बाहर भी उत्तर में काश्मीर से लेकर दक्षिण में रामेश्वर तक और पश्चिम में द्वारिका से लेकर पूर्व में कलकत्ता तक वे खूब घूमे थे। कुंभ, प्रयाग, वैजनाथधाम तो वे जाते ही रहते थे। इस प्रकार देशाटन करने से उनको अनेक बातों का वास्तविक अनुभव हुआ और लोकसंपर्क बढ़ा। कभी-कभी वे इन यात्रा वर्णनों को लिपिबद्ध भी कर लेते थे जो बड़े ही रोचक होते थे। ऐसा ही एक छोटा सा यात्रा वर्णन नगर-श्री को प्राप्त हुआ जिसे पढ़ने से ज्ञात होता है कि कला और संस्कृति के प्रति उनके मन में सहज आकर्षण था तथा कलापूर्ण वस्तुओं व प्राकृतिक दृश्यों को देखकर वे भावविभोर हो जाते थे। हिन्दी से स्वामी जी को बड़ा लगाव था और इसकी उन्नति के लिए वे निरन्तर प्रयत्नशील रहते थे।

स्वामी जी का कार्यक्षेत्र विस्तृत था और सभी वर्ग के लोगों के साथ उनके बड़े अच्छे सम्बन्ध थे। बीकानेर राज्य के छोटे कर्मचारियों की तो बात ही क्या, प्रधानमंत्री सर मनुभाई मेहता तक से स्वामी जी के अच्छे सम्बन्ध थे। मि० जी० डी० रिड़किन और खान बहादुर रुस्तम जी (गृह और अर्थमंत्री) स्वामी जी के कार्यों से बहुत प्रभावित थे। रुस्तम जी ने तो अपने बेटे श्री फीरोज के यज्ञोपवीत संस्कार पर जो बम्बई में २४ अप्रैल सन् २६ को हुआ, खास तौर पर स्वामी जी को निमंत्रित किया था। इसी प्रकार राजवी गुलाबसिंह जी इंस्पेक्टर जनरल पुलिस व रायबहादुर ठा० भूरसिंह जी, रेवेन्यू कमिश्नर आदि से स्वामी जी के अच्छे ताल्लुकात थे। राजवी गुलाबसिंह जी और कुं० सबलसिंह जी आदि के तो स्वामी जी के नाम लिखे कई निजी पत्र भी नगर-श्री के संग्रहालय में मौजूद हैं। वैसे बीकानेर सरकार भी स्वामी जी के कार्यों से प्रभावित थी और सरकार की ओर से कई मामलों में उनकी सलाह ली जाती थी। विशेष अवसरों पर उन्हें लेजिस्लेटिव असेम्बली के अधिवेशन में भी निमंत्रित किया जाता था।

इसी प्रकार राजस्थान भर के कार्यकर्त्ताओं, प्रचारकों, उपदेशकों और नेताओं से स्वामी जी के प्रगाढ़ सम्बन्ध थे। राजस्थान के तत्कालीन वरिष्ठ नेताओं की स्वामी जी के बारे में बहुत ऊँची राय थी। तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं से भी स्वामी जी सम्बन्धित थे और अनेक पत्रों में उनके लेख बराबर निकलते रहते थे। योगी, संन्यासी और महात्माओं से भी स्वामी जी का बहुत संपर्क रहता था। बड़े-बड़े करोड़पतियों से भी स्वामी जी का घनिष्ठ संपर्क था और वे उनका पूर्ण विश्वास और सम्मान करते थे। स्वामी जी भी उनके धन का सदुपयोग सार्वजनिक और राष्ट्रहित के कार्यों में प्रकट या अप्रकट रूप से करवाते ही रहते थे।

अपने सहयोगियों और साथी मित्रों के प्रति उनका प्रेम सहोदर भ्राता के तुल्य रहता था और वे सब कार्यों का श्रेय अपने साथियों या सर्वहितकारिणी सभा के सदस्यों को ही देते थे। अपने मित्रों के प्रति वे बहुत वफादार थे। उनके साथी और मित्र निःसंकोच अपने मन की बात स्वामी जी से कहते थे और स्वामी जी भी हर प्रकार से उनकी सहायता करने को तत्पर रहते थे। कलाकारों, साहित्यकारों, विद्वानों व विशिष्ट महापुरुषों के प्रति उनके मन में बड़ा सम्मान था। तुलसीदास जी की जयंती वे बड़े प्रेम और उत्साह से मनाते थे। इसी प्रकार चूरू के तत्कालीन संत प्रातःस्मरणीय श्री मानीनाथ जी के प्रति उनके मन में बड़ी श्रद्धा थी। अपने समय के प्रकांड विद्वान् चूरू के पं० गणपति जी शर्मा का भी वे बहुत सम्मान करते थे और उनके असामयिक निधन से उन्हें बहुत दुःख हुआ था। यों तो मानव मात्र के लिए ही उनके मन में बहुत प्यार था लेकिन चूरू के लोगों को वे अत्यधिक प्यार करते थे, वे जहाँ भी होते चूरूवासियों की कुशल-क्षेम पूछते रहते। यदि किसी के अस्वस्थ होने का समाचार सुन लेते तो पत्र द्वारा उसके सम्बन्ध में आवश्यक पूछताछ करते थे।

जनता में चेतना और जागृति लाने के लिए वे बड़े-बड़े नेताओं और व्याख्यान-दाताओं को चूरू में बुलवाकर उनके भाषण करवाते थे। सभा का वार्षिक उत्सव हर साल बड़ी धूमधाम से मनाया जाता था, जिस पर राजस्थान व बाहर से भी विशिष्ट व्यक्तियों को निमंत्रित किया जाता था। स्वामी जी स्वयं तो खद्दर पहनते ही थे लेकिन खद्दर, चर्खे व स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार के लिए वे निरन्तर प्रयत्नशील रहे। यद्यपि तत्कालीन बीकानेर राज्य की स्थिति इतनी दमघोटू थी कि सभा में तिलक महाराज आदि नेताओं के चित्र लगा देने मात्र से ही एक तूफान खड़ा हो गया था और भविष्य में ऐसा कभी न करने के लिए स्वामी जी को कड़ी चेतावनी दी गई थी, लेकिन स्वामी जी ने कभी रत्ती भर भी इन बातों की परवाह नहीं की और वे आजीवन राष्ट्रहित और देश-जागृति के कार्यों में

भाग लेते रहे। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के वे सदस्य थे और प्रान्त की ओर से नेशनल कांग्रेस के लिए अनेक बार डेलीगेट निर्वाचित हुए थे। दिनांक २-१२-२४ को प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री श्री अर्जुनलाल जी सेठी ने स्वामी जी को लिखा था, "आप डेलीगेट होकर बेलगाँव पधारेंगे तो प्रान्त का गौरव बढ़ेगा।" कांग्रेस का यह ३९वाँ महत्वपूर्ण अधिवेशन था जो महात्मा गाँधीजी के सभापतित्व में हुआ था। लेकिन स्वामीजी को तो बस काम करने की ही धुन लगी रहती थी—पदलिप्सा और प्रदर्शन की भावना से वे कोई काम न करते थे।

सन् ३२ में बीकानेर राज्य में जब अन्न पर बहुत अधिक जकात लगाई गई तो स्वामी जी ने इसका तीव्र विरोध अवश्य किया था, लेकिन उन्होंने कभी भी बीकानेर राज्य के विरुद्ध कोई षड्यंत्र नहीं रचा। फिर भी जब कतिपय राज्याधिकारियों की साजिश के कारण उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया तो उन्होंने मुकदमे की कार्यवाही में कोई भाग नहीं लिया, क्योंकि वे जानते थे कि बन्दियों के साथ न्याय नहीं, केवल न्याय का प्रदर्शन हो रहा है। बीकानेर षड्यन्त्र केस की गूँज समूचे भारतवर्ष में सुनाई दी और देश भर के प्रमुख अखबारों ने इस षड्यन्त्र केस की खबरों को प्रमुखता से छापा। महात्मा गाँधीजी व पं० जवाहरलाल जी नेहरू भी इसके विरोध में बोले। बम्बई व अन्य बहुत से नगरों में डिफेंस कमेटियाँ बनीं और बीकानेर-दिवस मनाया गया।

स्वामी जी लगभग ३॥ वर्ष तक कारावास में रहे, लेकिन वहाँ रहते हुए भी उन्होंने एक आदर्श बन्दी का जीवन बिताया। दो साल बाद उन्हें पत्र लिखने व पुस्तकें पढ़ने की सुविधा मिल गई तो वे अपना अधिकांश समय अध्ययन में ही बिताते थे। यों उनकी प्रकृति गंभीर थी, लेकिन कभी-कभी बहुत मीठी चुटकियाँ भी लेते थे; उनका यह विनोदी स्वभाव जेल में भी बना रहा जो उनके पत्रों से ज्ञात होता है। बीकानेर सेंट्रल जेल को वे एक बड़ा परिवार मानते थे और बन्दीगृह के सभी बन्दियों के साथ भाईचारे का सम्बन्ध रखते थे। सन् ३४ में जब सेठ सूरजमल जी जालान रतनगढ़ वाले उनसे जेल में मिले और उन्होंने स्वामी जी के सम्मुख भोजन करने का प्रस्ताव रखा तो स्वामीजी ने इनकार कर दिया। स्वामी जी को यह कदापि स्वीकार्य नहीं था कि वे अकेले तो सुस्वादु भोजन करें और शेष भाई जेल के रूखे टुकड़े खाएँ। लेकिन सेठ जी ने स्वामी जी के इस भाव को समझ लिया और अंत में जेल के सभी ६०० बन्दियों ने एक साथ बैठकर सेठ जी का आतिथ्य ग्रहण किया।

स्वामी जी का कद लम्बा, रंग गेहुआँ और ललाट प्रशस्त था। सफेद खद्दर का धोती, कुर्ता और साफा, यही उनकी पोशाक थी। उनकी वाणी में अपूर्व गंभीरता थी। जेल-जीवन में उन्होंने दाढ़ी और जूड़ा रख लिया था, उनके चेहरे पर

घनी दाढ़ी खूब फबती थी। स्वामी जी का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था और उनके त्याग व बलिदान ने उनके व्यक्तित्व को और भी अधिक निखार दिया था। अत्यंत अभावग्रस्त घर में जन्म लेकर भी वे इतने प्रभावशाली हुये कि बड़े-बड़े करोड़पति उनके चरणों में झुकते थे। इसका कारण यह नहीं था कि उन्होंने कोई मंत्र-सिद्ध की हो, बल्कि यह सब उनकी निस्पृहता का फल था। यदि वे चाहते तो एक बहुत बड़ी धन-राशि इकट्ठी कर सकते थे, लेकिन ऐसी बात तो कभी उनके मन में भी नहीं आई। उनकी ईमानदारी असंदिग्ध थी और यही कारण था कि मृत्यु के बाद उनके बटुये में से सिर्फ डेढ़ आने की पूँजी निकली थी। अलबत्ता भविष्यदृष्टा वे अवश्य थे, भविष्य में घटनेवाली कई घटनाओं का आभास उन्हें पहले ही मिल गया था और समय आने पर वे ज्यों की त्यों घटित हुई। ऐसी अनेक बातें उनके अनन्य साथी महंत गणपतिदास जी व वैद्य शान्त शर्मा जी ने बतलाईं।

स्वामीजी के आध्यात्मिक विचार बड़े ऊँचे थे जिनकी झलक पत्र-पत्रिकाओं में छपी उनकी कुछ वक्तृताओं से मिलती है। जेल से छूटने के बाद स्वामीजी का जो वक्तव्य दिनांक २ सितम्बर सन् १९३५ के "राजस्थान" में प्रकाशित हुआ था, वह उनके आध्यात्मिक विचारों पर बहुत सुन्दर प्रकाश डालता है। श्री सूरज-मल जी जालान उनके आध्यात्मिक विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे। श्री सूरजमल जालान स्मृति ग्रंथ, पृ० २५५ पर लिखा है—"इसी समय से वे (सूरज-मल जी) वेदान्त में बहुत अधिक आसक्त-से हो गये थे। जब स्वामी गोपाल-दासजी मिल जाते, तब तो मानो उन्हें इस विषय का अधिकारी विद्वान् ही साथ मिल जाता था। हम कह सकते हैं कि स्वामीजी को देश भर में लोगों ने एक राज-नीतिक कार्यकर्ता के ही रूप में देखा, पर वे हर दृष्टि से जीवनमुक्त व्यक्ति थे। उनका प्रभाव ही बड़े बाबू पर अधिक पड़ा, जिससे वे जीवन-मुक्त बनने लगे थे।"

स्वामी जी एक कर्मठ राष्ट्रकर्मी और निष्ठावान् जनसेवी थे। जनसेवा की यह भावना उनके मन में महाप्रयाण तक वैसी ही बनी रही जो उनके अन्तिम पत्र (पौष सुदि ५-१९९५ वि०) में भी झलक रही है। पत्र के अन्त में उन्होंने लिखा है—मेरा चित्त इस समय तक बहुत प्रसन्न है और मन में किसी प्रकार का

स्वामी जी का प्रथम पत्र

स्वामी गोपालदास जी के हाथ का लिखा हुआ प्रथम पत्र जो "नगर-श्री" को प्राप्त हुआ है, वह है आज से ७२ वर्ष पूर्व का लिखा हुआ रानी विक्टोरिया के समय का पाव आना वाला छोटा पोस्टकार्ड, जिस पर १६ सितम्बर ६७ की मुहर अंकित है। रानी विक्टोरिया के बाद इंगलैंड के राज्यसिंहासन पर एडवर्ड सप्तम, जार्ज पंचम, एडवर्ड अष्टम, जार्ज षष्ठ बैठ चुके और अब रानी एलिजाबेथ इस राजगद्दी पर आसीन है। छः युगों की इस अवधि में संसार में अनेक परिवर्तन हो चुके हैं, बड़ी बड़ी क्रान्तियाँ हुईं, दो विश्वयुद्ध लड़े गये, हमारा देश आजाद हुआ, अणुयुग का आरंभ हुआ और मानव चन्द्रलोक पर पहुँचने का प्रयत्न करने लगा।

प्रस्तुत पत्र लिखने के समय स्वामीजी की अवस्था लगभग १२ वर्ष की रही होगी, लेकिन उस छोटी अवस्था में भी वृक्ष लगाने और उनकी रक्षा करने की चिन्ता उन्हें कितनी अधिक थी, यह इस पत्र से ज्ञात होता है। पत्र में दो ही संक्षिप्त समाचारों को दो बार लिखा गया है, माजी को राजी-खुशी का समाचार देना और पीपल वृक्षों की पूरी तरह निगरानी रखना। पूरा पत्र इस प्रकार है--

श्रीरामजी

" सिद्धश्री चूरू सुभ सुथानेक, भाई गीगदास जोग लिखी सिरदारगढ़ सेती गोपालदास का राम राम बंचणा। और भाई जी पीपलां की निगै पूरी राखी जो और हमारो आवणो दिन १० तथा १२ ताई होवैगो और माजी नै हमारा राजी खुशी का समंचार कै दीजो और चिटी पाछी दोजो। बगीची जाय कर हमारी माजी नै राजी खुसी का समंचार जरूर कै देई जो। हमां भोत राजी खुसी छां। पीपलां की ख्यांत पूरी राखी जो।

सर्वहितकारिणी सभा की स्थापना और प्रारम्भिक कार्य

स्वामी गोपालदास जी का जन्म तो जनसेवा के लिए ही हुआ था। उन्हों जनसेवा का कोई अवसर शायद ही हाथ से जाने दिया हो। वि० सं० १९५ में जो महाभयंकर दुर्भिक्ष (छपनिया काल) पड़ा था, उसमें भी और उसके बाद भी उन्होंने जनता जनार्दन की बहुमूल्य सेवा निश्चित रूप से की होगी, लेकिन खेद है कि हमारे पास ऐसी कोई सामग्री उपलब्ध नहीं है कि जिससे उनके इन सेवा-कार्यों पर कुछ प्रकाश पड़ सके। वि० सं० १९६४ के चैत्र में उन्होंने अपने समाज-सेवी साथियों के सहयोग से "सर्वहितकारिणी" सभा की स्थापना की थी जिसे चूरू की कांग्रेस ही कहना चाहिए। सभा के मुख्य चार उद्देश्य अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य और अस्तेय थे, लेकिन इसके अवान्तर उद्देश्यों की संख्या बहुत बड़ी थी। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सभा ने अथक उद्योग और कठिन संघर्ष किये, जिनसे कई बार सभा का अस्तित्व भी खतरे में पड़ गया, लेकिन तिस पर भी सभा निरन्तर कर्मरत रही। सभा के आजीवन सभापति स्वामी जी के पूज्य गुरुवर चूरू के सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वनामधन्य पं० कन्हैयालाल जी ढंढ निर्वाचित हुए और मंत्री पहले तीन वर्ष तक श्रीराम जी और फिर स्वयं स्वामी जी बने। सभा की ख्याति शीघ्र ही दूर-दूर तक फैल गई और स्थान-स्थान से स्वामी जी के पास विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाएँ आने लगीं। इस सम्बन्ध में जो प्रथम पत्र प्राप्त हुआ है वह दिनांक २३-१२-१० का है जो जोधपुर से लिखा गया है। पत्रलेखक श्री लूनकरन लिखते हैं--

१९०९ में करीबन ३०० जानवर जिनमें करीबन १५० के गौ-बछड़े बाकी में ऊँट वगैरै थे कट गये और सालाना यह बढ़ता ही जाता है ।

(३) इससे गौवध और उसके साथ-साथ उन ऊँट व गाय वाले मालिकों का भी जीवित मरण होता है, क्योंकि आपको यह अच्छी तरह से ज्ञात है के उन मालिकों की तो रोजी ही वे जानवर हैं ।

(४) गौवों और रिआया की रक्षा करना राजाओं का परम धर्म है और इसी-लिए देशी राज्यों में गोवध नहीं हो सकता है । पर उस दोनों तरफ के तार का खर्च बचाने के ही लिए रेलवे ये तार नहीं लगाती है ।

(५) सोचने से मालूम होता है के यह सब गोवध वगैरः होने की बात श्रीमान हिज हाईनेस महाराज श्री बीकानेर को ज्ञात नहीं, वरना वो धर्म के सामने इस तार लगाने के तुच्छ खर्च का खयाल ना करके फौरन ही इस बात के लिये रेल वालों को आज्ञा दे देते ।

(६) आपकी सभा सर्वहितकारिणी सभा है, इसमें गौहित, रिआया-हित और महान धर्म्म है । इसलिए आपसे प्रार्थना है कि आप इसे यथायोग्य लिख कर महाराज साहब के कर्णों तक पहोंचाने के प्रबन्ध करें । आशा है यह प्रार्थना निष्फल नहीं होगी । मैं परसों हिसार जाऊँगा, इसलिए पत्र का उत्तर वहीं दें । ठाकरसीदास जी से प्रणाम कह दें ।

भवदीय

(नगर-श्री, पत्र सं० २०८) लूनकरन

कहना न होगा कि स्वामी जी ने अन्य कार्यों के साथ इसे भी हाथ में ले लिया और प्रयत्नशील हो गये । इस सम्बन्ध में अधिक तो कुछ ज्ञात नहीं हो सका लेकिन उन दिनों कलकत्ता से निकलने वाले पत्र की एक कतरन हमें प्राप्त हुई है जिससे सम्बन्धित विषयों पर कुछ प्रकाश पड़ता है । शायद यह कतरन महा-राजा बीकानेर को दिये गये ज्ञापन की नकल का आधा हिस्सा है । दैनिक पत्रों में आधी खबर प्रायः एक पृष्ठ पर दे दी जाती है और शेष आधी किसी दूसरे पृष्ठ पर । खेद है कि हमें केवल बाद वाली शेष कतरन ही प्राप्त हो सकी है । कतरन पर ता० १४-३-१२ स्याही से अंकित की गई है । कतरन का मजमून निम्न है—

(३) तीसरा सवाल म्युनिसपैलिटी का है । प्रजा की इच्छा है कि इसको स्वतंत्रता दी जाय और इसका अलहदा महकमा करके आमदनी

और खर्च पर उसको पूरा अधिकार दिया जाय। इससे बहुत फायदे होने की आशा है।

चौथा सवाल यह कि यहाँ पर गौवों के चरने को जमीन नहीं है। गौवों को बड़ा दुःख होता है, इसलिए गोचरभूमि (बीड़) छोड़ दी जाय।

अन्तिम प्रार्थना श्रीमान को धन्यवाद लोकप्रिय कार्यों के ध्यान पर दिया जाता है और विशेष कर रेलों के फैलाव की तरफ जिससे प्रजा को बहुत फायदे है और अगाड़ी होंगे। विशेष अर्ज यह है कि डि०एच० रेलवे एक टाइम रात को आती है, जिससे मुसाफिरों को भीड़ के कारण तकलीफ होती है इसलिए एक टाइम और दिन को कर दी जाय और रेल के दुतरफा तार लगा दिये जाएँ, क्योंकि बहुत सी गायें और पशु बीच में आके कट जाते हैं। यह मनुष्य मात्र के चित्त दुःखने की बात है, विशेषकर हिन्दुओं के जब वे अपने सामने गायें कटती देखते हैं।

अन्नदाताजी की प्यारी प्रजा सहित—
सर्वहितकारिणी सभा के सभासद—चूरू

(बीकानेर राज्य में तब म्यूनिसपैलिटियाँ बनी ही थीं और सभा ने इनको अधिकार दिलाने के प्रयत्न शुरू कर दिये। स्वामी जी को गायों से बहुत अधिक प्रेम था, वे सच्चे अर्थों में गौभक्त थे, अनाथ और अपाहिज गायों की रक्षा और उनके भरण-पोषण के लिए स्वामी जी ने हजारों बीघा गोचर-भूमि छुड़वाई। चूरू में रेलगाड़ी भी तब खुली ही थी, लेकिन जनता की असुविधा और जानवरों के कटने की बात उन्होंने महाराजा तक पहुँचाई और उनके ये प्रयत्न भी सफल हुए।)

गुरुकुल मारवाड़ मण्डोवर जोधपुर

"ओ३म्"

संख्या ७६

सेवा में, श्रीमान पं० गोपालदास जी स्वामी, चूरू

नमस्ते।

पूर्व लिखित आज्ञानुसार निवेदन है कि स्थानिक गुरुकुल का आरंभोत्सव इसी १५ पूर्णमासी पर होने को है, परन्तु विघ्न इतना ही है कि आप सदृश विद्वान् और सदाचारी संस्कृत के विद्वान् उध्यापक की कमी है सो यदि इस देश के उद्धारार्थ आप श्रीमान इस परोपकारी कार्य में साहयभूत होकर इस पद को स्वीकार करके स्व करकमलों से खोल देवें तो महती धन्यवाद है, अस्तु।

और मैंने सुना है कि आजकल पं० श्री नृसिंह शर्म्मा जी भी आपके प्रान्त में ही उपदेशार्थ दौरा कर रहे हैं। सो आप के पास तो अवश्य ही आते रहते होंगे.. अतः आप और श्री स्वामी जी, पं० कन्हैयालाल जी महाराज, श्रीराम जी, ठाकरसीदास जी आदि सर्व विद्वमंडली पूर्णिमा को गु० कु० उत्सव पर अवश्य पधार कर दर्शन देवेंगे।.. और श्रीमान ने पहले दास के सामने जिक्र भी किया था कि किसी समय किसी प्रकार से देश की सेवा में ही लग जाने से मुझे शान्ति मिलेगी। इसलिये मुझे वह बात स्मरण हो आई...लेकिन राजपूताने में अभी तक किसी ने विशेष रूप से काम करके इस प्रान्त को लाभ नहीं पहुँचाया है अतः आप अपने पूर्व निश्चयानुसार उपरोक्त कुल में मुख्य अधिष्ठाता के आसन को सुशोभित करके कार्य चलावें तो फिर ये प्रान्त भी दूसरे प्रान्तों की तरह से उन्नति करने में पीछे नहीं रहेगा, ऐसा मुझे दृढ़ विश्वास है।

आप जानते हैं कि हमने कभी प्रान्तिक पक्ष से कार्य नहीं किया लेकिन अब पता लगता है कि संसार में क्या छोटे और क्या बड़े सब प्रान्तिक पक्षपात से भरे पड़े हैं, इसलिए हमें कठिनता पड़ती है कि दूसरे तो इस प्रकार टाल-मटोल करें और हमको हमारे-हमारे का खयाल भी नहीं। इसलिये ही तो आपको विशेष आग्रह से प्रार्थना की जाती है, हमें औरों से क्यों जबान हरानी पड़े जबकि हमारे घर में ही आप सदृश विद्वान मौजूद हैं।....

विशेष वृत्तान्त यहाँ पधारने से ज्ञात हो ही जायेगा।

लक्ष्मण सिंह वर्मा
मंत्री कमेटी, गुरुकुल मारवाड़
मण्डोवर, जोधपुर

शास्त्रार्थ महारथी स्व० पं० गणपति शर्मा चूरू की महान् विभूति थे। असाधारण संस्कृत भाषणपटु पादरी जानसन साहब को शास्त्रार्थ में पराजित कर इन्होंने चूरू की कीर्ति पताका को काश्मीर तक फहराया था और काश्मीर के पंडितों को पराजय से बचाकर उनकी लाज रखी थी। यह ऐतिहासिक शास्त्रार्थ श्रीनगर में स्वयं महाराजा काश्मीर की अध्यक्षता में हुआ था और पंडित जी की विजय पर महाराजा ने इनका बड़ा सम्मान किया था। इसी प्रकार उन्होंने अनेक शास्त्रार्थ महाराजा झालरापाटन, धार और देवास आदि के सभापतित्व में भी समय-समय पर किये थे। व्याख्यान शक्ति उनमें गजब की थी। रुड़की के सुप्रसिद्ध पादरी रेवरेण्ड जे० बी० फ्रेंक साहब उनके बड़े भक्त और प्रशंसक थे। इनका जन्म १५ अगस्त १८७२ ई० को चूरू में पं० भानीराम जी वैद्य के घर हुआ था। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में इन्होंने वेद, उपनिषद् दर्शनशास्त्र व व्याकरण का संपूर्ण अध्ययन किया और अपनी सेवाएँ आजन्म महाविद्यालय को समर्पित कर दीं। २७ जून १९१२ ई० को अचानक इनका देहांत हो गया।

शास्त्रार्थ महारथी स्व० पं० गणपति शर्मा

पंडित जी की पत्नी और उनके पुत्र का स्वर्गवास पहले ही हो गया था और अब पंडित जी की वृद्धा माता जी और छोटे भाई श्यामलाल घर में थे। पंडित जी ने सिर्फ कीर्ति रूपी पूँजी ही अर्जित की थी। स्वामी जी उनकी वृद्धा माता जी और भाई श्यामलाल के भरण-पोषण के लिए बहुत चिंतित हो उठे। उन्होंने इस सम्बन्ध में क्या प्रयत्न किये, यह तो ज्ञात नहीं लेकिन आर्य प्रतिनिधि सभा अजमेर का एक पत्र प्राप्त हुआ है, जिससे ज्ञात होता है कि स्वामी जी ने उक्त सभा को इस सम्बन्ध में कई पत्र दिये थे, पत्र इस प्रकार है—

ओ३म्

कार्य्यालय—श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

अजमेर

संख्या ८१६ ता० १८ अगस्त १६१२ ई०

श्रीमद्दयानन्दाब्द २६

श्रीयुत मंत्रीजी सर्वहितकारिणी सभा, चूरू (बीकानेर)

महाशय ! नमस्ते,

आपके पूर्व पत्रों से श्रीमान् पंडित गणपति जी की माता जी का वृतान्त ज्ञात हुआ था। कृपया उनके सम्बन्ध में जो वृतान्त हो उससे सूचित करें।

(२) पंडित जी के लघु भ्राता श्यामलाल जी का कुछ दिन हुए पत्र आया था कि मैं पढ़ना चाहता हूँ सो कृपया अब आप उनसे पूछ कर लिखें। यहाँ उनकी पढ़ाई का प्रबन्ध अच्छा कर दिया जावेगा और उनकी माताजी के रहने के लिये यहाँ ही प्रबन्ध हो जावेगा। यदि उन्हें स्वीकार हो तो सूचना प्रदान करें। मार्ग-व्यय यहाँ से भेज दिया जावेगा।

(३) सहायता का रुपया किसके नाम से भेजा जावे, कृपया सूचना प्रदान करें।

(४) किस-किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है पूछ कर सूचना देवें।

(५) चूँकि आप प्रतिदिन सब प्रकार से वहाँ सम्हाल सकते है अतः सम्हाल रखें और हमें सूचना देते रहा करें ताकि वैसा ही प्रबंध कर दिया जाया करे। पंडित जी की माता का हाल लिखें।

भवदीय

वंशीधर

(नगर-श्री, पत्र सं० १५५) मंत्री, प्रतिनिधि सभा राजस्थान

मास्टर श्रीराम जी ओझा चूरू के सुप्रसिद्ध समाजसेवी, स्वामी जी के निकटतम सहयोगी और अभिन्न मित्र थे। वि० सं० १६५५ के आसपास आप हिसार से इंट्रेंस की परीक्षा पास करके आये थे और अंग्रेजी की व्यावहारिक शिक्षा देने के लिए आपने अपने साथियों के सहयोग से सेखसरियों की दूकान के ऊपर प्रथम स्कूल खोला था। पिलानी के बिड़ला परिवार से आपका गहरा और घरेलू सम्बन्ध रहा। बाबू रामेश्वरदास जी और घनश्यामदास जी के आप शिक्षक रहे और बिड़ला परिवार में "मास्टर जी" के नाम से ही मशहूर रहे।

बाबू घनश्यामदास जी उनको बहुत मानते थे और निरंतर ही उनको अपने सान्निध्य में रखते थे। महामना मदनमोहन जी मालवीय उन्हें मित्रवत् मानते थे। मास्टर जी हिन्दी, अरबी, संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी और उर्दू के विद्वान् थे। उनके द्वारा लिखी गई "गीता सप्तशती" से उनके संस्कृत ज्ञान और महान विचारों का परिचय मिलता है। मास्टर जी जहाँ भी रहते चूरू के विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते। चूंकि वे स्वामी जी के समवयस्क साथी और अभिन्न मित्र थे अतः वे हमेशा एक मित्र की तरह खुल कर लिखते थे। उनकी लेखन-शैली बड़ी रोचक है और उनके पत्रों में विभिन्न विषयों का समावेश रहता है।

सर्वहितकारिणी सभा का तृतीय अधिवेशन वि० सं० १९६७ के बैशाख मास में हुआ था। उन दिनों मास्टरजी लक्ष्मीनाथ विद्यालय, फतहपुर के हेडमास्टर थे। स्वामी जी जागृति के लिए शिक्षा-प्रचार को बहुत आवश्यक मानते थे अतः इस उत्सव पर मास्टर जी का "विद्या प्रचार ही देश सेवा है" भाषण हुआ था, जिसमें सर्वाधिक बल इसी बात पर दिया गया था कि समाज में व्याप्त रूढ़ियों पर पैसा बर्बाद न करके शिक्षा-प्रचार में लगाया जाए। भाषण में स्व० बाबू लक्ष्मीनारायण जी बागला की विशेष रूप से प्रशंसा की गई थी क्योंकि उन्होंने सन् १९०१ में ही नगर में एक उत्तम विद्यालय खोलने के लिए अढ़ाई लाख रुपयों का दान दिया था, जो कदाचित् बीकानेर राज्य में शिक्षा के लिए दिया गया तब तक सबसे बड़ा दान था। इस भाषण को बाबू बालचन्द जी मोदी ने कलकत्ता से १६ पृष्ठों की एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करवाया था।

स्वामीजी के नाम मास्टर जी का पहला पत्र ९-४-१९१२ ई० का मिला

ओ३म्

प्रिय मित्र गोपाल,

पत्र मिला। सभा की रिपोर्ट संक्षिप्त रूप से तो 'भारतमित्र' में छपेगी और सम्पूर्ण रिपोर्ट मारवाड़ी में छपेगी। बेचारा सम्पादक अपनी सभा से बड़ी सहानुभूति रखता है। लेख भेजो सो सीधे इसी के नाम से भेज दिया करो। "भारतमित्र' वाले से कई बातों में झरपट हुई. . बोला, तुमने लिखा है सभा में मा० अर्द्ध मा०सा० दैनिक सब १७ पत्र आते हैं, दैनिक कौन सा निकलता है जो जाता है? मैंने उसको बड़ा लज्जित किया, क्या कोई "भारतमित्र" नाम का दैनिक पत्र नहीं है? लज्जित होकर बोला, क्या तुम्हारी सभा में जाता है? फिर तो बड़ा लज्जित और खुश भी हुआ। खैर, अपना पत्र रहेगा। पंडित जी

विशेष समाचार सुनिये—मित्र, चार दिवस से स्वामी शंकरानन्द आये हुए हैं, बगीचे में ही हैं। लोगों को (शिलारूप गठड़ी के पूरों को) अलग-अलग ले जाकर बात करते हैं। किसी को क्रिया सिखाते हैं; किसी को कुछ। मित्र, मुझे यह अनुचित प्रतीत होता था, परंतु मुझे भी कुछ अभिलाषा थी कि कुछ सीखूं। मैंने कई बार कहा, परंतु टाल ही बताता रहा। आज जाने वाला है। तब मैंने घनश्याम के सामने ही कहा, "महाराज, आप नहीं आये थे तब तक मुझे योग की बड़ी इच्छा थी, कल तक भी थी, परंतु अब मुझे किंचित् भी नहीं है"...मित्र अफसोस है योग-योग, करते ही मर जाएंगे। अपनी सभा के चार नियम ही सेवनीय हैं यही निश्चय हुआ। मित्र, क्या धन सिद्धों का गुलाम नहीं रहा है, क्या धन के गुलाम बने बिना कुछ सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती? शोक, शोक!

मित्र, ३०-४० हजार रुपया इस पुरुष ने जमा कर लिया है ऐसा अनुमान होता है। विचित्र मायावी है...चाहे यह साक्षात् शंकर ही होगा परंतु दौलतमंदों की खुशामद, उनसे रुपया लेना, एक-एक जेब में दस हजार रखना, यह बातें! मित्र, मुझे तो अश्रद्धालू बना दिया है।

कल कन्हैयालाल मिला था, स्यात् देवबन्धु से आया था। मजे में है।

(नगर-श्री, पत्र सं० १८१)

श्रीराम

('भारतमित्र' उन दिनों कलकत्ता से प्रकाशित होने वाला दैनिक पत्र था। श्री जगन्नाथ दास दुरानी (अग्रवाल) ने इसे वर्षों तक चलाया था। पं० रुद्रदत्तजी शर्मा, बालमुकुन्दजी गुप्त, अमृतलालजी चक्रवर्ती, पं० अम्बिकाप्रसादजी बाजपेयी, बाबूराव जी विष्णु पराड़कर और पं० लक्ष्मीनारायण जी गर्दे के सम्पादकत्व में 'भारतमित्र' ने मारवाड़ी समाज में बड़ी भारी जागृति उत्पन्न की।[1] सर्वहित-कारिणी सभा सम्बन्धी समाचार व स्वामी गोपालदास जी के लेख प्रायः इसमें निकला करते थे।

सर्वहितकारिणी सभा के अन्तर्गत जनता में समाचारपत्रों व राष्ट्रीय पुस्तकों के द्वारा जागृति पैदा करने के लिए सर्वहितकारी वाचनालय और पुस्तकालय की स्थापना तो हो ही चुकी थी। इसके बाद स्वामी जी ने स्त्री-शिक्षा के लिए "सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला" की स्थापना की, क्योंकि समाज के उत्थान के लिए वे नारी शिक्षा को बहुत आवश्यक समझते थे। उस समय संकीर्ण विचार धारा के लोगों ने पुत्री पाठशाला खोलने का पूर्ण विरोध किया। पाठशाला में पत्थर फेंक कर वे अपना रोष प्रकट करते थे, लेकिन स्वामी जी ने इसकी परवाह नहीं की और चूरू के पं० भगतराम जी दाधीच की धर्मपत्नी पार्वती देवी इस पाठशाला में प्रथम अध्यापिका नियुक्त हुई। पढ़ाई के साथ-साथ पाठशाला में शिल्पकला की भी शिक्षा दी जाती थी। मास्टर जी का निम्न पत्र इसी विषय पर कुछ प्रकाश डालता है—

पत्र कल मिला, फार्म भी मिले, परन्तु बहुत थोड़े भेजे। और मैं फतहपुर आया हूँ। दीपमालिका को १३-१४ चूरू पहुँचेंगे। सभा तथा कन्या पाठशाला का ढंग बहुत ठाट से दिखाना होगा। सभा की तारीफ कलकत्ता में भी हो रही है। रामकुमार जी दो दिन चूरू ठहरेंगे। एक व्याख्यान का प्रबन्ध करना होगा।

४०० सभासद् १) रु० मासिक वालों को उत्तेजना दिलाई, आपको धन्य है। परन्तु इस उत्तेजना का मैं तो पात्र अपने को नहीं समझता। यह काम तो आपके लिए ही रखा समझो, क्योंकि ऐसे काम संन्यासी ही निभा सकते हैं।

कन्या पाठशाला के लिये ११) रु० रानीगंज से आये होंगे, हाल लिखियो। मशीन से कोई औरत कपड़ा सिला कर ले जाओ, ऐसा नियम कर देना। लड़कियों को सीधे टाँके का अभ्यास कराना। अक्षरों की कापी सुन्दर दिखानी होगी। १५ फार्म १५ नियमावली मैनेजर अनाथालय के नाम शीघ्र भेज देना।

भवदीय

मित्र श्रीराम

(नगर-श्री, पत्र सं० ५३)

(रामकुमार जी गोयनका मारवाड़ी समाज के बहुत ही उत्साही कार्यकर्त्ता रहे। कलकत्ता में "वैश्य सभा" की स्थापना में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा। वैश्य सभा की स्थापना से कलकत्ता में मारवाड़ी समाज में एक नवीन उत्साह और जागरण उत्पन्न हुआ। इस संस्था का प्रभाव इतना जमा कि सदस्यों की बाढ़-सी आ गई। पुत्री पाठशाला के सम्मति प्रकाश रजिस्टर से विदित होता है कि रामकुमार जी गोयनका दिनांक ५-१२-१२ को ब्रह्मचारी योगेश्वरानन्द जी के साथ पाठशाला में आये थे और पुत्री पाठशाला के कार्य की दोनों ही महानुभावों ने बड़ी प्रशंसा और सराहना की थी।)

यह पत्र मंत्री नागरी प्रचारिणी सभा, ब्यावर ने आश्विन सुदि १५ सं० १९६९ को मंत्री सर्वहितकारिणी सभा के नाम लिखा है--

नागरी प्रचारिणी सभा, ब्यावर

संख्या ७७ ६९। आश्विन सुदी १५

श्रीयुत मन्त्री सर्वहितकारिणी सभा
चूरू

महाशय,

आप यह जान कर प्रसन्न होंगे कि सभा के हिन्दी उपदेशक पं० जीवानन्द जी शर्मा काव्यतीर्थ नागरी का प्रचार करते हुए आपके पास आ रहे हैं। आशा है आप लोग भी वहाँ इनका व्याख्यान दिला कर नागरी प्रचार में सहायक होकर इस सभा को बाधित करेंगे। बीकानेर में आप के व्याख्यानों का अच्छा प्रभाव पड़ा है और प्रसन्नता है कि वहाँ के नागरी भण्डार के भवन के लिये ७।। हजार रुपये एकत्र हो गये हैं।

भवदीय
मंत्री
(व्यास तनसुखकुमार पढ़ने में आते हैं)

(नगर-श्री, पत्र सं० ३९५)

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि स्वामी जी को नागरी से विशेष प्रेम था। एक बार वे जयपुर गये थे, तब तक बीकानेर में राजकीय भाषा हिन्दी हो चुकी थी, लेकिन जयपुर में उर्दू ही चलती थी, इस बात से उन्हें बड़ा क्षोभ हुआ था। हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिये वे निरंतर प्रयत्नशील रहते थे। नागरी-

स्वामी जी के अभिन्न सहकर्मी श्री बालचंद जी मोदी श्री सुबोधकुमार अग्रवाल को जानकारियाँ दे रहे हैं ।

श्री बालचन्द जी मोदी का जन्म वि० सं० १९३६ भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी को चूरू में श्री विहारीलाल जी मोदी के घर हुआ था और बाद में अपने ताऊ श्री रामरिखदास जी के गोद चले गये । इनके परदादा श्री चिमनराम जी मोदी ने चूरू ठाकुर स्योजीसिंह जी के जमाने में अपनी प्रतिज्ञा का पालन करके बड़ा सम्मान प्राप्त किया था । बाबू बालचन्द जी शुरू से ही बड़े अध्ययनशील और कर्म-निष्ठ समाजसेवी रहे हैं। अनेक पत्रों में इनके सारगर्भित समयोचित लेख प्रकाशित हुये हैं । "देश में मारवाड़ी जाति का स्थान" नामक ७५० पृष्ठों का विशाल ग्रंथ ही इन्हें अमर बना देने के लिए काफी है । इसके लिए सन् १९५३ में इनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया । अभिनन्दन समारोह के अध्यक्ष स्व० डा० अमरनाथ जी झा थे । अभिनन्दन समारोह पर मोदी जी को "श्री बालचन्द मोदी अभिनन्दन ग्रंथ" भेंट किया गया । देश भर के वरिष्ठ महापुरुषों के बधाई संदेश प्राप्त हुए, जिनका संकलन अभिनन्दन ग्रंथ में किया गया है मोदी जी श्री स्वामी जी के समवयस्क अभिन्न मित्र रहे हैं और साथ ही सक्रिय सहयोगी भी । सम-

वयस्क मित्र और कार्यकर्त्ता होने के नाते इनके पत्रों में व्यंग्य और विनोद की मात्रा प्रचुर है। यह हमारा सौभाग्य है कि श्री मोदी जी प्रकाशपुंज की तरह हमारे बीच अभी मौजूद हैं। यद्यपि ६० वर्ष की अवस्था में शारीरिक शिथिलता का आना तो स्वाभाविक है, लेकिन आज भी उनके मन में कार्य करने की वही तड़प मौजूद है।

श्री मोदी जी का प्रथम पत्र जो हमें प्राप्त हुआ है वह ११-५-१३ का है। स्वामी जी के प्रगतिशील विचारों और कार्यों का विरोध तो समाज के रूढ़िवादी लोगों द्वारा होना ही था, क्योंकि इसमें उनके स्वार्थों का हनन भी होता था। स्वामीजी को भी उनकी संकीर्ण मनोवृत्तियों पर दुःख होता था। निम्न पत्र से यही बातें ज्ञात होती हैं——

ओ३म्

१६०, सूतापट्टी,
कलकत्ता ११-५-१३ ई०

श्रीमान् स्वामी गोपालदास जी।
महोदय!

सभा का वार्षिक विवरण मय उत्सव सम्बन्धी समाचारों के पहुँचा। स्वार्थी धूर्तों की नासमझी पर रहम आता है, क्रोध का नाम भी पैदा नहीं होता, क्योंकि हृदय कहता है कि समझदार होके अनुचित कर्म करे तो रोप करना चाहिए नहीं तो क्षमा ही के पात्र हैं। ऐसे स्थान पर यही कर्त्तव्य है कि हम सब मिलकर जगदाधार कोई विशेष शक्ति है उससे यह प्रार्थना करें कि हमारे भूले हुए नासमझ भाइयों को सद्बुद्धि और सुरास्ता दिखावे जिससे हमारे देश और हमारे समाज का लौकिक और पारलौकिक कार्य सुसम्पन्न हो सके। क्या मेरी इस उपर्युक्त बात का आप समर्थन नहीं करेंगे? कृपा करके उत्तर लिखिये।

वार्षिक विवरण के साथ ही साथ अधिवेशन सम्बन्धी मजमून अच्छा बन गया है। परन्तु क्या किया जाय, समाचारपत्र तो जैसा है, वैसा नहीं, "मिल जाय हिन्द खाक में, हम काहिलों को क्या?" . . . अब यह तो लिखिये, वैश्यों के विचार कैसे रहे? मैंने सुना है आप कोई महिला मंडल बनाना चाहते हैं। मैं नहीं समझ सका कि आपका अभिप्राय क्या है, और आप क्या करना

हमें उचित है कि सबसे प्रथम हम यह प्रबन्ध करें जिससे हमारे बालक मातृभाषा हिन्दी में पढ़ना सीखें, अच्छे लेख निबन्धादि लिखने की योग्यता प्राप्त करें, हमारे अशिक्षित भाइयों को सुरास्ते पर लाने के लिए अच्छे वाक्यपटु बनें, क्योंकि हजार समझदार हो यदि वह किसी सभा या समाज में बोलने की योग्यता नहीं रखता तो कुछ नहीं, जैसा किसी ने कहा है "बोलबो न सीख्यो सब सीख्यो गयो धूर में।" मेरा खयाल है कि हमें बोलना नहीं आता। यदि बोलना और अपना विचार लेखनी द्वारा प्रकट करना आ जावे तो क्या मजाल है कि हमारे समाज की यह दशा बनी ही रहे। अतएव आवश्यकता है कि प्रबन्धादि लिखना और बोलना सिखावें। जो बालक ऐसा सीख जायेगा, क्या वह स्वार्थियों के बहकावे में आवेगा ? कदापि नहीं।

आरे से कूवे का क्या समाचार आया, लिखना। आलमारी हुई कि नहीं ? यदि हो जाय तो अच्छा है, नहीं तो मेरे उसका बड़ा खयाल बना हुआ है। यदि आलमारी किसी देवी ने बना दी हो तो बड़ा ही अच्छा हुआ।

(नगरश्री, पत्र सं० १०३) बालेन्दु

(महिल-मंडल की स्थापना स्वामी जी ने इसलिए की थी कि प्रौढ़ा स्त्रियों को प्ररणा देकर सामाजिक कार्यों की ओर प्रवृत्त किया जाय जिससे समाज में कुछ उपयोगी कार्य भी हों और चेतना भी आवे। स्वामी जी के युवक साथी और कार्यकर्त्ता वैद्य शान्त शर्मा जी ने बतलाया कि महात्मा जी की अपील पर चूरू महिला मण्डल की ओर से ६६) रु० चन्दा इकट्ठा किया गया था और सर्वहितकारिणी सभा की ओर से महात्मा जी को अफ्रीका भेजा गया था।)

महोदय स्वामी जी,

पत्र मिला। वृत्तान्त ज्ञात हुआ, आश्चर्य है किन्तु सत्य की विजय अनिवार्य है। आप राजधानी गये होंगे, सब वृत्तान्त लिखते रहना। मैंने पत्र तैयार कराया है, आप निष्फिक्र रहें। यहाँ के लायक सब काम यथाशक्ति हो सकेगा। भा० मि०

में अच्छा नहीं जचता। बड़ी सभा क्या करने को है? कुछ समझ में नहीं आया, सब खोल कर लिखें। उद्योग न छोड़ें, आपका उद्देश्य विशुद्ध है। आप राजभक्त हैं, देश की सेवा सामाजिक सुधार से करना चाहते हैं, इसमें चिन्ता ही क्या है? मुझे पूर्ण भरोसा है कि हमारे विद्वान् महाराज इस विषय पर ध्यान देंगे तो अवश्य अपनी सहानुभूति प्रकट करेंगे, आपको ऐसा ही उद्योग करना चाहिए।

समय की लहर बतला रही है कि अब स्वार्थियों की दाल न गल सकेगी। एक बार चाहे वे लोग सत्पुरुषों को दबाने की चेष्टा करें किन्तु अखीर नतीजा यही होगा कि शीघ्र ही उन्हें पश्चाताप करना होगा। मनुष्य का कर्तव्य है कि राजभक्त होते हुए सामाजिक काम में निडर होकर सुधार करने की चेष्टा करे, इसमें कोई भय न माने। वह समय शीघ्र ही आवेगा कि मत-मतान्तरों के वर्तमान जितने फिरके हैं उनका सब का यह अटल सिद्धान्त हो जायगा कि किसी की निन्दा न की जाय, अपने-अपने फिरके में रहते हुये सब को एक समझें। न्याय, विवेक और सार्वभौम धर्म की जय होगी।

भवदीय

(नगर-श्री पत्र सं० ११०) बालेन्दु

(उपरोक्त पत्र से यह स्पष्ट है कि सभा को शुरू से ही संघर्ष में जूझना पड़ा है।)

वीतरागायनमः

१६०, सूतापट्टी, कलकत्ता

श्रावण शुक्ल ३-१९७० वि०

महोदय स्वामी जी!

बी० से एक पत्र मिला। आप आ गये होंगे, आपका उलहना और क्रोध अनुचित नहीं है। यहाँ पर कोई कमजोरी नहीं है, परन्तु स्पष्ट वृत्तान्त बिना क्या किया जाय, फिर आप ही तो मना करते हैं। मित्र में क्या दिया जाये लिख भेजना। अभी छे० आने पर दिया जायेगा। बी० कुल हाल स्पष्ट लिखिये। घबराना क्या है? क्या आप डाका डालते हैं या अन्य कोई अपराध करते हैं? विद्या का प्रचार करना, समाज का सुधार करना... आपका उद्देश्य है, इसी लिए आपकी सभा है। कहिये अब क्या करना है? यहाँ से लिखा-पढ़ी होने के योग्य होगी वह तुरन्त हो जाएगी।

शान्त शर्मा का उत्तर प्रचारक में पढ़ा, हर्ष हुआ। योग्य और होनहार है, अभ्यास कराना जिससे लिखने के योग्य हो जाए। वर्षा कैसी है, जमाने का क्या हाल है ? आप कुछ समय के लिये कलकत्ते आवें तो आनन्द रहे। क्या इच्छा है ? लोकमत क्या है लिखें, पत्रोत्तर शीघ्र दें। १९७० श्रावण शुक्ला ३

(नगर-श्री, पत्र सं० १०७)

यह पत्र भी श्रद्धेय बालचंद जी मोदी का लिखा हुआ है। मोदी जी ने बर्दवान जल-प्लावन में बड़ी सेवा की थी, निम्न पत्र से इस विषय पर कुछ प्रकाश पड़ता है।

स्वामी गोपालदास जी के साथी भी कर्मनिष्ठ और सेवाभावी थे। बाबू बालचन्द जी मोदी उनके अभिन्न साथियों में रहे हैं। शुरू से ही इनमें समाज-सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। सन् १९१३ में जब बर्दवान में भयंकर बाढ़ आई तो मोदी जी ने अपने साथियों के साथ २ महीने तक पीड़ितों की जो सेवा की उसकी प्रशंसा सरकारी और गैरसरकारी क्षेत्रों में तो हुई ही जनसाधारण पर भी इस सेवा-कार्य की अमिट छाप पड़ी। इस सेवा-कार्य में इनके साथ ३०० स्वयंसेवक थे और उनका प्रधान नायकत्व सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी बाबू माखनलाल सेन और अमरनाथ बोस करते थे। इनके स्वयं-सेवक अपनी जान पर खेलकर, लाइफ बेल्ट लगाकर, कंधों पर चावलों की बोरियाँ लादकर भयंकर दामोदर नदी में कूद पड़ते थे और पीड़ितों को सहा-यता पहुँचाते थे।

महोदय स्वामी जी !

कार्ड मिला। उत्तर देने में अवश्य विलम्ब हुआ। मैं यहाँ न था। बर्दवान जल-प्लावन में पीड़ित भाइयों की सेवा करने चला गया था, वह कुल वृत्तान्त दै० भा० मि० में पढ़ते ही हैं।

आपने हर्ष प्रगट किया सो ठीक ही है, परन्तु इसमें विशेषता क्या है ? कर्तव्य करना मनुष्य का काम है, न करने में ही आश्चर्य है। परन्तु यह लिखते मुझे भी हर्ष होता है कि इस मौके पर मेरे नवयुवक भाइयों ने बाजी मार ली। संतोष की बात है कि मेरे भाई अब कर्तव्य समझने लगे। मारवाड़ी जाति ने बड़ा धन खर्च किया है। पूरा हिसाब फिर लिखा जायेगा। मैं १० दिन सेवा करके

अकस्मात् चला आया था, मेरे लघु सहोदर भीमराज का पुत्र बीमार हो जाने से। परन्तु अब आराम हो गया है। एक-दो दिन की देर है, शायद मैं फिर सेवा कार्य्य में लगूँगा।

सभा का क्या हाल है, लोकमत कैसा है लिखना। भौमानन्द स्वामी आया, सहायता मिली, वह समाचार अच्छी तरह पढ़ा नहीं जा सका, फिर लिखना। भौ० स्वामी से एक-बार ५-६ वर्ष पूर्व मैं भी रामगढ़ में मिला था। आप विद्वान् हैं, देशभक्त हैं। यह सुनकर हर्ष हुआ कि आप हमारे गाँवों में काम कर रहे हैं। विशेष हाल लिखना।

भवदीय
(नगर-श्री, पत्र सं० १०८) कु० बालेन्दु

यह पत्र बीकानेर से स्वामी जी के नाम श्री जंगबहादुर ने १-११-१३ ई० को लिखा है।

ओं

श्रीयुत स्वामी जी नमस्ते। पत्र आज पहुँच गया, समाचार ज्ञात हुए। श्रीमान् पं० नृसिंहजी का भी पत्र आया था। यह मालूम होकर आनन्द हुआ, शास्त्रार्थ का परिणाम अच्छा रहा, जब छपकर आवेगा उस समय पूरा हाल मालूम हो जावेगा।

समाज का काम चल रहा है, मगर चलाने वालों की कमी है। मिशन पाठशाला जो चूरू में खुली थी उसका अब क्या हाल है? यहाँ के समाज मंदर के लिये चंदा १५००) के लगभग लिखा गया है परन्तु वसूल अभी तक कुछ नहीं हुआ है। श्रीमान पं० ठाकरदास की सेवा में नमस्ते कह देवें।

ता० १-११-१३ ई० भवदीय
(नगर-श्री, पत्र सं० ५८) जंगबहादुर—बीकानेर

उन दिनों यों तो समूचे राजस्थान में ही ईसाई मिशनरी बहुत सक्रिय थे और यहाँ की अछूत जातियों को धड़ल्ले से ईसाई बना रहे थे, लेकिन चूरू के आसपास के क्षेत्र में ईसाई पादरियों का बहुत जोर बढ़ा हुआ था। चूरू में इन लोगों ने चमार, रैगर और भंगियों के घर जा-जाकर बहुत प्रचार किया और ७४ आदमियों के नाम अपने रजिस्टरों में दर्ज कर लिए। समाज की संकीर्ण भावनाओं से देश को जो क्षति पहुँच रही थी उससे स्वामी जी बहुत दुःखी थे। सर्वहितकारिणी सभा के उत्सव पर उन्होंने कहा था, "ये लोग (ईसाई पादरी)

यहाँ की गरीब भोली भाली अछूत जातियों को धोखा देकर अपनी चाल में फँसाने की चेष्टा करते हैं और अपने पन्थ को बढ़ाकर हिन्दू समाज के अंग को काट रहे हैं। इस बात की चिन्ता हिन्दू समाज को और उसके आचार्यों को तथा राजस्थान की प्रजा को बहुत ही कम है। हिन्दू जनता यदि इसी प्रकार उदासी भाव में रही तो उसे पछताना पड़ेगा। समय बतला रहा है कि मनुष्य मात्र घृणा न की जाय और नीची गिरी हुई जातियों को उठाने की चेष्टा की जाय इसी में हिन्दू धर्म की रक्षा हो सकती है।"

यह बात उन दिनों की है जबकि महात्माजी ने भी अछूतोद्धार आंदोलन का श्रीगणेश नहीं किया था। लेकिन स्वामी जी ने इस बात को गहराई से अनुभव किया। स्वामी जी ने यत्नपूर्वक उन हरिजनों को समझाया और उसका परिणाम यह हुआ कि उन लोगों ने जनगणना में अपने को हिन्दू ही लिखवाया। हरिजनों में शिक्षा-प्रचार करने और उनमें स्वाभिमान की भावना जगाने के लिए उन्होंने सर्वहितकारिणी कबीर पाठशाला की स्थापना चूरू में की जो अब तक चल रही है। न केवल चूरू में बल्कि भादरा व अन्य बहुत से कस्बों में भी उन्होंने कोशिश करके ऐसी पाठशालाएँ खुलवाई और उन्हें चालू रखने के लिए आर्थिक सहायता भी दिलवाई।

यह पत्र जयपुर से श्री नृसिंह शर्मा का लिखा हुआ है जो बाद में स्वामी नृसिंहदेव सरस्वती के नाम से विख्यात हुये और कांग्रेस के वरिष्ट नेता रहे। हर्ष है कि आज भी वे हमारे बीच मौजूद हैं। जनता में जागृति लाने के उद्देश्य से स्वामी जी सर्वहितकारिणी सभा के उत्सवों पर बाहर से बड़े-बड़े व्याख्याताओं और राष्ट्रकर्मी नेताओं को आवश्यक तौर पर बुलाया करते थे। निम्न पत्र भी इसी सम्बन्ध में है---

यद्यपि आपका कृपा कार्ड ता० २३ का लिखा ता० २५ को ही प्राप्त हो गया था; परन्तु उत्तर में दो दिन का विलम्ब किसी कारण विशेष से हो गया। आपने उत्सव के सम्बन्ध में जो तीन कारण बतलाये हैं, वह सभी ठीक हैं। काम करने वालों की सर्वत्र ही न्यूनता है। शहरों की एक-सी ही दशा है। चूरू को फिर भी कई अंश में अच्छा मानना पड़ता है। रामगढ़ की घटना इसमें प्रमाण

है। क्या ऐसी कार्यवाही चूरू में हो सकती है? तीसरा धन का प्रश्न वास्तव में बड़ा ही कठिन है, परन्तु अपनी सभा के उत्सव में विशेष व्यय का काम ही नहीं होना चाहिए। पं० जी का भी आज एक कार्ड प्राप्त हुआ। उन्होंने स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज को साथ लाने को लिखा सो यत्न करूँगा। मैं तो पं० यज्ञदत्त शास्त्री को अच्छा समझता हूँ। यद्यपि व्याख्यान सामान्य ही होता है, परन्तु संस्कृत अच्छा बोलते हैं। यदि पं० तुलसीरामजी ने स्वीकार कर लिया तो फिर अन्य की अपेक्षा ही क्या होगी? व्यय भी न्यून ही करने को सचेष्ट रहूँगा। पत्रोत्तर लौटती डाक से देने की कृपा करें। क्या नगर में अब भी पूर्ववत् ही आन्दोलन है? क्या स्वामी सत्यदेव आये थे? पत्रोत्तर केअर आफ श्रीमती आ० अ० सभा, केसरगञ्ज, अजमेर के पते से भिजवावें।

(नगर-श्री, पत्र सं० १८६) नृसिंह शर्मा

(उपरोक्त पत्र से यह भी ज्ञात होता है कि अन्य कई नगरों की अपेक्षा चूरू में चेतना आने लगी थी। साथ ही यह भी आभास मिलता है कि नगर में कोई आंदोलन काफी समय तक चलता रहा था। संभवत: यह आंदोलन स्वामी जी के प्रगतिशील कार्यों के विरुद्ध रहा होगा।)

सन् १९०६ ई० से देश के राजनैतिक इतिहास में एक नये युग का संचार हुआ। भारतवासियों की रगों में एक नई गर्मी—नये तेज का प्रवाह शुरू हुआ। इस नवीन स्फूर्ति का जन्मदाता वास्तव में लार्ड कर्जन का वह छ: साल (१८९९ से १९०५ तक) का दमनपूर्ण शासन था जिसने भारतीयों की सहिष्णुता और राजभक्ति की कमर तोड़ दी थी। समस्त भारत में एक छोर से दूसरे छोर तक आग-सी लग गई। अंग्रेजों ने भी दमन का प्रहार आरंभ कर दिया। कानूनों के नये-नये अस्त्र गढ़े गये, नेताओं पर भी मुकदमे चले और कितनों को ही देश निकाला हुआ और कितनों को ही लम्बी-लम्बी सजायें हुई। कांग्रेस भी दो धाराओं में बँट गई, प्राचीन विचारधारा के लोग अपने पुराने अनुनय-विनय के रवैये को कायम रखना चाहते थे, किंतु नवीन विचारधारा वाले नेता नई क्रांति के उपासक थे और इसके लिये वे विदेशी-बहिष्कार, स्वदेशी-प्रचार, राष्ट्रीय शिक्षा आदि योजनाओं पर जोर दे रहे थे। प्राचीन विचार के नेताओं में सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, माननीय गोखले और सर फीरोजशाह मेहता आदि मुख्य थे और नवीन विचार वालों के प्रतिनिधि थे लोकमान्य तिलक,

लाला लाजपतराय, श्री अरविन्द घोष आदि । सन् १६०६ ई० के कलकत्ता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी ने कांग्रेस में 'स्वराज्य' शब्द का पहली बार व्यवहार किया और कांग्रेस का ध्येय औपनिवेशिक स्वराज्य बतलाया ।[1]

इन सब का प्रभाव यहाँ भी पड़ा और इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के हेतु स्वामी गोपालदास जी ने चूरू में सर्वहितकारिणी सभा की स्थापना की । सर्वहितकारिणी सभा के अन्तर्गत वाचनालय और पुस्तकालय के अतिरिक्त उद्योगवर्द्धिनी सभा, सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला व कबीर पाठशाला आदि चल रही थीं, स्वामी जी कभी अनुनय-विनय के मार्ग का अनुगमन नहीं करते थे और नई क्रांति के उपासक थे अत: उन्होंने सभा में भगवान् कृष्ण और भीष्म-पितामह आदि के साथ-साथ लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय और विपिनचन्द्र पाल के फोटो भी लगा रखे थे । लेकिन इस बात की खुफिया रिपोर्ट बीकानेर पहुँची तो वहाँ एक प्रकार की खलबली-सी मच गई ।

उस समय यूरोप में प्रथम महायुद्ध छिड़ चुका था । राज कौंसिल में सर्वहितकारिणी सभा की रिपोर्ट पर विचार हुआ और अन्त में रावराजा हरिसिंह जी (महाजन), जीवराजसिंह जी, कामताप्रसाद जी व आई० जी० पी० कुँवर सबलसिंह जी आदि जाँच करने के लिए दिनांक ४-१२-१४ को चूरू पहुँचे । बीकानेर राज्य में तब कैसी दमघोटू स्थिति थी और किन परिस्थितियों में स्वामी जी को काम करना पड़ रहा था, यह इसी बात से प्रकट हो जाता है कि केवल उपरोक्त चित्रों को सभा में लगा देने मात्र से हुकूमत में एक तूफान आ गया था । बड़ी तलाशियाँ हुईं, अनेक लोगों के बयान हुए और सारे नगर में चार दिनों तक बड़ा आतंक छाया रहा । इन्हीं चित्रों को लेकर सर्वहितकारिणी सभा चूरू की २०० पृष्ठों की एक मोटी फाइल बन गई जो महाराजा गंगासिंह जी के खास महकमे में रहती थी[2] । पाठकों की जानकारी के लिए उक्त फाइल से यहाँ कुछ प्रसंग दिये जा रहे हैं—

बयान गोपालदास जी स्वामी रूबरू रावबहादुर राजा हरिसिंह जी व रावबहादुर राजा जीवराज सिंह जी व रायबहादुर बाबू कामताप्रसाद जी साहब मेम्बरान कौन्सिल राज श्री बीकानेर ता० ६-१२-१४ ई० ।

नाम मेरा गोपालदास, गुरु का नाम मुकन्ददास जी, जात स्वामी, सकने चूरू, उम्र ३२ साल, पेशा महंत, मन्दिर ।

दरियाफ्त पर बयान किया कि मैं छोटा मन्दिर गोपाल जी का महन्त हूँ। सम्वत् १९६४ में मैंने और पं० श्रीराम व पं० कन्हैयालाल व कृष्णलाल उल्हाणी व तेजपाल सिंघी ने मिल कर आपस में यह विचार किया कि चूरू में एक ऐसी सभा काइम करनी चाहिये कि जिसका ताल्लुक किसी धर्म से न हो और उस सभा का उद्देश्य यह होना चाहिये कि विद्या प्रचार, हिन्दी प्रचार, पुस्तकालय खोलना, रीडिंग रूम खोलना, पाठशाला खोलना व गोरक्षा, व अनाथालय खुलवाना व औषधालय व गरीबों की सहायता इत्यादि और इस विचारपूर्वक हमने सभा काइम की। शुरू में पं० कन्हैयालाल सभासद (सभापति) व श्रीराम मंत्री मुकर्रर हुये और बाकी सभासद हुये। अव्वल मरतबा अन्दाजन १० या १५ सभासद व मंत्री वगैरह ने आपस में चंदा करके जमा किये जिनका नामवार हिसाब नहीं है, रजिस्टर व चोपनियाँ में इस रुपया का थोक दर्ज है और इस रुपये से शुरू में पुस्तकें व अखबार मँगाये गये और यह सभा अव्वल हनुमान-दास जी के मन्दिर में स्थापित की गई जो बाजार में है। उस मन्दिर में करीब १ माह तक सभा रही और वहाँ से उठाकर सुखानी बनियों के मकान में लाई गई। वहाँ २-३ महीना तक स्थापित रही। फिर वहाँ से उठाकर नागरमल बनिया का मकान किराया लेकर उसमें स्थापित रही। उस मकान से उठाकर अब करीब १॥ साल से भानीराम पोद्दार के मकान पर काइम की जो किराये पर है, जिसमें अब असबाब मौजूद है। उस सभा में सब से पहले पुस्तकालय जमा करने की कार्रवाही की, उसके बाद वाचनालय, फिर एक पुत्री पाठशाला स्थापित की... और खास मौका पर तहसीलदार साहब चूरू या और कोई बड़े आदमी को सभापति बनाया गया।...सभा के मंत्री करीब ३ साल तक तो पं० श्रीराम मास्टर रहे और उसके बाद मैं मंत्री हुआ और इस वक्त तक मैं ही हूँ...नाजिम साहब उमरावसिंह जी व नाजिम साहब मुंशी रघुवीरसिंह जी सभा को देखने के लिये मकान सभा में आये थे।

बाबू उमरावसिंह जी जो सभा के मकान में पधारे थे उस वक्त उन्होंने अखबार जो उस वक्त सभा में आते थे उनको और नीज उनकी फहरिस्त को और पाँच-चार किताबों और बाकी किताबों की लिस्ट को व तस्वीरों को देखा था और कार्रवाही के रजिस्टर को भी देखा था। तस्वीरें जो इस वक्त सभा के मकान में हैं और जो मुलाहिज़ा के लिए पेश की गई हैं इन सब के लिये तो मैं ठीक तौर से नहीं कह सकता कि उस वक्त ये तस्वीरें उस मकान में लगाई हुई थीं, मगर अन्नदाता की तस्वीर और लाला लाजपतराय व तिलक व विपिनचन्द्र पाल व भीष्म-पितामह की मौजूद थीं, जिनको उन्होंने देखा था—यानी उन्होंने इन तस्वीरों के बारे में पूछा था कि कहाँ से आई और खासकर इस तिलक

की तस्वीर के बारे में उन्होंने ज्यादा पूछताछ की। मैंने जिस तरह से यह तस्वीरें और जहाँ से आई थीं और इनके बारे में जो कुछ मुझको याद था वह उनको बता दिया। इसी तरह नाजिम साहब रघुवीरसिंह जी ने जब वह सभा में गये सब सामान सभा यानी अखबार व लिस्ट अखबार व किताबें व फहरिस्त किताब-हाय व तस्वीरहाय को देखा था...और पुलिस के थानेदार साहब चूरू भी इस सभा में वक्तन-फवक्तन आते रहे हैं...

तिलक के बारे में राजद्रोही होने का हाल मैंने अखबार में कोई नहीं पढ़ा...तिलक की तस्वीर रखने के बारे में मुझको यह मालूम नहीं था कि यानी सभा को यह मालूम नहीं था कि इसकी तस्वीर रखने से कोई हरज है और इसका रखना अच्छा नहीं है...लाला लाजपतराय के लड़के के मरने पर उसके शोक प्रकाश करने में जो चिट्ठी भेजी गई थी वह सिर्फ उसको इस खयाल से दी गई थी कि वह परोपकारी शख्स है! मिती पौष सुदि २ सम्वत १९६६ को जो कांग्रेस का लेख पढ़ा गया था उसके सभा में पढ़ने का यह कारण है कि सभा के साधारण अधिवेशनों में व्याख्यान नहीं हुआ करता था, इसलिए लोगों को शौक दिलाने के लिए किसी पत्र या पत्रिका से कोई सामयिक विषय पर लेख पढ़ कर सुनाया जाता था और इसी तरह अषाढ़ बदि अमावस सम्वत १९६६ को "पटियाला का हाल" पढ़ा था...कर्म्मयोगी अखबार जो इलाहाबाद से निकलता था जो सभा में मँगाया गया और ३-४ माह तक सभा में आता रहा, १५-१६ कापी आई थी, बाद में गवर्नमेंट की तरफ से बन्द कर दिया गया....

द: स्वामी गोपालदास

(नोट—अब वक्त तंग हो गया है, बाकी मादा बयान कल लिया जावेगा।)

अलबत्ता यह मेरा खयाल जरूर है कि इन तस्वीरों को फौरन हटा देने से सभा की बदनामी होगी और लोगों में अफवाह फैलेगी जिससे लोग सभा से हटेंगे...जब से मैं मंत्री हूँ उस वक्त से इस सभा की रकम रायबहादुर भगवानदास का जो मुनीम लिखमीचंद है उसके पास जमा रहती है...अखबार और हिसाब और मेम्बरों की लिस्ट और आमद-खर्च का हिसाब कि किस-किस

सीगे में हुआ है उसको गोशवारा पेश कर सकता हूँ। सभा में शहर के पंच सब तो नहीं आये, कभी-कभी सागरमल मंत्री, व शिववख्श गोंदका, घासीराम नाथाणी आये थे और भी समय-समय पर आते रहते हैं, नाम उनके मुझको इस वक्त याद नहीं हैं।

द० स्वामी गोपालदास

ता० ७-१२-१४ ई०

ह० हरीसिंह

जीवराजसिंह

कामता प्रसाद[1]

इसी प्रकार सभा के जो सदस्य उस वक्त चूरू में थे, उन सब को बुलाकर उनके बयान लिये गये यथा---मास्टर श्रीराम, गणेशदत्त ब्राह्मण (गाछर वाले), कुंजलाल बजाज, लक्ष्मीचंद मुनीम, कन्हैयालाल ढ़ंढ़, सागरमल टाईवाला, तोलाराम सुराना, मूलचंद कोठारी, तिलोकचंद सुराना, सागरमल मंत्री, गणपतराय खेमका, पूर्णमल ब्राह्मण, द्वारकादास टीबड़ेवाला और शिवनारायण लखोटिया।[2]

शुरू में सर्वहितकारिणी सभा चूरू को चंदा व सहायता देने वालों की फेहरिस्त भी ली गई जो निम्न प्रकार है---

किसनलाल होलानी, कन्हैयालाल मुन्शी, शिवदत्त व्यास, ठाकरसीदास दायमा, शिवप्रसाद पंडरेऊवाला, गंगाविष्णु स्वामी, गंगासागर लोहिया, लच्छीराम खेमका, मन्नालाल मुंशी, भोलानाथ वकील, दयाराम पोस्ट-मास्टर, हरचंदराय तार बाबू, रामकिसनदास तार बाबू, कान्हसिंह पोस्टमैन, श्रीलाल मास्टर, गोपालदास स्वामी, डाक्टर फखरुल हुसैन, भादरमल मास्टर, देवीलाल थानेदार, बद्रीदास दूधवेवाला, कुंजलाल बजाज, रामलाल मास्टर, पूर्णानंद शर्मा, नागरमल गोयंदका, खूबचंद गोयंदका, रंगलाल, भीखमचंद लखोटिया, शिवनारायण लखोटिया, द्वारकादास टीबड़ेवाला।[3]

कौन-कौन उपदेशक यहाँ आये उनकी लिस्ट निम्न है--- पं० गौरीशंकर, ऋषिकुल सनातन धर्म; पं० कृपाराम, वैश्य सभा, मेरठ; पं० भवानीशंकर

जयपुर, अनाथालय अजमेर; पं० नृसिंह शर्मा जयपुर, आर्य समाज अजमेर; स्वामी गोमानन्द ।[१]

उन समाचारपत्रों की फेहरिस्त बनवाकर ली गई जो उस समय सभा में मँगाये जाते थे जो निम्न प्रकार है--

सरस्वती--प्रयाग
स्वदेश बांधव--आगरा
नागरी प्रचारिणी--काशी
ब्राह्मण-सर्वस्व--इटावा
वेद-प्रकाश--मेरठ
संस्कृत-रत्नाकर--जयपुर
चित्रमयजगत--पूना
गृहलक्ष्मी--प्रयाग
मर्यादा--प्रयाग
दैनिक भारतमित्र--कलकत्ता
वैंकटेश्वर साप्ताहिक--बम्बई
हिन्दुस्तान--लाहौर
अभ्युदय--प्रयाग
सद्धर्मप्रचारक--दिल्ली
प्रकाश--लाहौर
सम्मेलन पत्रिका--प्रयाग
वैद्यकल्पतरु--अहमदाबाद
हिन्दुस्तानी--लखनऊ
बंगाली (अर्द्ध साप्ताहिक)--कलकत्ता
आर्ष ग्रंथावली--लाहौर
शारदा--प्रयाग
दैनिक वैंकटेश्वर--बम्बई[२]

इसी प्रकार बहुत बारीकी से हर चीज की छानबीन की गई। सर्वहित-कारिणी सभा की नियमावलियाँ और उसकी शाखा सभा "राजस्थान उद्योग-

वर्द्धिनी सभा"--चूरू जो श्रावण शुक्ला सप्तमी सं० १९६९ को स्थापित हुई थी की नियमावली भी वे लोग ले गये। लोकमान्य तिलक व लाला लाजपतराय के फोटो भी वे उठा ले गये। ये सब उपरोक्त फाइल में लगे हुए हैं। लोकमान्य तिलक का तिरंगा बड़ा चित्र है और लाजपतराय जी का सादा और छोटा चित्र, विपिनचन्द्र पाल का चित्र फाइल में नहीं है।

बीकानेर स्टेट का वातावरण कितना दमघोटू था और किन कठिन परिस्थितियों में स्वामी गोपालदास जी काम कर रहे थे, इसकी एक झलक उपरोक्त विवरण से मिल सकेगी। सभा में किसी नेता की तस्वीर टाँगना या सभा की बैठक में किसी अखबार से कांग्रेस सम्बन्धी कोई समाचार पढ़ कर सुना देना भी बड़ा भारी जुर्म समझा जाता था। धार्मिक उपदेश और व्याख्यान देने वालों पर भी पूरी नजर रखी जाती थी। इसी फाइल में पं० गौरीशंकर उपदेशक ऋषिकुल की निस्बत दिनांक २०-९-१४ की पुलिस रिपोर्ट भी शामिल है जिस पर "कान्फीडेन्सल" लिखा हुआ है और रिपोर्ट के नीचे इंसपेक्टर जनरल पुलिस कुँ० सबलसिंह के हस्ताक्षर हैं। इसी फाइल में पेज १८७ पर महाराजा गंगासिंह जी के उस गुप्त पत्र की प्रतिलिपि है जो उन्होंने एजेण्ट गवर्नर जनरल राजपूताना (Sir Elliot Colvin) को तत्कालीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए लिखा था। पृ० १९६-९७ पर सुजानगढ़ व पृ० १९८ से २०१ पर बीकानेर शहर की संस्थाओं के सम्बन्ध में रिपोर्ट है और शेष सब सर्वहितकारिणी सभा के बारे में है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि उस वक्त समूचे बीकानेर राज्य में चूरू की सर्वहितकारिणी सभा ही अपने ढंग की एकमात्र संस्था थी और स्वामी गोपालदास जी ही एकमात्र व्यक्ति थे जो जन-जागरण के यज्ञ में आहुतियाँ दे रहे थे। इस कार्रवाई की रिपोर्ट कलकत्ता के दैनिक "भारतमित्र" में छपी थी जिसकी कटिंग उपरोक्त फाइल में पृ० १३७ पर लगी हुई है।

इस प्रकार ४-१२-१४ से ७-१२-१४ तक सभा की तलाशी और कार्यकर्त्ताओं के बयान आदि लेने के बाद उपरोक्त राज्याधिकारियों ने निम्न आशय की गुप्त रिपोर्ट बीकानेर सरकार (महकमा-खास) को दी--

तर्ज गुफ्तगू गोपालदास से मालूम होता है कि वह मुरलीधर के नाम को छिपाने के लिए इरादतन एक लड़के का नाम लेता है। सिवाय इसके हमारे नजदीक सब से ज्यादा कसूरवार गोपालदास ही है--बयानात व पूछताछ से हमको यह खयाल हुआ है कि गोपालदास के ख्यालात अच्छे नहीं हैं... ताहम हमारी राय में इन लोगों से यह बात पोशीदा नहीं थी कि लाला लाजपतराय,

बाल गंगाधर तिलक और विपिनचन्द्र पाल राजविद्रोही हैं और गवर्नमेंट से सजा-याफ्ता हैं। . . . हमारी राय है कि इन तीनों से आइन्दा नेकचलनी के लिए बाजाब्ता जमानत ली जावे और उनको इत्तला दी जावे कि आइन्दा उनकी तरफ से ऐसी कार्रवाई जहूर में आवेगी तो उनके खिलाफ बाजाब्ता कार्रवाई की जावेगी और तस्वीरों की निस्बत हमारी राय है कि वह तलफ कर दी जावें और सभा को हिदायत कर दी जावे कि आइन्दा . . .

फेहरिस्त ओहदेदारान मशमूला मिसल हाजा से जाहिर है कि हस्बजैल अफसरान जिम्मेवार ने वक्तन-फवक्तन सभा का मुआइना किया और सभा में जाते रहे हैं और इनमें से कई जलसों में भी शरीक होते रहे हैं . . . इन अफसरान ने जरूर तस्वीरों को देखा होगा और बयानात से साफ जाहिर है कि इनमें से कई अफसरान ने इन तस्वीरों की बाबत गोपालदास वगैरह से पूछताछ भी की। बहैसियत अफसरान जिम्मेवार राज के उनका फर्ज था कि उन तस्वीरों के बारे में नोटिस लेते, मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया, हालाँकि वे लोग इस बात को जरूर जानते होंगे कि ये तस्वीरें राजद्रोहियों की हैं। हमारी राय में उनके इस काम पर स्टेट की तरफ से सख्त नाराजगी जाहिर की जावे और आइन्दा के लिए उनको हिदायत की जावे कि फिर कभी ऐसी बेपरवाही उनकी तरफ से देखी जावेगी तो सख्त तदारूक का बायस होगा।[1]

कहना न होगा कि इस तलाशी वगैरह के परिणामस्वरूप नगर में एक आतंक सा छा गया। लोग सभा में जाते हुए भी सशंकित ही रहते थे। सभा को उप-रोक्त मकान से अपना कार्यालय उठाना पड़ा जो बाद में गंगामाई के मन्दिर के चौबारे में ले जाया गया। स्वामी जी अपने पथ से विचलित होने वाले न थे, लेकिन इस उथल-पुथल के कारण बहुत खिन्न थे। इसलिए उन्होंने सभा का निजी मकान बनाने का संकल्प ले लिया और मन में प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक सभा का निजी भवन नहीं बन जाएगा तब तक अन्न नहीं खाएँगे और स्वामी जी कई वर्षों तक केवल दूध और आलू लेते रहे। भवन बनाने के लिए पहले ३५-३५ रु० के कुछ शेयर बेचे गये लेकिन फिर स्वामी जी और उनके साथियों ने विशेष उद्योग करके आवश्यक धनराशि इकट्ठी की।

श्री बालचन्द जी मोदी द्वारा स्वामी जी के नाम कलकत्ते से लिखा गया ता० १४ ११-१६ का पत्र --

परमात्मने नमः

१६० हरीसन रोड
कलकत्ता, ता० १४-११-१६ ई०

श्रीयुक्त स्वामी गोपालदास जी।

महोदय ! पत्रों का आवागमन सम्बन्धी "बायकाट" बहुत दिनों तक स्थिर रहा। विजय आपकी हुई। होनी भी चाहिए, क्योंकि आप उस भूमि में निवास करते हैं जिसमें की हुई प्रतिज्ञा भंग नहीं हो सकती। परन्तु मैं तो बंगाल में रहता हूँ। बंगाली भाइयों का अनुकरण न करूँ तो क्या करूँ ? खैर "बैठनो भाइयों में, चाहे बैर ही हो", खुशी के साथ भाइयों के गुणों को धारण करता हुआ पराजित होना स्वीकार करता हूँ और पुनः पत्र-व्यवहार शुरू करने के लिए उद्यत होता हूँ।

प्रथम तो यह जानने की इच्छा है कि आपका एकान्तवास और फलाहार चलता है या नहीं। सभा-भवन सम्बन्धी कैसा समाचार है ? बहुत कुछ आशा हो रही है कि आपकी अभीष्ट-सिद्धि हुई होगी।

भवदीय
बालेन्दु

(नगर-श्री, पत्र सं० ६८)

सभा का निजी भवन बनाने के लिए स्वामी जी कृतसंकल्प थे। उन्होंने विशेष उद्योग करके सभा के लिए चन्दा इकट्ठा किया। इसमें सबसे बड़ी रकम १५०१ रुपये रायबहादुर बलदेवदास जी जुगलकिशोर जी बिड़ला ने दिये। उपरोक्त पत्र के लेखक श्री बालचन्द जी मोदी ने भी ५०१ रु० दिये। इस प्रकार ८१७६ रुपये का चन्दा इकट्ठा हुआ। किले के सामने ही एक जमीन खरीदी गई। इस स्थान पर एक टूटी-फूटी-सी दुकान थी जिसमें एक नीलगर परिवार रहता था। नींव खोदते समय जमीन में एक बड़ा शंख निकला। शंख को विजय का सूचक माना गया।

सभा-भवन के निर्माण के लिए सिर्फ ८१७६ रुपये प्राप्त हुए थे, लेकिन व्यय १०१७१ रुपये हो गये। इस रकम की पूर्ति स्वामी जी ने अपने नाम से १९९५ रुपयों का ऋण लेकर कर दी। कैसे विलक्षण और धुन के धनी थे वे। ऋण लेकर के घी पी जाने वाले चार्वाक के चेले तो बहुत होते हैं, लेकिन ऋण लेकर सार्वजनिक कार्य में लगाने वाले विरले ही होते हैं और ऋण भी ऐसा

कि कोई दाता न चेते तो स्वामी जी इस जन्म में तो क्या, सात जन्मों में भी ऋण-मुक्त न हों। लेकिन स्वामी जी ने अपने निश्चय पर दृढ़ रह कर सभा का सातमंजिला सुन्दर भवन किले के आगे ही खड़ा कर दिया। इतनी थोड़ी-सी जमीन पर इतना भव्य भवन बना देना उनकी विचित्र सूझबूझ का परिचायक है। भवन का निर्माण हो जाने के बाद मित्रों के आग्रह पर स्वामी जी ने अन्न ग्रहण किया। अनंताश्रम में, जिसे आज कल "मित्रमंढ़ी" कहा जाता है, पं० चोखराज जी ने अन्नप्राशन यज्ञ करवाया और वहीं बड़े समारोह के साथ स्वामी जी ने अन्न ग्रहण किया।

यह पत्र कलकत्ता से ३० जुलाई सन् १९१७ को श्री बालचन्द जी मोदी द्वारा स्वामी जी के नाम लिखा गया है--

श्रीयुक्त स्वामी गोपालदास जी,

महोदय! कृपा पत्र ता० २१ जुलाई सन् १९१७ ईस्वी का मिला। आपके पत्र-दर्शन से जो हर्ष होता है वह तो स्वाभाविक ही है। म्युनिसिपल बोर्ड के बारे में आपने सविस्तर हाल लिखा सो मालूम किया। आपके लिखने से यह मालूम हुआ कि मास्टर श्रीराम जी की तजवीज हो रही है, यदि यह बात ठीक हो जाय तो और भी अच्छा है, फिर तो वास्तविक कुछ काम भी हो सकता है। मुझे इस बात की कुछ अभिलाषा भी लगी हुई है कि कोई मैदान मिले तो कुछ काम किया जाय। यही कारण है कि मैंने उनको स्वीकृति दे दी है।

पुस्तकालय भवन बनने में अब क्या देर है? जमीन मिल गई होगी। मेरी राय में तो अब काम शुरू कर देना चाहिए, फिर आपसे आप पूरा हो जायेगा। शान्त शर्मा शीघ्र आवेंगे, अच्छी बात है, उनकी वैद्यक की पढ़ाई क्या शेष हो गई? देश में जमाने का क्या हाल है? मेरे योग्य सेवा लिखें।

भवदीय

बालचन्द मोदी

(नगर-श्री, पत्र सं० १०१)

स्वामी जी म्युनिसिपल बोर्ड में प्रयत्नपूर्वक योग्य और उत्साही कार्यकर्त्ताओं को भेजते थे जिससे कि नगर-विकास का कार्य सुन्दर ढंग से हो सके।

स्वामी जी स्वयं एक कुशल चिकित्सक थे। इन्होंने तथा इनके साथियों ने स्वनामधन्य पं० कन्हैयालाल जी ढंढ से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की थी। स्वामी जी ने यत्न करके चूरू में विहार पंडित सभा, बाँकीपुर तथा नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेदीय परीक्षाओं के केन्द्र चूरू में स्थापित करवाये थे। आयुर्वेद

की परीक्षाएँ पास करने वालों को पुरस्कार व प्रोत्साहन दिया जाता था। वि० सं० १९७४ के अखबारों की जो कतरनें नगर-श्री के रेकार्ड में हैं उनसे विदित होता है कि उन दिनों वैद्य शान्त शर्मा जी ने आयुर्वेद की उत्तमा परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की थी और तत्कालीन तहसीलदार पं० हीरालाल जी ने एक रजत पदक उन्हें दिया था। पं० कालीचरण शर्मा डी० ए० वी० कालेज लाहौर में उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए गये और उन्हें सेठ सागरमल जी मंत्री की ओर से कुछ मासिक वृत्ति दिलाई गई। महंत गणपतिदास जी, पं० शिवदत्तराय जी व्यास, पं० भालचन्द्र जी शर्मा तथा हनुमानप्रसाद शर्मा भी आयुर्वेद की परीक्षा उत्तीर्ण हुए; इन सब को भी पुरस्कृत किया गया। स्वामी जी ने इस अवसर पर आयुर्वेद की उन्नति पर एक ओजस्विनी वक्तृता दी। उपरोक्त पत्र में लिखा समाचार इसी आशय का है।

यह पत्र बाबू बालचन्द जी मोदी द्वारा दिनांक ३ दिसम्बर सन १७ को कलकत्ता से स्वामी जी के नाम लिखा गया है——

श्रीयुक्त स्वामी गोपालदास जी,

महोदय! मेरे पत्र के उत्तर में एक कार्ड आपका मिला, बड़ा हर्ष हुआ। पश्चिमीय मतीरे का सम्वाद चित्ताकर्षक रहा। सभा के बिलों के लिए लिखा सो पद्मराज जैन यहाँ हैं। मैंने उनसे कहा था, वे रुपये देने के लिए तैयार हैं, किन्तु बिल नहीं हैं। आप फिर से बिल भेज दें ताकि रुपये लेकर भेज दिये जायँ। पद्मराज से पुत्री पाठशाला की प्रशंसा सुन कर चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ। वे कहते थे कि मैंने कई पाठशालाएँ देखीं, किन्तु चूरू की पाठशाला का ढंग निराला था।

मुझे यह सुनकर बड़ा कष्ट हो रहा है कि "नारायण दातव्य औषधालय" के लिए जमीन देने की शर्त पर हरदेवदास लखोटिया ने कहा है कि स्वा० गोपा० जो कि इस संस्था के संरक्षक हैं अलग कर दिए जाएँ तो मैं जमीन दे सकता हूँ, नहीं तो नहीं। मैंने मंत्री बा० जमनाधर गोयनका से बात की तो मालूम हुआ कि संस्था ऐसा करने में अपना अपमान समझती है। परन्तु मैंने रुख देखकर कह दिया कि इसमें हरज ही क्या है। यदि आप लोगों का काम बन जाये और जमीन मिल जाये तो स्वामी गो० सहर्ष अपना पद परित्याग कर देंगे। परन्तु जमनाधर समझदार हैं, वह पेशोपेश में पड़ गया।

जिन काशीप्रसाद खेतान वंश से विलायत-यात्रा को लेकर समाज में विरोध

तीर्थाटन करने चला गया है। देवी० आदि अन्य भाई सब के साथ मजे में भोजन किया है। स्वार्थी ठेकेदार रो रहे हैं, देखें अब वे क्या गुल खिलाते हैं ?

सरस्वती में रामकुमार खेमके का लेख ध्यान से पढ़ना। वह लड़का मारवाड़ी है और अमेरिका गया हुआ है, शीघ्र ही आवेगा। पत्तोत्तर शीघ्र देना।

भवदीय

(नगर-श्री, पत्र सं० ८६) बालेन्दु

पद्मराज जी जैन के पूर्वज श्री मोहनराम जी सरावगी चूरू के ही रहने वाले थे। बाद में ये खुर्जा चले गये। उनके पुत्र माणकचन्द जी हुए जिनकी पत्नी बड़ी सुयोग्या और बुद्धिमती थीं। दान-धर्म बहुत करती थीं और वे सर्वत्र रानी कहकर पुकारी जाती थीं। उनके ७ बेटे हुए जो रानीवाला के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनमें फूलचन्द जी के पुत्र पद्मराज जी जैन ने बहुत यश कमाया। पद्मराज जी विद्वान्, इतिहासज्ञ और ओजस्वी वक्ता होने के साथ-साथ कर्मठ राष्ट्र-सेवक रहे हैं। स्वराज्य की लड़ाई में इन्होंने बड़ा भाग लिया। वे स्वयं तो जेल गये ही उनकी पुत्री इन्दुमती जी भी जेल गई। आप अग्रवाल महासभा के सभापति और हिन्दू महासभा के प्रधानमंत्री रहे। सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला का निरीक्षण कर इन्होंने बड़ी सुन्दर सम्मति दी थी।

इसी वर्ष चूरू में नारायण दातव्य औषधालय खुला। इसके लिए कलकत्ता से बा० फूलचन्द जी गोयनका और भजनलाल जी लोहिया आदि कई सज्जन चूरू आये थे और साथ में एक डाक्टर और एक कम्पाउण्डर को भी लाये थे। इस अस्पताल में दो विभाग रखे गये थे, डाक्टरी और आयुर्वेदिक। डाक्टरी विभाग में ऐलोपैथी और होमियोपैथी दोनों प्रकार की चिकित्सा का प्रबन्ध किया गया था। बिना फीस के डाक्टर और वैद्य चिकित्सा करेंगे ऐसा नियम रखा गया था। इस अस्पताल को खुलवाने में स्वामी जी ने पूर्ण उद्योग किया था और

दी थी। कुल चन्दा ३२६६६ रुपये लिखा गया था जिसमें से लगभग २५ हजार गोयनका परिवारों ने दिया था[1] और इसके संचालन का भार भी इन्हीं पर रहा। आज भी इसका संचालन स्व० बाबू फूलचन्द जी के वंशजों के द्वारा ही हो रहा है। आज के दिन गोयनका परिवार बहुत ही सम्पन्न और समृद्ध है और यदि वे चाहें तो इस अस्पताल को प्रथम श्रेणी का अस्पताल बड़ी आसानी से बना सकते हैं।

कालीप्रसाद जी खेतान बैरिस्टरी पास करने के लिए विलायत गये थे और उनके लौटने पर मारवाड़ी समाज में एक बड़ा हुड़दंग मच गया था। समाज में दो दल हो गए। अन्त में चूरू के भजनलाल जी लोहिया की दौड़-धूप और प्रयत्न से बाबू बृजमोहन जी बिड़ला के विवाह के समय कालीप्रसाद समाज-भुक्त समझे गये।

स्वामी जी के गुरु मुकन्ददास जी के नाम मंगसिर वदी वि० सं० १९५२ को लिखे श्री रामनारायण जी गोयनका के एक पत्र से ज्ञात होता है कि उस समय भी मन्दिर के सत्वाधिकार को लेकर लखोटियों और मुकन्ददास जी के मध्य विवाद था। उपरोक्त पत्र में प्रगट स्वामी जी के प्रति हरदेवदास जी लखोटिया की नाराजी का भी यही कारण था।

यह पत्र दिनांक ९-१०-१८ को चूरू के तत्कालीन तहसीलदार का मंत्री सर्वहितकारिणी सभा के नाम लिखा हुआ है। चूँकि तत्कालीन राज्य सरकार को समाज-सेवा के कार्यों में भी राजनीति की गन्ध आती थी, अतः स्वामी जी सार्वजनिक संस्थाओं को राज्य कर्मचारियों की वक्रदृष्टि से बचाने के लिए उन्हें विशेष अवसरों पर अवश्य निमंत्रित करते थे। संस्थाओं का शिलान्यास उद्‌घाटन राज्य कर्मचारियों द्वारा भी करवाते थे। अतः इसी दिन उन्होंने चूरू के तत्कालीन तहसीलदार को पत्र लिखा था कि सर्वहितकारी पुस्तकालय का शिलान्यास आप कल सवेरे ८ बजे करने की कृपा करें। इस पत्र के उत्तर में ही तहसील-

का आया हूँ, इसलिए मैं कल के निमंत्रण से आपसे माफी चाहता हूँ। मुझे बड़ी खुशी थी कि मैं आपके शुभ काम में पहले आऊँ। मगर जरूरी हुक्म की लाचारी भी खटकती है। मैं उमेद करता हूँ कि आप....माफी देंगे।

ता० ८-१०-१८ (ह०) उर्दू में
(नगर-श्री, पत्र सं० १७३)

लेकिन तहसीलदार साहब के न आने पर भी अगले दिन सवेरे अर्थात् १० अक्टूबर सन् १६१८ को सर्वहितकारिणी सभा (इसी के अन्दर सर्वहितकारी पुस्तकालय और वाचनालय रखा गया) का शिलान्यास चूरू के सुप्रसिद्ध उद्योगपति बाबू पीरामल जी गोयन्दका द्वारा बड़ी धूम-धाम से किया गया।

यह पत्राचार सर्वहितकारिणी सभा चूरू और उसकी शाखा सभा "राजस्थान उद्योगवर्द्धिनी सभा चूरू" के छपे हुए लैटरपैड पर हुआ है जिस पर दोनों संस्थाओं के उद्देश्य छपे हुए हैं। राजस्थान उद्योगवर्द्धिनी सभा की स्थापना श्रावण शुक्ला सप्तमी वि० सं० १९६९ को हुई थी। इसके १६ उद्देश्यों के अनुसार जिनमें शिल्प और कृषि विद्या का प्रचार करना, आतुराश्रम, सेवासदन, अनाथालय तथा गोशाला खुलवाना, बालविवाह व वृद्ध-विवाह को रोकना, मादक वस्तुओं के सेवन का परित्याग करवाना, विद्यालय तथा कन्या पाठशालाएँ खुलवाना, पतित जातियों में शिक्षा प्रचार करना, मातृभाषा हिन्दी तथा देववाणी संस्कृत का प्रचार करना तथा पंचायतों द्वारा आपसी झगड़ों को तय करना आदि के अनुसार सार्वजनिक रचनात्मक कार्य अवश्य होते रहे।

इसी के अन्तर्गत नगर के उत्तरी भाग में असहाय व निराश्रित औरतों के लिए एक आश्रम खोला गया था। बालविवाह न करने के सैकड़ों प्रतिज्ञापत्र भरवाये गये थे। अनाथ बालक और बालिकाओं की रक्षा का प्रबन्ध भी किया जाता था। सभा की रिपोर्ट सं० १९७८ से पता चलता है कि बालरासर के एक गड़रिये को एक नवजात बालिका जमीन में दबी मिली तो उसे एक हिन्दू धाय को सौंप दिया गया और उसके पालन-पोषण के लिए ६) मासिक की व्यवस्था कर दी गई। इस लड़की को लेने के लिए चूरू की वेश्याओं और ईसाइयों ने भी तहसील में पहुँच कर प्रयत्न किया था, लेकिन उनका प्रयत्न सफल नहीं होने दिया गया। इसी प्रकार शीतला जी के मंदिर की तरफ एक नवजात बालक खाई में पड़ा मिला तो उसे एक सद्गृहस्थ को सौंप दिया गया जिसका एक

बच्चा मर गया था और जिसकी स्त्री पुत्र-वियोग के कारण बड़ी संतप्त थी।

इसी प्रकार राजस्थान उद्योगवर्द्धिनी सभा के अन्तर्गत सार्वजनिक हित के अनेक छोटे-बड़े कार्य होते रहते थे।

यह पत्र मास्टर श्रीराम जी ने कलकत्ता से १२ नवम्बर सन् २० को दीपावली के अवसर पर लिखा है——

ॐ

परमात्मने नमः

कलकत्ता
१३७, कैनिंग स्ट्रीट

मित्र स्वामी गोपालदास से श्रीराम की नमस्ते। पत्र दीपावली उत्सव का दिया जाता है। सभा-भवन बहुत उत्तम दीपावली से सुशोभित हुआ होगा ऐसा अनुमान होता है। परंतु साथ ही यह भी विचार रहा होगा कि दीपावली बाह्य ही है, आन्तरिक दीपावली भी ऋण-विमोचिनी तिथि आएगी तब मनाई जाएगी। शान्त आजकल इधर नहीं है।

पत्र दो-तीन भिजवाने की इच्छा है, 'स्वतंत्र,' 'आज,' 'अमृतबाजार पत्रिका' तथा कुछ पुस्तकें भी जो आजकल निकली हैं भिजवाने की चेष्टा की जाएगी।

(नगर-श्री, पत्र सं० ८४) श्रीराम

स्वामी जी सर्वहितकारिणी सभा का निज का भवन बनाने के लिए कृत-संकल्प थे और उन्होंने अन्त में किले के मुँह के आगे सभा का सातमंजिला भव्य भवन खड़ा कर ही दिया। भवन का शिलान्यास सेठ पीरामलजी गोयनका ने तथा उद्घाटन राजस्थान के वरिष्ठ नेता अर्जुनलाल जी सेठी व कुं० चाँदकरण जी शारदा के द्वारा करवाया गया। सभा-भवन के निर्माण कार्य में दो हजार रुपयों की त्रुटि रह गई थी जिसकी पूर्ति स्वामी जी ने अपने हस्ते ऋण लेकर के की। स्वामी जी के पास न तो कोई पूंजी थी और न मन्दिर में कोई आय थी। ऐसी स्थिति में भी स्वामी जी ने दो हजार रुपये ऋण लेकर सभा-भवन को पूर्ण

यह पत्र डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस कमेटी, कार्यालय अजमेर से स्वामी नृसिंहदेव सरस्वती ने दिनांक १ अप्रैल सन् १९२१ को लिखा है——

श्रीमन् !

आपको मैंने एक पत्र पूर्व भी लिखा था परन्तु अद्यापि उसका उत्तर नह मिला। अब आपको पुन: इतना शीघ्र पत्र लिखने का कारण यह है कि मैं औ चाँदकरण शारदा दोनों ही आपकी पूर्व निश्चित १५-१७ अप्रैल पर उपस्थि नहीं हो सकेंगे क्योंकि ता० १७ अप्रैल को यहाँ प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की ओर से अखिलभारत वर्षीय जातीय महासभा अर्थात् आलइंडिया कमेटी के लिये मेम्बर का निर्वाचन होगा, ता० ६ से १३ तक जातीय सप्ताह (national-week) की कार्यवाही है और ता० ३ अप्रैल को प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का निर्वाचन है। अस्तु ता० १७ तक तो यहाँ से किसी प्रकार निष्कासन नहीं है। हाँ, ता० १८ को प्रस्तुत होकर १९ को आपके यहाँ मध्यान्तर पहुँच सकेंगे। यदि आप २० से २२ तक अपनी सभा का उत्सव मनावें तो अच्छा है। यह हमारी सबकी सम्मति है। यदि आप लिखें तो श्रीयुक्त पं० अर्जुनलाल जी सेठी को भी लेते आवें। उनका विचार भी इस प्रान्त में ही रह कर कार्य करने का है।

श्री मास्टर श्रीराम जी कहाँ हैं? श्री पं० कन्हैयालाल जी वा पं० चोखराज जी से नमस्ते तथा अन्यान्य सर्वमहानुभावों के प्रति नमः। पत्रोत्तर अवश्य लौटती डाक से भिजवावें। हाँ मास्टर रामेश्वरदयाल जी व शान्त शर्मा चूरू में ही हैं अथवा नहीं? योग्य कार्य से सूचित करें।

अखिल लोक शुभचि०

(नगर-श्री पत्र सं० ६१) वैदिक धर्म का सेवक——स्वामी नृसिंहदेव सरस्वती

वयोवृद्ध स्वामी नृसिंहदेव जी सरस्वती राजस्थान के वरिष्ठ नेता हैं और कार्यकर्त्ता रहे हैं, हिन्दी और संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान् और ओजस्वी वक्ता हैं। स्वामीजी से इनका परिचय बहुत पहले से था और ये उनके घनिष्ठ और अभिन्न मित्रों में रहे हैं। व्याख्यान देने के लिये ये चूरू बहुत बार आते थे और तब नृसिंह शर्मा के नाम से जाने जाते थे। सन् १९२० में सन्यास ग्रहण करने के बाद नृसिंहदेव सरस्वती के रूप में प्रसिद्ध हुए। इन्होंने मंत्री नगर-श्री को बतलाया कि सन् १९२० में ही यहाँ सर्वहितकारिणी सभा और देवर्षि आश्रम (मान-दुर्ग; जहाँ अब स्वामी जी रहते हैं) की स्थापना की गई थी। उन्होंने यह भी बतलाया कि फतहपुर में सर्वहितकारिणी सभा की शाखा सभा की स्थापना सन् १९०७ में ही केजड़ीवालों के चौवारे पर हो गई थी।

राजपूताना मध्यभारत सभा के चतुर्थ अधिवेशन (नागपुर) में सरस्वती जी का यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था कि सभा का डेपूटेशन शीघ्र ही सब देशी नरेशों की सेवा में उपस्थित होकर उन्हें प्रजा का दु:ख सुनावे और उनके दु:ख का निवारण करे। डेपूटेशन में सर्वश्री चाँदकरण जी शारदा, स्वामी नृसिंहदेवजी, राधामोहन गोकुलजी, अर्जुनलाल जी सेठी, जमनालाल जी बजाज, बी० एस० पथिक जी, गणेशशंकर जी विद्यार्थी, कुँवर गोविन्ददास जी, शिववल्लभ जी और गणेशनारायण जी सोमानी थे।

राष्ट्रस्तर के नेताओं में स्वामी जी का स्थान रहा है।

यह पत्र मास्टर भिक्षालाल जी शर्मा द्वारा सुलताना, चिड़ावा (जयपुर राज्य) से दिनांक २२-३-२२ को स्वामी जी के नाम लिखा गया है——

(मास्टर भिक्षालाल जी पहले चूरू में अध्यापक थे और स्वामी जी के सहकर्मी थे। लेकिन राष्ट्रीय विचारों के कारण हटा दिये गये थे, पर स्वामी जी के उद्योग से अच्छे काम पर लग गये थे। इन्होंने बीकानेर तथा शेखावाटी के अनेक स्थानों में सर्वहितकारिणी सभा की शाखायें स्थापित कीं और जनजागृति के लिए खूब काम किया।)

सुलताना
चिड़ावा
२२-३-२२

प्रियवर्य्य, सप्रेम नमस्ते।

आज आपका प्रेम पत्र मिला, समाचार जाना। यहाँ पर "श्री सर्वहित-कारी राजपूत स्कूल" तो स्थापित हो चुका है। सभा अभी नियमानकूल स्थापित नहीं हो पाई है, परन्तु शीघ्र ही स्थापित होगी। आपने जैसा हाल यहाँ का देखा था, उससे बहुत अच्छा अब है। १० तथा १५ महाजनों, ब्राह्मणों ने स्वदेशी वस्त्र भी धारण किये हैं और नित्य धारण करते जा रहे हैं।

पिछले दिनों एक घटना ऐसी हो गई जो यहाँ की जनता में जोश भर गई। बात यह हुई कि एक राजपूत ने होली के दिन एक महाजन से शराब माँगी और जब न मिली तो उसको इतना मारा कि उसके हाथ-पाँव तक टूट गये।

जो दो दिन तक बराबर रही, फिर कुछ समझौता होकर खुली। उस समय से कुछ जोश है, लेकिन मास्टर आदि राज्य के तरफदार हैं, महाजनों को लुटवाना चाहते हैं, इससे लोग भयभीत हैं। बाकी बहुत कछ समझाये गये हैं और अब शान्ति है।

क्या कोई दैनिक यहाँ की सर्वहितकारिणी सभा के नाम किसी सज्जन से जारी कराने का अनुरोध करेंगे? कुछ जोर पकड़ने पर तो सभा आप ही जारी करा लेवेगी लेकिन इस समय प्रधान सभा की सहायता की पात्र है। कुछ नियम और प्रार्थनापत्र भी भेजियेगा, फिर यहाँ भी छपवा लिये जावेंगे। आपसे जैसा कहा था उसी के अनुकूल काम की लगन में हूँ। सभा बाकायदा स्थापित होने से सूचित करूँगा। प्रिय मित्र महन्त जी तथा शान्त शर्मा जी से नमस्ते कहियेगा।

स्नेही
भिक्षालाल शर्मा
मास्टर

यह पत्र भी सुलताना चिड़ावा से मास्टर भिक्षालाल जी शर्मा द्वारा स्वामी जी के नाम ता० ६-४-२२ को लिखा गया है—

प्रिय मित्र स्वामी जी,

आपका पत्र भी मिला था, तार भी मिला था, मैंने भी आपको समय पर उत्तर दिये। क्या करूँ दिन के दिन तक पहुँचने की इच्छा थी, लेकिन कुछ कारण ऐसे आ पड़े कि न पहुँच सका, क्षमाप्रार्थी हूँ। न पहुँचने का जितना खेद मुझको है शायद और किसी को न होगा।

श्री सर्वहितकारिणी सभा चूरू की शाखा सभा यहाँ स्थापित हो चुकी है, २ अधिवेशन भी बड़ी धूमधाम से हो चुके जिनमें डेढ़-डेढ़ दो-दो सौ आदमियों की उपस्थिति थी। कल विशेषाधिवेशन और होने वाला है। लोगों में उत्साह है। जैसी आपने देखी थी वैसी मुर्दा हालत अब नहीं है। ३० तथा ४० आदमियों ने स्वदेशी वस्त्र भी धारण किये हैं। विशेष दूसरे पत्र में लिखूँगा। सर्वहितकारी राजपूत स्कूल भी खुल गया है। पं० गणपति जी तथा शान्त शर्मा जी से नमस्ते। पूज्य पंडित कन्हैयालाल जी से भी नमस्ते कहियेगा। पत्रोत्तराभिलाषी

भिक्षालाल शर्मा
मास्टर

यह पत्र चूरू के युवक और उत्साही कार्यकर्त्ता श्री डेडराज जी मड़दा ने कलकत्ता से दिनांक १९ नवम्बर १९२२ को स्वामीजी के नाम लिखा है—

ओ३म्

Canning House
177, Canning street
Calcutta, 19th Nov. 1922.

श्रीयुत स्वामी गोपालदासजी
चूरू

सादर प्रणाम। पत्र आपका कई दिन पहले आया था। इन दिनों मांय आया नहीं कृपया दीजिएगा। और बीकानेर राज्य में जगात बहुत बढ़ गई सुणां छां तथा और कई तरह का कानून पास होया सुणां छां सो कितनी जगात बढ़ी तथा कौन-सा नया कानून होया छै कृपा कर लिखियेगा। और सभा का ऋण उतर गया सुण कर बहुत खुशी हुई। महंत जी गणपतदास जी को मेरा प्रणाम कह दीजिएगा। पत्र का उत्तर दीजिएगा। मेरे योग्य जो कार्य हो लिखियेगा। सभा का काम बहुत अच्छी प्रकार चलता होगा। हमारै घर पर राजी-खुशी का कहवा दीजिएगा।

आपका आज्ञाकारी
डेडराज मड़दा

(नगर-श्री, पत्र सं० २१४)

अन्य बातों के अतिरिक्त इस पत्र से यह प्रकट होता है कि सभा-भवन निर्माण में जो ऋण लिया गया था वह चुकता हो गया। सभी कार्यकर्त्ताओं को इससे हर्ष होना स्वाभाविक था।

श्री डेडराज जी मड़दा स्वामी जी के युवक कार्यकर्त्ता रहे हैं, वैसे पड़ोसी भी। अब भी सार्वजनिक हित के कार्यों में बहुत भाग लेते हैं और चूरू के एक प्रतिष्ठित नागरिक हैं।

इस वर्ष बीकानेर राज्य में जकात सम्बन्धी अनेक कर बढ़ाये गये थे, जिनका बहुत विरोध हुआ। अखबारों में तब इन करों के विरोध में अनेक प्रकार की खबरें छपती थीं और काफी आन्दोलन हुआ था। दैनिक 'स्वतंत्र' के १०-११-२२ के अंक में वैद्य शान्त शर्मा का "बीकानेर राज्य का नया ऐलान" शीर्षक लेख छपा था। दैनिक 'स्वतंत्र' के ७-१२-२२ के अंक में "बीकानेर राज्य में रक्त चूस

कानून" शीर्षक से एक लम्बा लेख निकला था जिसमें इन करों के दुष्परिणाम दिखलाये गये थे। इन करों का विरोध करने के लिए युवकों और संस्थाओं का आवाहन करते हुए लिखा था—

साथ ही बीकानेर राज्य की पबलिक संस्थाओं का ध्यान भी इस ओर खींचते हैं कि अपनी ओर से आन्दोलन करें। विशेषकर चूरू की संस्थाओं को इसमें विशेष भाग लेना चाहिये। चूरू आजकल उन्नत है। चूरू के नवयुवक भी बड़े उत्साही वीर हैं, देश-सेवा के कार्य में विशेष रूप से भाग लेते हैं। इसलिये चूरू की नामी संस्था 'सर्वहितकारिणी सभा' तथा 'चूरू सेवा समिति' के संचालकों से नम्र निवेदन है कि इस विषय में घोर आन्दोलन करें।

इसी प्रकार 'कलकत्ता समाचार' ने भी करों के विरोध में आवाज उठाई थी। 'कलकत्ता समाचार' ता० २-१२-२२ ई० के अनुसार मार्गशीर्ष शुक्ला ६ सोमवार रात्रि के ८ बजे श्री माहेश्वरी भवन (कलकत्ता) में बीकानेर राज्य के निवासियों की एक विराट सभा बा०,छोगमल जी चोपड़ा की अध्यक्षता में हुईथी जिसमें प्राय: दो हजार से अधिक की संख्या में लोग उपस्थित थे। अर्जुनलाल जी सेठी व पं० नेकीराम जी शर्मा के जोशीले भाषण हुये। पं० वैद्य शान्त जी शर्मा ने अपना लिखित भाषण पढ़ा। इसके बाद ६ प्रस्ताव पास हुये जिन पर श्री रामकृष्ण जी मोहता, पं० वैद्य शान्त शर्मा जी, बा० तिलोकचंद जी सुराना, बा० शुभकरन जी सुराना, बा० रंगलाल जी जाजोदिया व बा० बालचंद जी मोदी आदि के सामयिक भाषण हुए[1]।

यह पत्र बीकानेर से कर्नल महाराजा सर भैरूंसिंह जी ने स्वामी जी को

BIKANER,
RAJPUTANA

जावेगा और पुत्री पाठशाला के शिलारोपण का महोत्सव भी होगा। मैं अफसोस करता हूँ कि मैं इस मौके पर शामिल न हो सकूँगा मगर मुझे बहुत खुशी है कि सभा तरक्की कर रही है और पाठशाला वगैरह इल्म के कामों मे ऐसी बड़ी दिलचस्पी ले रही है। उम्मीद कि आयन्दा ऐसे-ऐसे अच्छे काम और भी इस सभा के जरिये से होंगे जिससे बीकानेर की जनता को खास कर चूरू निवासियों को तालीम की तरफ बहुत कुछ फायदा पहुँचेगा मेरी इस सभा की तरफ ऐसे तालीम के काम होते देख पूरी सहानुभूति है॥

भवदीय——
ह० भैरूंसिह
कर्नल के० सी० एस० आई०

(नगर-श्री, पत्र सं० २२६)

स्वामी जी कभी कोई कार्य छुपकर नहीं करते थे। सर्व हितकारिणी सभा के उत्सवों पर जैसे वे बड़े-बड़े विद्वानों और नेताओं को बुलाते थे वैसे ही राज्य के बड़े से बड़े अफसरों को भी निमंत्रित करते थे। जो उत्सव में स्वयं शामिल नहीं हो पाते थे वे अपनी शुभकामनाएँ अवश्य भेजते थे। ऐसे अनेक संदेश स्वामी जी के पत्रों में मिले हैं। उपरोक्त पत्र भी कर्नल महाराजा सर भैरूंसिह द्वारा इसी प्रसंग में लिखा गया है।

महामारियाँ और सेवा-कार्य

यह पत्र बाबू शिवप्रसाद जी सराफ द्वारा स्वामी जी के नाम ता० २६-११-१७ को लिखा गया है।

(श्री शिवप्रसाद जी चूरू के एक बहुत उत्साही और समाज-सेवी व्यक्ति थे। आर्यसमाज के सिद्धान्तों के समर्थक थे और समाज में फैली बुराइयों को दूर करने में सदा तत्परता से भाग लेते थे। नारी-शिक्षा, अछूतोद्धार आदि के समर्थक थे। पानी के कष्ट को देख कर इन्होंने देहातों में कुण्ड आदि भी बनवाये थे। समाज शुद्धि के काम में इनकी रुचि थी। जहाँ आवश्यकता देखते बिना किसी के कहे सहायता करते थे। शिवप्रसाद जी स्वामी जी के पूरे भक्त थे और हर कार्य में उन्हें सहयोग देते थे। सन् १६१७ में इस क्षेत्र में शीतज्वर महामारी के रूप में फैला था, उसी के सम्बन्ध में उन्होंने निम्न पत्र लिखा है :

मान्यवर महोदय, नमस्ते।

'भारतमित्र' में आपका पत्र पढ़ा जिसमें आप लिखते हैं कि सेवा के लिए सभा को एक ऊँट और दो आदमियों की दरकार है। सो मेरे हिसाब में कुछ रुपया बाकी होवै तो इस काम के लिये बरत लेना। यदि पहले कोई और काम में बरते गये हों तो २५) रुपया मेरी तरफ से सेवा-समिती में दे देना। आपका समाचार आवते ही रुपैया भेज दिया जावेगा। और मदास वाली कुंड इस साल बनवाने की चेष्टा रखना। २६-११-१७

वि० सं० १६७४ में यहाँ भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा था। वैसे अधिकतर यहाँ सूखा पड़ने से या वर्षा कम होने से अकाल पड़ता है, लेकिन इस साल अतिवृष्टि के कारण अकाल पड़ा, फसल बिलकुल नष्ट हो गई। इस अवसर पर सभा ने अन्न और वस्त्र से बहुत सहायता की। बाहर के धनिकों से भी कोशिश करके

ऐसे कठिन समय में ५ अक्तूबर सन् १९१७ को सभा का एक विशेष अधि-वेशन बुलाया गया। पं० हीरालाल जी तहसीलदार और डाक्टर उमरावसिंह जी इस काम के लिए संरक्षक बनाये गये और पं० कन्हैयालाल जी ढूंढ़ (म्युनिसि-पल सदस्य), स्वामी जी, मास्टर श्रीराम जी, पं० चोखराज जी, मास्टर राम-लाल जी ओझा, जेष्ठाराम जी, शान्त शर्मा जी, महन्त गणपति जी, बालचंद जी मोदी, कन्हैयालाल सूरेका, लालचन्द जी गोयनका, ठाकुरदत्त जी शर्मा, नागर-मल जी मंत्री, बदरीदास जी सराफ, रामप्रतापजी सिवी और दुर्गादत्त जी केजड़ी-वाल इसके लिए कार्य-संचालक बनाये गये।

देहातों में सेवा-कार्य के लिए वैद्य शान्त शर्मा जी और महन्त गणपतिदास जी ता० ९-१०-१७ को भेजे गये। उन्होंने २० दिनों तक ऊँट की सवारी से और पैदल घूम-घाम कर सेवा की। न केवल चूरू तहसील के गाँवों में बल्कि सरदार-शहर तहसील के दूर-दूर के गाँवों में पहुँचकर सेवा की गई। कुल ६११७ रोगियों को दवा दी गई जिनमें से १९८ असाध्य रोगी थे। स्वामी गोपाल-दास जी व शान्त शर्मा जी ने 'भारतमित्र' आदि पत्रों में जो सूचनाएँ प्रकाशित करवाई थीं उनसे ज्ञात होता है कि कलकत्ता तथा अन्य स्थानों से भी दवाइयाँ आदि प्राप्त हुईं। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी ने ६,००० कुनैन की गोलियाँ तथा २५० गर्म ऊनी कोट गरीबों को बाँटने के लिए भेजे।

बाबू शिवप्रसाद जी का उपरोक्त पत्र इसी संदर्भ में लिखा गया है।

अगला पत्र सेवा समिति अजमेर के मंत्री कँवर चाँदकरण जी शारदा का दिनांक

॥ ओम् ॥

सेवा समिति अजमेर

अजमेर ता० ११-४-१९१८

श्रीयुत गोपालदास जी
मंत्री सर्वहितकारिणी सभा,
चूरू ।

नमस्ते ।

आपके तार के उत्तर में निवेदन है कि औषध व स्वयंसेवक भेजने का प्रबन्ध कर रहा हूँ । शीघ्र ही आजकल में आपकी सेवा में पहुँचेंगे । प्यारेलाल जी औषधियाँ लेकर पधार रहे हैं । कृपा कर इन औषधियों के दाम व पहले राजगढ़ के स्वयंसेवकों के साथ औषधियाँ भेजीं उनके दाम आप अपनी समिति से यदि वह देने में समर्थ हो तो भिजवा दें । बिल भी इनके साथ भेजता हूँ ।

विनीत
चाँदकरण
मंत्री

(नगर-श्री, पत्र सं० २३)

शीतज्वर की व्याधि के कुछ ही समय बाद मार्च सन् १९१८ में चूरू में प्लेग की महामारी भयंकर रूप में फूट पड़ी । पहले-पहल कटले में जहाँ खरादियों के घर थे, यह महामारी प्रकट हुई और बहुत शीघ्र ही सारे नगर में व्याप्त हो गई। बड़ी संख्या में लोग मरने लगे । नगर में बड़ा आतंक और भय व्याप्त हो गया। चारों ओर हाहाकार और क्रन्दन मच गया । लोग अपने घरों में अशक्त और बीमारों को छोड़-छोड़ कर आसपास के गाँवों में भाग गये । नगर लगभग खाली हो गया । बीमारों को कोई पानी देने वाला और मृतकों को उठाने वाला नहीं रहा । घरों में बीमार तड़प-तड़प कर मरने लगे और लाशें सड़ने लगीं । जो भागने में असमर्थ थे उन्होंने भय के मारे अपने-अपने घरों के फाटक बन्द कर लिये और अन्दर ही मर गये । ऐसे महाभयंकर और कठिन समय में स्वामी गोपालदासजी ने जिस निर्भीकता और कर्तव्यपरायणता से जनता की सेवा की उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है । घर के सदस्यों और नौकरों ने जब लाशें उठाने से इनकार कर दिया तो ऐसी सूरत में स्वामी जी ने अजमेर से स्वयंसेवक बुलवाये थे । कुँअर चाँदकरण जी शारदा का उपरोक्त पत्र इसी संदर्भ में लिखा गया है ।

चार स्वयंसेवक अजमेर से आये, कुछ को स्वामी जी ने यहाँ तैयार किया और कुछ व्यक्तियों को लाशें उठाने के लिए पैसे देकर रखा गया। चूंकि पैदल घूमकर सारे नगर के लोगों की खोज-खबर लेना मुश्किल था, अतः वे घोड़े पर सवार होकर सारे नगर में घूमते। रोगियों के लिए दवादारू व खाने-पीने का प्रबन्ध करते, घरों में सड़ती हुई लाशों को निसेनियां लगा-लगाकर निकालते, उनकी दाहक्रिया करवाते और फिर घरों के सामान की सुरक्षा का प्रबंध करते।

चूरू के सुप्रसिद्ध कवि पं० अमोलक चन्द ने स्वामी जी की निष्काम सेवा से प्रभावित होकर कहा था——

चूरू सहर में सोर भयो, जद जोर कर्‌यो हो प्लेग हत्यारी।
लास पड़ी घर के अन्दर ढक छोड़ चले कर बंद किवाड़ी॥

.. .. ..

आवत है गोपाल अश्व चढ़, देखत जहाँ बीमार पड्यो है।
देत दवा वो दया करके जैसे नाथ अनाथ को नाथ खड्यो है॥

नगर में डाक और तार की व्यवस्था सब अस्तव्यस्त हो गई थी। सारे पत्र और तार स्वामी जी के पास ही आते और वे ही आस-पास के गाँवों में रह रहे सम्बन्धित व्यक्तियों तक उनको पहुँचाते। यहाँ की डाक व तार बिसाऊ भेजकर लगवाते थे, क्योंकि बिसाऊ में यह महामारी नहीं फैली थी। कुछ समय पश्चात् रामगढ़ में यह अवश्य फूट पड़ी थी। महामारी के दरमियान भी कभी-कभी दिलचस्प झलकियां देखने को मिल जाती थीं। महामारी फैलने के शुरू के दिनों में ही एक दिन एक अनाथ लड़की नगर से बाहर नडियाकुआँ के पास मर गई और स्वामी जी ने उसकी दाहक्रिया करवा दी। इस पर स्थानीय थानेदार ने एतराज उठाया और कहा कि लाश को जलाने से पूर्व पुलिस की तहकीकात करवानी चाहिए थी। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि आगे से ऐसा ही करेंगे। अगले ही दिन नगर में १०-१२ केस हुए और स्वामी जी ने हर बार थानेदार को बुलवाया। लेकिन थानेदार साहब एक ही दिन में तंग आ गये और उन्होंने स्वामी जी से माफी माँगते हुए कहा कि महाराज जैसा आप ठीक समझें किया करें।

और "डाभला" गये। उस साल होली भी वहीं मनाई गई। अधिकतर लोगों के बाहर भाग जाने पर भी चूरू में ८०० व्यक्ति इस महामारी के कारण मृत्यु के शिकार हुए। महामारी का प्रकोप लगभग २॥ मास तक रहा।

जब महामारी का प्रकोप शान्त हो गया और लोग फिर से आकर अपने-अपने घरों में बस गये तो स्वामी जी ने मृत व्यक्तियों के रिश्तेदारों को उनका सामान सम्हला दिया। इस बीच उन्होंने इस बात की भी चौकसी रखी कि किसी के घर से कोई चीज चोरी न चली जाए। सोना-चाँदी जेवर और रुपये तो क्या किसी का एक धागा भी इधर उधर नहीं हो पाया। पूर्णतया शान्ति स्थापित होने के बाद स्वामी जी ने महामारी में मृत व्यक्तियों की भस्मी हरिद्वार पहुँचाई। श्मशान से भस्मी के गाड़े भरे गये और एक जुलूस के रूप में भस्मी के गाड़े स्टेशन पहुँचाये गये और फिर सारी भस्मी हरिद्वार ले जाकर गंगा जी में प्रवाहित की गई।

कवि के शब्दों में उस वक्त का भयानक चित्रण दृष्टव्य है—

लगती ही प्लेग चली आई,
घर घर में ल्हासां बिखराई।
पाटै उतरण लागी नगरी,
कद की पापाई उधड़याई।
हो बात दुवावाई की पीछै,
पाणी प्यावणियों नहीं दिखै।
घर घर में ल्हासाँ पड़ी सिड़ै,
मुर्दो ठावणियो नहीं दिखै।
भाई नैं भाई छोड़ गयो,
मोट्यार लुगाई छोड़ गयो।
बेटा माँ-बापां न छोड़्या,
दादो पोतां नैं छोड़ गयो।
ग्वाड़्यां का खुला पड़्या फळसा,
हेल्याँ की पोळी खुली पड़ी।
बस अवणी ज्यान बंचावणनैं,
सारी ही दुनियाँ डुली पड़ी।
बीं वखत मौत के मूंडै में,
बो बड़ग्यो गाँव बंचावणनैं।

चूरू को चाँद चढ्यो छोड़ै,
साधू को धरम निभावणनै।
मा-बाप पड्या सिसकारै हा,
टाबरिया चिरली मारहा।
थो जणो-जणो रोतो फिरतो,
मों ब्याँ नै बाप पुकारे हा।
बो सैंका आँसू पूंछै हो,
हिम्मत धीरज बंधवावै हो।
दुखियाँ नै चेप कालजै के,
बस स्यामी ही पुचकारै हो।
बोकरी रुखाली घर-घर की,
रैखुली तिजूर्याँ पड़ी रही।
सूई भी उजड़ नहीं पाई,
स्यामी की लाठी खड़ी रही।

—श्री सुबोध कुमार अग्रवाल की स्वामी गोपालदास जी
सम्बन्धी कविता —

यह पत्र भी कुंअर चाँदकरण जी शारदा, मंत्री सेवा समिति अजमेर की ओर से लिखा गया है।

सेवा समिति अजमेर

अजमेर ता० २८-४-१६१८

श्रीयुत गोपालदास जी स्वामी
मंत्री सर्वहितकारिणी सभा

सूचित कीजिए कि उन्हें क्या उत्तर दूं। अपने को राजस्थान परिषद् को पुष्ट करना है यह ध्यान आपको सदा है, यह जानकर मेरे उत्साह की सीमा नहीं रही। भारतमित्र में आन्दोलन हो ही रहा है, पर अभी बहुत कुछ करना है। अपने विचारों और मेरे योग्य सेवा से सूचित करते रहें। आपके भेजे ५०) आ गये हैं, रसीद किस नाम की भेजूं ? श्री शिवप्रसाद जी ने कलकत्ते से मुझे लिखा है कि उन्होंने आपको १००) और भेजने की सूचना दी है। उत्तर से बाधित करें। बिल एक दो दिन में भेजता हूँ।

विनीत
चाँदकरण शारदा
मंत्री

(नगर-श्री, पत्र सं० ५२)

उन दिनों म्यूनिसिपल बोर्ड के प्रधान तहसीलदार ही होते थे। चूरू म्यूनिसिपल बोर्ड से ४००) रुपये सेवा समिति अजमेर को दिये गये थे।

यह पत्र कुंअर चाँदकरण जी शारदा, मंत्री सेवा समिति अजमेर की ओर से दिनांक ८-५-१८ को स्वामी जी के नाम लिखा गया है—

अजमेर ता० ८-५-१९१८

श्रीयुत स्वामी गोपालदास जी
मंत्री सर्वहितकारिणी सभा
चूरू

नमस्ते !

आपका ४-५ का पत्र मिला, समाचार पढ़कर अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ। यदि राजस्थान के भिन्न-भिन्न केन्द्रों में आपके समान दस-पाँच सहयोगी और प्राप्त कर सकूं तो अपना अहोभाग्य समझूँ। राजस्थान में निरन्तर आन्दोलन जारी रखने के लिए मैं सतत उद्योगी हूँ। इसी निमित्त अब अजमेर को छोड़ कर बाहर के स्थानों का सारा कार्य 'राजस्थान सेवा परिषद्" की ओर से होगा।

शेखावाटी में तथा अन्य स्थानों में प्लेग कम होता जा रहा है और मेरा अनुमान है कि मई के अन्त तक सर्वत्र शान्ति विराजने लगेगी। इसके पश्चात् मैं आपकी सेवा में राजस्थान सेवा परिषद् की कार्य प्रणाली के सम्बन्ध में

विचार प्रस्तुत करूँगा। श्रीयुत शिवप्रसाद जी का एक तार रामगढ़ स्वयंसेवक भेजने को आया था तदनुसार यहाँ से स्वयंसेवक भेज दिये गये। चूरू में जो व्यय हुआ है वह आपकी आज्ञानुसार आप ही के द्वारा हुआ समझा जायेगा। मिलापचन्द जी के यहाँ आने पर उनसे हिसाब लेकर आपको भेज दूँगा। बीकानेर में भी अब बहुत कुछ कमी है ऐसा सुनता हूँ। सुजानगढ़ के समाचार लिखें।

कृपा कर अपने प्रान्त में मेलों आदि पर प्रचार और सेवा करने के लिए स्थान-स्थान में जितनी भी समितियां स्थापित हो सकें करें। मेरे योग्य सूचना व आज्ञा लिखें। आगे से पत्र व्यवहार मंत्री, राजस्थान सेवा परिषद् के नाम से करें।

कल एक रेलवे की बिल्टी भेजी है, वह मिल गई होगी, उसे छुड़ा लें। आपके लेखानुसार ये चीजें भेजी हैं।

३ कमीज ऊनी	२ पैन्ट नये	४ बैज	४ जोड़ी मोजे
४ जोड़ी बूट	२ पैन्ट पुराने	४ बेल्ट	१ कमीज का कपड़ा

पुनश्च—

इतना लिखने के पश्चात् आपका २६-४-१८ का पत्र मिला। श्रीयुत शिवप्रसाद जी द्वारा श्रीयुत रामजसराय जी आसाराम जी के २०० रु० मुझे मिल गये हैं। मैंने आपके अनुमान के अनुसार श्रीयुत शिवप्रसाद जी को कोई पत्र नहीं लिखा।

स्वयंसेवकों को तैयार करने के लिये आपको अनेक धन्यवाद। आपसे, सज्जनों के उद्योग से राजस्थान में अवश्य जीवन संचार होगा। चूरू में रोग की कमी के समाचार जानकर सन्तोष हुआ। परमात्मा शीघ्र ही शान्ति करेंगे। मेरे पास रामगढ़ की तरफ से माँग नहीं परन्तु यदि कोई तार या पत्र आया तो आपके द्वारा ही चूरू के ही स्वयंसेवकों द्वारा वहाँ का प्रबन्ध होगा। मेरा विचार है कि शेखावाटी का सारा कार्य चूरू को केन्द्र मान कर किया जावे। आपकी क्या सम्मति है? आज सुजानगढ़ चार स्वयंसेवक गये हैं, वहाँ के तहसीलदार का तार था।

इस पत्र से जाना जाता है कि स्वामी जी के सम्बन्ध में राजस्थान के वरिष्ठ नेताओं की कितनी ऊंची राय थी और वे उनके सहयोग की कितनी अपेक्षा रखते थे। पत्र से यह भी ज्ञात होता है कि स्वामी जी ने चूरू में सेवा कार्य करने के लिए स्वयंसेवक तैयार कर लिये थे जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर बाहर भी भेजा जा सकता था। लेकिन बीकानेर जैसे बड़े शहर में जो राज्य की राजधानी भी था एक भी ऐसा स्थानीय व्यक्ति तैयार नहीं हो सका था जो अजमेर से भेजे गये स्वयंसेवकों को सहयोग देता। लेकिन अजमेर के स्वयंसेवकों ने अपना कर्तव्य पूरी जिम्मेवारी के साथ निभाया, यह भी उपरोक्त पत्र से जाना जाता है। खेद है कि बीकानेर राज्य का वृहत् इतिहास जिसे महामहोपाध्याय रायबहादुर डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, डी० लिट्० ने दो खंडों में तैयार किया है इन भयंकर महामारियों के विषय में विशेष जानकारी नहीं दी है। बीकानेर राज्य का इतिहास खंड २ पृ० ५३७ पर सिर्फ इतना लिखा है, प्लेग और इन्फ्लुएन्जा जैसी भयंकर व्याधियाँ राज्य में फैल जाने पर भी महाराजा साहब (गंगासिंह जी) ने लगभग ढाई हजार रंगरूट बीकानेर राज्य से भेजे।

बूट और मोजे शायद अजमेर से आये हुए स्वयंसेवकों के लिए भेजे गये थे क्योंकि प्लेग की महामारी में इनसे बहुत बचाव होता था।

यह पत्र श्री बालचन्द जी मोदी द्वारा ता० २ मई सन् १९१८ को कलकत्ता से स्वामी जी के नाम लिखा गया है। इसमें भी चूरू की महामारी के समाचार हैं—

महादय,

पोस्टकार्ड मिला। बीमारी का भयानक हाल पढ़ने से चित्त बड़ा ही खिन्न हुआ। बहुत दिन हो गये, अब तो इसका अन्त होना चाहिए। आज भारत-मित्र में आपकी रिपोर्ट पढ़ने से तो रोमांच होता था। मुझे इस बात का गौरव है कि आप अपनी जान पर खेलकर सर्वहितकारिणी का नाम सार्थक कर रहे हैं। पुजारियों की तरह आपका नम्बर नहीं आ सकता। परन्तु इतना खयाल रखिए, एक स्थान पर मत रहियेगा। दो-तीन स्थान रखना ठीक है। एक दिन कहीं, एक दिन कहीं, ऐसा सोना बैठना रखना ठीक है।

चूरू में यह समिति कौन सी है? और डा० गिरधारीलाल कौन हैं? समझ में नहीं आया। स्त्री कौन मरी थी, क्या सरकारी डाक्टर भी नहीं आया। कागद में रिपोर्ट पांच चार अवश्य भेजिएगा तथा एक-दो पत्र दरबार को देना चाहिए,

जिसमें लिखना चाहिए कि हम लोग काम करते हैं परन्तु सरकार की कुछ मदद होनी चाहिए। वह मदद यही दरकार है कि सफाखाने से मदद मिले तथा ऐसा प्रबन्ध कर दिया जाय कि मेहनत के रुपये देने पर हमें आदमी मिल सकें। इस 'शय का एक-दो पत्र अवश्य देना चाहिए तथा यह भी लिखा रहना चाहिए क शीत-ज्वर के समय से सभा काम कर रही है, परन्तु यह समय भयानक अतः राज की सहायता की विशेष आवश्यकता है कुछ हो न हो पर पत्र वश्य देना चाहिए। अजमेर समिति को यहाँ से कोई ४०० रु० सहायता मिली है।

मित्र मंडली सब प्रसन्न होगी? शान्त क्या चल दिया? श्री रामजी, ठाकुर चोरा० पंडितजी कहाँ हैं? सब की प्रसन्नता लिखना। मेरे योग्य सेवा लिखें। (नगर-श्री पत्र सं० ६२)

उपरोक्त पत्र से जहाँ महामारी की भयंकरता का भान होता है वहाँ स्वामी जी की सेवा पर भी कुछ प्रकाश पड़ता है। साथ ही यह भी जाहिर होता है कि तत्कालीन सरकार ने इस महाभयंकर व्याधि के समय में भी आवश्यक सहयोग नहीं दिया। पत्र में लिखित डा० गिरधारीलाल शायद डा० गुलजारी लाल हैं। डा० गुलजारी लाल जी इन दिनों नारायण दातव्य औषधालय में डाक्टर थे। यह औषधालय पहले कटले में गंगामाई के मन्दिर की धर्मशाला में था, किन्तु सब से पहले प्लेग की महामारी यहीं प्रगट हुई, अतः औषधालय यहाँ से उठकर धानुकों की धर्मशाला में ले जाया गया और फिर जब उसका निजी भवन बन गया तो उसमें स्थापित हो गया जो अभी तक चालू है।

यह पत्र श्री बालचन्द जी मोदी द्वारा दिनांक २४ मई १९१८ को कलकत्ता से लिखा गया है—

श्रीयुक्त स्वामी गोपालदास जी,

महोदय,

कृपा पत्र ता० १७-५-१९१८ का यथासमय मिला। अत्यन्त हर्ष की बात है कि चूरू की दशा अब सर्वथा सुधर गई है। भारतमित्र में आपकी दूसरी रिपोर्ट देखी। मालचन्द कोठारी से २५० रु० की सहायता पहुँचने का समाचार विशेष भाव को पैदा करने वाला है। मुझे हर्ष है कि आपकी सभा के सदस्यों द्वारा ही उसे कुछ शिक्षा मिली है।

चूरू की जनता को इस समय अच्छे प्रकार सभाओं का महत्व ज्ञात हो

जाना कम सफलता की बात नहीं है। किसी देश या जाति में नवीनता आई है तो उसके व्यक्तियों के स्वार्थ त्याग और आत्मोत्सर्ग से ही आई है। किसी व्यक्ति विशेष के विचारों का सिक्का जमा है तो वह भी स्वार्थ-त्याग और आत्मोत्सर्ग से ही। मुझे बड़ा ही हर्ष और गौरव है कि आपने वैसा ही किया। मेरा उद्देश्य और कुछ नहीं केवल इतना ही है कि उन स्वार्थी धूर्तों को उनकी चुंगली करने वाली आदत छुटाऊँ और शर्म दूं। मुझे यह भी दिखाना है कि जिस संस्था और जिन कार्यकर्ताओं पर सरकार ने कुछ भी आगा पीछा न देख अभियोग लगाना चाहा था वे भी समझ जाएँ कि वास्तव में बात क्या थी। एक दो लेख महाशय रावतमल पेड़ी वाल के नाम से छपने चाहिए जिससे पब्लिक पर असर पड़े।

पदक के लिए सेवा समिति अजमेर से पूछा होगा। समाचार आने पर शेष पदक भेज दूंगा। चूरू के ४ सेवक कौन हैं, उनके भी नाम ठाम पूरे आने चाहिएं। यह उत्साहवर्द्धक कार्य है। यह तो लिखिए अपने स्टाफ में तो बिमारी में खैरियत रही होगी।

भवदीय

(नगर-श्री पत्र संख्या ६७) बालचन्द मोदी

इस पत्र से ज्ञात होता है कि अनेक स्वार्थी तत्त्व स्वामी जी व सर्वहितकारिणी सभा के विरुद्ध षड्यंत्र रचते रहते थे और बीकानेर सरकार के पास चूरू में होने वाले सामाजिक उत्थान के कार्यों के सम्बन्ध में उल्टी सीधी बातें लिखकर इन्हें दंडित कराना चाहते थे। राज्य सरकार भी इनकी गतिविधियों को सन्देह की दृष्टि से देखती थी और बहुत सजग रहती थी कि उपयुक्त अवसर मिलते ही इनको उखाड़ फेंका जाय। लेकिन महामारी के समय में इनके द्वारा किये गये अभूतपूर्व सेवा कार्य को देखकर एकबारगी चुप हो गई।

(यह तार अजमेर से कुं० चांदकरण जी शारदा ने स्वामी गोपालदास जी के नाम दिनांक ७ नवम्बर १८ को दिया था जिस पर ८ नवम्बर सन् १८ की चूरू पोस्ट आफिस की मुहर है—तार में लिखा है—

Wire if help needed in influenza.

तो बख्श दिया था लेकिन इस बार छोटे गाँव भी इसकी चपेट में आ गये। सर्वहितकारिणी सभा की रिपोर्ट सं० १९७८ से ज्ञात होता है कि उस समय इस व्याधि से चूरू में छः हजार व्यक्ति पीड़ित हुए थे जिनमें से बीस दिनों के भीतर १२०० व्यक्ति काल के गाल में चले गये। सभा के सेवकों ने चूरू में ५ कैम्प लगाये थे और बड़ी सेवा की थी। मरने वालों में अधिक संख्या गरीबों और सौभाग्यवती स्त्रियों की थी। उतराधे बाजार के सेवकों ने दोनों महामारियों में विशेष तत्परता दिखलाई थी।

चाँदकरण जी का उपरोक्त तार इसी सिलसिले में आया था। लेकिन सभा के उद्योग से इस बार यहीं स्वयंसेवक तैयार कर लिये गये थे।

वि० सं० १९७४-७५ के वर्ष (सन् १९१७-१८) इस क्षेत्र के लिए बड़े ही दुर्भाग्यपूर्ण रहे। अकाल, शीतज्वर, प्लेग और इनफ्लूएन्जा जैसी महामारियों ने यहाँ के समूचे जन-जीवन को झकझोर डाला। इन महामारियों के कारण चूरू की जनसंख्या पर भी बड़ा असर पड़ा। सन् १९११ के मुकाबले सन् १९२१ में सिर्फ ८९४ व्यक्तियों की वृद्धि हुई जब कि अगले दस वर्षों (१९२१ से १९३१) में ५०३३ व्यक्ति बढ़े। लेकिन घोर संकट के इन वर्षों में स्वामी जी ने इस क्षेत्र की अनुपम सेवा की। स्वामी जी ने न केवल पुरुष स्वयंसेवक ही यहाँ तैयार किये बल्कि स्त्री स्वयंसेविकाओं को भी तैयार किया। स्त्री स्वयंसेविकायें भी पूर्ण उत्साह एवं जिम्मेदारी से अपना कर्तव्य निभाती थीं। इनमें से एक स्वयंसेविका सरस्वती देवी अभी मौजूद हैं जो सन् १८ में नाशिक कुंभ के अवसर पर गई थीं और जिन्होंने वहाँ श्लाघ्नीय सेवा की थी।

कुंभ-प्रयाग और नाशिक मेलों पर सेवा कार्य

यह पत्र स्वामी जी के युवक सहयोगी वैद्यशान्त शर्मा जी द्वारा दिनांक ५-२-१८ को प्रयाग से लिखा गया है। श्री वैद्य जी शुरू से ही स्वामी जी के निकट सहयोगी तथा अनुयायी रहे हैं और स्वामी जी के हर कार्य में पूर्णतया योग देते रहे हैं। हर्ष है कि वे आज भी हमारे बीच मौजूद हैं और हमारा मार्ग दर्शन कर रहे हैं। स्वामी जी के सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं जो कुछ लिखा है, उससे स्वामी जी के कार्यों पर और दोनों महानुभावों के सम्बन्धों पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है।

पत्र एक आपको आज दिन में दिया था। अब बड़े हर्ष से लिख रहा हूँ, छोलदारियें तनी हुई हैं, रात का समय है, कुंभ की धूम चारों ओर मच रही है। साधु-संन्यासियों के अखाड़े कोसों में पड़े हैं, तनिक भी जगह खाली नहीं है। इधर सभा सम्मेलनों की भरमार है। मालवीय जी सेवकों को लेकर स्टेशन पर चले गये हैं पर उनके बृहत् शतशः तम्बूओं की श्रेणी खाली नहीं। कल रात उन्हीं तम्बुओं में हमने भी बिताई। बहार चारों तरफ है पर यहाँ तो उन्हीं शीशियों तथा गोलियों पर हाथ रहता है, प्रातः से रात के ८ बजे तक कार्य होता रहता है, चाहे कितनी ही सभायें क्यों न हों . . . कल से महंत सफरी औषधालय लेकर बाहर (घाट) जायेंगे . . .।

शान्त शर्मा

(नगर-श्री, पत्र सं० ३८६)

वर्धा से सेठ श्री जमनालाल जी बजाज का तार आने पर सभा से नासिक कुंभ पर फिर स्वयंसेवकों और स्वयंसेविकाओं को भेजा गया। इन लोगों ने वहाँ एक "राजस्थान वैद्य सेवा समिति" का संगठन किया। पंचवटी में सर्वहितकारी औषधालय नाम से प्रधान कार्यालय खोला गया और आदर्श सेवा कार्य किया। इतने बड़े समुदाय में एक भी अंग्रेजी दवाखाना नहीं था और प्रायः जितने भी सांघातिक बीमार होते थे वे सब उक्त औषधालय में लाये जाते। उनकी सेवा शुश्रूषा के लिए आतुराश्रम बनाये गये थे, जहाँ उनकी भली प्रकार सेवा की जाती थी। म्युनिसिपल बोर्ड ने भी वैद्यों का उत्तम कार्य देखकर अपनी तरफ से बनाया हुआ रुग्णाश्रम वैद्य समिति को सौंप दिया था जहाँ पर दो मेम लेडी डाक्टर वैद्यों की आज्ञा से सेवा करती थीं।

उक्त प्रधान औषधालय सहित छः औषधालय थे जिनमें चूरू के वैद्य शान्त शर्मा जी, महन्त गणपति दास जी, पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा, कन्हैयालाल जी शर्मा, लाबूराम जी, स्वामी जीवानन्द जी, बालकनाथ जी आदि थे। स्वयंसेविकाओं में सरस्वती देवी थीं, अन्य स्वयंसेविकाओं में कटक से रेवा देवी, बम्बई से गंगाबाई तिलक और लीलावती देवी थीं। कुल ६८६२ रोगियों की सेवा की गई। उपरोक्त औषधालय को सेवा समिति ने ६० स्वयंसेवक सौंप दिये थे, जो आवश्यकता पड़ने पर वैद्यों के साथ जाते थे। श्री जमनालाल जी बजाज, व अन्य बड़े-बड़े नेताओं ने तथा बम्बई के हेल्थ आफिसर (नू० डा० हम) ने मुक्तकंठ से इस सेवा कार्य की प्रशंसा की थी और उस वक्त के अखबारों में भी इन कार्यों की खूब सराहना की गई थी।[1]

नमस्ते ।

यहां पर मैं आपकी कृपा से आनंद में हूँ । इस साल माघ मेला में मनुष्य बहुत कम आये हैं और हम लोगों ने फिर इस साल मेले में स्वयंसेवक होने के वास्ते नाम भेजे हैं। इस साल बीमारी और अकाल की वजह से यात्री कम आते हैं । और सबसे बड़ी खुशी की बात यह है कि बीकानेर से मेरे पास कागद आया है, उसमें लिखा है कि गंगा रिसाला १४ जनवरी को ईजिप्ट से रवाना हो गया है और २८ जनवरी तक बीकानेर आ जावेगा सो यह खुशखबरी कोई करणपुरे का मिले तो कह देना। और मैंने भी गांव तार दिया है कि फौज आ रही है । मेरे योग्य कोई कार्य हो तो लिखना ।
(नगर-श्री पत्र सं०-२०) ।

उपरोक्त पत्र के लेखक ने शायद गत वर्ष चूरु से गये हुए स्वयंसेवकों के साथ मिलकर कार्य किया था और उसी संदर्भ में यह पत्र लिखा गया प्रतीत होता है ।

पत्र में प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर बीकानेर के गंगा रिसाले के स्वदेश लौटने का समाचार है । इस लड़ाई में सब मिलाकर बीकानेर राज्य का एक करोड़ रुपया व्यय हुआ । महाराजा गंगासिंह जी ने अपने निजी कोष से ३,६७,००० रुपये दिये । (बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड २ पृ० ५४५) । लेकिन इसके बदले में अंग्रेज सरकार ने बड़ी चतुराई से महाराजा साहब की सेवाओं की प्रशंसा कर दी और महाराजा के नाम के साथ अंग्रेजी वर्णमाला के कुछ उलटे-पुलटे अक्षर जोड़ कर महाराजा को संतुष्ट व प्रसन्न कर दिया।

प्रथम महायुद्ध के उपहार स्वरूप भारत को अनेक महामारियों, अकालों और भीषण आपत्तियों का पुरस्कार प्राप्त हुआ। स्वामी जी के शब्दों में "इतनी आपत्तियाँ सहने पर भी किसी कोटि में इसकी गणना नहीं हुई और भारत को लड़ाई की जीत का उपहार "पंजाब का हत्याकांड" पहिनाया गया और जगह-जगह नौकरशाही ने दमन का पुरस्कार सौंपा।"[1]

गोचर-भूमि का निर्माण

स्वामी गोपालदास जी के हाथों होने वाला एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और पुण्य कार्य था। चूरू के चारों ओर हजारों बीघा गोचर भूमि का छुड़वाया जाना, उसे अश्रांत और अनवरत परिश्रम से खाद और बीज डाल कर तैयार करना और फिर प्राणों की तरह उसकी रक्षा करना।

आज तो वन महोत्सव मनाने और जंगलों की रक्षा करने का अभियान समूचे देश में चल रहा है और एक बहुत बड़ी धनराशि इसमें लग रही है। राजस्थान का निरंतर बढ़ता हुआ रेगिस्तान आज सरकार के लिए चिंता का कारण बना हुआ है और इसे रोकने के लिए सर्वश्रेष्ठ उपाय यही बतलाया जा रहा है कि अधिकाधिक संख्या में वृक्ष लगवाये जाएं। लेकिन स्वामी जी ने यह कार्य यहाँ तब शुरू किया था कि जब इस प्रकार की कोई कल्पना भी नहीं की गई थी।

नगर के चारों ओर हरी-भरी और फूली-फली गोचर-भूमि के तैयार हो जाने से नगर की श्री अत्यधिक बढ़ गई। शहर ऐसा सुन्दर लगने लगा मानो नन्दन कानन के बीच बसा एक सुरम्य नगर है। आज अपने घरों के दालानों, में छोटे-छोटे लॉन लगाने वाले जानते हैं कि उन्हें तैयार करना कितना समय श्रम और अर्थसाध्य होता है। फिर हजारों बीघों में वृक्ष और पौधे आदि लगाना और उनकी रक्षा करना कितना कठिन होता होगा !

गोचर भूमि से निराश्रित गायों को आश्रय और भोजन मिलने के अतिरिक्त बढ़ते हुए रेगिस्तान को रोकने में बड़ी मदद मिलती है, वर्षा अधिक होती है, धरती उपजाऊ बनती है। पाला, घास और ईंधन के अतिरिक्त फोगला, सागरी और बेर आदि भी बड़े परिमाण में प्राप्त होते हैं। अनेक तरह की वनौषधियाँ प्राप्त होती हैं। संक्षेप में वन-सम्पदा के बढ़ने से राष्ट्र-सम्पदा बढ़ती है।

चूरू की गोचर-भूमि के सफल प्रयोग को देखकर रामगढ़, रतनगढ़ और सरदार शहर आदि के श्रेष्ठियों ने भी स्वामी जी से प्रार्थना की कि वे यहाँ भी गोचर-भूमि तैयार करवाने की महत्ती कृपा करें। स्वामी जी का हृदय विशाल और उदार था अतः उन्होंने इन श्रेष्ठियों की प्रार्थनाएँ स्वीकार करके वहाँ भी गोचर-भूमियाँ तैयार करवाईं। इससे तत्कालीन बीकानेर सरकार का ध्यान भी वन-सम्पदा की ओर आकर्षित हुआ और जंगलों की रक्षा के लिए सर्वप्रथम

बिल "जंगलों का बिल, रियासत बीकानेर सन् १९२७ ई०" पास किया गया जो बीकानेर के असाधारण राजपत्र तारीख ११ अगस्त सन् १९२७ में प्रकाशित हो कर तमाम रियासत में लागू हुआ। इससे समूचे बीकानेर राज्य तथा उसके गोवंश का महान् हित साधन हुआ।

किसी समय चूरू के आसपास अच्छी गोचर-भूमि थी लेकिन आवश्यक निगरानी के अभाव में सारी चौपट हो गई और चूरू के चारों ओर बालू के ऊंचे-ऊंचे नंगे टीले खड़े हो गये थे जो निरंतर नगर की ओर खिसकते आते थे। गायों के लिए नगर के बाहर कहीं विश्राम लेने को भी स्थान नहीं था। इसके लिए स्वामी जी ने सर्वप्रथम कड़वासर (चूरू से उत्तर की ओर २ कोस की दूरी पर एक गांव) के भोगता से एक हजार बीघा गोचर-भूमि २०) सैकड़ा पर छुड़वाई। इस सम्बन्ध में सर्वहितकारिणी सभा के मंत्री पद से भाषण करते हुए स्वामी जी ने कहा था—

यहाँ गोचर-भूमि का सर्वथा अभाव है और इतने बड़े शहर की गौओं के चरने के लिये तो क्या, कहीं ठहरने के लिए भी जगह नहीं है... इस बात को देखकर सभा ने उद्योग किया, और एक हजार बीघा जमीन चूरू से उतराध, कालरांजोहड़े के पास में गोचर-भूमि के वास्ते २०) सैकड़े पर कड़वासर के भोगतों से लेकर छुड़वाई गई। इस काम में बाबू जुगलकिशोर जी बिड़ला ने सहायता दी है, अतः उन्हें धन्यवाद है। प्रतिवर्ष इस जमीन का २००) रुपये कर का दिया जाता है और एक आदमी चौमासे में उसकी निगरानी पर रखा जाता है। ये रुपये कलकत्ते की पंचायत से आते हैं और ताराचन्द घनश्यामदास के ऊपर प्रतिवर्ष हुंडी करली जाती है। चूरू की आबादी को देखकर यह एक हजार बीघा जमीन कुछ भी नहीं है। गोचर-भूमि के वास्ते राज से भी बार-बार प्रार्थना की गई और की जाती है, परन्तु अब तक कुछ भी सफलता नहीं हुई और न राज ने विशेष ध्यान दिया—

रिपोर्ट, सर्वहितकारिणी सभा, चूरू
सं० १९७८

चूरू की सर्वहितकारिणी सभा और गोरक्षा तथा प्लेग आदि के समय की जन-सेवा स्मरणीय है—भावसिंहका जी ने बहुत ही उत्तम गोचर-भूमि को छुड़वाया है।"[1]

चूरू पिंजरापोल सोसाइटी की वार्षिक रिपोर्ट सं० १९७५-७८ में लिखाई —गोचर-भूमि के बिना चूरू की गौवों को जो कष्ट था वह बहुत ही असहनीय था ..यद्यपि चूरू की जनता ने सर्वहितकारिणी सभा के द्वारा इसकी दरख्वास्त दी थी और उदारतापूर्वक राज ने १३७०॥)[2] जमीन छोड़ी है, परंतु आप जानते हैं वर्तमान समय में राज के अधिकारी इस प्रकार के धार्मिक कार्यों में पूरी तरह से ध्यान नहीं देते कि झटपट ही इस काम को पूरा कर देते..और रेवेन्यू मेम्बर रुड़किन साहब के पास यह कागज भेजे। साहब ने अपनी उदारता दिखलाई और यह काम पब्लिक की भलाई का जान कर तथा गौवों का कष्ट दूर करने के लिये १८००) रु० न लेकर मुफ्त में ही यह जमीन छोड़ दी और साथ ही हुक्म में यह भी लिखा कि इस प्रकार की जमीन कीमत में नहीं देनी चाहिये।

बीड़ की निगरानी के लिए स्वामी जी के अनुरोध पर सेठ जी ने ३०००) रुपये गोशाला कमेटी कलकत्ता में जमा करा दिये, जिसका उल्लेख इस गोचर-भूमि में बनी हनुमानवाटिका के शिलालेख में भी है। सेठ हरिबख्श जी के सुपुत्रों ने सेठ जी की इच्छानुसार यहाँ हनुमानजी का एक मंदिर शिवालय कुण्ड व कुआँ वि० सं० १९८० में बनवा दिये और यह स्थान बहुत ही रमणीय हो गया। स्वामी जी स्वयं भी यहाँ कई वर्षों तक रहे थे। कई वर्षों से सावन के महीने में यहाँ हर सोमवार को मेला भी लगता है।

स्वामीजी के मंदिरको १५७)१ बीघा धरती मुआफ़ी में मिली हुई थी। उसको भी उन्होंने गोचर-भूमि के लिए ५० वर्ष के वास्ते (चैत्र सुदी १ सं० १९८० से चैत्रबदी १५ सं० २०२९ तक) सिर्फ २५) सालाना मंदिर को देते रहने की शर्त पर छोड़ दिया। यह २५) वार्षिक सेठ हरिबख्श जी भावसिंहका चैरिटी ट्रस्ट से मंदिर को मिलते रहे और अब ७२ साल के लिए अर्थात् सं० २१०१ तक इस समझौते की अवधि बढ़ा दी गई है। इसी प्रकार बड़े मन्दिर की ५२१) ६ बीघा धरती स्वामीजी ने गोचर-भूमि के लिए छुड़वादी, जिसकी अवधि भी उपरोक्त ढंग से बढ़ा दी गई है। संवत् १९९६ में इन बीड़ों में श्री ऊँकारमल जी भावसिंहका ने कुईं, प्याऊ आदि उपरोक्त ट्रस्ट से बनवा

दिनांक ६-६-२८ को बीकानेर से श्री के० रुस्तमजी (गृह और वित्तमंत्री बीकानेर स्टेट) चूरू आये थे और उन्होंने सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला का निरीक्षण करके बहुत अच्छी राय प्रकट की थी। स्वामी जी ने उन्हें उपरोक्त बीड़ भी दिखलाया, बीड़ की हरियाली और उपयोगिता देखकर उन्होंने बड़ा हर्ष प्रकट किया और इस कार्य को अत्यंत महत्त्वपूर्ण बतलाया। उसी दिन से रुस्तम जी के मन पर स्वामी जी के कार्यों की ––

स्वामी जी ने सेठ रुक्मानन्द जी राधाकृष्ण बागला की ओर से बीड़ छुड़वाने के प्रयत्न शुरू कर दिये और उन्होंने एक दरख्वास्त तहसील चूरू में इस आशय की दे दी जिस पर तत्कालीन तहसीलदार हीरालाल जी ने ता० ५-११-२६ को अपनी सिफारिश लिखकर मंजूरी के लिए कागजात निजामत में भेज दिये। साथ ही उन्होंने ता ६–१२–२६ को एक प्रार्थना पत्र रेवेन्यू कमिश्नर साहब को दिया जिसमें उन्होंने लिखा––

यहाँ चूरू में अनुमानतः ४० हजार बीघा जमीन का रकबा है, जिसमें लगभग ३०. हजार बीघा में रेत के ऊंचे धोरे बन गये हैं। जिससे जमीन तो सर्वथा बेकार हो गई है मगर इसके साथ ही शहर के मकानात भी कुआँ, तालाब, धर्मशालाएं दबती जाती हैं। इन रेत के बेकार टीबों में भी एक तरकीब से वृक्ष लगाकर उपजाऊ बनाये जा सकते हैं। इसमें खर्च बहुत है, इसलिए फिलहाल १ हजार बीघा जमीन को ही उपजाऊ बनाई जाय। १ हजार बीघा जमीन को उपजाऊ बनाने में ७-८ हजार का खर्च है और यह खर्च यहाँ के प्रसिद्ध बागला सेठ रुक्मानन्द राधाकिशन लगाने को तैयार हैं। यह एक हजार बीघा का रकबा सदैव के वास्ते चूरू की गायों के वास्ते चारागाह (बीड़) के नाम से छोड़ दिया जाय। इसके कागजात तहसील में कई महीनों से पड़े हुए हैं, इसकी तहकीकात करके मुनासिब रिपोर्ट करने को सेटलमेन्ट आफीसर राजगढ़ के ऊपर हुक्म भिजवाने की कृपा करें।

यद्यपि तहसीलदार ने गोचर-भूमि छोड़े जाने के लिए ता० ५-११-२६ को सिफारिश कर दी थी लेकिन इसके बाद स्वामी जी और उनके सम्बन्धों में कटुता आ गई। इसका एक कारण तो यह बतलाया जाता है कि तहसीलदार के ऊँट को बीड़ में चरने के लिए छोड़ देने पर स्वामी जी और तहसीलदार जी में गरमागरमी हो गई। इसमें सन्देह नहीं कि स्वामी जी बड़े ही दबंग और निर्भीक स्वभाव के पुरुष थे और गोचर-भूमि में ऊँटों का चरना उन्हें सह्य नहीं हुआ

होगा, भले ही वे ऊँट तहसीलदार के हों या अन्य किसी के, क्योंकि एक तो उन्होंने वीड़ को तैयार करने में एड़ी चोटी का पसीना बहाया था और दूसरे किसी भी व्यक्ति को इस प्रकार की रियायत देकर वे एक गलत परम्परा नहीं डालना चाहते थे। हो सकता है कि तहसीलदार साहब की नाराजगी के अन्य कारण भी रहे हों, लेकिन वे स्वामी जी से बेहद नाराज हो गये थे इसमें सन्देह नहीं। तहसीलदार जी ने अपनी पूर्व तजवीज के विरुद्ध ता० १-६-२७ को इस वीड़ के छोड़े जाने का प्रबल विरोध करते हुए निजामत में दूसरी तजवीज भेजते हुए लिखा——

अपनी सबका पेश करदा तजवीज ता० ५-११-२६ ई० पर भरोसा नहीं रहा, इसलिए इस मामले की गौर और खोज में बारीकी से घुसने की जरूरत महसूस हुई तब मुझे पता लगा कि यह मामला दरअसल गायों के वास्ते धर्मार्थ वीड़ छोड़ाने का नहीं है, यह तो महज जाहिरादारी है। दरपरदा जमीन छोड़ाने का मकसद कुछ और ही है। सेठ रुकमानन्द राधाकिशन बागला तो यह चाहते हैं कि बराय नाम हजार पाँच सौ की रकम लगाकर उनके पीथाने जोहड़े के पीछे काफी जमीन हो जावे, जिससे उनके इस जोहड़े की है सियत बढ़ जाय और गोपालदास सायल यह चाहता है कि एक तरफ उसकी ठगी का तपड़ बिछ जाय और दूसरी तरफ लोगों में बड़ाई पाकर अपनी लीडरी का रंग जमा ले। बाज व खास लोगों की रायें इस मामले के बिलकुल खिलाफ पाई गईं। इस मामले का जबसे म्यूनिसिपल बोर्ड में भी जिक्र आया तब बोर्ड ने भी इसकी मुखालफत में एक राय तहरीर करके दी है कि गोपाल दास सायल चूरू पब्लिक की तरफ से प्रतिनिधि नहीं है। न उसको इस मामले में चूरू की जनता ने अनुरोध किया कि वो वीड़ छुड़वाने के लिए दरख्वास्त करे। न उसने इस बारे में जनता से पूछ कर दरख्वास्त दी, ये दरख्वास्त उसकी व्यक्तिगत है। मालियों को तथा बस्ती के साग-सब्जी पैदा करने में बहुत हानि होगी। लिहाजा मैं अपनी तजवीज मजकूर वापिस लेकर इस अमर पर इत्तफाक करता हूँ कि कस्बे के मुखिया लोगों की यानी मेम्बरान म्युनिसिपल बोर्ड वा चोधरियान की राय के मुताबिक दरख्वास्त सायल नामंजूर फर्माई जावे।

लेकिन स्वामी गोपालदास जी जैसे दृढ़ के लिए ऐसी तजवीजें क्या माने रखती थीं। उन्होंने निजामत रेनी में दरख्वास्त दी कि चूरू के चारों ओर टीबों में राज की जमीन बेकार पड़ी है, आबादी के अन्दर बहुत से कुएं, तालाब, मकानात दब रहे हैं...टीबों को रोकने का राज से इन्तजाम होना चाहिए आदि-आदि। और ता० २०-६-२७ को जब मेहता लूनकरन जी नाजिम का दौरा चूरू हुआ तो ता० २२-६-२७ को स्वामी जी ने उन्हें सारी परिस्थिति समझाई

और मौके का मुआयना भी करवाया तथा सेठों के मुनीम राधाकिशन के बयान करवाये कि इस जमीन से राज्य को १३६।। रु० सालाना की आय होती है यदि सरकार यह जमीन निशुल्क न छोड़ना चाहे तो मेरे सेठ सरकार में ३०००) रुपये जमा करवा देंगे जिनका सूद ।।) सैंकड़ा माहवारी के हिसाब से १८० रु० सालाना होगा जो राज में हर साल जमा होता रहेगा। स्वामी जी ने भी ऐसे ही बयान दिये। इस पर नाजिम साहब ने बीड़ छोड़ने की सिफारिश करते हुए ता० २६-६-२७ को रेवेन्यू कमिश्नर साहब को लिखा——

मैंने भी इस जमीन का मौका देखा है यह रकबा टीबों से घिरा हुआ है और ये टीबें बहुत ऊँचे-ऊँचे हैं और दिन ब दिन यह टीबें आबादी की तरफ बढ़ते हुए चले आते हैं। सेठ रुकमानन्द राधाकिशन इस रकबे को उपजाऊ बनाने की शर्त करते हैं जिससे दो फायदे हैं, एक तो टीबें अगाड़ी नहीं बढ़ेंगे दूसरे इस रकबे के उपजाऊ होने से गऊ व मवेशियान को चरने को घास हो जावेगा। यह काम रफाये आम का है अगर राज से भी यह रकबा मुफ्त दिया जावे तो मुनासिब होगा। मेरे नजदीक सेठ रुकमानन्द से ३००० रु० राज में भरा कर यह ८७४।) रकबा चरागाह बीड़ के शामिल करने की मंजूरी फर्माई जावे तो नामुनासिब नहीं है, क्योंकि ज्यादातर रकबा ऐसा है जो बिलकुल धोले टीबे हैं, जिसमें घास भी इस वक्त नहीं उगता। सेठ रुकमानन्द इन टीबों के रकबे में खात वगैरा डाल कर घास व बांठ बोझे उपजाऊ करायेगा जिसमें भी उनका सरफा होगा और चराई के लिए गाँव के मवेशियान को फायदा पहुँचेगा। दूसरे तौर पर देखा जावे तो यह पुन का भी काम है और राज को पड़ते मुजबिजा के लिहाज से कुल रकबे की रकम भी वसूल होती है।

आखिरकार स्वामी जी १,००० बीघा गोचर-भूमि सेठ रुकमानन्द जी राधा-किशन बागला की तरफ से छुड़वाने में सफल हो गये। नगर की पूर्वी दिशा में सेठ खेमराजजी[1] श्री कृष्णदास की ओर से २२३१।)४ बीघा गोचर-भूमि छुड़-

---

चूरू निवासी, भारत विख्यात वेंकटेश्वर प्रेस के संस्थापक और स्वामी। श्री सूरजमल जालान, मधु-मंगलश्री के लेखक श्रीजैमिनी कौशिक 'बरुआ' ने पृ० १७६ पर खेमराज श्रीकृष्णदास जी द्वारा ८ हजार बीघा जमीन बीड़ को लेकर दी गई, ऐसा लिखा है जो सही नहीं है। बीड़ सम्बन्धी जितने भी आँकड़े उन्होंने दिये हैं, वे सब गलत हैं। सूरजमल जी जालान द्वारा १५०० बीघा बीड़ चूरू में रक्षित करवाने की बात भी माननीय बरुआ जी ने लिखी है, लेकिन चूरू की गोचर-भूमि में कहीं इसका उल्लेख नहीं मिलता, संभवतः यह एक कल्पना मात्र ही है। इसमें सन्देह नहीं कि माननीय

८-१०-२६ को इस मिसल पर सिफारिश करते हुए लिखा—हर दो सेठ साहबान की तरफ से स्वामी गोपालदास जी ने बहुत मेहनत करके उस रकबे को उपजाऊ बना लिया है और उसमें फोग वगैरह के दरख्त खड़े हैं। इस तरह इन दोनों बीड़ों का रकबा ३२३१।)४ है जो चूरू की रोही में है। स्वामी गोपालदास जी ने ६००० बीघा जमीन मिलने की दरख्वास्त पेश की थी मगर मौका पर काफी टीबों व बंजड़ की जमीन मौजूद न होने की वजह से दोनों बीड़ों के लिए ४११६)४ जमीन के लिए ही अरज किया गया था। कस्बा चूरू का कुल रकबा ४१,५८७ बीघा है . . . गोया कि ६४७८ बीघा रकबा टीबों में से ४४८३)४ रकबा दोनों बीड़ों के लिए छुड़ाने के बाद ४६६४)६ रकबा आसायस व आबादी के लिए रह जाता है . . .।[2]

नाजिम साहब रेनी ने भी दिनांक १८-४-२६ को अपनी सिफारिश के साथ कागजात ऊपर भेज दिये और अन्त में ता० १४-१२-२६ को दफ्तर साहब रेवेन्यू मिनिस्टर से हुक्म हुआ कि—यह रकबा आराजी रेत के धोरों से भरा हुआ है और सेठ लोग इसको उपजाऊ करने में बहुत रुपया खर्च करेंगे। हम इस मौका को अच्छी तरह जानते हैं लिहाजा हम २१४०)४ बिस्वा आराजी सेठ मदनगोपाल बागला के नाम और २,३४३ बीघा सेठ रुकमानन्द राधाकिशन के नाम पहले की शर्तों के मुताबिक देनी मंजूर करते हैं।

इस प्रकार चूरू नगर के उत्तर, पूर्व और पश्चिम, तीनों तरफ हजारों बीघा में हरियाली लहलहाने लगी। उनकी इच्छा दक्षिण की तरफ भी गोचर-भूमि तैयार करने की थी, लेकिन बीकानेर षड्यंत्र केस के अन्तर्गत उन्हें जेल भेज दिया गया, जिससे उनकी यह इच्छा पूरी न हो सकी।

गोचर-भूमि के सम्बन्ध में रा० ब० सेठ रुकमानन्द जी, राधाकृष्ण जी व बाबू मदन गोपाल जी बागला द्वारा स्वामी जी के नाम लिखे गये कई पत्र नगर-

---

बरुआ जी को अभिनन्दन ग्रंथ लिखने में कमाल हासिल है, साधारण-सी दिखलाई पड़नेवाली बात को वे इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि वह बहुत महत्वपूर्ण लगने लगती है। लेकिन खेद है कि आंकड़ों के सम्बन्ध में वे पर्याप्त सजग नहीं रहते और इसीलिए कभी-कभी भयंकर भूलें कर बैठते हैं।

[2] श्री सत्यनारायण जी सराफ, भूतपूर्व सेक्रेटरी चूरू पिंजरापोल के रिकार्ड से।

श्री के संग्रहालय को प्राप्त हुए हैं, जिनमें से कुछ यहाँ दिये जा रहे हैं। इन पत्रों से उन कोटयाधीशों के मन में स्वामी जी के प्रति कितनी श्रद्धा और आस्था थी तथा उनकी कार्यक्षमता पर उन्हें कितना भरोसा था, इस पर भी कुछ प्रकाश पड़ सकेगा——

कलकत्ता

१४-४-२६

सिद्ध श्री चूरू शुभस्थान स्वामी गोपालदास जी योग्य लिखी कलकत्ता से मोतीलाल राधाकृष्ण केन राम-राम बंचना। अठे उठै श्री सत्यनारायण जी महाराज सहाय छै। अपरंच चिट्ठी आपकी आई, समाचार लिखा सोई निगै करा और कलकत्ते मांय हिन्दू मुसलमाना को दंगो होय रहो छो, जिको इवे बिलकुल सान्त हो गयो छै और बीड़ मांय खात गेरनी शुरू कर देई लिखी सोई भोत चोखो काम करो। बीड़ के ताई राजवालां सेती कोशिश करता लिखो सोई ठीक छै। आप कोशिश करोगा जना काम होने बिसर रवैगो नहीं। और हमारी हेली के लैरनै थोड़ी-सी जमीन हमानै चाये छै, सोई राज मांय दरखास देई थी जिको नामंजूर होय गई छै, बाकी आप कोशिश करोगा तो जाना छा मिलनै बिसर रवैगी नहीं, सोई महरबानगी कर कर आप जरूर सेती कोशिश करियो। कन्या पाठशाला बाबत लिखो सोई रुपया ५०१ चन्दै मांय हमारा लिख देयो। स्वामी गोपालदास जी सेती राधाकिशन का दण्डवत बंचना। हमारै लायक काम काज होवै सोई लिखियो। मिती चैत दूजा सुदी २–६–१६८२।

(नगर-श्री, पत्र सं० ११५)

मौलमीन

२८ जुलाई, १६३०

स्वामी गोपालदास जी से लिखा मौलमीन से हरदेवदास रुकमानन्द केन पावाधोक बंचना, अठै उठै श्री सत्यनारायण जी महाराज सहाय छै। अपरंच चिठी आपका आया हाल मालूम हुआ। आपने लिखा कि इस साल वर्षा बहुत है तथा बीड़ बहुत हरा-भरा हो रहा है तथा बीड़ की शोभा देखने लायक है, सो बहुत आनन्द की बात है और आपने लिखा के भादुवा में ही आना चाहिए सो ठीक है बाकी हमारा विचार आसोज सुदी १० का यहाँ से रवाना होकर देस आने का है सो दाना पानी हुआ तो जरूर आवेंगे और साथ में चि० नथा-

किसन को भी लाने के वास्ते लिखा सो लावेंगे। यहाँ पर सब राजी खुशी है, आप बहुत प्रसन्न रहना। स्वामी जी सेती रुकमानन्द रामनिवास का पावाधोक बंचना घनेमान सेती।

(नगर-श्री, पत्र सं० १२०)

Madan Gopal Bagla
Proprietor
Firm Bhagwandass Bagla
Rai Bahadur

Phone 1578
Calcutta 24-8-1929

धर्मप्राण स्वामी जी, सादराभिवादनम !

ता० १८ का लिखा हुआ कृपा पत्र आपका पं० रामचन्द्र जी के पास आया। बीड़ के विषय में जो समाचार आपने लिखा—ज्ञात हुआ। पूज्यपाद जीवणराम जी की कारगुजारियों से आपका चित्त खिन्न होते हुए भी आप मेरे ऊपर अनुपम कृपा कर बीड़ छुटाने में यथासाध्य चेष्टा कर रहे हैं—इसके लिए मैं आभारी हूँ। मैं पूर्व भी आपको लिख चुका हूँ और फिर विनय करता हूँ कि बीड़ छुटाने के कार्य में मेरी तरफ से आपको पूर्णाधिकार है। बाबू जीवणराम जी आपके मार्ग में कुछ भी हस्तक्षेप नहीं करेंगे, यदि कुछ करेंगे भी तो वह माननीय नहीं होगा। पंडित रामचन्द्र जी के द्वारा आपकी कर्तव्यपरायणता तथा धर्मनिष्ठता तथा जन-साधारण की निस्वार्थ सेवाओं का वर्णन सुन मेरे चित्त में अति अनुराग एवं श्रद्धा उत्पन्न हो गई है। प्रबल इच्छा होती है कि यथाशीघ्र आपके दर्शन कर शान्ति-लाभ करूँ।

स्वामी जी की इच्छा थी कि जैसे चूरू नगर के इर्द-गिर्द बीड़ तैयार किया जा रहा है वैसे ही आस-पास के सभी नगरों में बीड़ तैयार किये जाएँ। इसके लिए वे निरंतर प्रयत्नशील रहे। स्वामी जी से प्रेरणा पाकर और चूरू के बीड़ से प्रभावित होकर अनेक श्रेष्ठियों ने बीड़ तैयार करवाने के लिए प्रयत्न किए और बहुत स्थानों में बीड़ तैयार किये गये। रामगढ़ के लब्धप्रतिष्ठित सेठ जयनारायण जी व उनके सुपुत्र श्री रामचन्द्र जी की स्वामी जी में बड़ी श्रद्धा थी और जब भी वे रामगढ़ आते तो स्वामी जी से अवश्य मिलते, या तो वे स्वयं चूरू आते या स्वामी जी को सम्मानपूर्वक रामगढ़ बुलवा लेते। इन दोनों सज्जनों ने बीड़ छुड़वाने के लिए काफी प्रयत्न किये।

श्री सर्वहितकारिणी सभा के एक डाक डिस्पैच रजिस्टर से ज्ञात होता है कि स्वामी जी ने बीड़ के विषय में इन्हें कई पत्र लिखे थे। दिनांक ११-१२-२३ को उन्होंने सेठ जयनारायण जी को लिखा कि रेणी में गोचर-भूमि की आवश्यकता है, १ हजार बीघा जमीन छूटनी चाहिए। फिर ता० १८-५-२३ को रामचन्द्र जी को लिखा कि सुजानगढ़ में गोचर-भूमि की बहुत जरूरत है, ६ हजार बीघा जमीन मिलती है। ता० २७-५-२३ को इस सम्बन्ध में फिर श्री जयनारायण जी को रामगढ़ तथा रामचन्द्र जी को कलकत्ता लिखा गया। इस पर कलकत्ते से ३ हजार बीघा गोचर-भूमि छुड़वाई जाने की स्वीकृति प्राप्त हुई जिसकी सूचना ता० १०-६-२३ को रामगढ़ सेठ जयनारायण जी को दी गई तथा इसी दिन शिवचन्द राय जी गाडोदिया सुजानगढ़ को लिखा गया कि १० रु० सैंकड़े पर १० वर्ष के लिए ३ हजार (बीघा) गोचर-भूमि की रजिस्ट्री करवा लें। इस सम्बन्ध में श्री सतानन्द शर्मा एम० ए०, एल-एल० बी० गवर्नमेण्ट एडवोकेट का एक पत्र बीकानेर से स्वामी जी के नाम (नगर-श्री, पत्र सं० १५६) लिखा हुआ प्राप्त हुआ है जिससे विदित होता है कि सुजानगढ़ में बीड़ अवश्य छुड़वाया गया था।

सेठ रामचन्द्र जी की तो इच्छा यहाँ तक थी कि राजस्थान में जहाँ-जहाँ आवश्यकता हो चूरू के बीड़ की तरह बीड़ तैयार करवाये जाएं लेकिन खेद है कि ऐसा कोई रेकार्ड उपलब्ध नहीं है कि जिससे यह ज्ञात हो सके कि बीड़ किस-किस जगह छुड़वाये गये। सेठ रामचन्द्र जी के लिखे हुए कई पत्र नगर-श्री के संग्रहालय विभाग में मौजूद हैं, जिसमें से कुछ यहाँ दिये जा रहे हैं। जिससे इस विषय पर अच्छा प्रकाश पड़ता है—

(१)

ओ३म्

स्वामी जी महाराज, नमस्ते ।

हुंडी रु०२००) का पेमेण्ट कर दिया जावेगा और मेरो विचार करांची आसोज सुदी में जाने को है अगर हो सकेगा तो आपका दरसन करूँगा । आप जैसा मेरे पिताजी के साथ प्रेम रखते थे, वैसा मेरे ऊपर दया दृष्टि रखेंगे । मैं आपको पत्र नहीं दे सका, अब दिया करूँगा। गोचर-भूमि में घास हो गया लिखा सो भोत आछी बात है । गोचर-भूमि के काम के लिए जब मैं आऊँगा आपसे सलाह करूँगा ।

आपका दयापात्र

(नगर-श्री, पत्र सं० १४४)

रामचन्द्र पोद्दार

ता० ११-६-१६२४

(२)

ताराचन्द घनश्यामदास

पोस्ट बॉक्स नं० ४४,
कराची

सिद्ध श्री चूरू शुभस्थानेक जोग लिखी श्री करांची से ताराचंद घनश्यामदास का जयगोपाल वांचज्यो ।

श्री स्वामी जी महाराज नमस्ते । मैं यहाँ ४ रोज से आया हुआ हूँ और ४ रोज और रहूँगा, पीछै कलकत्ता जाऊँगा । मेरो विचार रामगढ़ आने को थो परन्तु क्या लिखूं कलकत्तै जरूर ही जाणो है इसलिए नहीं आने सकता । और मैं चाहता हूँ कि राजपूताना में गोचर-भूमि का प्रचार हो, गाँव-गाँव में गोचर-भूमि छोड़ी जावै, इससे गोरक्षा भोत होगी । गऊशाला वालुं कुं भी हरेक जगह गोचर-भूमि लेनी चाहिये । कलकत्ता पिंजरापोल ने इस तरफ ध्यान दिया है । गोचर-भूमि ४००० बीघा लेई है, इससे भोत सुधार हुआ है और होने की आसा है ।

मेरी आपसे प्रार्थना है कि इस काम के लिये आप कोसिस करें । इसके लिये धन-संग्रह मैं कलकत्ता में करने की चेष्टा करूँगा । एक दफै रु० २०००) इस काम के लिये हमारे फारम से खरच करूँगा । काम शुरू होने के बाद और कछु बंदोबस्त करूँगा । आप इसके लिये एक आदमी मुकरर करके क्या-क्या काम करना होगा मेरे कुं लिखें । आदमी का खरचा मैं भेज दूंगा । आप इस तरफ ध्यान देंगे ?

(नगर-श्री, पत्र सं० १४५)

रामचन्द्र पोद्दार

ता० २५-२-१६२६

यह पत्र सेठ रामचन्द्र जी पोद्दार ने दिनांक २४-६-२८ को कलकत्ता से स्वामी जी के नाम लिखा है ।

(३)

ओ३म

श्री स्वामी जी महाराज श्री १०८ गोपालदास जी, नमस्ते ।

आपका कार्ड मिला, चूरू के गोचर-भूमि के रु० २००) हुंडी करने की लिखी सो ठीक है, सिकार दी जावैगी । इसका १० वर्ष वैशाख में पूरा हो जावैगा। आगे के लिए कलकत्ता पंचायत से बंद रहेगा । जिसकी यह जमीन है वोह अब इस जमीन का क्या करेगा और अब चूरू में तो दूसरी जमीन ३०००/४००० बीघा होने से जरूरत भी नहीं रही होगी, लिखिये क्या बात है ?

चूरू में टीबड़ै की जमीन को गोचर-भूमि बना देना यह पहला काम आपने ही किया है। यह रामगढ़ में भी होना चाहिये, इसलिये आप एक पत्र मेरे कुं अच्छी तरह से लिखें कि सीकर रावराजा जी और सीनियर अफसर कुं चाहिये कि आपके रामगढ़ फतेपुर लिछमणगढ़ में भी यह काम शुरू किया जावे । यह चिट्ठी आपकी मिलने से मैं सीकर के सीनियर अफसर साहब को भेजूंगा। यह सरत मंजूर करने सेती आप कुं मैं लिखूंगा सो आप रामगढ़ पधार कर बंदोवस्त करवा दीजिये ।

मैं यह चाहता हूँ कि राजपूताना में गोचर-भूमि की जहाँ-जहाँ आवश्यकता हो छुटाई जावे । पंचायत का रुपिया तो नहीं है परन्तु मैं इस काम में अपना रुपिया थोड़ा लगाऊँगा और जुगलकिशोर जी से सिपारस करूँगा । कोई जगह जरूरत समझो तो आप मेरे कुं लिखियो, बंदोबस्त किया जावैगा । मैं आपका दर्शन करना चाहता हूँ परंतु अवकास नहीं मिला, अगर मंगसर में अवकास मिलैगा तो एक दफा आऊँगा ।

आपका
दयाभिलाषी
रामचन्द्र पोद्दार

(नगर-श्री, पत्र सं० १४६)

रतनगढ़ के सेठ सूरजमल जी जालान भी चूरू में चल रहे इस बीड़ अभियान से बहुत प्रभावित हुये । स्वामीजी के प्रति उनके मन में भरपूर श्रद्धा थी ही, अतः बीड़ के सम्बन्ध में आवश्यक अध्ययन करने के लिये वे चूरू आये और स्वामी जी के अतिथि बने । दिन भर बीड़ में रहकर उन्होंने आवश्यक जानकारी प्राप्त की, यहाँ के कार्य से वे बहुत प्रभावित हुए । अगले दिन मार्गशीर्ष शुक्ला १०, १६७८

को उन्होंने सर्वहितकारिणी सभा–पुत्री पाठशाला आदि का निरीक्षण किया। बीड़ के महत्त्व को उन्होंने हृदयंगम कर लिया और रतनगढ़ में उन्होंने एक बहुत सुन्दर बीड़ तैयार करवाया। अन्य भी अनेक सज्जनों ने स्वामीजी की प्रेरणा से अनेक स्थानों में बीड़ तैयार करवाये।

"बीड़ छुड़वाने का यह व्यावहारिक कार्यक्रम बड़ी तेजी से आसपास के नगरों में व्याप्त होने लगा। फतहपुर शेखावाटी में जयदयाल जी कसेरा ने भी स्वामी जी से कहकर एक बड़ा बीड़ छुड़वाया। जयनारायण जी पोद्दार ने रामगढ़ में बीड़ छुड़वाने का अभियान शुरू किया। इस तरह चूरू का यह बीड़-यज्ञ लोक-लोकान्तर में बहुत प्रसिद्ध हो गया। पशुधन का यह संरक्षण सबसे ज्यादा आनन्द स्वामी गोपालदास जी को ही देता था . . . .सूरजमल जी ने अब रतनगढ़ में बीड़ का यज्ञ शुरू किया। कम से कम बीड़ उगने से वर्षा का प्रकृत आह्वान होता है और पशुओं को अकाल के दिनों में अनायास मरने के लिए विवश नहीं होना पड़ता। इसके द्वारा लाखों पशु-पक्षियों का पालन व संरक्षण होता है। पशुओं के स्वच्छन्द विचरण एवं त्यागे हुये अनुपयुक्त लूले लंगड़े, वृद्ध पशुओं के पालने का एकमात्र स्थान यही है।"[1]

स्वामी जी ने न केवल नगरों के इर्द-गिर्द बल्कि देहातों में भी काफी गोचर-भूमि छुड़वाई थी। चूरू के देहातों में पीने के पानी का बहुत कष्ट रहता था। अतः पानी के कष्ट को मिटाने के लिए उन्होंने सेठ-साहूकारों से अनेक गाँवों में कुंड और कुएं आदि बनवाये। इसके लिए गाँवों में जहाँ वे कुण्ड कुएं आदि बनवाते थे वहाँ उनका यह प्रयत्न रहता था कि वहाँ के भोगतों से कुछ गोचर-भूमि अवश्य छुड़वाई जाए।

सन् १९५७ में राजस्थान सरकार के राजस्व विभाग द्वारा एक सरक्यूलर N.Fi (255) Rev. D. 56 Dated 14 Sept., 1957 जारी हुआ जिसके अन्तर्गत मवेशियों की परिभाषा का स्पष्टीकरण करते हुए राजस्व सचिव ने लिखा कि चरागाह के लिए छोड़ी हुई भूमि में गाय, बैल, साँड़, भैंस, भैंसा आदि के अलावा गाँव के दीगर जानवर बकरा, बकरी, भेड़, घोड़े, गधे आदि भी चर सकते हैं और उन्हें चरने से नहीं रोका जा सकता। लेकिन स्वामी जी ने तो मुख्यतया गायों के लिए ही यह गोचर-भूमि तैयार करवाई थी। यदि भेड़, बकरियों को इस गोचर-भूमि में चरने की छूट दे दी जाती तो यह अब तक चौपट हो गई होती,

क्योंकि भेड़, बकरियाँ गोचर-भूमि की दुश्मन होती हैं। आधुनिक वन-महोत्सव के अभियन्ता श्री के० एम० मुन्शी के शब्दों में——

The marching menace of the Rajasthan desert is partly wind made and partly goat made, for the goats destroy every vestige of vegetation long before it comes to flourish and enrich the soil. If you choose sheep and goat, you choose erosion and wanton destruction, if you choose cattle you serve the soil and gain prosperity.

लेकिन चूरू गौशाला के तत्कालीन आनरेरी सेक्रेटरी श्री सत्यनारायण सराफ ने इस गोचर-भूमि में भेड़ और बकरियों के चराये जाने का पूर्ण विरोध किया और इसके लिए आवश्यक प्रयत्न किये। इस सम्बन्ध में उन्होंने महाराजा साहब श्री करणीसिंह जी (बीकानेर) को जो इस क्षेत्र से एम० पी० भी हैं एक प्रार्थना-पत्र दिया कि वे इस विषय में आवश्यक प्रयत्न करके इस कार्यवाही को रोकें। महाराजा साहब ने इस प्रसंग में दिनांक २६-१२-५७ को श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया, मुख्यमंत्री राजस्थान को लिखा कि यह आज्ञा इस गोचर भूमि पर लागू नहीं होती, अतः इसे रोकने के लिए कृपया आवश्यक कार्यवाही करें। इस पत्र में महाराजा साहब ने यह भी स्वीकार किया है कि यह मुख्यतया स्वामी गोपालदास जी के महान् प्रयत्नों का महान् फल है, पत्र में लिखा गया——

I am enclosing herewith a copy of the letter addressed by the Secretary, Pinjrapole Society, Churu to you endorsing a copy thereof to me.

In this connection I am to add that the statements made in the aforesaid representation are true. It was with great effort and a considerable expenditure that the desert area was converted into a pasture land with the zealous efforts of Swami Gopaldas principally. There were two main points behind the scheme viz., that to provide a grazing ground for the cows in desert area and to help in checking the spreading of the desert belt.

Now, if the present allegations are correct, it would be acceded that by allowing sheep and goats to graze in the area, they will completely root out the grass, shrubs

and bushes which are now growing in the area and all the efforts made so far would be wasted........[1]

अन्य भी प्रयत्न किये गये और आखिरकार सफलता मिल गई। दिनांक १०-७-१६५८ को श्री मिलापचन्द जी जैन आर० ए० एस० असिस्टेंट सेक्रेटरी टू गवर्नमेंट ने No. D. 9631/F. 7 (254) Rev. D/B/57 द्वारा श्री सत्यनारायण सराफ को लिखा—

I have to refer to your application dated 10-11-57 on the subject cited above to say that the orders regarding grazing of sheep and goats will not be applicable to this land.[2]

उस तपस्वी ने गोचर-भूमि के रूप में हमें जो यह बहुमूल्य सम्पदा दी है इससे उऋण होने का एकमात्र उपाय यही है कि हम प्रयत्नपूर्वक इसकी रक्षा करें। बेचारे मूक पशु और पक्षी तो उन्हें नित्य आशीर्वाद देते होंगे क्योंकि अनेक वर्षों से यह बीड़ हजारों गायों व अन्य पशुओं का आश्रमस्थल रहता आया है, जहाँ उन्हें भोजन और विश्राम मिलता है। जेठ वैशाख की भयंकर गर्मी में जब नीचे बालू के टीले सुलगते हैं और ऊपर से सूर्य की प्रचंड प्रखर किरणें भी भीषण ताप बरसाती हैं, उस वक्त इस तप्त भूखंड में स्थित बीड़ के वृक्षों की शीतल छाया में अनगिनत पशु विश्राम पाते हैं। इस गोचर-भूमि में जहाँ वन्य पशु स्वच्छन्दता से क्रीड़ा करते हैं, वहाँ असंख्य पक्षी भी इसमें बसेरा लेते है। हजारों बीघा में फैली गोचर-भूमि की हरियाली नागरिक स्वास्थ्य की पहरेदार हैं। इसमें खड़े अनगिनत पेड़-पौधे स्वयं दूषित वायु को पीकर नागरिकों को प्राण-दायक आक्सीजन प्रदान करते हैं। चूरू के अनेक नागरिक इस गोचर-भूमि में प्रातःकालीन भ्रमण के द्वारा स्वास्थ्य-लाभ करते हैं। दिसावरों में रहने वाले प्रवासी भाई भी यहाँ आकर आरोग्य और प्रफुल्लता प्राप्त करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में जब यहाँ झुलसाने वाली लू व तेज आंधियाँ चलती हैं तो गोचर-भूमि की यह हरियाली उनकी भीषणता को कम करने के लिए सार्वजनिक खस की टट्टियों का काम करती हैं।

निरंतर गति से आगे बढ़ते जा रहे इस रेगिस्तान को रोकने के लिए बीड़ से अधिक उपयोगी और कोई साधन नहीं है। बीड़ का हर वृक्ष और पौधा उसकी

१-२. श्री सत्यनारायण सराफ के रेकार्ड से। महाराजा साहब के पत्र की जो प्रतिलिपि इनके रेकार्ड में है उस पर उनके प्राईवेट सेक्रेटरी के हस्ताक्षर हैं और दूसरे पर श्री मिलापचंद जी जैन के हस्ताक्षर हैं।

गति को अवरुद्ध करने वाली शृंखला की कड़ी है। वर्षा के लिए इन्द्रदेव को आकर्षित करने के लिए हरियाली एक उत्तम साधन है। जहाँ हरियाली अधिक होती है वहाँ वर्षा भी अधिक होती है और इस प्रकार अकाल की भयंकर छाया को दूर रखने में भी बीड़ अत्यंत सहायक होता है। धरती को उपजाऊ बनाये रखने में भी इसका बड़ा हाथ रहता है क्योंकि घास और पेड़-पौधे हवा के उन तेज बवंडरों की गति पर अंकुश लगाते हैं जो कि उपजाऊ मिट्टी को उड़ा ले जाते हैं और इसी प्रकार वर्षा के प्रवाह पर भी नियंत्रण रखते हैं जिससे उपजाऊ मिट्टी बह नहीं पाती।

संक्षेप में हमें बीड़ से अनेक लाभ हैं लेकिन खेद है कि आवश्यक निगरानी के अभाव में यह दिन प्रतिदिन तेजी से नष्ट होता जा रहा है। इस वन सम्पदा से प्राप्त होने वाले लाभों को ईंधन बना कर फूंका जा रहा है। हरियाली से घिरी हुई शीतल सुरभित झोंकों का आनन्द ले रही इस नगरी को पुनः शुष्क धोरों के गर्म थपेड़े खाने के लिए विवश किया जा रहा है। बीड़ में कटे हुये झुंड के झुंड वृक्षों के ठूंठ ऐसे लगते हैं मानो युद्ध के मैदान में सिर कटे हुये अनेक सैनिक खड़े हों और अब तो वृक्षों को जड़-मूल से ही उखाड़ा जा रहा है। चैत्र के महीने में गनगौर के पूजन के लिए बालिकाओं के समूह जुंहारे (फोग) लाने के लिए बीड़ में जाया करते थे लेकिन अब फोग का बूटा तो देखने को भी नहीं मिलता। दूरगामी स्थायी लाभों को क्षुद्र स्वार्थों के लिए बलिदान करना कदापि बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं कहा जा सकता। इस बहुमूल्य वन-सम्पदा को जला कर चूरू के नागरिकों को वैसा ही पछतावा होगा जैसा नित्य सोने का एक अंडा देने वाली मुर्गी को सारे अंडे एक साथ प्राप्त कर लेने के लोभ में मारने वाले व्यक्ति को हुआ था।

उस स्वर्गीय आत्मा को बीड़ की इस बर्बादी से कितनी पीड़ा पहुँचती होगी जिसने इसे तैयार करने में एड़ी-चोटी का पसीना बहाया था! चूरू के प्रत्येक नागरिक का यह पवित्र कर्तव्य है कि वह अपनी इस अमूल्य धरोहर की रक्षा करे। गौशाला के अधिकारियों से विनम्र प्रार्थना है कि वे इसकी रक्षा की समुचित व्यवस्था करें साथ ही बीड़ में जितने वृक्ष अब बच रहे हैं कम से कम उनकी गिनती करवा कर उन पर नम्बर डलवाएं ताकि वृक्षों की अन्धाधुन्ध क्षति रुक सके।

चूरू पिंजरापोल की अमूल्य सेवा

"यह निश्चय है कि जब तक राजा साहब इस लोक में विद्यमान थे, तब तक चूरू पिंजरापोल की उन्नति दिन-दूनी और रात-चौगुनी होती रही। जिस समय आप इस असार संसार को छोड़कर परलोक सिधारे थे, उस समय उक्त पिंजरा-पोल के कोष में प्रायः एक लाख रुपये मौजूद थे। दुर्भाग्यवश राजा साहब के स्वर्ग सिधारने के पश्चात् उन एकत्रित द्रव्यों का समुचित प्रबन्ध न हो सका, जिसका परिणाम यह हुआ कि आपके स्वर्गारोहण होते ही पिंजरापोल के कार्यों में गड़-बड़ होने लगी। परिणाम यह हुआ कि आपस के वैमनस्य के कारण कोष के रुपये रुक जाने से पिंजरापोल का खर्च चलाने में कष्ट होने लग गया। सम्वत् १९७५ में एक समय ऐसा आ गया था कि गौओं को सवेरे खिलाने के बाद सायं-काल के लिए सामान नहीं था।"[1]

"हम चूरू के स्वामी गोपालदास जी को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते। आपने कई वर्षों से जो अमूल्य सेवा पिंजरापोल की की है, वह अवश्यमेव श्लाघनीय है। आपने पिंजरापोल के रुपये पिंजरापोल के हाथ में लाने के लिये एवं गौओं

---

१. श्री चूरू पिंजरापोल सोसाइटी का ४१वाँ संक्षिप्त वार्षिक कार्य-विवरण, संवत् १९८६; पृ० २-३।

के चरने के लिये बीड़ छुड़ाने में बड़ा ही परिश्रम किया है। वह एक समय था जब पिंजरापोल की शोचनीय दशा थी। उस समय आपका काम था कि चूरू की जनता में अपूर्व उत्साह पैदाकर पिंजरापोल को सुदृढ़ बना दिया।"[1]

"यहाँ की गोशाला का प्रबन्ध सन्तोषजनक नहीं था और इसकी बाबत कई वर्षों से शिकायत चलती थी, गौएँ भी असीम कष्ट में थीं। किसी सभा या संस्था पर इसकी जिम्मेवारी नहीं थी। रुपये होते गौओं का कष्ट देखकर सं० १९७५ में इसके प्रबन्ध सुधारने की चेष्टा की गई, और सभा के (सर्वहितकारिणी सभा) संचालकों ने इसमें सहयोग दिया, कितने ही दिनों तक कार्यवाही होती रही, अन्त में सरकार द्वारा उपरोक्त रुपये वसूल किये गय। इस समय गोशाला का काम बहुत उत्तम रीति से चलता है। इस समय ६०० गौओं की गोशाला रक्षा कर रही है और गोशाला का एक स्थायी कोष कलकत्ते में रखा गया है जिसमें उपरोक्त रकम को छोड़कर ९००००) के करीब कोष में जमा हैं।"[2]

स्पष्ट है कि यदि पिंजरापोल को ये रुपये नहीं मिले होते तो शायद चूरू की यह गोशाला तभी बंद हो गई होती और आज अपने क्षेत्र की उत्तम गोशाला के रूप में दिखलाई नहीं पड़ती।

स्वामी जी बड़ी सूझबूझ के धनी थे। आम जनता में गोशाला के प्रति आकर्षण पैदा करने के लिए उन्होंने वहाँ हर साल गोपाष्टमी के दिन एक मेला भराने की परंपरा डाली जो आज भी वैसे ही चल रही है। मेले में नगर भर के हजारों नर-नारी इकट्ठे होते हैं और बाहर से भी गणमान्य व्यक्तियों को निमंत्रित किया जाता है। अनेक प्रकार के खेल-कूद व प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। मेले के लगने से गोशाला को हर साल एक अतिरिक्त आय भी होने लग गई।

"स्वामी गोपालदास जी सच्चे गो-भक्तों में से हैं। आपने पिंजरापोल की बड़ी सेवा की है और सम्प्रति करते हैं। आपके पौरुषों से ही पुराने रुपये निकाले गये थे। यह आपकी असीम कृपा का फल है कि पिंजरापोल का वार्षिक मेला लगता है और ५००)-७००) रु० की समयानुसार आय भी होती है। इससे चूरू निवासियों का मन अतिशय प्रसन्न रहता है। एतदर्थ आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।"[3]

श्रीयुक्त स्वामी गोपालदास जी ।

महोदय !

आपके पूर्व पत्र से बहुत ही निराशा झलक रही थी, परन्तु स्पष्ट हाल कुछ मालूम नहीं हुआ था । मैं नहीं समझ सका कि इतनी निराशा क्यों हुई ?

१६० गौओं के कष्ट का पाप जो आपको सता रहा है इसका मुझे भी दुःख है। आशा है आप उस आन्दोलन को और भी बढ़ावेंगे। यह तो लिखिये आजकल गौशाला की संभाल कौन करता है और खर्चा कैसे चलता है।

मैंने एक लेखमाला स्थानीय "मारवाड़ी" में चन्द्र के नाम से छपानी शुरू की है, उसके दो लेख निकल चुके हैं, बीस-तीस अंक में समाप्त होगी । लेख का शीर्षक है "मारवाड़ी समाज और नकली नेता" । लेख में स्पष्ट रूप से निर्भय होकर स्वतंत्र विचार प्रगट किया जा रहा है, देखा जाए क्या होता है ? शायद इसी से समाज में कोई नया गुल खिल पड़े ।

भवदीय

बालचन्द

चूरू की गोशाला का प्रबन्ध ठीक नहीं चल रहा था। गायों की संख्या ६०० थी लेकिन व्यवस्था ठीक नहीं थी। हालत ऐसी हो गई थी कि गायों को सुबह घास डाल दी गई तो शाम के लिए कोई प्रबन्ध नहीं था। इस बात से उन्हें और भी अधिक कष्ट होता था कि गोशाला के कोष में रुपये होते हुये आपस की आपाधापी से गायों को कष्ट हो रहा है। उपरोक्त पत्र में स्वामी जी की इसी निराशा की ओर संकेत है। लेकिन अन्त में स्वामी जी ने गोशाला का प्रबन्ध सुधारने और रुपये प्राप्त करने के लिए पूर्ण आन्दोलन किया जिसके फलस्वरूप गोशाला को नवजीवन प्राप्त हुआ और उसकी व्यवस्था सुन्दर बन गई।

भारतीय जीवन के लिए गाय को वे बहुत ही आवश्यक मानते थे और गौवंश की रक्षा, वृद्धि और सुधार के लिए वे निरंतर प्रयत्नशील रहते थे। गायों का कष्ट वे देख नहीं सकते थे। अकाल के समय में सब कुछ भुलाकर वे गायों की सेवा और रक्षा में लग जाते थे। दिसावरों की देखा-देखी यहाँ भी "फूका प्रणाली" से दूध निकालने की परिपाटी कुछ मुसलमान गूजरों ने चलाई थी, इसमें गायों को असह्य पीड़ा होती थी। स्वामी जी ने प्रयत्नपूर्वक इस घृणित प्रणाली को बंद करवाया था।

यह पत्र पिंजरापोल के मंत्री श्री जमुनाधर जी गोयनका तथा श्री बालचन्द जी मोदी ने संयुक्त रूप से स्वामी गोपालदास जी के नाम कलकत्ता से दिनांक ३१ जुलाई १९२९ को लिखा है—

श्रीयुक्त स्वामी गोपालदास जी

चूरू,

प्रिय महोदय,

चूरू पिंजरापोल सोसाइटी का ४१वाँ वार्षिकोत्सव गत ता० २८ को रविवार के दिन धूमधाम और उत्साह के साथ सम्पन्न हो गया है। सभापति का आसन पं० गर्दे जी ने सुशोभित किया था। उपस्थिति अच्छी थी। रिपोर्ट अपटुडेट बनी है।

आगामी वर्ष के लिए सभापति तिलोकचन्द जी, उपसभापति ४, गणपतराय जी, गंगाधर जी, कन्हैयालाल लोहिया और सागरमल जी मन्त्री बनाये गये हैं। मन्त्री जमुनाधर जी और मैं चुना गया हूँ, सहकारी ओंकार जी भार्वसिहका, कोषाध्यक्ष मोतीलाल जी राधाकृष्ण, हिसाब-परीक्षक कालूराम जी भार्वसिहका तथा अन्य ४० सदस्य चुने गये हैं, उनमें प्रायः सभी नाम आ गये हैं।

चूरू के लिए निम्नलिखित चुनाव हुआ है—

—पूर्ण स्वत्वाधिकारी—स्वामी गोपालदास जी; पूर्ण प्रबन्धकर्त्ता—प्रह्लाद राय जी; प्रबन्धकर्ता—महादेव लोहिया; हुण्डी लेखक—गोकुलचन्द पारख; सहीकर्ता—मुन्नालाल जी शोभाचन्द; सलाहकार—जेसराज जी खेमका, सेवक—जगन्नाथ जी होलाणी, इस प्रकार चुनाव हुआ है। अब आप चुरू का कार्य-पूर्ण रूप से सम्हालें। गोशाला में साँडों का अभाव हो तो और प्रबन्ध करें। शहर में अभाव हो तो सांड मंगवा लें।

वर्षा हो गई, शिमले में घास अधिक हो जाने पर समय पर दो-चार वागर लगाने का ध्यान रखें ताकि समय पर चारे का अभाव न रहे। गायों की अवस्था अच्छी होगी, पूरा ध्यान रखना, अभाव न रहने देना। गायों तथा वैलों की विक्री में चोरी न हो, पूर्ण प्रवन्ध करना।

आपका

जमुनाधर गोयनका
और
वालचन्द मोदी } मंत्री

(नगर-श्री, पत्र सं० ९९)

स्व० श्री तिलोकचन्द्र जी सुराना

यह पत्र स्व० श्री तिलोकचन्द जी सुराना ने कलकत्ता से स्वामी जी के नाम लिखा है—

श्रीगणेशाय नमः

कलकत्ता ता० २२-३

स्वामी श्री गोपालदास जी,

कागज आपका दो तीन आया। काम के झंझट के सबब से जवाब देणे में देर हुई सो मालूम रहे। सभा को वार्षिक अधिवेशन अच्छी तरह हो गयो होसी। पिञ्जरापोल की नियमावली छप कर तैयार हो गई। रिपोर्ट छप रही है सो तैयार होणै से दोनों ही सागै भेजी जासी। घास पूलै की वागर बठै लगाई गई लिखी सो ठीक है। अब कालै गुँवार घास, पूलां को सूंगी वाड़ो है सो बन्दोवस्त जावतो होणै सके जठै तांई पूरो बन्दोवस्त करा लीजो। कागद पाछो देईजो। कोई काम काज होवै सो लिखीजो।

तिलोकचन्द सुराना

चूरू के सार्वजनिक जीवन में सुराना जी के समूचे परिवार का ही भरपूर हाथ रहा है। बाबू मन्नालाल जी, तिलोकचंद जी, हनूतमल जी, बच्छराज जी और हंसराजजी सभी अपने-अपने ढंग से योगदान करते रहे हैं। स्व० श्री तिलोकचन्दजी सुराना स्वामी जी के बहुत निकट संपर्क में रहे और उनके हर कार्य में पूर्ण सहयोग देते रहे। उनके द्वारा संस्थापित सभी संस्थाओं को सुराना जी ने सहायता दी। कारावास-मुक्ति के बाद भी जब स्वामी जी कलकत्ता गये तो वहाँ भी वे सुराना-भवन में ही ठहरे। चूरू पिंजरापोल को भी सुराना जी का पूर्ण सहयोग रहा। वि० सं० १९८६ में वे पिंजरापोल के ट्रस्टी व संयुक्त मंत्री निर्वाचित हुये थे और स्वामी जी पूर्ण स्वत्वाधिकारी। उपरोक्त पत्र स्व० सुराना जी ने चूरू पिंजरापोल की गायों के लिए घास-चारे का अग्रिम प्रबन्ध करने के सम्बन्ध में लिखा है।

स्व० सुराना जी की स्मृति में उनके स्व० सुपुत्र श्री हंसराज जी द्वारा स्थापित, "श्री तिलोक बाल विहार" व "श्री तिलोक होमियोपथिक दातव्य औषधालय" आज भी सुन्दर ढंग से चूरू में चल रहे हैं।

आपका पत्र मिला। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आप लोग कन्या पाठशाला की उन्नति के लिए दत्तचित्त हैं। कृपा कर उसका प्रबन्ध अपने ही लोगों के हाथ रखिये। जहाँ शिक्षित लोग मिलते हैं, वहाँ राज्य का धर्म है कि उनसे देशहित के कार्य करावे। यदि स्वयं राज्य कुल काम करने लगे तो उसका प्रभाव कम पड़ता है और जनता का प्रेम नहीं बढ़ता। आप ३००) तुरन्त और २०) मासिक स्थायी प्रदान करने का वचन देते हैं। इसी प्रकार सनातन धर्म सभा भी देगी तो किस बात का अभाव है जो पाठशाला नहीं चलती? राज्य से भी आप लोग ५०) मासिक लीजिये और काम चलाइये।

मेरे पास इस समय कोई योग्य अध्यापिका नहीं है जिसको भेजूं। जब मिलेगी तब भेजूंगा। इस समय दोनों संस्था को एक करके कार्य आरंभ कीजिये और जो अध्यापिका हैं उनको अभी काम करने दीजिये। शीघ्र मुझ को लिखिये कि क्या प्रबन्ध किया, जिसमें ५०) भेजूं।

(नगर-श्री, पत्र सं० ४) ह० अंग्रेजी में

नारी-शिक्षा के लिए स्वामी जी बहुत प्रयत्नशील रहे क्योंकि उन्होंने इस बात को गहराई से अनुभव कर लिया था कि जब तक राष्ट्र का आधा अंग अशिक्षित और निष्क्रिय रहेगा तब तक समाज और राष्ट्र की उन्नति कदापि नहीं हो सकती। इसलिए उन्होंने आज से कोई ६० वर्ष पूर्व सर्वहितकारिणी पुत्री पाठ-

शाला की स्थापना चूरू में कर दी थी जो अपने समय की आदर्श पुत्री पाठशाला थी। समय-समय पर पाठशाला का निरीक्षण करने के लिए आनेवाले राजकीय अफसरों और बाहर के अन्य अनेक गण्यमान्य सज्जनों ने पाठशाला की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

पाठशाला के सम्बन्ध में यहाँ कुछ पत्र दिये जा रहे हैं।

यह पत्र श्री जुगलकिशोर जी बिड़ला द्वारा दिनांक १०-७-२२ को कलकत्ता से लिखा गया है।

स्व० श्री जुगलकिशोर जी बिड़ला चूरू के विकास और उत्थान में बराबर सहयोगी रहे हैं। स्वामी जी के आग्रह पर उन्होंने चूरू में एक सुन्दर धर्मस्तूप का निर्माण करवाया और स्वामी जी द्वारा संस्थापित सभी संस्थाओं को भरपूर सहयोग दिया। सर्वहितकारिणी सभा के निर्माण में भी सर्वाधिक योग उन्हीं का रहा। स्वामी जी के प्रति उनके मन में बहुत सम्मान था और वे इन्हें एक बहुत ईमानदार और कर्मठ समाज-सेवी मानते थे। जो बात स्वामी जी स्व० बिड़ला जी को लिखते उसे वे यथार्थ मानते थे। सन् १६२५ में फतेहपुर में वर्षा से बड़ी हानि हुई थी तो उस वक्त भी उन्होंने स्वामी जी से ही वहाँ का विवरण मँगवाया था। बिड़ला जी की यह एक बड़ी विशेषता थी कि वे अन्तर्मन की प्रेरणा और जनहित की भावना से सहायता करते थे, प्रदर्शन और अहसान जताने की भावना से नहीं। यह बात उनके निम्न पत्र से भी प्रमाणित होती है।

Canning House
127, Canning street
CUTTA 10-7-1922

प्रिय महाशय,

कलकत्ता समाचारपत्र में श्री कृष्णादेवी[1] प्रेषित पत्र पढ़कर ज्ञात हुआ है कि आपके अधीनस्थ चूरू पुत्री पाठशाला में अनाथ विधवायें भी छात्रवृत्ति देकर पढ़ाई जाती हैं। और वे इस योग्य बनाई जाती हैं कि अध्यापिकाओं

१. वैद्य शान्त शर्मा जी की धर्मपत्नी।

का कार्य कर सकें और योग्य अध्यापिकायें बन कर बाहर की स्कूलों में भी विद्या-दान दे सकें। मुझे यह समाचार बांचकर अतीव प्रसन्नता हुई है। यदि योग्य अनाथ विधवायें इस उद्देश्य से आपके यहाँ पढ़ती हैं तो मेरी तरफ से भी दो विधा-वाओं को छात्रवृत्ति देकर भर्ती करा दिया जाय। यह छात्रवृत्ति ७) मासिक के हिसाब से दो वर्ष तक चालू रहेगी। इसी हेतु ३५०) मनिआर्डर से आपके पास भेजे जाते हैं। कृपया कार्य में लगा बाधित कीजियेगा।

भवदीय
युगलकिशोर बिड़ला

(नगर-श्री, पत्र सं० ४)

बीकानेर
७-१-२६

स्वामी गोपालदास जी को सादर वन्दे। आपका पत्र मिला। कन्या पाठशाला के लिए आपकी ही शर्तों पर जमीन दिये जाने की ता० ५ को कौंसिल से मंजूरी हो चुकी है। ओवरसियर के सम्बन्ध में यह झगड़ा है कि दरबार साहब का ध्यान रख के कोई छोटा-मोटा ओवरसियर तो कोई भेजना नहीं चाहता। कोई होशियार ओवरसियर या असिस्टेण्ट इंजीनियर भेजने की बात है। साहब से मैंने कहा था सो मुझे दफ्तर में आकर याद दिलाने का हुक्म हुआ था। याद दिलाने पर कहा कि उत्तमसिंह को ठीक करके भेजेंगे। और सब आनन्द है।

(नगर-श्री, पत्र सं० ११४)

रामशरण

स्वामी जी ने सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला की स्थापना तो बहुत पहले ही कर दी थी, लेकिन शाला का निजी मकान न होने से बड़ी दिक्कत रहती थी और बार-बार स्थान बदलने पड़ते थे। लेकिन उनके अथक प्रयत्नों से पाठ-शाला के लिए जमीन राज्य से प्राप्त हो गई और विद्या-प्रेमी सज्जनों को प्रेरणा देकर उन्होंने पाठशाला का निजी मकान बना दिया। बालिकाओं को शिल्प-कला की शिक्षा देने के लिए पाठशाला में एक शिल्पशाला का निर्माण करवाया गया और बालिकाओं के खेलकूद व मनोरंजन के साधन भी जुटाये गये।

पाठशाला अब भी बहुत अच्छे ढंग से चल रही है और इन दिनों में उसका विकास और भी अधिक हुआ है।

श्रीरामशरण जी तिवारी शिक्षा विभाग में किसी उच्च पद पर थे। स्वामी जी के साथ इनके सम्बन्ध बहुत अच्छे थे और स्वामी जी के कार्यों में पूर्ण सहयोग देते थे।

यह पत्र राँची से श्री गंगा प्रसाद जी बुधिया ने दिनांक १७-१-२६ को स्वामी जी के नाम लिखा है—

स्वामी गोपालदास जी,

पत्र आपका मिला। कन्या पाठशाला के लिए एक हजार गज जमीन राज्य से मिली सो बहुत प्रसन्नता की बात है। आप ही के परिश्रम का फल है। आपकी प्रशंसा के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। पाँच सौ रुपया का वचन मिल चुका लिखा सो ठीक है, ५०१ (पाँच सौ एक) रुपया हम लोग भी पाठशाला के मकान में सहायता देंगे। जब पाठशाला का काम शुरू हो, कृपया सूचित करेंगे। समाचार आपका आने पर सा० किसनदयाल जी नौरंगराय के मारफत रुपया आपको भेज देंगे। और कोई समाचार हो तो लिखियेगा। महंत जी को मेरा प्रणाम कह दीजिएगा।

आपका आज्ञाकारी
गंगाप्रसाद बुधिया

(नगर-श्री, पत्र सं० २७५)

बाबू गंगाप्रसाद जी बुधिया स्वामी जी के भक्तों और प्रशंसकों में से हैं। आप अधिकतर राँची (बिहार) ही निवास करते हैं। स्वास्थ्य-सुधार हेतु आप सन् २४ में चूरू आये थे और तभी आप को स्वामी जी के संपर्क में विशेष रूप से आने का अवसर प्राप्त हुआ। आपका कहना है कि स्वामी जी के संसर्ग और उनकी सेवा भावनाओं से ही मेरे में सार्वजनिक जीवन के भाव पैदा हुये। राँची के सार्वजनिक जीवन के तो आप प्राण हैं। आपकी ओर से वहाँ अनेक सार्वजनिक संस्थाएँ चलाई जाती हैं यथा, बुधिया दातव्य औषधालय, रसायनशाला, गणपति संस्कृत महाविद्यालय, संतुलाल पुस्तकालय, राधाकृष्ण गवर्नमेंट संस्कृत हाई स्कूल, महाविद्यालय छात्रा निवास आदि। मोरावंदी (राँची के पास)

में आपकी जो 'चूरू कोठी' है उसमें आपकी पुत्रवधू (जो एक विदुषी महिला हैं) द्वारा "शिक्षा निकेतन" का संचालन किया जाता है । आदिवासियों में ईसाई बनने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए राँची में हिन्दू धर्म सेवा संघ की स्थापना की गई है और उसे आत्म-निर्भर बनाने हेतु आपने प्रयत्न करके बहुत सारी जमीन उसके अन्तर्गत करवा दी है, जिसमें खेती-बाड़ी की जाती है । मारवाड़ी आरोग्य भवन को जिसे वर्तमान में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी चलाती है आपने करीब १७ एकड़ जमीन प्रदान की है । बिड़ला इंजीनियरिंग-कालेज में करीब ४०० एकड़ जमीन आपने ग्राम से सस्ते मूल्य पर दी है । सार्वजनिक कार्यों के व्यय के लिए गणपति ट्रस्ट तथा जड़िया देवी बुधिया ट्रस्ट बनाये हुये हैं । राँची में बिड़ला बंधुओं द्वारा संस्थापित व संचालित अनेक संस्थाओं की सँभाल आप करते हैं । चूरू को भी आप से अच्छा सहयोग मिलता रहा है । स्त्रियाँ खुली जगह में शौच न जाएँ, इसके लिए आपने एक सार्वजनिक जनाना शौचालय बनवाने हेतु जमीन प्रदान की । सर्वहितकारिणी सभा की प्रेरणा पर चूरू पिंजरापोल की शिम्ला शाखा के लिए एक बड़ा कुआँ बनवाया गया तथा एक कुआँ जसरासर

श्री स्वामी जी महाराज की सेवा में निरंजनलाल का प्रणाम, अब मेरे को आराम है। २-४ दिन में ठीक हो जाऊँगा ।
(नगर-श्री, पत्र सं० ३८८)

उपरोक्त पत्र के लेखक राय साहब डा० मदनलाल जी सार्वजनिक कार्यों में बहुत भाग लेते थे और स्वामी जी के प्रति इनकी बहुत श्रद्धा थी। इसी वर्ष ये सर्वहितकारिणी सभा के मंत्री भी बनाये गये थे । इनका जन्म सन् १८७३ ई० में हुआ था और बीस वर्ष की अल्पायु में ही इन्होंने डाक्टरी की अंतिम परीक्षा पास कर ली थी। अनन्तर ये विक्टोरिया अस्पताल अजमेर और सदर अस्पताल जोधपुर में डाक्टरी करते रहे। जोधपुर में रहते हुये ही इनकी विशिष्ट सेवाओं के कारण इन्हें राय साहब का खिताब मिला[1]। जोधपुर से अवकाश ग्रहण करने पर ये चूरू आ गये, यहाँ भी इन्होंने खूब ख्याति प्राप्त की, नारायण दातव्य औषधालय को इन्होंने अपनी सेवायें अवैतनिक दीं ।

श्री निरंजनलाल जी इनके सबसे छोटे भाई हैं, जिनका जन्म सं० १८९६ में हुआ था। इन्हें भारतीय संस्कृति से बहुत लगाव है और ये बहुत सुलझे हुए विचारों के व्यक्ति हैं। एक लम्बे अर्से तक कोयला उद्योग में रत रहते हुए भी दर्शन, इतिहास और साहित्य के प्रति रुझान होने के नाते इन्होंने अभी हिन्दी संसार को "व्यक्ति और संघर्ष" नामक सुन्दर ग्रन्थ दिया है, जिनमें इनके विचारों की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है ।

धर्मस्तूप का निर्माण

स्वामी जी से जुगलकिशोर का प्रणाम घनेमान सेती। पत्र आपका मिला, मास्टर श्रीराम जी ने सभा को ठीका लेने की लिखी, सो उनकी गलती है। मैंने तो उनसे यह कहा था कि अगर मुनसपालटी ठीका ले लेवै तो अच्छा हो, क्यूँकि घड़ी लगाने का काम एक तरह मुनसपालटी का ही है। अब आप काम सुरू कर देवें---किन्तु १२ (बारा) फीट चौड़ा और ४० (चालीस) फीट ऊँचा ही होना चाहिए। इससे बड़ा करने में या तो रुपिया ज्यादा लगेगा या काम कच्चा बणेगा। दूसरी बात यह भी विचार में रखनी चाहिये कि अपनी अभिलाषा तो स्तूप की ही है, जिसमें लगा हुआ धार्मिक श्लोकों का पत्थर कम से कम पाँच-सात सौ बरस तो रह सके। इसलिये स्तूप की दृढ़ता पर विसेस ध्यान रखना चाहिये।

अगर आप घड़ी के खर्चे के लिये मुनसपालटी से मंजूरी करा लेवै तो और भी अच्छा हो। अपनी ओर सेती चेजै का काम करा दिया जावै। उसमें घड़ी लगाने का काम और भविष्य में मरमत वगैरे का काम मुनसपालटी या राज के जुमें लग जाना चाहिये। और लोगों का विचार सहर में कोई सड़क पर करवाने का लिखा सो सहर के भीतर भी यदि कोई अच्छी चौड़ी सड़क होवै तो ठीक हो। किन्तु इसटेसन की सड़क के आसपास मकानात वण रही है तब यह भी सहर को माफिक ही आबाद हो जावैगी। और सहर की सड़क ऐसी रौनकदार चौड़ी लंबी भी मिलनी कठिन है सो विचार लेना। पीछै आप लोगों के सब के जचे सो ठीक है। काम प्रारंभ जचै जहाँ कर देना किन्तु रु०१००००) दस हजार के आसपास ही लागत हो और पुखता पका पत्थर का काम हो ऐसा विचार रखना। कृपा विसेस रखना। मिती फागुन सुदी २ सं० १९८१——

स्वामी गोपालदास जी और मास्टर श्रीराम जी के प्रयत्न से चूरू में स्व० सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला ने एक सुन्दर धर्मस्तूप का निर्माण करवाया था। स्तूप बनाने का उद्देश्य यही था कि स्तूप के ऊपर खुदे हुए धार्मिक श्लोकों से लोग शिक्षा ग्रहण करें और सन्मार्ग पर चलें। स्तूप बनवाने की मंजूरी प्राप्त करने में भी स्वामी जी को बड़ा श्रम करना पड़ा, किन्तु अन्त में कार्य सफल हो गया। अनुमानित धनराशि से करीब दुगुनी धनराशि स्तूप के निर्माण में व्यय हुई लेकिन स्तूप बहुत सुन्दर और मजबूत बन गया। धर्मस्तूप के ऊपर स्थापित भगवान् श्रीकृष्ण, बुद्ध, महावीर, गुरु-नानक, जगदम्बा और शंकराचार्य्य की मूर्तियाँ सर्व धर्मों के प्रति समादर की भावना का उद्घोष कर रही हैं।

यह पत्र श्रीराम शरण तिवारी ने बीकानेर से दिनांक २८-३-२५ को स्वामी जी के नाम लिखा है——

श्रीमान स्वामी गोपालदास जी महोदय, प्रणाम।

स्तूप का कार्य जल्दी तय होना कठिन है क्योंकि राज्य से कुछ सम्बन्ध रखता है। स्तूप का मौका सचमुच बहुत ही उत्तम है। गजधर ने समझा नहीं। स्तूप के चारों ओर बिलकुल गोल सरकिल रखना आवश्यक है, उससे आकर मिलने वाली सड़कें चाहे जिस कोण से आकर मिलें। गजधर सीधी सड़कें लाकर मिलाने के चक्कर में शायद पड़ गया है। उसे चाहिये कि स्तूप का चक्कर बना

यह पत्र श्रीयुत जुगलकिशोर जी बिड़ला द्वारा चैत्र कृ० ६ सं० १९८९ को पिलानी से स्वामी जी के नाम लिखा गया है—

॥ श्रीहरि ॥

पिलानी
चैत्र कृष्ण ६, सं० १९८९

श्रीयुत पूज्य स्वामी गोपालदास जी ।

सादर प्रणाम ।

पत्र आपका मिला । उत्तर में निवेदन है कि मैं शिलारोपण-उत्सव पर उपस्थित न हो सकूँगा । क्षमा करें । आपने लिखा कि राज वाले इस स्तूप पर एक पत्थर बीकानेर भँवर साहिब की जन्म यादगार का लगाना चाहते हैं, जिससे आप भी सहमत हैं सो ठीक है, कोई हर्ज नहीं है । परन्तु भँवर साहिब का शब्द न लिखकर या तो महाराज श्री गंगासिंह जी के पौत्र, ऐसा लिखा जावे या उनका नाम लिखा जावे तो उत्तम हो । क्योंकि ऐसे शब्द का प्रयोग होना आवश्यक है कि जो संस्कृत का शब्द हो या भाषा का हो और जिसका कुछ अर्थ भी हो । भँवर न तो कोई संस्कृत शब्द ही है और न भाषा का ही शब्द है सो भँवर केस्थान में कोई उत्तम शब्दार्थ शब्द के नाम का प्रयोग किया जावे । कृपा विशेष रखावें । पत्रोत्तर देवें ।

धर्मस्तूप के ऊपर बीकानेर राज्य की ओर से बीकानेर भँवर साहिब (वर्तमान महाराजा डा० करणीसिंह जी) के जन्म की यादगार और बीकानेर राज्य की प्रशस्ति का पत्थर लगवाना चाहते थे । इसके लिए स्वामी जी ने दिनांक २०-२-२६ को स्वयं महाराजा साहब को एक पत्र देकर पूछा था कि धर्मस्तूप के ऊपर बीकानेर राज्य की प्रशस्ति का पत्थर लगाया जाएगा तो क्या अपने राज्य की किसी इमारत पर ऐसा पत्थर लगा हुआ है ? इस पत्र का क्या उत्तर मिला, यह तो पता नहीं लेकिन इतना अवश्य हुआ कि धर्मस्तूप पर अलग से कोई पत्थर न लगवाकर राज्य की इच्छानुसार धर्मस्तूप के दरवाजे के ऊपर कुछ पंक्तियाँ अंकित करवा दीं ।

राजश्री गुलाबसिंह जी, राव बहादुर ठा० भूरसिंह जी और कुँ० सबलसिंह जी का आगमन हुआ। उनके पास लोगों ने पहुँचकर अर्ज की...इस पर बड़े परिश्रम के साथ रात भर इस मामले की जाँच-पड़ताल की। प्राय: ८-६ आदमी इस गुण्डा पार्टी के मुखिया थे। उनमें से ५ को पकड़ लिया, बाकी भाग गये। पकड़े गये गुण्डों से जाब्ता फौजदारी की १०७ धारा के मुताबिक जमानत और मुचलके लिये गये। इनकी जाँच-पड़ताल करने में बड़ी तत्परता से काम लिया गया। गुण्डों की-मूँछ मुड़वा कर हथकड़ी डालकर सरेबाजार घुमाया गया। जिन ब्राह्मणी को गुण्डे उड़ाकर ले गये थे वह राजगढ़ से वापिस लाई गई है और जेवर भी सब बरामद हो गया है। होम मिनिस्टर साहब ने इस मामले की स्वयं जाँच की।[1]

चूरू में धर्मस्तूप की स्थापना के सम्बन्ध में स्वामी जी का एक वक्तव्य 'दैनिक स्वतंत्र' (डाक संस्करण) ता० २-८-२५ में प्रकाशित हुआ था जो संक्षेप में यों है—

वैदिक युग में जब कोई बड़ा भारी यज्ञ किया जाता था तो उसकी स्मृति चिरकाल तक बनी रहने के लिए उस स्थान पर एक स्वर्ण का स्तूप खड़ा किया जाता था। ऐसे स्तूप का नाम वेद के निरुक्त में हिरण्यमय-स्तूप अर्थात् सुवर्ण के स्तूप का वर्णन मिलता है। धर्म की स्तुति की रक्षा जिससे हो वह धर्म-स्तूप कहलाता है। प्राचीन काल में जो स्तूप यज्ञभूमि पर खड़े किये जाते थे उन पर तत्सम्बन्धी विवरण के साथ यज्ञकर्त्ताओं के नाम, उस समय की स्थिति तथा राजा-प्रजा का सामयिक इतिहास और उस समय के प्रचलित धार्मिक उपदेश अंकित रहा करते थे। बौद्धकाल में जब यज्ञों का प्रचार कम हो गया उस समय इन स्तूपों का प्रचार दूसरे रूप में हुआ अर्थात् बौद्धों ने तथा जैनों ने अपने धार्मिक स्थान तथा उपासनालय सभी स्तूप की आकृति में बनाये जो अब तक उसी रूप में ऊपर से शिखर-बंध होते हैं जो उसी प्राचीन स्तूप का नमूना है.....

प्राचीन हिरण्य-स्तूप का नमूना इस समय भी वृन्दावन के श्री रंग जी के मन्दिर में खड़ा किया गया है। जहाँ तक अनुमान है प्राचीन हिरण्यमय स्तूप का केवल एक यही उदाहरण है जो प्राचीन समय के स्तूपों के महत्व को प्रकट कर

रहा है... यज्ञों का प्रचार बन्द होने से देव-मन्दिरों की प्रथा प्रचलित हुई और बावड़ी, कुआँ, तालाब आदि धर्मस्थान के बनाने पर उसके पास एक स्तूप (स्तम्भ) खड़ा करने की रीति प्रचलित हुई जिस पर तत्कालिक सब विवरण अंकित रहते हैं। जब मुसलमान भारत में आये तो उन्होंने भी हिन्दुओं की इस रीति को अपनाया।...अंग्रेजों में भी यह चाल बहुतायत से जारी है जो किसी सड़क, पार्क आदि में ऊँची मीनार किसी ऐतिहासिक घटना के स्मारक में खड़ी की जाती है।

इन सब बातों से पता चलता है कि स्तूप (स्तम्भ) बनानेकी रीति प्राचीन काल से किसी न किसी रूप में चली आ रही है और उसका उद्देश्य केवल सर्व-साधारण में धर्म-प्रचार और भूतकाल के इतिहास का ज्ञान प्रदर्शित करना है।

इसी उद्देश्य के आधार पर यहाँ चूरू में भी एक धर्मस्तूप शहर से स्टेशन तक जो नई सड़क बनी है उसके मध्य भाग में बनाया जाएगा जो १७ फीट चौड़ा और ६७ फीट ऊँचा पत्थर का होगा। जिसके नीचे की मंजिल में मकराने के पत्थरों पर श्री गीता जी के १८ अध्याय के चुने हुए श्लोक सरलार्थ सहित अंकित रहेंगे... यह धर्मस्तूप सर्वहितकारिणी सभा के द्वारा श्रीमान बाबू जुगल-किशोर जी बिड़ला की तरफ से बनेगा जिसका शिलारोपण महोत्सव कुछ दिन पहले हो चुका है।[1]

देहातों में जलाशयों का निर्माण

बीकानेर राज्य में पानी का अभाव और कष्ट बहुत अधिक रहा है। बहुत गहराई पर पानी निकलने के बाद भी बहुत स्थानों पर पानी इतना खारा निकलता है कि आदमी तो क्या पशु भी नहीं पी सकते। इसके लिए गाँवों के लोग पीने का पानी १५-१५ मील दूर से भी लाते हैं। जिन गाँवों में पानी सर्वथा खारा होता है वहाँ वर्षा के पानी को इकट्ठा करके रखने के लिए कुण्ड और तालाब बनाये जाते हैं। तालाब प्रायः कच्चे होते हैं और उनमें अधिक दिनों तक पानी नहीं ठहरता, वर्षा भी यहाँ बहुत कम होती है अतः तालाब जल्दी सूख जाते हैं। कुण्डों से कोई पानी चुरा न ले जाए इसके लिए कुण्डों को ताला लगाये रखते हैं और पानी की बड़ी निगरानी रखी जाती है।

आज की अपेक्षा उन दिनों गाँवों की हालत बहुत गिरी हुई थी। लोग इस स्थिति में नहीं थे कि कुण्ड बनवा सकें या उनकी मरम्मत करा सकें और तालाबों की मिट्टी निकलवा सकें। इनका कष्ट दूर करने के लिए स्वामी जी ने अनेक श्रीमन्तों से प्रयत्नपूर्वक सैकड़ों गाँवों में कुएँ और कुण्ड बनवाये तथा उनकी मरम्मत करवाई और तालाबों की मिट्टी निकलवा कर उन्हें गहरा बनवाया। इसके लिए राज्य के बड़े-बड़े अफसर और सरदार स्वामी जी का निहोरा करते रहते थे। आवश्यक जाँच-पड़ताल के पश्चात् स्वामी जी उन गाँवों में कुण्ड इत्यादि बनवा देते थे। इससे एक तो पानी का कष्ट मिट जाता और दूसरे लोगों को मजदूरी मिलती। इससे एक लाभ और भी होता था कि जिस गाँव में कुआँ या कुण्ड बनाया जाता उसके लिए स्वामी जी का यह प्रयत्न रहता था कि गाँव के भोमिया से कुछ धरती गोचर-भूमि के लिए छुड़ाई जाए। इससे गायों का भी हित होता था, अस्तु।

इस सम्बन्ध में स्वामी जी के पास अनेक पत्र आते रहते थे, बहुत से नगर-श्री के संग्रहालय में भी हैं, लेकिन यहाँ कुछ थोड़े से पत्र इस सम्बन्ध में दिये जा रहे हैं, जिससे इस विषय पर कुछ प्रकाश पड़ सकेगा—

उन्हें गहरा बनाया गया—गाँव, बीगराण, श्यामपुरा, चूरू, भासलू, सोमासी, सिरसला, भागलखेरी, बणियासर, कानड़वास, कोटबाद टीबैवाला, सिमसिया, गोगटिया, बीकासी, रामपुरा, स्योदानपुरा और शिमला आदि गाँवों में कुण्ड-कुएँ आदि नये बनाये गये और पुरानों की मरम्मत कराई गई। साहवा तथा सोमासी की ढाब खुदवाई और सिरसला, गिन्दड़ी, करनपुरा, धाँधू, स्योदानपुरा, खंडवा, रामपुरा, रिढ़िया, जसरासर, दांदू, झारिया, नरवासी, खारिया, नाकरासर, ग्वासोली, खींवासर, मठोड़ी, तेजरासर, सालती व चूरू के आस-पास अनेक कच्चे तालाब खुदवाये व मिट्टी निकलवा कर उन्हें गहरा बनाया गया। अनेक मन्दिरों की मरम्मत करवाई व अन्य अनेक सार्वजनिक हित के कार्य करवाये जिनमें ४३४६२) रुपये खर्च हुए जिनका एक हिसाब स्वामी जी के हाथ से तैयार किया हुआ नगर-श्री के संग्रहालय में मौजूद है। आज इतना काम दस लाख रुपये में भी होना कठिन है।

यह पत्र श्रीयुत जुगलकिशोर जी बिड़ला द्वारा दिनांक १८-१२-१९२८ को स्वामी जी के नाम लिखा गया है—

श्री हरिः

जुगलकिशोर बिड़ला

बिड़ला हाउस
मिती १८-१२-१९२८

स्वामी गोपालदास जी,

प्रणाम, कृपा पत्र आपका मिला। कुण्ड जहाँ प्रारम्भ किये हैं, उन ग्रामों के नाम सभा को लिख दिया है। आपको भी उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं :—

१. लाखलाना में पट्टा ददरेरा के ठाकुर साहब का राजगढ़ से पश्चिम उत्तर में ५ कोस।
२. स्यागल में खालसा राज बीकानेर, राजगढ़ से उत्तर में कोस १०
३. डींगरलो में खालसा राज बीकानेर, राजगढ़ से उत्तर पश्चिम में कोस १२
४. कांजण में पट्टा राजपुरा के ठाकुर साहब को, राजगढ़ से पश्चिम में कोस १०।
५. बैजवो में पट्टा साँखू के ठाकुर साहब का, राजगढ़ से ८ कोस दक्षिण-पश्चिम में।

इस प्रकार पाँच कुण्ड बनने शुरू हुये हैं। सभावालों के नाम का पत्थर कुण्ड तैयार होने पर लगवा दिया जायगा। सभावालों से आप कह दें कि वे राज

से भी लिखा-पढ़ी कर सकते हैं । मेरी धारणा में जलाशयों की मरम्मत का कानून अब तक राज्य में नहीं है । यदि ऐसा होता तो अनेक जलाशय बेमरम्मत क्यों होते । आवश्यकता इस बात की है कि राज्य के बजट में प्रत्येक वर्ष जलाशयों की मरम्मत के लिये कुछ रकम अलग निकाली जाय ।

आपका
जुगलकिशोर

मास्टर श्रीराम जी आजकल यहाँ नहीं हैं । वे आजकल कलकत्ता हैं । मैं स्वयं उनसे बात करना चाहता था तथा उनको आपके पास भेजता परन्तु वे आजकल कलकत्ता हैं सो आपके निगे रहे ।
(नगर-श्री, पत्र सं० ५७)

यह पत्र रतनगढ़ से श्री सागरमल भुवालका ने स्वामी जी के नाम वैशाख सुदी १२ सं० १९८७ को लिखा है—

१।। श्री राम जी

१।—— सिध श्री चूरू सुभस्थानेक पुज स्वामी जी गोपालदास जी जोग लिखी रतनगढ सु सागरमल भुवालकै का पांवाधोक बंचजो अठै उठै श्री सीताराम जी सिहाय छै। उपरंच कुंड को मोको देखणै ताई आप सेती बात होई छी सु अब आपनै फुरसत होवै जदई चला चालांगा सु हसवारी को वंदोबस्त ठीक रवै जिस तरै कर लीजो । आप लिखोगा जकी टेम उपर मैं आय जाऊँगा । यो काम जलदी सरू होय ज्यावै तो ठीक छै, सु चिठी के बदलै की चिठी देयो—मिती बैसाख सुदी १२ सं० १९८७ ।
(नगर-श्री, पत्र सं० १६६)

इस प्रसंग में वैद्यशान्त शर्मा जी ने बतलाया कि कुण्ड बनाने का मौका देखने के लिए स्वामी जी और सागरमल जी के साथ मैं भी गया था । गाँव गाजवास से कुछ दूर इधर हमें नंगे बदन एक व्यक्ति मिला जो पानी के दो घड़े लिये जा रहा था । हमने उससे पूछा कि गाँव कितनी दूर है तो उसने बतलाया कि यही दो-तीन खेत पार करने के बाद गाँव आ जाएगा । गाँव में पहुँच कर हम ठाकुर की कोटड़ी पर गये तो ठाकुर साहब को पहिचान कर सागरमल जी ने स्वामी जी से कहा कि यह तो वही आदमी लगता है जो थोड़ी देर पहले हमें

मिला था और वास्तव में बात भी यही थी। वही गाँव का ठाकुर था जो किसी शीघ्र पहुँचने वाले रास्ते से आकर और कपड़े पहन कर तथा साफा बाँध कर अपने आसन पर आ बैठा था। ठाकुर ने कहा कि क्या करूँ—पानी का बड़ा कष्ट रहता है, एक बदली थोड़ी-सी बरसी थी सो दो घड़े पानी के ले आया, यदि चार घड़े पानी आ जाता तो दो दिन का काम तो चल जाता। पानी के इस अभाव को देख कर वहीं कुण्ड बनाने का निश्चय किया गया और फिर वहाँ से लौट कर उसी गाँव में कुण्ड बनवाया गया।

यह पत्र श्री गणपति जी ओझा ने चूरू से स्वामी जी के नाम लिखा है जो तब बाहर गए हुये थे। गणपति राय जी स्वामी जी की ओर से जलाशयों के निर्माण कार्य पर नियुक्त किये गये थे।

स्वामी गोपालदास जी सेती गणपत ओझै का राम-राम बंचना। तेजरासर को तलाब अभी और खुद रैयो छै। आपणी तरफ से ३००) रुपियां की खुदगी। हमां पालो ल्याणै वास्तै गयो छो। गौशाला की कमेटी आज दिन अब बड़ै मंदिर मांय होय रैई छै। चूरू के आदमियांनै मेम्बर बणाणै वास्तै सो जाणियो। राजासर मांय गायां दुख पावै छै। गाँव का आदमी इसी कै वै छै। बाहर गांवां का आदमी रोज २-४ आवै छै। कूवै वास्तै तथा जोहड़ै वास्तै। कूवो एक प्रहलाद राय जी जालुको करावै छै। गांव लीलकी मांय, तहसील राजगढ़ तलै छै जिकै कूवै तलै जमीन बीघा १०० छुड़ाई छै। सिमसिये वालै कूवै ऊपर अभी सारो काम होयो छै नहीं।

कागद एक डालसिंहतहसीलदार को आज आयो छै। पैली भी आयो छो। कूवै वास्तै लिखै छै और रीणी कै कनै को कुम्हार आयो जिको कुंड वास्तै फिरै छै। कैवै छै आदमी भूख मरै छै मजूरी चालै तो जीवां। तेजरासर वालो हौलदार आयो छो। माहाराज साब भेज्यो थो, कारण कुम्हार उन लोगां नै कैयो इस भाव मांय माटी खोदां नहीं सो कुम्हार भी चूरू आया छा। कुम्हारां नै समझायकर फिरती भेज दीना छै। रुपिया ४००) सेठां की हेली सें ल्यायो छो सो जाणियो।

इस साल बाहर गाँव का आद ी भोत आवै, सब नै या कैवां, स्वामी जी अठै नहीं है और रुपिया भी नहीं, लेकिन लोगां के जचै नहीं। सेठ सूरजमल जी नै तथा और किसनै कहकर थोड़ा-भोत रुपिया होणा चाये। स्योलाल के अभी आराम होयो नहीं। स्वामी जी सेती जेसराज का राम-राम। तोलाराम बिरामण तथा एक कारीगर सिमलै वालो कूवो देखणै कै वास्तै गया छा। आज

दिन आयो छै जिको कैवै के कोठी की नाळ दूसरी बनाई जावै जद पाणी होय ज्यावै। रिपिया १०००) तथा २०००) लागै। कमती-बेसी लागै जिको राम जाणै।

बूंटिये के गैलै सें आथूण नडिये के कनै भोत फोग ऊग्या छै। आंगल ८-१० का होय गया छै। हमां भी नडिये कानी जावां छां, निगै राखां छां। पींजरापोल सें आथूण कूटलो (खाद) पड़ै छै सो जाणियो।

(नगर-श्री, पत्र सं० १७४)

सरदारशहर
३०-६-२६

आपके दो कृपा पत्र मिले। मैं दौरे गया था इस कारण उत्तर में देरी हुई, क्षमा करें। सरदारशहर का रकबा २४ हजार है। इसमें सरकारी बंजड़ करीब दस हजार बीघा के है। टीबों का रकबा शहर के करीब अंदाजे से १२ या १५ सौ बीघा है जो उपजाऊ बनाया जा सकता है। यह रकबा जरखेज हो जावे तो गायों को आराम हो जावे। और मैंने आप को कुयें की बाबत अर्ज की थी उसका ध्यान रखें। आप कोशिश करेंगे तो जरूर काम पूरा होगा। अगर आप करनपरे के लिये कम से कम ५००) रुपया भी फिलहाल दे देवें तो मैं काम शुरू करा दूं।

१ श्री राम जी

राज श्री १०५ श्री स्वामी जी श्री गोपालदास जी जोग ५ लिखी बीकानेर सु बनेसिंह की दंडवत बंचाव सो। आप मारच के महीने में बीकानेर पधारिया हा, पण मैं बीये मौके पर श्री जी० साहबां रे साथ बम्बई चलो गयो सो आपरा दरसन नहीं हो सकिया। अगर आपका सावन तक आणे का मोका होगा तो मैं आपको तलाव देखलाऊँगा। तलाव बड़ा संगीन है और १०-१५ कोस की गिरद में गांव में तलाब नहीं है। हमारी तरफ गाँवों में मीठा पाणी है और पास-पास के गांव जो ८-१० कोस में हैं पाणी पीणे के वास्ते आते हैं और गांव सींथेरा में श्री रामदेव जी की धाम है सो साल में २ दफे मेला भरता है। जिसमें यात्री लोग २-३ हजार इकट्ठे होते हैं। इसमें एक हजार रुपियां की माटी और निकाल

दी जावे तो वारे महीने तक पानी ठहरने लग जावे और वहोत धरम की जगै है। आपने २-३ दफे तलाव खुदवाने की वावत कागद रामचन्द्र की मारफत दिया मगर मैं यहाँ पर नहीं था। आपने तो वड़ी किरपा की। तलाव में मिट्टी करीब २५० खानों की निकलनी जरूरी है सो इसकी खुदाई में करीव हजार रुपियां का खरचा है......आपकी मरजी हो सो जवाव रामचन्द्र की मारफत दे देवें। आपकी किरपा से सब आनन्द है। ता० ३१-५-२६

आपका शुभचिन्तक
द० बनेसिंह

(नगर–श्री, पत्र सं० १६३)

(खियेरां पूगलिया भाटियों का ठिकाना था और उस वक्त बनेसिंह जी खियेरां के सरदार थे, वे बीकानेरी सेना में लेफ्टेनेंट कर्नल रहे। अंग्रेज सरकार की ओर से उन्हें राव वहादुर की उपाधि मिली और वे महाराजा गंगासिंह जी के ए० डी० सी० थे तथा बीकानेर राज्य के मिलिटरी सैक्रेटरी भी रह चुके थे—बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग २, पृ० ७४८)।

यह पत्र श्री मुखराम जी तहसीलदार ने भादरा से ता० ३१-१२-२६ को श्री स्वामी जी के नाम लिखा है—मुखराम जी पहले चूरू के तहसीलदार थे और बाद में उनका तबादला भादरा हो गया था।

ओ३म्

भादरा
ता० ३१-१२-२६

श्रीमान् मान्यवर स्वामी जी,
नमस्ते।

मैं कुशलपूर्वक तारीख २७-१२-२६ को भादरा पहुँच गया और ता० २८-१२-२६ को मैंने चार्ज ले लिया। आपका बहुत इन्तजार किया, मगर आप नहीं पधारे अतः आपके दर्शन नहीं हुये। इस वर्ष इस तहसील में भी कहतसाली है और लोगों की हालत खराब है। कुछ वर्षा हुई थी, जहाँ साढ़ियाँ थीं, वहाँ अच्छी मदद पहुँची। मैंने आपसे कई बातों के बारे में सलाह लेनी थी मगर अफसोस सब मामले बीच में ही रह गये। हमारे जोहड़े के लिए भी कुछ कार्य नहीं हुआ। इसलिये उसके लिये तो कमअजकम रु० २००) की सहायता करें और सेठों की बीड़ की मंजूरी के लिए भी लिखें। कार्य इस साल ही आरंभ

हो जाना चाहिए । पार्क की मिसल आशा है जल्द मंजूर हो जावेगी । आपका इस तरफ आने का विचार हो तो अवश्य सूचित करें ताके सवारी वगैरा का मुनासब इन्तजाम किया जावे । कृपा मेहरबानी बदस्तूर बनी रहे और मेरे योग्य कार्य हो तो अवश्य लिखें—महन्त जी को जैरामजी की कहें—

भवदीय,

(नगर-श्री, पत्र सं० १६७) मुखराम

यह पत्र ठा० बहादुरसिंह जी ने तिहाणदेसर से स्वामी जी के नाम लिखा है—

आपके हुकम के मुआफिक तेणदेसर के कूवै को काम सरू करा दीनो है । एक चिणनै वालो कारीगर जकै नै आपकी सेवा में भेज्यो है, उसको तो २) रोज रोटी देणी करी है और एक सिलावटो भाटा साफ करणै वास्तै याने घड़नै वास्तै अठा सें भेज्यो है, १) रु० रोज और रोटी में सो मालुम रैवै । उम्मीद है के अन्दर को काम कूवै को माह ऊतरे तक हो जासी । कृपा महरवानगी है उससै ज्यादा रखावें और कोई कार खिदमत हो सो लिखावें । ३१-१२-२३

(नगर-श्री, पत्र सं० ६)

बहादुरसिंह जी बीकानेर राज्य में तिहाणदेसर के नारणोत बीका राठोड़ थे, और तहसीलदार के पद पर थे । स्वामी जी के नाम इनके लिखे हुए कई पत्र नगर-श्री के संग्रहालय में मौजूद हैं ।

इन्द्रमणी पार्क

स्वामी जी चूरू के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहते थे। चूरू को वे एक सुन्दर पब्लिक पार्क भी देना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने चूरू के सुप्रसिद्ध सेठ रा० ब० रुक्मानंद जी बागला को प्रेरणा दी। सेठ रुक्मानंद जी स्वामी जी की त्यागवृत्ति और सेवा-भावना से बहुत प्रभावित थे और उन्होंने सहर्ष पार्क-निर्माण की स्वीकृति दे दी साथ ही सेठ जी ने पार्क के निर्माण का सारा भार भी स्वामी जी पर ही डाल दिया। इसके फलस्वरूप नगर को एक बहुत सुन्दर और रमणीक पार्क प्राप्त हुआ। इस सम्बन्ध में स्वामी जी के नाम लिखे हुए सेठ जी के कुछ पत्र यहाँ दिये जा रहे हैं —

मौलमीन
७ जनवरी, १९३०

स्वामी गोपालदास जी सेती रुकमानंद रामनिवास का पावाधोक बंचना। अठै उठै श्री सत्यनारायण जी महाराज सहाय छै अप्रंच पत्र आपको आयो समाचार सब मालूम करा और आपने लिखा कि कूवे का काम ठेका में नहीं देकर अपने ही कराते हैं सो बहुत ठीक है। काम कूवे का तथा पार्क वगैरह का काम सरब बहुत पुखता तथा मजबूत बहुत खूबसूरत करायो। कोई किसम की त्रुटि नहीं रहना चाहिए। हमा ज्यादा क्या लिखें, आप सरब काम देखते ही हैं और आपने लिखा के राज के दफतर से तथा म्युनिसिपल बोर्ड से नाम पार्क का मंजूर करा दिया है सो बहुत अच्छा किया और बीड़ का काम भी अच्छी तरह चलता लिखा सो बहुत आनन्द की बात है। काम सर्व बीड़ का तथा पार्क का बराबर कराते रहना और काम सर्व बहुत अच्छा तथा खूबसूरत आपके दिल के माफिक कराना। यहाँ पर सब राजी खुशी हैं आप बहुत प्रसन्न रहना। हालचाल सर्व बराबर लिखते रहना——

स्वामी जी गोपालदास जी सेती रुकमानंद का पावाधोक बंचना बर्तमान सेती। कामकाज सरब तुमारी खुसी के माफिक भोत आछो करायो। कोई रकम त्रुटि होवै नहीं। सब काम भोत आछी तरह से होवणो चाहे। कोई बात अगर तुमारै चित्त मांय नहीं जची होवै तो लिखियो।

(नगर-श्री, पत्र सं० ११८)

इन्द्रमणि पार्क का निर्माण-कार्य, टीलों को समतल बनाया जा रहा है।

बायें से दायें--सर्वश्री विश्वेश्वरलाल खेमका, पं० चन्दनमल बहड़, बैजनाथ भावसिंहका, भालचन्द्र वैद्य, स्वामी गोपालदास, मास्टर श्रीराम, पं० ठाकुरदत्त, महंत गणपतिदास, वैद्य शान्त शर्मा, भैरूदान मड़दा, जेमराज खेमका आदि।

मौलमीन

१६ नवम्बर, १६३०

स्वामी गोपालदास जी से सेठ रुकमानंद रामनिवास का दंडवत बंचना अप्रंच आपका पत्र आया। हाल मालूम हुआ। आपने लिखा के इन्द्रमणि पार्क बनाने के वास्ते ठेका का बातचीत किया है सो ठीक है। आपका खुशी के माफिक सरब काम करवाना तथा कूवा बनाने के वास्ते लिखा सो बहुत ठीक है। आपके खुशी माफिक कूवा बहुत अच्छा जलदी तैयार करना। बीड़ के काम पर भी पूरा ध्यान तथा सम्हाल रखना। अगर आदमी का कमी मालूम हो तो और बढ़ा देना, बाकी काम सरब बहुत जलद तैयार कराना। इन्द्रमणि पार्क का साइन बोर्ड लगाया सो बहुत ठीक है, आपके खुशी माफिक करना। यहाँ पर सर्व बहुत खुशी हैं, आप सर्व बहुत खुशी रहना और यहाँ लायक काम हो सो लिखना। स्वामी जी श्री गोपालदास जी सेती रुकमानंद की पावाधोक बंचना धनेमान सेती। चिठी आपकी आई बाँचकर बहुत खुसी होई। काम सब बहोत आछी तरै आपकै जचै उस तरै करा लेयो कोई रकम की कमी राखियो मतना। चिठी बराबर देता रहियो।
(नगर-श्री, पत्र सं० ११७)

सेठ सूरजमल जी जालान के पत्र

यह पत्र स्व० बाबू सूरजमल जी जालान रतनगढ़ वालों ने स्वामी जी के नाम गसिर बदी ५, सं० १६८८ को देवघर (श्री बैजनाथधाम) से लिखा है—

सिद्धी श्री चुरू शुभस्थाने श्री पत्री स्वामी गोपालदास जी जोग लिखी देवघर (श्री बैजनाथधाम) से सूरजमल नागरमल केन श्री जै सीताराम जी को बंचना। अठे उठे श्रीजी सहाय छै उपरंच चिट्ठी आपकी आई छी, बदलै की परसुं दिन दीनी छी जिकी पूगी होवैगी।

आपके मोटर पूंच गई होवैगी, बिठाय दीनी होवैगी। पाणी चोखी तरै निकलण लाग गयो होवैगो। किस तरह से पाणी निकलै छै मांडियो। हमारै चिठी रतनगढ़ आई छै, मोटर पूंच गई मांडो छै बाकी कराची सेती जिनसाँ मंगाई छै जिकी आयाँ सें बठावांगा सोई जानियो।

और कन्या पाठशाला की अध्यापिका ताई आप मांडी सोई चिट्ठी-पतरी फेलँ आई होवैगी, निगै पूरी-पूरी राखियो।

कन्या पाठशाला की जगांह के ताई चि: नागरमल सेती सला होई छी जणा उसको ध्यान तो इसो रैयो के . . . बरस दो पहली मानधातासिंघ जी रतनगढ़ के बजार के बीच में मढ़ी छै जिकी तोड़कर उस मांय घंटाघर वणाणै के ताई कही छो। उस जगा मांय राज सेती जमीन लेय कर नीचै वाचनालय, दूसरै तलै मांय पुस्तकालय तथा तीसरै तलै मांय घंटाघर होय जावै तो अबार पुस्तकालय उसके मांय छै जिको कन्या पाठशाला के ताई मोकलो होय जाव। इस काम मांय रिपिया तो २५-३० हजार लागैगा, बाकी काम दोनूं को बहोत . . . होय ज्यावैगो। सोई इस बिषै मांय आप के काई जचै छै जिकी मांडियो तथा इया बात पराइवेट राखियो। इबार कोई के आगै बात चालै नहीं, आप सेती सला मांगी छै, सोई आपके काई जचै छै जिकी मांडियो।

और स्टेशन ऊपर मुसाफरां के ताई मुसाफरखानै की बात आप सैं टैंणा के छपरै की होई छी जिकै ताई आपके जचै तो इबकाणै बीकानेर जावो जणा रेलवाई वालां सेती बातचीत करियो तथा चिट्ठी-पतरी देणै की जचै तो आपकी सभा के नाम सेती देयो। कारण इब तो आप लोगां को हक भी रतनगढ़ के

बारै मांय चिठी-पतरी को पूरी तरै सें होय गयो छै। कारण चूरू की निजामत सुजानगढ़ होणै से रतनगढ़ की बाबत चिठी-पतरी करणै को हक होय गयो छै, सो जचै तो चिठी-पतरी चलायो। नहीं जनां स कोई मोकै बीकानेर जावो जणा रेलवाई के अधिकारियां से बात कर कर ठीक करियो मिती मंगसर वदी ५–१९८८ अठै को मोसिम इस बखत भोत आछो है सो जानियो।

पानी दूजो चूरू न छै

और माली एक राखणै की मनसा छै, कारण गाछ लाणा छै जिकां मांय भी हुंसियार आदमी एक दरकार छै तथा कूवै के ऊपर भी थोड़ा-भोत गाछ लगाणै को विचार छै सोई कोई गाछां को काम जाणनै वालो माली निगैमांय आय ज्यावै तो निगै राखियो। कारण माली एक रैय बो करै तो सगला दरखत बगैरै की संभाल होय बो करै सोई आपकै कोई अठै निगैमांय होवै तो ठीक छै नहीं जणा बीकानेर कानी जाणो होवै जणा बीकानेर मांय निगै कर कर माली एक जरूर ठीक करियो।

और पारक के काम मांय इब काई काम होय रह्यो छै जिको मांडियो। बाबू राधाकिसन जी चूरू छै के कलकत्ते मांय, वेरो मांडियो। हमारो ध्यान भी बार एक रतनगढ़ आणै को छै बाकी अंजल होवैगो जणा होवैगो। भाई किसनदयाल जी नै हमारा जै सीताराम जी की बंचा देयो। चिठी उनां की रतनगढ़ आई छी, डीडवाणै जाणै की मांडी छी।

इब रतनगढ़ कद ताईं जावोगा, मांडियो। चिठी सारै समाचारां की पाछी देयो। मंगसिर वदी ५–१९८८।

और समाचार एक बंचनो ... कूवा नगदो के ताईं आपनै कह्योड़ो छै जिका मांय कूवो एक आप कराय दियो छै। कूवो एक और कराणो छै सोई कूवो निगै राख कर मोको देखो जठै जरूर करा देयो, हुंडी कर लेयो।

(नगर-श्री, पत्र सं० २०७)

स्व० सेठ सूरजमल जी जालान रतनगढ़ के कोट्याधीश सेठ थे। स्वामी जी के प्रति उनका आकर्षण सन् १८ की महामारी के बाद ही हुआ था। स्वामी जी की बेजोड़ सेवाओं से वे बहुत प्रभावित हुए थे। इसके बाद जब वे रतनगढ़ आये तो उन्होंने बहुत आग्रहपूर्वक स्वामी जी को रतनगढ़ बुलाया। इसके बाद स्वामी जी का और सेठ जी का प्रेम दिन-दिन प्रगाढ़ ही होता गया। जैसा कि उपरोक्त पत्र से स्पष्ट है सेठ जी सार्वजनिक हित के हर कार्य में स्वामी जी से परामर्श

श्री खूबराम जी के पत्र
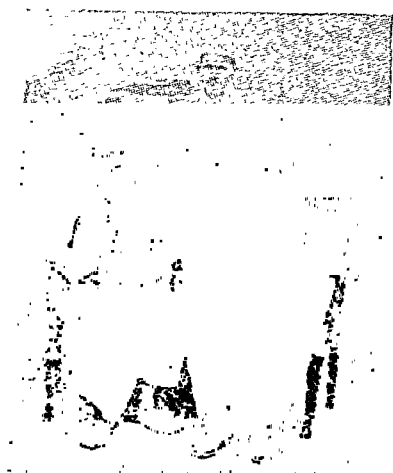
स्व० श्री खूबराम जी सराफ (दाईं ओर)

यह पत्र भादरा के देशभक्त और कर्मठ समाज-सेवी श्री खूबराम जी सराफ का स्वामी जी के नाम कार्तिक सुदी १२ (१३ नवम्बर सन् २१) का लिखा हुआ है। तत्कालीन नाजिम ने तब शायद चूरू की सर्व हितकारिणी सभा की गतिविधियों से रुष्ट होकर सभा को रौंदने की चेष्टा की थी और इसके विरोधस्वरूप स्वामी जी ने पत्रों में नाजिम महोदय की हरकतों के समाचार छपवाये थे। 'भारत मित्र' में इन्हीं समाचारों को पढ़कर खूबराम जी ने निम्न पत्र स्वामी जी को लिखा था—

ओ३म्

श्रीमान् परम पूज्य स्वामी गोपालदास जी,

नमस्ते।

मैं आपकी चिट्ठी 'भारतमित्र' में पढ़कर आपकी सेवा में मेरे विचार लिखने पर मजबूर हुआ हूँ क्योंकि नाजम साहब, भादरा की सेवा-समिति को, जिसके अधीन अकाल-पीड़ितों की सहायता का काम तथा कन्या पाठशाला वो देहात में ८ स्कूल थे, अपने स्वार्थवश होकर हरवक्त कुचलने की चेष्टा करते रहे हैं। पूरा विवरण लिखने पर एक कई सफे की पुस्तक बन जावे।

नाजिम साहब का ऐसी संस्थाओं पर ऐसा ही भाव है । इसलिए जो-जो आपत्ति आवे ईश्वर हमको सहनशक्ति प्रदान करें—सत्यमेव जयते नानृतम्—इति शुभम्

खूबराम सर्राफ भादरा
कातिक सुदी १३

(नगर-श्री, पत्र सं० १८४)

स्व० देशभक्त खूबराम जी भादरा के सच्चे और निर्भीक जनसेवक थे । स्वामी जी का ये बहुत सम्मान करते थे और उनसे परामर्श लेने बहुधा चूरू आते थे और विशेष अवसरों पर स्वामी जी को भादरा भी बुलाते थे । स्वामी जी भी इन्हें हर प्रकार का सहयोग देते थे । बीकानेर षड्यंत्र केस के सिलसिले में खूबरामजी व इनके भतीजे श्री सत्यनारायण जी कारावास में स्वामी जी के सह-बन्दी रहे । राजपूताना स्टेट्स् पिपुल्स कान्फ्रेन्स की प्रथम बैठक जो २३-२४ नवम्बर सन् १९२८ को अजमेर में हुई थी उसमें पश्चिमी राजपूताना से जो ७ सदस्य चुने गये थे उनमें भादरा के श्री खूबराम जी व गंगाराम जी खेमका थे ।

इसे एक ऐतिहासिक संयोग ही कहना चाहिए कि बीकानेर राज्य में चूरू और भादरा आजादी के संघर्ष में सदियों से साथ रहते आये हैं । बीकानेर महा-राजा जोरावरसिंह जी (वि० सं० १७९२-१८०३) के समय में भी चूरू ठाकुर संग्रामसिंह जी और भादरा ठा० लालसिंह जी ने एक साथ मिलकर अपनी आजादी के लिए राज्य के खिलाफ बहुत बड़ा सशस्त्र संघर्ष किया था जिसके फलस्वरूप चूरू के ठा० संग्रामसिंह और उनके भाई भोपतसिंह को महाराजा ने धोखे से मरवा डाला और भादरा ठाकुर लालसिंह को जयपुर महाराजा की मदद से जयपुर बुलवाकर नाहरगढ़ में कैद कर दिया ।

इसके बाद महाराजा सूरतसिंह जी (वि० सं० १८४४-१८८५) के समय में भी चूरू और भादरा के ठाकुरों ने महाराजा की गलत नीतियों और अत्यधिक कर-वृद्धि के खिलाफ वर्षों तक संघर्ष किया जिसके परिणामस्वरूप दोनों ही ठिकाने खालसा हो गये । लेकिन चूरू ठाकुर स्योजीसिंह ने इस संघर्ष में तोपों के गोलों के लिए लोहा और सीसा के समाप्त हो जाने पर चाँदी के गोले चला-कर विश्व के इतिहास में एक अभूतपूर्व मिसाल कायम कर दी । उन्होंने यह दिखा दिया कि सोने और चाँदी का मूल्य आजादी के सामने कुछ भी नहीं है ।

आजादी के लिए किये गये गत संघर्ष में भी चूरू और भादरा का आपस में पूर्ण सहयोग रहा । दोनों स्थानों के कार्यकर्त्ताओं ने आपसी सहयोग से कार्य

किया, साथ-साथ जेल गये और चूरू के स्वामी गोपालदास जी व चन्दनमल जी बहड़ आदि और भादरा के श्री खूबराम जी व श्री सत्यनारायण जी सराफ बीकानेर जेल में वर्षों तक सहबंदी के रूप में रहे ।

महाराजा गंगासिंह जी चूरू और भादरा के विगत इतिहास को खूब याद रखते थे और इनकी ओर से सदैव सशंकित रहते थे । चूरू और भादरा पर सदैव ही उनकी वक्र दृष्टि रहती थी और यही कारण था कि बीकानेर राज्य में राजधानी बीकानेर के बाद सबसे बड़ा नगर होने पर भी चूरू का रुतबा एक तहसील से अधिक नहीं बढ़ाया गया और न राज्य की ओर से यहाँ किसी सार्वजनिक संस्था का निर्माण कराया गया ।

यह पत्र श्री खूबराम जी ने भादरा से दिनांक १८ नवम्बर सन् २१ को लिखा है । खूबराम जी के पूर्व पत्र का जो उत्तर स्वामी जी ने दिया था उसी के बदले में यह पत्र लिखा गया है—

श्रीमान् परमपूज्य स्वामी जी,
नमस्ते ।

कृपा पत्र मिला । उत्तर में निवेदन है कि जो कुछ नाजिम साहब ने यहाँ पर अपना प्रभाव दिखाया उसकी मुफसल रपोट श्री महाराजकुँवर की सेवा में हमने दी, जिसका जवाब नाजिम साहब से माँगा गया । यहाँ आकर अपना रोब दिखाया और कहा कि हमने चूरू की समिति का जो हाल किया है वैसा ही तुमारा होगा । यही इबारत हमने महाराजकुमार साहब की सेवा में लिख दी थी, लेकिन वो मिसल कहाँ है, पता नहीं । पापी से न डरना ही मनुष्यता है । योग्य सेवा—

दास
खूबराम सर्राफ
भादरा

(नगर-श्री, पत्र सं० १२४)

खूबराम जी के निर्भीक विचार निश्चय ही प्रेरणास्पद हैं । यहाँ यह स्मरणीय है कि उन दिनों आज की तरह बोलने और लिखने की आजादी नहीं थी । एक नाजिम के खिलाफ इस तरह की बातें कहना एक बहुत बड़ा खतरा मोल लेना होता था ।

उन दिनों बीकानेर के महाराजकुमार शार्दूलसिंह जी राज्य के मुख्य मंत्री और कौंसिल के सभापति थे। अतः खूबराम जी ने नाजिम की शिकायत उन्हीं के पास की थी। महाराजा गंगासिंह जी ने अपने गिरते हुए स्वास्थ्य में सुधार की कामना से शासन-कार्य के भार को हल्का करने के लिए वि० सं० १९७७ भाद्रपद वदी १२ को महाराजकुमार को उपरोक्त पद दिये थे।[1]

यह पत्र श्री खूबराम जी ने भादरा से वैशाख कृ० ४ को स्वामी जी के नाम लिखा है—

ओ३म्

भादरा
वैशाख कृ० ४

परम पूज्य स्वामी जी,
नमस्ते।

मैं आनन्द में हूँ। मई के शुरू हफ्ते में कलकत्ते जाने का विचार है। साहब वहादुर रेवन्यु मेम्बर साहिब ने अपनी उदारता से बोर्डिंग हाउस को १७) महीना देने का वादा किया है और सहानुभूति भी प्रगट की है। धर्मशाला में मकान वनने लग रहे हैं उम्मेद है दो माह में तैयार हो जावेंगे, यह सब आपकी कृपा से हो रहा है।

मेरे परम पूज्य महंत जी को नमस्ते। आपका सच्चा प्रेम और सादगी का वर्ताव हर वक्त चित्त को प्रफुल्लित करता रहता है। ईश्वर से प्रार्थना है के देश-कार्य में उनको उन्नति प्रदान करे। साहब वहादुर शिक्षा-प्रचार में जो उदारता से हिस्सा लेते हैं हमारे देशी अफसर उन्हीं हमारे भावों का हौव्वा समझते हैं। इससे चित्त को दुःख है, ईश्वर उनको सुमति दे।

अछूत पाठशाला के लिए श्रीमान् भाई जुगलकिशोर जी से प्रार्थना की थी अगर मौका हो तो स्थाई सहायता १०)-१५) महीना देवावें, बाकी आनंद है।

सेवक
खूबराम

(नगर-श्री, पत्र सं० १२६)

यह पत्र श्री खूबराम जी सराफ ने स्वामी जी के नाम जेठ कृष्ण १५ सं० १९८० को भादरा से लिखा है ।

ओ३म्

भादरा

श्रीमान् श्रीस्वामी जी, नमस्ते ।

कृपापत्र मिला, आनन्द हुआ। मैं हसार से आया, एक पारसल दस क्राशियों का भेजा है । अछूत पाठशाला सभा हुई । प्रधान श्रीमान् तहसीलदार जी हुये । अछूतों पर असर अच्छा पड़ा जिससे ४१ लड़के हाजिर हैं, उमेद है ५०-६० हो जावेंगे । ग्राम पुरुष अपने भाव प्रगट करते रहते हैं ।

२००) श्रीमान् सेठ जुगलकिशोर जी बम्बई, से भेजा है । धन्यवादपूर्वक रसीद भेज दी है । एक चिट्ठी श्रीमान् पं० श्रीराम जी को भेजी है। आपने जो अछूत पाठशालार्थ सहायता की है मैं दिल से आपको धन्यवाद देता हूँ। मैं वर्षा होने के बाद आऊँगा । पं० भिक्षालाल जी दो अध्यापक भेजे डाबड़ी, सेरड़े लगा दिये । आप भी बम्बई चिट्ठी देवें, अगर छात्रवृत्तिएं कुछ हो जावे तो अति उत्तम है । जेठ कृ० १५ सं० १९८०

सेवक

खूबराम

(नगर-श्री, पत्र सं० १८६)

यह पत्र श्री खूबराम जी ने स्वामी जी के नाम असाढ़ सुदि १–(१७ जुलाई सन् २३) को लिखा है—

ओ३म्

पं० भिक्षालाल जी कुशल-क्षेम से पहुँच गये होंगे । नोहर से जो अपमान हुआ, जब से चित को संतोष नहीं है । मैंने कलकत्ते वालों को लिखा है । अगर एक-दो आदमी वहाँ से आ गये तो डिपुटेशन लेकर बीकानेर जावें या यहाँ से दो आदमी आप तजवीज कर दें । दो आदमी भादरा चले जावेंगे या नोहर जाकर धर्म का प्रचार करेंगे । या तो वोह गिरफ्तार कर लेंगे या आयंदे के लिये रस्ता साफ हो जावेगा । पं० भिक्षालाल जी से कह देवें के तैयार रहें । जब तक घमंडियों का घमंड नाश न होगा, चित्त को संतोष नहीं होता । मेरे योग्य कार्य हो लिखें । साढ़ सुदी १

सेवक

खूबराम

यह पत्र श्रीखूबराम जी सराफ ने भादरा से स्वामी जी के नाम जेष्ठ कृ० ३ को लिखा है—

ओ३म्

'सेवा समिति' भादरा

श्रीमान् परम पूज्य स्वामी जी, नमस्ते ।

पत्र मिला, उत्सव आनन्द-मंगल से हुआ । प्रभाव जनता पर बहुत अच्छा हुआ । यहाँ तक कि अछूतों से जो घृणा दृष्टि करते थे, अब नहीं करते, अपनी उन्नति का कारण समझने लगे । सबसे ज्यादा यही विरोध था ।

अब रहा मूले जाटों का, मैं गया, लेकिन छानीबड़ाक वाले जमींदारों का यही कहना है (के) हाँसी तहसील में सभा होने वाली है, उसमें जो फैसला होगा, हम तैयार हैं । तहसील भादरा के जमींदारों में से कई जाट भाई मूलों को लड़की देने को तैयार हैं ।

आपके दर्शनों की पूर्ण अभिलाषा थी । हम ही अभागे हैं जो आपके उपदेश से वंचित रहे । जो कार्य हुआ है वह आपके तपोबल का ही फल है । आप की ही आत्मा यहाँ कार्य कर रही थी । आप हमारे परम पूज्य गुरु हैं । आपके क्षमा के शब्द से अपने आपको अभाग्यवान ही समझते हैं, क्षमा के प्रार्थी हम ही हो सकते हैं । होम मेम्बर साहब का (रहस्य) सेवक को भी लिखें । वह क्या सोच रहे हैं ? विचार वैसे ही हैं या बदल गये । इति शुभम्

उपरोक्त पत्र में भी शुद्धि सम्बन्धी समाचार हैं । साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि खूबराम जी के दिल में स्वामी जी के प्रति कितनी आस्था और श्रद्धा थी ।

यह पत्र देशभक्त खूबराम जी सराफ ने भादरा से दिनांक २७-७-२६ को स्वामी जी के नाम लिखा है—

ओ३म्

भादरा (बीकानेर)
ता० २७-७-२६

श्रीमान् परम पूज्य स्वामी गोपालदास जी, नमस्ते।

पत्र आपका मिला था, जवाब भी दिया। यह सुनकर आपको खुशी होगी कि अगले सितम्बर मास में अहमदाबाद से श्रीमान् हरिभाऊ जी व श्रीमान् देशभक्त भाई जमनालाल जी का दौरा बीकानेर रियासत में होगा जिसका उद्देश्य खादी प्रचार के लिए कोष एकत्र करना आदि होंगे।

आप चूरू की तरफ से हर तरह से स्वागत करेंगे लेकिन खास बीकानेर में बड़ी धूमधाम के साथ स्वागत करने की अभी से तैयारी करनी चाहिये। आप अपने इष्टमित्रों से लिखा पढ़ी करिये, मैं भी बीकानेर को पत्र लिख रहा हूँ। मैं १-२ अगस्त को अहमदाबाद जा रहा हूँ।

सेवक
खूबराम

(नगर-श्री, पत्र सं० १६३)

उपरोक्त दौरे की गतिविधियों के सम्बन्ध में तो कुछ विशेष ज्ञात नहीं हो सका लेकिन स्वामी जी के साथी वैद्य शान्त शर्मा जी का कथन है कि सन् १६३१ में मारवाड़ राज्य सम्मेलन का आयोजन अजमेर के सुप्रसिद्ध नेता कुँवर चाँदकरन जी शारदा की अध्यक्षता में किया गया था और तभी माता कस्तूर बा गाँधी की अध्यक्षता में अजमेर-मेरवाड़ा राजनीतिक सम्मेलन (पुष्कर मेले के अवसर पर) किया गया था, उस सिलसिले में श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय चूरू आये थे और पुष्कर सम्मेलन के लिए उन्हें यहाँ से करीब ७००)-८००) रुपये चन्दा करके भेंट किया गया था।

विविध विषयक पत्र

यह पत्र मंत्री मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी ने कलकत्ता से मंत्री सर्वहित-कारिणी सभा के नाम दिनांक ६-१-१८ को लिखा है--

आपके पत्र मिले। प्रयाग कुंभ मेले पर सोसाइटी की ओर से कुछ कार्य इस वर्ष नहीं होगा, मंत्री सेवासमिति प्रयाग से पत्रव्यवहार करें। हम लोगों के ५०) पचास रुपये के विषय में जो आपने लिखा सो अभी हम लोगों को मिला नहीं है किन्तु उसे यहाँ न भेज किसी सहायता कार्य्य में लगा दीजिये।

भवदीय
मंत्री
मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी से सार्वजनिक सेवा के लिए जब-तब कुछ सहायता मिलती रहती थी। स्वामी जी के उद्योग से रेणी की सावित्री कन्या पाठशाला को भी सोसाइटी से मदद मिलती रही। पाठशाला का प्रवन्ध उचित ढंग से करने के लिए स्वामी जी रेणी भी गये और कई वर्षों तक इसका संचालन सर्व-हितकारिणी सभा के द्वारा होता रहा।

स्वामी जी का यह स्वभाव था कि जिस कार्य के लिए दाता धन देता वे उसका उपयोग उसी कार्य में करते थे। यदि उस कार्य के लिए आवश्यकता न होती तो दाता की अनुमति से उस धन का व्यय दूसरे कार्य में करते थे। आश्विन वि० सं० १९७७ में चूरू से दो कोस दूर कड़वासर गाँव में आग लग गई। उन दिनों गाँवों में ठाकुर की कोटड़ी के अलावा बिरले ही पक्के घर होते थे अतः उस अग्निकांड में वहुतेरे घर जल गये। इसके लिए सर्वप्रथम चूरू के श्री भजनलाल जी लोहिया का तार स्वामी जी के पास आया कि १०० झोंपड़े और एक मास के अन्न का प्रवन्ध करो। रा० व० हजारीमल जी दूधवेवाला और चूरू के श्री भीखराज जी लखोटिया की तरफ से भी सहायता आई। किन्तु दूधवा के रा० व० सेठ वलदेवदास जी ने वैद्य शान्त शर्मा जी के आग्रह पर दो हजार रुपये भेजे, जिनमें से ११००) रुपये खर्च हुए और ९००) वच गये जो उनकी अनुमति प्राप्त होने पर ही सर्वहितकारिणी सभा के भवन-निर्माण में व्यय किये गये। इसी प्रसंग में यह भी स्मरणीय है कि—

स्वामी जी के मंदिर के पीछे वाली दीवार गिर गई थी तो उनके हितचिन्तकों ने स्वामी जी से कहा कि आप इतना रुपया जलाशयों आदि के निर्माण में लगवा रहे हैं, यह छोटी-सी दीवार भी बनवा लीजिए। लेकिन स्वामी जी ने उत्तर दिया कि दाताओं ने मेरे मन्दिर की दीवार बनाने के लिए रुपये नहीं दिये हैं और दीवार की जगह काँटों की बाड़ ही बनी रही।

यह पत्र चूरू के सुप्रसिद्ध समाज-सेवी और स्वामी जी के सहयोगी श्री शिवप्रसाद जी का आषाढ़ शुक्ला ८ सं० १९७५ का लिखा हुआ है—

ओ३म्

श्री स्वामी गोपालदास जी, महाशय नमस्ते।

पत्र आपका मिला। सालती की कुंड बाबत समाचार मैं आपको पहले ही लिख चुका था। इब कुंड के बारे में आपको रुपिया चाये जिसकी हुंडी राय बहादुर तुर्यमल जी शिवप्रसाद के ऊपर परबारी कर लेना तथा इस विषय में या मदास की कुंड के विषय में भी शिवप्रसाद जी से पत्रभिवार परबारा करणा। मेरी उनसे बात हो गई है। शिवप्रसाद जी बड़े लायक और बुद्धिवान तथा दातार हैं और आपको अच्छी तरह जानते हैं। कन्या पाठशाला की पढ़ाई का नकसा भेजा सो निगै करा। धार्मिक विषय में यदि आर्य उपदेश रतन-माला पढ़ाई जावे तो यह पुस्तक अति उत्तम है। मेरा विचार एक दफै चूरू आने का है किन्तु वर्षा होने के बाद आना होवेगा। चांदकरण जी कलकत्ता आये थे। पत्र के लिए सहायता के लिए कहते थे किन्तु सहायता मिलने का प्रसंग नहीं है। कारण और तो कोई सहायता देवै नहीं और हमारी पार्टी वालों ने कलकत्ते में एक पत्र निकालने का विचार कर रखा है जिसके लिये दरखास्त दे रखी है। अभी हुकम नहीं मिला है। मिती आषाढ़ शुक्ला ८ सं० १९७५।

शिवप्रसाद सराफ

(नगर-श्री, पत्र सं० २०१)

इस पत्र के लेखक शिवप्रसाद जी सराफ सामाजिक कार्यों में बहुत दिलचस्पी लेते थे। समाज-सेवा के कार्यों में रुपये भी लगाते थे। पत्र में सालती और मदास गाँवों में कुंड बनाने का समाचार है। आजकल तो गाँवों में कम-से-कम एक तिहाई घर पक्के बन गये हैं, लेकिन उन दिनों एक गाँव में मुश्किल से १-२ घर पक्का होता था। सालती एक गाँव का नाम है जो केवल इसीलिए प्रसिद्ध

हो गया था कि उस जगह एक पक्की "साल" (कमरा) बन गई थी। सर्व-हितकारिणी पुत्री पाठशाला का पाठ्यक्रम सभा के सदस्य ही करते थे। यद्यपि तब पाँचवीं कक्षा तक ही पढ़ाई होती थी लेकिन पाँचवीं कक्षा का पाठ्यक्रम भी आज के हिसाब से काफी ऊँचा था। पाँचवीं कक्षा का पाठ्यक्रम था बाल भारत सम्पूर्ण, भारत-भारती, भाषा-भास्कर सम्पूर्ण, वहीखाता लिखने की विधि, भारतवर्ष का इतिहास, भारतवर्ष का भूगोल, नक्शा बनाना, उत्तम निबन्ध-लेखन, बेलबूटे आदि बनाना। आपने "सत्य सनातन" नाम का पत्र निकाला था, जिसके सम्पादक श्री राधामोहन गोकुलजी थे।

यह पत्र रतनगढ़ से मंत्री सर्वहितकारिणी सभा चूरू के नाम श्री नन्दलाल जी भूंवालका ने दिनांक ६-११-२१ को लिखा है—

॥ श्री ॥

श्रीमान् मन्त्री सर्वहितकारिणी सभा
चूरू।

आपसे निवेदन है कि मैं यहाँ रतनगढ़ में एक वारदात सुनी है जिसका आपके चूरू से सम्वन्ध है। बाबू .... चूरू के जिनकी सगाई यहाँ रतनगढ़ में हुई है उनकी अवस्था करीब ४५ वर्ष की सुनी गई है सो आप इस बात की जरूर निश्चय करके यदि बात बिलकुल सत्य निकले तो आप चूरू में इसका जरूर आन्दोलन उठावें क्योंकि एक निरपराध निर्बोध बालिका सदा के लिये दुखित की जाती है, सो आप लोग इसका पूरा प्रवन्ध करके हम लोगों को खबर दें क्योंकि आपकी खबर पूरी तरह से मिलने से यहाँ भी इसका आन्दोलन किया जावेगा। और पंडित शान्त शर्म्मा जी को भी हमारा दंडवत प्रणाम कह दें। पत्रोत्तर जल्दी करें।

समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए स्वामी जी निरंतर उद्योग करते रहते थे। उपरोक्त ढंग के और भी पत्र स्वामी जी के नाम आये हुए मिले हैं और स्वामी जी ने उन विवाहों को रोकने के लिए प्रयत्न किया है। बाल-विवाह

की प्रथा को निरुत्साहित करने के लिए उन्होंने अनेक लोगों से प्रतिज्ञाएँ करवाई थीं। इसके लिए एक अभियान चलाया गया था और बहुत लोगों से बाल-विवाह न करने की प्रतिज्ञा के फार्म भरवाये गये थे।

यह पत्र बाबू मुक्ताप्रसाद जी वकील ने बीकानेर से स्वामी जी के नाम लिखा है, इस पोस्टकार्ड पर बीकानेर डाकखाने की मुहर ३ दिसम्बर सन् २१ की और चूरू डाकखाने की मुहर ५ दिसम्बर सन् २१ की लगी है।

॥ ओं ॥

बीकानेर
मंगसिर शुक्ला ३

माननीय स्वामी जी महोदय—

यह सत्य है कि आप स्वामी हैं और मैं कुछ-न-कुछ दासता की शृंखलाओं के बंधन में हूँ, तथापि मुझे विश्वास है कि मुझे अब अपने आपको परिचित कराने की आवश्यकता नहीं। आप मुझे सर्वथा न भूले होंगे और इसलिये आशा है कि पत्रोत्तर से शीघ्र ही कृतज्ञ किया जाऊँगा। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर की अभिलाषा है—

१. विदित हुआ है कि आपके प्रबन्ध से वहाँ आपने चरखे बनवाए हैं, यदि यह सत्य है तो वह कैसे हैं और किस कीमत के, और क्या यहाँ भेजे जा सकते हैं, मुझे अपने गृह के लिये आवश्यकता है—

२. क्या करघों का भी कोई ऐसा प्रबन्ध है, यदि है तो वह किस प्रकार के हैं आदि, पूरी ब्योरेवार आवश्यकता है।

मैं बहुत दिनों से चरखों के लिये विचार कर रहा हूँ और यहाँ खातियों की खुशामद भी बहुत की, बाहर भी चेष्टा की किन्तु अब पता चला कि आपके आधीन ऐसा प्रबन्ध है। अभी तो दो चरखों से विशेष की आवश्यकता नहीं क्योंकि सीखने के लिये काफी हैं—

उत्तराभिलाषी
भवदीय
मुक्ताप्रसाद सक्सेना वकील
बीकानेर

(नगर-श्री, पत्र सं० ३८४)

यों तो प्राचीन काल से ही चर्खा भारतीय जीवन का अंग रहा था और घर-घर में चर्खे चलते रहे थे लेकिन अंग्रेजों के भारतीय कुटीर और गृह-उद्योगों को नष्ट करने की नीति के कारण इस परंपरा का ह्रास हो चुका था। जब महात्मा जी ने चर्खे को स्वराज्य का एक आवश्यक अंग बतलाकर इसे नया जीवन और नया रूप दिया तथा राष्ट्रीय झंडे में भी इसे जोड़ दिया गया तो चर्खा क्रान्ति का प्रतीक बन गया और देशी राज्यों में चर्खे को एक खतरा समझा जाने लगा। जो लोग चर्खा चलाते, खद्दर पहनते और स्वदेशी का प्रचार करते उनके प्रति देशी सरकारें बहुत सशंकर हती थीं।

बाबू मुक्ताप्रसाद जी राष्ट्रीय विचारों के व्यक्ति थे और खद्दर पहनते थे। बीकानेर नगर में सार्वजनिक जीवन का श्रीगणेश करने का श्रेय इन्हीं को दिया जाता है। स्वामी जी के प्रति इनकी बड़ी श्रद्धा थी। बीकानेर षड्यंत्र केस में भी इन्होंने अभियुक्तों की ओर से पैरवी की थी। उपरोक्त पत्र से यह ज्ञात होता है कि तब बीकानेर नगर में चर्खा उपलब्ध नहीं था किन्तु स्वामी जी ने चूरू में चर्खे का प्रचार इससे काफी समय पूर्व कर दिया था। पुत्री पाठशाला में भी बालिकाओं को चर्खा चलाना सिखलाया जाता था। और चर्खे के गीत गवाये जाते थे।

यह पत्र स्वामी जी के अभिन्न सहयोगी और चूरू के कर्मठ समाज-सेवी श्री शिवप्रसाद जी सराफ द्वारा १६-३-२३ को कलकत्ता से स्वामी जी के नाम लिखा गया है। पत्र में सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला के लिए मकान लेने तथा देहातों में कुएँ और कुंडों की मरम्मत के समाचारों के अतिरिक्त शुद्धि-सम्बन्धी समाचार भी हैं—

ओ३म्

मान्यवर स्वामी जी नमस्ते।

पत्र, कार्ड तथा विज्ञापन मिले। गंगाराम जी के मन्दिर के विषय में जो समाचार लिखा सो निगाह करा। पाठशाला के लिए यह मकान अति उत्तम है पर आरै वालों से तो हमको कोई उमेदी नहीं। आप लिखा भरसक एक सहस्र में ही काम बनाया जावेगा सो १०००) रुपया लगकर रजिस्ट्री सर्वहितकारिणी की कन्या पाठशाला के नाम होने सके तो जिस वक्त चाये उसी समय हुंडी एक हजार की हमारै ऊपर कर लेना। और कूवों की मरम्मत का काम इब तो मंगनिर बाद में ही होवेगा। हमने कुंडों की बाबत लिखा था वो ग्राम दूधवे के पास किसी राजा का है, ग्राम का नाम हमारे याद नहीं, उस ग्राम के ठाकुर को राजा

की उपाधि है । उस ग्राम में भोत वड़े कुंड फूटे वतलाते थे तथा ग्राम का राजा भी भोत भला मानुप वतलाते थे सो आप निगह कर लेना ।

देश की शुद्धि में विलम्ब तो जरूर है किन्तु आस्ते-आस्ते देसवाले राजपूतों के भी ध्यान में आ जावेगी तथा शाहपुराधीश और गुपालसिंह जी मलकानों के साथ भोजन कर आये तव सारे राजपूताने के क्षत्रियों ने कर लिया । तथा राजपूत महासभा विरादरी में मिलाती है तव महासभा से न्यारे राजपूताने के क्षत्री कैसे रहेंगे ? तथा जैपुर, जोधपुर, बीकानेर के नरेश गोभक्षी अंग्रेजों के साथ खाते हैं और मुसलमान के हाथ का जल पीते हैं तव मलकानों का आचरण तो उनसे भोत अच्छा है । उपरोक्त आशय के लेख कलकत्ते के पत्रों में लिख्या जावैगा जिसको राजपूतों को सुनाने से वड़ी सहायता मिलेगी ।

आगरा से दो पत्र हिन्दी के निकलते हैं, एक 'राजपूत' दूसरा 'आर्य्यमित्र' जिसमें शुद्धि के समाचार बेरेबार रहते हैं सो दोनुं कागज आप मँगाते रहें । मोलवियों के वहकाने से शुद्धि का काम शिथिल हो गया था सो वृन्दावन कान्फ्रेन्स के बाद फिर तेजी से होने लग गया है । क्या मखानियों को यह कहा जावे कि तुम दस पाँच ग्राम शुद्ध हो जावोगे तब सम्बन्ध तो तुम्हारा आपस में होता रहेगा, नम-को राजपूतों से गरज ही क्या है और क्षत्रिय महासभा शुद्ध करती हैं तब । वाड़ के राजपूत उनसे अलग कैसे रह सकते हैं ।

आपका उत्तराभिल
शिवप्रसाद
१६-३-२३

(नगर-श्री, पत्र-संख्या ६)

यह पत्र भी श्री शिवप्रसाद जी सराफ के द्वारा स्वामी जी के नाम लिखा हुआ है । इसमें भी कबीर पाठशाला (अछूत पाठशाला—चूरू) के लिए २००) रु० की हुंडी सिकार देने के अतिरिक्त अधिकतर समाचार शुद्धि से सम्वन्धित ही हैं—

ओ३म्

श्रीयुत स्वामी गोपालदास जी, नमस्ते ।

कार्ड आपका मिला । कवीर पाठशाला की हुंडी २००) सिकार के भुगतान दे दिया है । सभा को तो अव राजस्थान में शुद्धि का प्रचार राजपूत तथा कायमखानियों में करना चाहिए । इस काम में काल तो विसेस लगेगा किन्तु शेष में सफलता की उमेद है कारण यह आन्दोलन मुख राजपूत सभा से उठा है और राजपूत सभा में राजपूताने के क्षत्रिय नरेश सब शामिल हैं । वर्तमान में

उक्त सभा के प्रधान शाहपुराधीश है तथा बीकानेर से हरीसिंह जी का टेलीग्राफ सहानुभूति का गया था सो हरीसिंह जी को कहना चाहिये कि सूखी महानुभूति न दिखा कर कुछ असली काम करके दिखलावें। इस काम में गोरक्षा, अहिंसा तथा हिन्दुओं का जातीय जीवन सब का समावेश है। इस काम में हिन्दू मात्र नै तन, मन, धन से उद्योग करना चाये। इस काम के लिये राजपूत सभा आगरा भी अपने भाइयों को प्रेरणा कर सकती है।
मिती वैसाख शुक्ला ६ पत्री पाछी देना।
(नगर-श्री, पत्र सं० ८५)

ददरेवा के चौहान राजा मोटेराय के बेटे कर्मचन्द का दिल्ली के बादशाह फिरोजशाह तुगलक के जमाने में हिसार के सूबेदार सैयद नासिर ने क्यामखां नाम रखा। उसी के वंशज क्यामखानी कहलाये। इसी के वंशजों ने राजस्थान में फतहपुर और झुंझनूं में अपनी हुकूमत कायम की जो लगभग पौने तीन सौ वर्षों तक कायम रही। बाद में शेखावटों का फतहपुर और झुंझनूं पर अधिकार हो गया जो रियासतों के एकीकरण तक कायम रहा। कुछ वर्षों पूर्व तक क्यामखानी बहुत-सी हिन्दू परंपराओं को मानते रहे हैं।

यह पत्र श्री शिवप्रसाद जी सराफ द्वारा अश्विन शुक्ल ४ सं० १९७९ को लिखा गया है—

ओ३म्

श्री स्वामी गोपालदास जी नमस्ते। पत्र आया, पढ़कर चित्त भोत प्रसन्न हुआ। हुंडी १०००) की तो आ गई है, २००) और आवैगी जब भुगताण दे देवेंगे। देश मांय जमाना अच्छा लिखा सो गोशाला में फूस का बन्दोबस्त जरूर कर लेना, अभी से लेणो करोगा जब ठीक रहेगा। और जयनारायण जी दसरावै बाद आवेंगे। जयनारायण जी से हमने कहा था कि देश मांय सार्वजनिक संस्थाओं को दान जरूर देना जैसे सूरजमल जी ने दिया था। चूरू की संस्था के विषय में हमने कह दिया है कि चूरू जाओगे जब स्वामी जी से सलाह कर लेना।

और जुगलकिशोर जी ने ४००) रुपिया कबीर पाठशाला के लिये दिया है सो ऐसा मनुष्य रखो जो ग्रामों में भी काम पड़े तब जाय कर व्याख्यान दे आवै। विषय यह रखना, अछूत-उद्धार, विद्या-प्रचार, स्त्री-शिक्षा, ब्रह्मचर्य और खद्दर-

प्रचार। खरच लगे जिसकी हुंडी हमारै ऊपर कर लेना। उपदेशक कोई अच्छा विद्वान ४०) महीनें आसरैं का बुलाना। पाठशाला का कार्य मंगसर पहले सरू नहीं होगा। खेती बाद सरू करणा, इतनै सारी तरह का जुगाड़ लगा लेना। हीरालाल नै पत्र बंचा दिया है सो कहते थे कि मैंने तो कन्या पाठशाला में अध्यापिका मास वारं रखने के लिये ३००) लिखमीचंद को दिये हैं।

'भारतमित्र' में जो लेख आता है सो मैं प्रायः ही देख लेता हूँ। 'स्वतंत्र' में एक लेख हमने दिया है, शीर्षक है "चूरू की गोचर-भूमि और म्युनिसिपैलिटी का कर्तव्य"। कुरुक्षेत्र का समाचार 'भारतमित्र' में भेजणा, जिसमें मेलै की सारी हकीकत अच्छी तरह से होवे। जैनारायण जी चूरू आवेंगे जब हवेली देखेंगे तथा मरमत कराने का भी विचार है। उस वक्त पुत्री पाठशाला के लिये बातचीत जरूर करणा।

स्टेशन की सड़क राज की तरफ सें बणती होगी, तथा किस रस्तै निकलैगी, कितना खर्च होवैंगा, लिखना। समाचार एक बंचना, सभा का ट्रस्टनामा हो जावे तो भविष्य के लिये अच्छा है। मिती आसोज शुक्ला ४—१६७६

आपका उत्तराभिलाषी,
शिवप्रसाद

(नगर-श्री, पत्र सं० १)

स्टेशन की सड़क म्युनिसिपैलिटी की तरफ से बनी थी, लेकिन इस सम्बन्ध में स्वामी जी ने सर्वहितकारिणी सभा की ओर से बड़ा प्रयत्न किया था। इस विषय के अनेक पत्र बीकानेर से राज्याधिकारियों के स्वामी जी के पास आये थे, जिनमें से कुछ नगर-श्री के संग्रहालय में मौजूद हैं। स्वामी जी के कुछ साथी भी म्युनिसिपैलिटी के सदस्य थे। और उन्होंने भी इस कार्य में बल लगाया था। सड़क के रास्ते दोनों ओर कुछ वृक्ष तो पहले बी० डी० हॉस्पिटल के डाक्टर श्री फजल्ल हुसैन के प्रोत्साहन देने पर चूरू के श्री विलासराय जी चोटिया ने लगाये थे। १६२२ से २६ तक सभा की ओर से १३४ वृक्ष लगाये गये और ६० वृक्ष पहले से लगे थे। सभा की ओर से अमरसिंह राजपूत और उसका एक भाई जो गूँगा था वृक्षों में पानी डालते थे। वृक्ष लगाने में कुछ रकम म्युनिसिपल बोर्ड ने भी व्यय की थी।

कल घनश्यामदास दरबार बीकानेर से मिले। दरबार बड़े प्रसन्न हुये हैं। बीकानेर इनको बुलाया है। एक उत्सव है, उस समय जायेंगे, अनेक विषय की बातें हुई हैं। दरबार के पास जो राजपूत रहते हैं, वह बड़े ठाठ से रहते हैं। मैं तो कोठी पर दो घंटा रहा, विचित्र राजसिक दृश्य देखता रहा। गोपालसिंह जी भी हैं, विशाल डील-डोल वाले हैं। घोड़े पर चढ़ते देखा, महाराजकुमार को भी देखा, पोलो में जा रहे थे, कल इन्होंने ही बाजी जीती। रुस्तम जी तथा कुंवर साहिब साथ हैं, एक डाक्टर है। रुस्तम जी बड़े उत्तम स्वभाव के हैं।

जहाँ घनश्याम जी अपनी अचकन-पतलून में गये थे, उधर जमुनालाल जी हम से पहली ही अपनी खादी की गठड़ियों को आदमियों के सिरों पर लेकर अपने खादी-मंडल के प्रधान महाशय.... तथा 'मालव-मयूर' के संपादक हरिभाऊ तथा अपने पुत्र के साथ बीकानेर कोठी पर जाकर महाराजा से बातचीत कर रहे थे। यह उनकी दूसरी मुलाकात थी। दरबार ने यही कहा कि हमको तुम्हारे सम्बन्ध में गलतफहमी हो गई थी, तुम बीकानेर आवो, लालगढ़ में ठहरो। रुस्तम जी भी इनसे बड़े प्रेम से कई बार मिले हैं। यह तो अपनी स्लीपर, धोती-कुरता, टोपी तथा वैणवी यष्टि (?) को ही अपनी फुलड्रेस समझते हैं। दरबार दो घंटे तक इनसे अनेक विषयों पर वार्तालाप करते रहे।

मालवीय जी भी सभी दरबारों से मिल रहे हैं। हि० यू० के लिये चन्दा एकत्र कर रहे हैं। रुस्तम जी ने कल चूरू का पुनः जिक्र किया, साथ ही यह भी कह रहे थे कि यदि हमको कोई हमारे अहलकारों की कोई बुराई बताये तो श्री दरबार उसका तुरंत तदारुक करने को उद्यत रहते हैं। हमें रिआया और अहलकार दोनों का ही जुल्म-अपराध पसंद नहीं। मालवीय जी तथा घनश्यामदास जी जमुनालाल जी के पास ही ठहरे हुये हैं। बड़ा आनन्द रहता है। मालवीय जी के पास अनेक व्यक्ति सभी रजवाड़ों के मिलने आते हैं।

आपके दोनों कार्ड यहां मिल गये हैं, कलकत्ता तथा शिमला होकर आये हैं। परसों तक यहां से जाने का विचार है। लोहिया यहीं फिरता है। थानेदार की

अपने पर क्रूरदृष्टि की शिकायत करता है। शान्त आ गया होगा, नमस्ते कहना। महंत जी तथा मालचंद को नमस्ते। कल पोलो का खेल फिर है। रुस्तम जी की स्पीच निकल गई, उत्तम रही है। मुझे तो वर्णाश्रम-सम्बन्धी तीन लेख और लिखना है। श्रीपूज्य का चतुर्मासा कहाँ होगा ?

भवदीय
श्रीराम

इससे पूर्व २४ अक्टूबर सन् २१ को सेठ जमनलाल जी बजाज कुँअर चाँदकरण जी शारदा और पं० गौरीशंकर जी भार्गव स्वदेशी और चर्खे का प्रचार करने के लिए राजस्थान का दौरा करते हुए चूरू आये थे। यद्यपि यहाँ स्वागत की बहुत तैयारियाँ की गई थीं लेकिन पुलिस की ज्यादती के कारण पब्लिक मीटिंग नहीं हो सकी। वे सब दिगम्बर जैन मन्दिर में ठहरे थे। मुरलीधर जी जो उनके रिश्तेदार थे उन्होंने जमनालाल जी को अपने घर पर भोजन के लिए निमंत्रित किया था लेकिन पुलिस उन्हें दलबल सहित भोजन करने के लिए जाने देना नहीं चाहती थी। उधर मुरलीधर जी पर भी दबाव डाला गया कि वे उन्हें घर पर न बुलायें, लेकिन उन्होंने कहा कि वे मेरे रिश्तेदार हैं, उन्हें भोजन न कराने से सदा के लिए एक बात खड़ी हो जाएगी। निदान सेठ जमनालाल जी अपने साथियों के साथ उनके घर भोजन करने गये। दिन भर हंगामा मचा रहा लेकिन पब्लिक मीटिंग नहीं हो सकी। इसके समाचार अखबारों में प्रमुखता से छपे। दैनिक 'स्वतंत्र' ने दिनांक २९-१०-२१ और ३०-१०-२१ के डाक संस्करणों में इन खबरों को प्रमुखता से प्रकाशित किया —[1]

शहर की सीमाओं पर ही कुछ लोग नेताओं के दल से मिले और कहा, अधिकारियों ने प्राइवेट तौर पर इस दल का स्वागत करने या सभाओं का आयोजन करने से हमें मना किया है... तदनन्तर पार्टी सेवा समिति के आफिस में पहुँची और वहाँ नेताओं को अभिनन्दन-पत्र दिया गया। सेठ जी के मामा ने सेठ जमनालाल बजाज को दलबल के साथ भोजन करने के लिए निमंत्रित किया था पर आई. जी. ने कहा तुम लोग भोजन करने न जाने पाओगे। पर आई. जी. ने लिखकर आज्ञा देने से इनकार किया। पार्टी ने मौखिक आज्ञा को कोई परवाह न की और वे भोजन करने के लिए रवाना हुए। भोजन के बाद

---

१. कटिंग्स ऑव वर्नाक्यूलर एन्ड इंगलिश न्यूज़पेपर्स १९२१-३०; सुराना पुस्तकालय चूरू।

कुछ काल तक विश्राम करने के अनन्तर वे भारतमाता का जयघोष करते हुए रेलवे स्टेशन की ओर पैदल ही रवाना हुए ।

यहाँ से उनकी पार्टी रतनगढ़ पहुँची लेकिन पुलिस ने वहाँ उन्हें गाड़ी से ही नहीं उतरने दिया । इन्हीं बातों की ओर संकेत करते हुए महाराजा गंगा सिंह जी ने उपरोक्त पत्र में कहा कि हमको तुम्हारे सम्बन्ध में गलतफहमी हो गई थी । तुम बीकानेर में आवो, लालगढ़ में ठहरो ।

इस पर जमनालाल जी दिनांक ११-१०-२५ को फिर चूरू आये थे और सभा तथा पुत्री पाठशाला का भी निरीक्षण उन्होंने किया था ।

यह पत्र श्री क्षेमानन्द जी राहत ने "राजस्थान हिन्दी सम्मेलन" अजमेर से दिनांक १०-७-२५ को स्वामी जी के नाम लिखा है ।

पत्रों द्वारा सभवत: आपको मालूम ही हो गया होगा कि राजपूताना और मध्यभारत के हिन्दी प्रेमियों को मिलाकर राजस्थान हिन्दी सम्मेलन की स्थापना का कुछ दिनों से उद्योग चल रहा है । गत मार्च के महीने में मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के समय फतेहपुर (जयपुर) में स्थाई समिति का संगठन करने के लिए हिन्दी प्रेमियों की एक सभा भी हुई थी । सम्मेलन की योजना को सफल बनाने के लिए मैंने निश्चय किया है कि राजस्थानी महानुभावों का ध्यान पत्र-व्यवहार अथवा साक्षात्कार द्वारा उस आवश्यक और परमोपयोगी प्रश्न की ओर आकर्षित किया जाये ...इन्दौर, खंडवा और आबू में दौरे पर भी गया था । आपके राज्य में भी इसी उद्देश्य से दौरा करने का मेरा विचार है । पर इससे पहिले वहाँ की परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आपको कष्ट देना चाहता हूँ । क्या आप कृपा करके यह बातें लिख भेजेंगे ... आपको कष्ट तो होगा पर आशा है आवश्यक और उपयोगी समझ शीघ्र ही पत्र द्वारा आप इन बातों पर प्रकाश डालेंगे और साथ ही यह भी लिखेंगे कि किस समय आपके राज्य में मेरा आना अधिक उपयोगी होगा ।

भवदीय
क्षेमानन्द राहत

(नगर-श्री, पत्र सं० २८५)

महासभा का सातवाँ अधिवेशन हो रहा था और उसी अवसर पर हिन्दी सम्मेलन पर भी विचार होना था। स्वामी जी को हिन्दी सम्मेलन और अग्रवाल महासभा दोनों ने ही सादर निमंत्रित किया था। इस अवसर पर स्वामी जी शायद अवश्य गये थे क्योंकि सभा के डाक डिस्पैच रजिस्टर से ज्ञात होता है कि स्वामी जी ने श्री बसन्तलाल जी मुरारका को ९-३-२५ को स्वीकृति का पत्र लिखा था और १७-३-२५ को खूबराम जी सराफ को पत्र लिखा था कि मेरा जाने का विचार है, आप भी अवश्य आवें।

क्षेमानन्द जी राहत को उन्होंने १५-७-२५ को पत्रोत्तर में लिखा कि आपके प्रश्नों का उत्तर दिया जा रहा है, जिस समय इच्छा हो इधर पधारें। फिर १४-८-२५ को दुबारा पत्र दिया कि सम्मेलन का कार्य ठीक करके यहाँ भी पधारें। इस पर ता० १९-८-२५ को क्षेमानन्द जी चूरू आये और सर्वहितकारिणी सभा में आवश्यक विचार-विमर्श हुआ।

स्वामी जी को हिन्दी से प्यार था, इसलिए उन्होंने राहत जी को चूरू बुलाया था। उनके आने का उद्देश्य विशुद्ध साहित्यिक था, लेकिन होम मिनिस्टर रुस्तम जी से महाराजा को पेश करने के लिए इसकी भी रिपोर्ट माँगी गई। उसी से ज्ञात होता है कि राहत जी उक्त तारीख को चूरू आये थे और सर्वहितकारिणी सभा को देखने गये थे।[1]

यह पत्र मंडावा से समाज-सेवी सेठ देवीबख्श जी सराफ ने स्वामी जी के नाम लिखा है—

श्रीमान् महाशय नमस्ते,

ठाकर साहब राजश्री इन्दरसिंह जी की आँखों में तकलीफ है सो डाक्टर साहब ने इनकी आँखें तो पैली जयपुर माँय देख चुके हैं, अब डाक्टर साहब से इलाज के बारे माँय बातचीत करने के लिए श्रीमान् लाला बालबक्स जी आते हैं सो इनकी बातचीत डाक्टर साहब सेती अच्छी तरह करा देना और मैं भी जरूर आता परन्तु समाज मन्दिर की तैयारी के काम के कारन नहीं आ सका सो कृपा करके आप तथा स्वामी नरसंगदेव जी सरस्वती अवश्य मंडावा

1. File 25/1925, H. H. Personal Cuttings; Archieves Raleasthan, Bikaner.

आवें। डाक्टर साहब आने के कारन सेती आपका आना न हो सके तो स्वामी नरसंगदेव जी सरस्वती को तो अवश्य मंडावा भिजवा देवें। पत्रोत्तर देवें, मेरे योग्य कार्य हो सो लिखें मिती पोह बदी--१९८४

भवदीय

(नगर-श्री, पत्र सं० ४०८) देवीबकस सराफ मु० मण्डावा

उन दिनों बीकानेर राज्य में सिर्फ बीकानेर नगर में ही आँखों का आपरेशन करने का प्रबन्ध था और साधारण व निर्धन व्यक्ति इतना भार नहीं उठा सकते थे। इसलिए स्वामी जी ने रा० ब० सेठ रुक्मानन्द जी बागला को प्रेरणा देकर चूरू में वर्षों तक नेत्रदान-यज्ञ चलाया। दूर-दूर से लोग आते थे, मोगामंडी के सुप्रसिद्ध नेत्र-चिकित्सक रायसाहब डा० मथुराप्रसाद जी माथुर (जो वाइसराय के ऑनरेरी सर्जन भी रहे) को हर साल चूरू बुलाया जाता था। रा० ब० सेठ भगवानदास जी बागला की धर्मशाला में कैम्प लगाते थे और हर बार बहुत बड़ी संख्या में आपरेशन किये जाते थे। किसी को एक पैसा भी खर्च करने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।

सेठ देवीबख्श जी का उपरोक्त पत्र इसी प्रसंग में लिखा गया है। डा० मथुराप्रसाद जी के मन में स्वामी जी के प्रति बड़ी श्रद्धा थी और वे स्वामी जी का बहुत सम्मान करते थे। स्वामी जी के नाम समय-समय पर उनके लिखे हुए ६ पत्र नगर-श्री के संग्रहालय में मौजूद हैं।

यह पत्र जोबनेर (जयपुर) से श्री विश्वेश्वरदयाल शर्मा ने स्वामी जी के नाम दिनांक २२-११-२७ को लिखा है—

ता० २२-११-२७
जोबनेर

सेवा में, श्रीमान् महोदय,
स्वामी गोपालदास जी
मन्त्री, सर्वहितकारिणी सभा, चूरू।

श्रीमान् स्वामी जी महाराज।

सेवा में सादर निवेदन है कि यह नगर ६००० मनुष्य-संख्या से युक्त है और इस नगर के चारों तरफ छोटे-छोटे करीब ४० गाँव हैं। वह गाँव ऐसे गरीब है जो लिखने में नहीं आ सकते। देश के दुर्भाग्यकारण भारत में नवीन-नवीन रोगों ने अपना अड्डा तो जमा ही रखा है तिस पर इस भयंकर दुर्भिक्ष के कारण

कारण क्रन्दन ही कर्णगोचर है। आजकल घर-घर में इतने बीमार पड़े हुए हैं जिनको देखकर उन लोगों की व्यवस्था लिखने में लेखनी असमर्थ है। उन लोगों के संकट को आप जैसे महात्मा भारत में शिरोमणि परोपकारी ही दूर कर सकते हैं, अन्य नहीं।

आज मुझे लिखते हुए बड़ा ही हर्ष है कि इस परमार्थ औषधालय की नींव अगर आप श्रीमानों के हाथ से डाल दी जाये तो मुझे आशा है कि यह औषधालय हमेशा के लिए चलता रहे क्योंकि इसकी यहाँ खास जरूरत है और इसके बिना अत्यन्त दुखी हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि हम तमाम दुखित रोगियों की पुकार को सुनकर श्रीमान् स्वामी जी को सुध दिलाकर इस परमार्थ औषधालय की फाउन्डेसन डलावें। मुझे आशा है कि श्रीमान् इस तुच्छ लेख पर अवश्य ध्यान देंगे।

आपका
आरोग्य चाहनेवाला आज्ञाकारी स्वयंसेवक
विश्वेश्वरदयाल शर्मा
जोबनेर—पोस्ट फुलेरा
जि० जयपुर

(नगर-श्री, पत्र सं० १६६)

यद्यपि राजनीतिक दृष्टि से बीकानेर और शेखावाटी के इलाकों के बीच रेखाएँ खिंची हुई थीं किन्तु स्वामी जी के निकट कोई अन्तर नहीं था। जैसे उन्होंने गजनेर (बीकानेर) के पीड़ितों की सहायता की थी वैसे ही जोबनेर के लोगों की भी सहायता की होगी। शेखावाटी में सीकर, रामगढ़, बिसाऊ, पिलानी, चिड़ावा, मलसीसर, मंडावा, फतहपुर, मुकन्दगढ़, लक्ष्मणगढ़, नवलगढ़ और झुंझनू आदि के सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं और वहाँ की संस्थाओं से उनके गहरे सम्बन्ध थे और स्वामी जी विशेष समय-समय पर वहाँ जाते रहते थे। सर्वहित-कारिणी सभा की शाखाएँ भी शेखावाटी के कई स्थानों में स्थापित की गई थीं और स्वामी जी शेखावाटी के इलाके में भी खूब लोकप्रिय थे। प्रजा के छोटे-छोटे कष्टों को भी वे तत्परता से दूर करवाने की कोशिश करते थे जैसे बिसाऊ ठाकुर साहब को उन्होंने २६-१०-२२ को लिखा कि आपके पालतू सूअरों ने प्रजा को बहुत कष्ट दे रखा है, इसे दूर करना चाहिए।

यह पत्र श्री नारायणदत्त शर्मा ने स्वामी जी के नाम लिखा है—

सादर प्रणाम, श्रीयुत पं० भिक्षालाल जी कई दिन से यहाँ पधारे हैं। यहाँ पर अग्रवाल हितकारिणी नाम की संस्था पूर्व स्थापित थी उसको यहाँ सभा की शाखा बना दिया गया। दो व्याख्यान आर्यसमाज भवन में हुए।

ईद के समय पर जो झगड़ा मुसलमान-हिन्दुओं का हुआ था उसका फैसला हो गया। दोषी ने दरबार के सामने सब हिन्दुओं से क्षमा माँग ली। २६-८-२३ को पिंजरापोल में हिन्दुओं की विराट सभा थी, मैं भी उसमें सम्मिलित हो गया था। मैंने हिन्दुओं से शान्त रहने की अपील करते हुए हिन्दू संगठन की आवश्यकता बतलाई थी, स्टेट व गवर्नमेंट के सम्बन्ध में एक भी शब्द नहीं कहा था। परन्तु खुफिया भूतों ने जो हर समय छाया की तरह लगे रहते हैं न मालूम क्या रिपोर्ट की कि मेरी तनखाह रोक दी गई है। मेरे से कुछ नहीं पूछा गया और न कोई लिखित आर्डर हुआ है, केवल टेलीफोन द्वारा महकमा हिसाब में वेतन न देने को कह दिया गया। परसों श्रीमान् तिवाड़ी जी से मिला था, उन्होंने कहा कि श्री दरबार की पेशी में कागजात रखे गये हैं। अवश्य ही तुम्हें बरखास्त किया जावेगा। येनकेन त्यागपत्र लेने का संकेत हुआ, आपकी क्या सम्मति है?

ईद के दंगे की तैयारी यहाँ पर दो-तीन मास से हो रही थी, हिन्दुओं के भाग्य थे कि शान्त रहे वरना अजमेर का-सा कांड अवश्य होता। अजमेर खिलाफत कमेटी के मेम्बर आ-आकर शुद्धि के खिलाफ जहर उगलते थे। एक शेख पार्टी है जिसने हिन्दुओं के छुए पदार्थ खाने का त्याग कर दिया है। सेठ रामगोपाल मोहता ने ५०० रु० शुद्धि-फंड में दान दिया है और वचन दिया है कि काम शुरू करो, सब खर्च दूंगा।

पंडित नारायणदत्त बीकानेर आर्यसमाज के मंत्री थे। वे हिन्दू संगठन के कार्य में दिलचस्पी लेते थे . . . २६ अक्टूबर को उन्हें डि० इन्सपेक्टर जनरल पुलिस ने बुलाकर होम मेम्बर की, जो एक पारसी हैं, आज्ञा सुनाई कि चूँकि पुलिस की रिपोर्ट है कि पं० नारायणदत्त का बीकानेर में रहना बहुत खतरनाक है इसलिए वह तीन दिन के भीतर राज्य की सीमा से सदा के लिए निकल जावे . . .।'

विविध पत्रों से संक्षिप्त उद्धरण

स्वामी जी ने कई हजार पत्र अपने जीवन में लिखे थे क्योंकि उनका कार्य-क्षेत्र विस्तृत था और उतने ही पत्र उनके पास आये होंगे, लेकिन वे सब प्राप्य नहीं हैं। फिर भी नगर-श्री के संग्रहालय में उनसे सम्बन्धित ४०० से ऊपर पत्र हैं जिन सबका यहाँ दिया जाना संभव नहीं है। कुछ पत्रों से यहाँ केवल संक्षिप्त उद्धरण दिये जा रहे हैं —

देवनागर-कार्य्यालय
एक लिपि विस्तार परिषद्
८५, ग्रे स्ट्रीट,
कलकत्ता, २२-५-१९०९

आपका कृपा पत्र यथासमय प्राप्त हुआ था। आपने देवनागर के प्रबन्ध विभाग के विषय में जो सम्मतियाँ दी हैं वह बहुत ही लाभदायक और सराहनीय हैं। आपके प्रस्तावानुसार यथासंभव कार्य... के लिए हम अवश्य यत्न करेंगे। आपके सत्परामर्श के लिए आपको कोटिशः धन्यवाद।

(नगर-श्री, पत्र सं० २६४)

पो० माण्डलगढ़
विजोलिया-मेवाड़
६-१२-१६०६

श्रीमान् परम पूज्यपाद गोपालदास जी महाराज की पवित्र सेवा में साष्टांग दण्डवत। मैं भी अपनी छोटी-सी प्रार्थना लेकर सेवा में उपस्थित हूँ। आशा है मेरी लघु प्रार्थना पर ध्यान देकर उत्तर से अनुगृहीत करेंगे।...

पं० सीताराम दास साधु
(नगर-श्री, पत्र सं० २५४) सालम बिहारी जी का मन्दिर

सीकर
मा० कृ० ४-१६७५

मेरी तो यही अभिलाषा है कि इस अपने प्रान्त के सभी मुख्य-मुख्य शहरों के प्रतिनिधि इस भावी शिक्षा-सम्मेलन में योग दें। ऐसा ही आप प्रयत्न करें। आज रामगढ़ के बंशीधर जी सुनार इसी विषय पर परामर्श करने को यहाँ आये हैं। लक्ष्मणगढ़, फतेपुर, लोसल, सीकर, बिसाऊ आदि से अवश्य ही प्रतिनिधि आवेंगे। आपकी सेवा में तार दिया है, पत्रोत्तर दें। यदि उपयुक्त समझें तो समाचारपत्रों में भी इसका आंदोलन करें।

(नगर-श्री, पत्र सं० २४६) बंशीधर जोशी

कलकत्ता
६-८-२५

पूज्य श्री स्वामी जी गोपालदास जी से कृष्णदयाल जालान का पावाधीक बंचना। फतेहपुर में इस समय जो वर्षा से असीम हानि हुई है उसकी क्या दशा है? किस-किस किस्म की सहायता की वहाँ पर आवश्यकता है तथा किस-किस किस्म का नुकशान वहाँ पर है? उसका पूरा-पूरा ब्यौरा मँगाने के लिए हमसे आपका नाम लेकर सेठ युगलकिशोर जी बिड़ला ने कहा है सो वह सब विवरण हमें तार द्वारा या पत्र द्वारा दें जिससे कि वहाँ पर यथोचित सहायता पहुँचाई जावे।

आपका कृपाभिलाषी
(नगर-श्री पत्र, सं० २५७) कृष्णदयाल जालान
चुन्नीलाल कृष्णदयाल
२०१, हरीसन रोड, कलकत्ता

ओ३म्

कलकत्ता
४-३-१२

प्रिय मित्र, पत्र मिला। आप कुछ चिंता मत करना, १०) लगाकर वार्षिक उत्सव कर देना। अध्यापिका के लिए और सभा के लिए साथ ही पुरुषार्थ किया जा रहा है। यहाँ पर मैंने 'देवदूत' पत्र के लिए डिक्लेरेशन की दरख्वास्त रेजीडेन्सी मजिस्ट्रेट को दी है, ता० २१-३-१२ को पुनः बुलाया है। वह डिटेक्टिव ऑफिस में भेजी गई है। वहाँ से स्यात् बीकानेर या चूरू पोलिस में जाए यह दरियाफ्त करने को कि यह पुरुष कैसा है। पोलिटीकल सोसाइटी से तो सम्बन्ध नहीं रखता है सो तुम पहले से ही ठीक-ठाक रखना। महाशय लक्ष्मीचंद को मेरा नमस्ते कहना। उनसे थानेदार को कहला देना या जैसा मौका हो, मैजिस्ट्रेट से जिक्र कर देना।

(नगर-श्री, पत्र सं० ३६२) श्रीराम

ओ३म्

ब्यावर (अजमेर)
२-४-१३

श्री स्वामी गोपालदास जी, चूरू।

प्रियवर नमस्ते। आपके महाविद्यालय से प्रस्तुत होते ही श्रीयुत मा० आत्मारामजी का अत्यन्त रोचक तथा सारभरित और रात्रि को श्री पूज्य पं० तुलसीरामजी का व्याख्यान हुआ। बा० नागरमल जी को तथा रायगढ़ से पं० त्रिलोकीनाथ जी को अवश्य बुलावें। त्रिलोकीनाथ जी स्वा० नृसिंहानन्द जी के कनिष्ठ भ्राता हैं।

(नगर-श्री, पत्र सं० ३०१)

ओ३म्

बम्बई

चैत्र शु० १ सं० १९७१

आप लोगों के पुरुषार्थ तथा धैर्य की मैं प्रशंसा करूँ उतनी ही थोड़ी है, क्योंकि आप ऐसी दशा में कार्य कर रहे हैं जब कि स्थानीय सहानुभूति तथा सहायता बहुत ही न्यून है। अपने नगर में इतने अधिक लोगों के होते हुए भी सभा तथा कन्या पाठशाला का निज का मकान अब तक नहीं बना यह बड़े ही शोक तथा आश्चर्य की बात है। सभा के सब कामों से मेरी पूर्ण सहानुभूति है।

(नगर-श्री, पत्र सं० २३२) श्रीराम शर्म्मा

सीकर

चै० शु० १ सं० १९७८

आपका कृपापत्र मुझे यहाँ मिला। मैं चै० शु० ९-१० तक रतनगढ़ पहुँचूंगा। श्री रघुनाथ विद्यालय का वार्षिकोत्सव भी है। तथापि मेरे मित्र चाँदकरण जी आपके यहाँ पधारेंगे और कतिपय प्रतिनिधियों की सभा भी होगी इसलिए चूरू उस अवसर पर आने की मेरी उत्कट इच्छा है। मैं जल्दी आने की कोशिश करूँगा।

आपका स्नेही
माधवप्रसाद

श्रीमान् धर्मपिता जी, प्रणाम।

यहाँ पर सब कुशल है, आपकी कुशलता ईश्वर से चाहती हूँ। भादरावाली तहसीलदारनी पढ़ने को कहती हैं, आपकी क्या राय है? आप आज्ञा दे दो तो उनको पढ़ा देऊँ। आप डिपुटी साहब से पूछ लेना, कोई हरज नहीं है क्या।

द० मनभरी

(नगर-श्री, पत्र सं० ६८)

श्री विद्योपासक मण्डल कार्यालय

वालोतरा

१९८१ कार्तिक वदि ५

विशेष निवेदन यह है कि हमने अपने यहाँ लगभग १० मास से एक कन्या पाठशाला खोली है। इसमें लगभग ३० कन्याएँ भरती हो चुकी हैं। परन्तु मूर्खतावश विरोधी उनके माता-पिता को बहकाते हैं जिससे पाठशाला के कार्य में विघ्न होते रहते हैं। अतः स्त्री-पुरुषों में स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता के भाषणों द्वारा उत्तेजना फैलाना बहुत जरूरी है। इसलिए हम आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं कि कृपा करके आप कुछ समय के लिए यहाँ पधार कर, इस कार्य को कर के हमें बाधित करियेगा। आशा है आप हमारी प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देकर कृतार्थ करेंगे। श्रीमान् पूज्यवर पंडित जी श्री कन्हैया-लाल जी ढूंढ़ की सेवा में सादर प्रणाम।

निवेदक कृपैषी

रामयश गुप्त—मंत्री

श्री सेवा-समिति, भादरा

ता० २६-१-२१

राजगढ़ सर्वहितकारिणी सभा से सूचना मिली है कि बीकानेरीय सभाओं की एक महासभा प्रति . . . हुआ करेगी। यह अति उत्तम है। महासभा के सभापति के निर्वाचन के लिये तमाम सभाओं के पदाधिकारियों के नाम मालूम होने आवश्यक हैं और भलीभाँति परिचय होना चाहिये। इस वर्ष सभा चूरू में हो तो उत्तम है और सभापति स्वामी गोपालदास जी को निर्वाचन करते हैं। तिथि शिवरात्रि पर या वैशाखी पर निश्चित की जावे।

भवदीय

मंत्री

(हु० अंग्रेजी में है जो, जे० डी० शर्मा पढ़े जाते हैं)

श्री धन्वन्तरयेनमः

नि०भा० वैद्य सम्मेलन

दारागंज, प्रयाग

मार्ग शुक्ला १५ सं० ७४

आपका कृपा पत्र मिला। आयुर्वेद विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये चूरू भी केन्द्र रखा गया है। छपने में गलती हुई है। पहली डाक में जो नोटिस निकल गये, वे तो गये बाकी अन्य नोटिसों में अब चूरू भी लिखा रहता है। आप अपने प्रान्त में इस बात को प्रसिद्ध कर दीजिए और आवश्यक आवेदनपत्र भरवा कर भेजवाइये। आप चाहें तो समाचारपत्रों में भी नोटिस दे सकते हैं।

(नगर-श्री, पत्र सं० २७४) भवदीय

फतहपुर (जयपुर)

६-१-२२

श्रीयुत् स्वामी जी महाराज बन्देमातरम्। आगे सेवा में निवेदन यह है कि आपके यहाँ जो मद्रास की ओर से वैद्यक की परीक्षाएँ होती हैं, यदि वहाँ की नियमावली आपके पास हो तो कृपा कर के भेज दें।

भवदीय

(नगर-श्री, पत्र सं० २५५) कुँ० वेदपालसिंह

बीकानेर

१८-३-२३

श्रीयुत पूज्यवर स्वामी जी, सादर नमस्ते।

मैं २५-३-२३ रविवार को प्रातःकाल ही सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा। श्रीमान तिवाड़ी जी भी पधारेंगे। यहाँ पर मित्र-मंडल, धर्म-प्रचारक मंडल, रघुनाथ मंडल, अग्रवाल सभा, माहेश्वरी सभा इत्यादि कई संस्थाएँ हैं, परन्तु सबका क्षेत्र संकुचित ही है। मित्र-मंडल के अध्यक्ष बा० मुक्ताप्रसाद जी योग्य विचारशील व्यक्ति हैं, उनको निमंत्रण अवश्य देवें। मेरे विचार में सबको ही निमंत्रण दे देवें। मैं स्वयं भी सबसे मिलूँगा। पं० सूर्यकर्ण जी व्यास एम० ए० को भी लिख दें। सूरतगढ़ से पं० रघुवरदयाल जी वकील को भी अवश्य बुलावें।

(नगर-श्री, पत्र सं० २५३)

बगड़
६-६-२५

सेवा में निवेदन है कि कुछ दिनों से सुलताना (पो० चिड़ावा) में गणपत-सिंह राजपूत के मकान पर एक २ वर्ष से ३ वर्ष के बीच का लड़का, जो ब्राह्मण अथवा वैश्य जाति का मालूम पड़ता है, किसी द्वारा उड़ा कर लाया गया है। कृपया इस विषय में शीघ्र ही अनुसंधान कर सूचना दें क्योंकि बच्चा भी छोटा है और उसके माता-पिता भी न मालूम किस दशा में होंगे। आपके सिवाय इस काम को करने वाला दूसरा नजर नहीं आता।

भवदीय
चिरंजीलाल शर्मा, माष्टर

(नगर-श्री, पत्र सं० २५१)

रतनगढ़
१४-१-२१

श्रीमान् स्वामी गोपालदास जी, नमोनमः।

यहाँ का कार्य पं० कृष्णदत्त जी ने चिट्ठी देने पर बहुत अच्छा किया। बड़ा परिश्रम करके २५-३० खानदान रैगरों को समझाया और धार्मिक उपदेश दिये जिससे फिर अपने स्वधर्म पर आरूढ़ हुए और लाल टिकट आदि सब अलग किये और हवन कराकर शुद्ध कर दिया। गाँव के वैश्यादि ने भी बड़ी मदद की।

आपका
गोकरण

(नगर-श्री, पत्र सं० २६६)

आपके पास से आने के पश्चात् मैं मंडावे गया था। वहाँ के नरेश ठाकुर इन्द्रसिंह जी व बाबू देवीबक्स जी सराफ से मिला... दूर से ही बड़ी-बड़ी डींग सुनने में आती है परन्तु साक्षात् होने से कोई सन्तोषजनक उत्तर न मिला। १०-५ फार्म भेज दें, यथाशक्ति उद्योग करूँगा।

भवदीय
कन्हैयालाल मिश्र

सूरतगढ़
१५-८-२३

श्री परम पूज्यपाद स्वामी जी महाराज, सादर नमस्ते । कल माननीय भ्राता पं० थिक्षालाल जी शर्मा यहाँ पधारे । रात्रि को उनका एक व्याख्यान बाजार में कराया गया । जनता ने आपके उपदेश को पसन्द किया । कल हनुमानगढ़ जावेंगे, वहाँ से वर्मा जी के पास रामनगर जाने का विचार है, फिर संगरियामंडी होते हुए चूरू पहुँचेंगे । शाखा सभा भी बीकानेर में स्थापित हो चुकी है। शान्त जी से यथायोग्य ।

भवदीय
मनोहर

(नगर-श्री, पत्र सं० ३६६)

ओ३म्

भादरा
३-१२-२१

पूज्यनीय स्वामी जी, वन्दे ।

आपको विदित ही होगा कि विदेशी खाँड बीकानेर राज्य में प्रवेश होनी आरंभ हो गई है, जिससे धर्म का ह्रास होगा । कृपया इसको रोकने का उपाय कीजिये । मैंने सब कस्बों की संस्थाओं को पत्र दिये थे, कई का विचार डेपूटेशन दरबार साहब की सेवा में भेजने का है । आप इस कार्य के लिए डेपूटेशन को तैयार कीजिए ।

कृपाभिलाषी
नारायणदत्त शर्मा
हेडमास्टर, स्कूल भादरा

(नगर-श्री, पत्र स० ३८५)

भीनासर
मा० कृ० ११

भादरा के भ्रमण का वृतान्त लिखें । शेखावाटी में भ्रमण कब करेंगे ? बीकानेर समाज का उत्सव १८, १९, २०, २१ को होगा । श्री स्वामी सर्वदानन्द जी व पं० रामचन्द्र जी देहलवी आदि विद्वान् पधारेंगे । आप भी पधारें । पं० श्रीराम जी पत्र की बाट देख रहे हैं ।

कृपाभिलाषी
नारायणदत्त शर्मा

(नगर-श्री, पत्र सं० ३५४)

राजपूताना मध्यभारत सभा

सं० १०२७ अजमेर

२१-५-२३

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अछूत पाठशाला मलसीसर के बारे में मैंने पं० राधावल्लभ जी को चिट्ठी देकर भेजा था। कुँअर शिवनाथसिंह ने विश्वास दिलाया है कि पाठशाला खुलवा देंगे। ठाकुर साहब जोबनार के पास से आदमी लौटा नहीं है, आने पर सूचित करूँगा। सुजानगढ़ को आप एक आदमी अवश्य भेज देवें। आपको वृन्दावन कान्फ्रेंस के कुछ निमंत्रणपत्र भेजता हूँ, कृपा करके मुख्य-मुख्य राजपूत सरदारों को बाँट देवें और उनकी एक फेहरिस्त भी भेज दें जो कान्फ्रेंस को भेजी जायगी।

भवदीय,

चाँदकरण शारदा

ॐ

स्वामी गोपालदास जी

हिन्दू संसार आफिस
नया बाजार
दिल्ली १८-२-२५

श्रीयुक्त बिड़ला जी ने जो छात्र-वृत्तियाँ देना स्थिर किया है उसके नियमों में आपने पढ़ा होगा कि १००) मासिक की २० वृत्तियाँ शेखावाटी, सीकरवाटी और चूरू आदि स्थानों के रहनेवाले उन राजपूत और जाट छात्रों के लिए है जो किसी हिन्दी अंग्रेजी मिडिल स्कूल की चतुर्थ श्रेणी से आठवीं श्रेणी तक पढ़ेंगे। आपने मालसिंह, बहादुरसिंह, उदयचन्द, मनमोहन, चन्द्रसिंह—इन ५ छात्रों के लिए सिफारिश की थी, हस्ताक्षर आवेदनपत्रों पर किये हैं। इसलिए कृपया आप ही इन ५ छात्रों में से ३ ऐसे छात्रों के नाम चुन कर भेजिये जो सब तरह से छात्र-वृत्ति पाने के उपयुक्त हों और भी बहुत से आवेदनपत्र आये हैं—

(नगर-श्री, पत्र सं० २७२) झाबरमल्ल शर्म्मा

वन्देमातरम्

प्रचार विभाग कार्यालय
सं० ८६ प्रान्तीय राजनैतिक सभा राजपूताना
मध्यभारत तथा अजमेर मेरवाड़ा
अजमेर ता० १४-८-२३

निवेदन यह है कि राष्ट्रीय महासभा का विशेष अधिवेशन तारीख १५ सितम्बर सन् १९२३ को देहली में होना निश्चित हुआ है अतः आपके यहाँ से जो सज्जन उपरोक्त महासभा के अधिवेशन में प्रतिनिधि रूप से जाना चाहें उनके नाम, उम्र, पेशा पूरे पते सहित लिखकर भेजने की कृपा कीजिए ताकि उनके नाम प्रतिनिधियों में निर्वाचन कर लिये जायँ।

भवदीय
अ० ल० सेठी
मन्त्री

(नगर-श्री, पत्र सं० २५)

ओ३म्

२६-४-२४
भादरा

सेवा-समिति के उत्सव पर आप अवश्य आवें। संभव है इस अवसर पर मूला जाटों में सफलता हो जावे। क० पा० शा० के लिये अध्यापिका का प्रबन्ध शीघ्र करें, जिससे उत्सव में पूरी सफलता हो सके। नाटक का परदा द्रौपदी चीरहरन का साथ लावें या पहले भेजावें।

खूबराम

(नगर-श्री, पत्र सं० १३०)

भादरा
१८-४-२४

यहाँ पर अध्यापिका की बड़ी आवश्यकता है क्योंकि वार्षिक परीक्षा समीप है। आप पत्र बाँचते ही अध्यापिका जी को भेजने की कृपा करें। बैज-बिल्ले चार और एक खद्दर के कपड़े पर सेवा-समिति भादरा लिखा हुआ साइन बोर्ड भी भेजने की कृपा करें। जब तक पाठशाला बन्द है, चैन नहीं पड़ता।

सेवक
खूबराम

(नगर-श्री, पत्र सं० १३१)

अजमेर
१२-८-२२

यहाँ पर परस्पर की फूट से काँग्रेस का काम बिगड़ गया। पं० गौरीशंकर भार्गव ने काँग्रेस के ११-१२ हजार खादी भंडार के नाम से ले लिये। इससे लोगों की श्रद्धा व विश्वास जाता रहा। भार्गव जी की इतनी अधिक बदनामी हुई कि वे अजमेर छोड़ कर चले गये। अब सब काम मैं और सेठी जी नये सिरे से कर रहे हैं। शायद कुछ कागज गौरीशंकर जी ने अपने पास दबा रक्खे हैं, इनमें जनरल सेक्रेटरी साहब ने आपको पत्र लिखा था। मैं सब दरियाफ्त कर आपको हिसाब के बारे में पत्र दूंगा।

सुजानगढ़
१५-६-२५

राज्यन्तर्गत स्थान-स्थान पर हिन्दु धर्मावलम्बी अछूत जाति कहाने वालों में से कुछ लोगों को धर्मच्युत किये जाने का सम्वाद समय-समय पर जो मिला करता है अतः इसकी रोक-थाम के वास्ते यह निश्चय किया गया है कि श्री दरबार साहब की सेवा में एक मेमोरियल उपस्थित कर ऐसा कानून बनायें जाने की प्रार्थना की जाय जिससे २० वर्ष से कम आयु वाला कोई पुरुष अथवा स्त्री अपना धर्म-परिवर्तन न कर सके. . .अतः आपसे अनुरोध है कि अति शीघ्र चूरू तथा आसपास के गाँवों में हुई ऐसी घटनाओं का पूरा ब्योरा लिखकर कृतार्थ कीजिये । यदि आप कहें नकल मेमोरियल भेज दूं ।

भवदीय
प्रयागनारायण सक्सेना

(नगर–श्री पत्र सं० २५०)

मिर्जावाला
फाल्गुन कृ० २

संगरिया जाट स्कूल का तृतीय वार्षिकोत्सव २०,२१,२२ फरवरी सन् १६२० को होगा। इसी कारण सेवक भी लौट आया, कलकत्ते नहीं जा सका। कृपा करके आप इस उत्सव में अपने इष्ट-मित्रों सहित पधारें। संगरिया मंडी है और स्टेशन का नाम चोटालारोड है। अवश्य दर्शन देकर हमारी आशा पूरी करें।

शु० हरीचंद

(नगर-श्री, पत्र सं० २८१)

कलकत्ता
१८-४-२६

परमात्मा से प्रार्थना है कि सभा की उन्नति हो। स्वामी जी गोपालदास जी के कार्य की श्लाघा करते हैं कि जिन्होंने अपने स्वार्थों को छोड़कर सर्वहित के लिये अपने को बलिदान दे रखा है और सभा को उन्नतिशील बना रखा है। यह सुन कर और भी प्रसन्नता हुई कि पुत्री पाठशाला के भवन का शिलारोपण महोत्सव भी होगा।

दर्शनाभिलाषी
जगंन्नाथ गुलराज केडिया

(नगर-श्री, पत्र सं० २६२)

बम्बई
ता० १४-२-२६

आपके हुक्म अनुसार हुंडी ५००) की सिकार दी है। आपने लिखा सामान लेना शुरू कर दिया है सो बहुत आनन्द की बात है, परन्तु अभी तक जमीन तो कब्जे में आई नहीं। महंत जी को प्रणाम कहना। सेठ जमुनालाल जी बजाज की पुत्री का विवाह महात्मा जी के सन्मुख आश्रम साबरमती में होने वाला है, ऐसा सुना है। यदि ऐसा हुआ तो नवीन सुधार जरूर होगा।

आपका
गजराज

(नगर-श्री, पत्र सं० २५६)

कलकत्ता
१७ दिसम्बर १६२३

स्वामी जी श्री गोपालदास जी महाराज, नमस्ते। मैं कलकत्ते पहुँचने के बाद आपको कोई पत्र नहीं दे सका, क्षमा कीजिये। मैं अभी तक देवघर नहीं जा सका, अभी कुछ दिन और यहाँ रहने का विचार है। अगर आप कृपा कर कलकत्ते आवें तो बहुत खुशी होगी और आपने चिट्ठी निरंजनलाल गोयनके को लिख कर दिया था, वह मिला। इसके लिये रामगढ़ से भी सेठ साहिब ने लिखा है सो कल हमारे पास वह मिलने को आया था। आज फिर आने को कह गया है। बातचीत करने पर जो मालूम होगा वह आपको लिखेंगे।

आपका कृपाभिलाषी
जयनारायण पोद्दार
कलकत्ता

(नगर-श्री, पत्र सं० ६७)

स्वामी गोपालदास जी

आरा

२५-६-२६

आपकी सेवाओं से हम लोग बड़े कृतज्ञ हैं। वास्तव (में) आप समाज के लिए इतना काम कर रहे हैं जितना अन्य लोग न कर सकेंगे।

स्नेहाकांक्षी

सागरमल

रामनारायण सागरमल जालान

(नगर-श्री, पत्र सं० ७७)

से घोर आंदोलन कर गुलामी और बेगार प्रथा को बंद कराने हेतु बहुत प्रयत्न किया। इस सभा के अध्यक्ष श्री जमनालाल जी बजाज, मणिलाल जी कोठारी, गणेशशंकर जी विद्यार्थी, राव गोपालसिंह जी (खरवा) सत्यदेव जी, गणेशनारायण जी सोमाणी, गोविन्दलाल जी पित्ती, कलयंत्री जी, तथा शारदा जी आदि सज्जन रहे——(भगवानदास केला, देशी राज्य शासन, पृ० ३०२-३)

यह पत्र कुँ० चाँदकरण जी ने शारदा सेवा-समिति, अजमेर से स्वामी जी के नाम लिखा है, इस पर तारीख डालना भूल से रह गया है——

सेवा समिति अजमेर

श्रीयुत सज्जन-शिरोमणि स्वामी जी के चरणकमलों में
चाँदकरण का सादर नमस्ते ।

आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ। आप महात्मा गांधी जी को प्रधान न बनावें। यदि स्वामी श्रद्धानन्द जी या महात्मा हंसराज जी या राव बहादुर आत्माराम जी, बड़ौदा या पं० वंकटेशनारायण जी तिवाड़ी, सम्पादक 'अभ्युदय' व पं० हृदयनाथ जी कुंजरू, प्रयाग इनमें से किसी को चुन लें और पत्र-व्यवहार आरंभ करें।

देशी राज्यों के सुधार के लिए मैं बहुत काल से विचार कर रहा हूँ। इस बार मांटेगू चेम्सफोर्ड सुधार में देशी राज्यों को बहुत हक मिले हैं परन्तु देशी राज्यों की प्रजा की वही दुर्दशा है और इन बेचारों को कोई हक नहीं मिले। इसके लिए आन्दोलन अवश्य होना चाहिये परन्तु देश, काल और नीति पूर्णतया विचार कर कार्य करना चाहिये। 'भारतमित्र' को लेख भेज दिया है, यथायोग्य सेवा लिखें। प्रेम वृद्धि करते रहें।

आपका
कृपाकांक्षी तुच्छ सेवक
चाँदकरण

(नगर-श्री, पत्र सं० २२)

उसमें जन-जागृति पैदा करने के लिए पहले वर्धा से "राजस्थान केसरी" और बाद में अजमेर से "नवीन राजस्थान" नामक साप्ताहिक पत्र निकाले गये।[1] तिलक द्वारा सम्पादित 'केसरी' के नमूने पर मारवाड़ियों की ओर से 'राजस्थान केसरी' निकालने के लिए जमनालाल जी बजाज ने पथिक जी को पाँच हजार रुपये तुरतजी दे दिये।

यह पत्र कुँअर चाँदकरण जी शारदा ने अजमेर से स्वामी जी के नाम दिनांक १६-७-२१ को लिखा है—

From the office of
The Provincial Congress Committee
of
Rajputana Central India & Ajmer Merwara.

Ajmer 19-7-21

मान्यवर स्वामी गोपालदास जी,

सादर सप्रेम बन्दे। पत्र और आपके ५६) रु० मिले जिसमें से २५) रुपये तो सभासदों के चन्दे के और ३४) रु० तिलक स्वराज्य फंड में भेजे हुए मिल गये हैं। उसकी रसीद इस पत्र के साथ भेजी जाती है सो देख लें। चूरू से जो चन्दा आया है उसका ब्यौरा 'भारतमित्र' में छपा दिया जायगा। किसी भी व्यक्ति विशेष का पता नहीं दिया जायगा। और सुजानगढ़ से भी जो कुछ हुआ है वो भी प्रकाशित करवा दिया जायगा। यथायोग्य सेवा लिखें। कृपादृष्टि रक्खें।

श्रीमान् आनंदवर्मा जी हेडमास्टर सरदारशहर वालों को अलग कर दिया तथा श्रीमान् सम्पूर्णानन्द जी को भी डूंगर कालेज से पृथक किया। हम इन दोनों महानुभावों को अपने राष्ट्रीय सेवा में लेने को तैयार हैं तथा उदित मिश्र जी जो पहले बीकानेर के इन्सपेक्टर स्कूल रह चुके हैं उनको लेकर मैं बीकानेर राज्य में दौरा करना चाहता हूँ। कृपया अपनी सम्मति लिखें। महात्मा गांधी जी ने अपने प्रान्त से ५ लाख रुपयों की खादी खरीदनी चाही है। कृपया सूचित करें कि चूरू से आप कितनी खादी दे सकते हैं। ताणा और वाना दोनों हाथ के सूत का होना चाहिये। सब मित्रों को सादर सप्रेम नमस्ते कहें।

इस पत्र में वर्णित सभी बातें तत्कालीन राज्य सरकार की दृष्टि में भयंकर षड्यंत्र और राजद्रोह से कम न थीं लेकिन स्वामी जी इन बातों की जरा भी परवाह नहीं करते थे। सभासदों के चन्दे के २५) शायद काँग्रेस के १०० चवन्नी ·दस्य बना कर इकट्ठे किये गये थे। तिलक स्वराज्य फण्ड के लिए भी यहाँ से न्दा इकट्ठा करके भेजना भयंकर राजद्रोह था।

बा० सम्पूर्णानन्द जी उन दिनों बीकानेर डूंगर कालेज में प्राध्यापक थे ीर स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद राजस्थान के राज्यपाल बने। उदित मिश्र जी वामी जी के मित्र थे। दिनांक २६-७-१६ को इन्होंने डिप्टी इन्सपेक्टर ऑव कूलस (बीकानेर राज्य) के बतौर सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला चूरू का निरीक्षण किया था। बालिकाओं की परीक्षा लेने और अपने सुझाव देने के बाद उन्होंने स्कूल की सम्मति पत्रिका में लिखा था—

यह शाला फूले फले, हियते आशिष मोर।
कीर्तिध्वजा फहराय नित, शाला की चहुँ ओर॥

उन दिनों किसी भी राजनीतिक उद्देश्य को लेकर बीकानेर राज्य में दौरा करना बहुत भयावह था। अतः शारदा जी का ऐसा करने से पूर्व स्वामी जी की सम्मति लेना दूरदर्शितापूर्ण कार्य था। स्वामी जी स्वयं तो सदा खद्दर पहनते ही थे और खादी के व्यवहार, प्रचार और उत्पादन में वे सक्रिय सहयोग देते थे। लेकिन खेद है कि इस अवसर पर यहाँ से कितनी खादी दी गई इसका कोई विवरण उपलब्ध नहीं हो सका।

यह संक्षिप्त पत्र श्री चाँदकरण जी शारदा ने दिनांक १२-१०-२१ को अजमेर से लिखा है—

राजपूताना मध्यभारत सभा

खेतड़ी के रावराजा ने "अमर सेवा समिति" चिड़ावा के उत्साही कार्यकर्ताओं को जेल में ठूंस दिया था। इस सम्बन्ध में वहाँ सत्याग्रह हुआ।[1] स्वामी जी ने भी चूरू से तीन स्वयंसेवकों को भेजा जिनमें एक वैद्य शान्त शर्मा जी थे। इस सम्बन्ध में मारवाड़ी ट्रेडर्स एसोसियेशन के मंत्री का एक पत्र स्वामी जी के नाम कलकत्ता से १ अक्टूबर सन् २१ का लिखा हुआ आया जिसमें स्वयंसेवक भेजने के लिए स्वामी जी को धन्यवाद दिया गया, साथ ही यह प्रार्थना भी की गई कि स्वामी जी चिड़ावा जाकर आन्दोलन का संचालन करें और अपेक्षित सहायता कलकत्ता से भेजी जाएगी। लेकिन शीघ्र ही समझौता हो गया और आन्दोलन बन्द कर दिया गया। चाँदकरण जी उन दिनों राजस्थान सेवा परिषद् के मंत्री थे और इस वास्ते श्री कलयंत्री जी को साथ लेकर वे भी चिड़ावा गये थे। यदि समझौता न होता और बन्दी बनाये गये मारवाड़ी युवकों को न छोड़ा जाता तो स्वामी जी वहाँ अवश्य जाते और अपने को जेल में बन्द करवाना पसन्द करते। क्योंकि स्वामी जी का स्वभाव ही ऐसा था कि राजनीतिक कार्यकर्ताओं वा समाजसेवी बन्धुओं को जहाँ भी उत्पीड़ित किया जाता, वे हर प्रकार से उनकी सहायता करते थे।

यह पत्र राजपूताना मध्यभारत सभा अजमेर की ओर से कुँ० चाँदकरण जी शारदा ने दिनांक ५-५-१९२३ को स्वामी जी के नाम लिखा है।

उन दिनों राजस्थान में शुद्धि-आन्दोलन बड़े जोर-शोर से चला था। इस सम्बन्ध में स्वामी जी ने चाँदकरण जी को सलाह दी थी कि जो कार्य किया जाए बहुत धैर्य और शान्ति से किया जाए और अखबारों में इस बात का शोर न किया जाए क्योंकि इससे लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। दूसरे पक्ष वाले इसका डटकर विरोध करेंगे और एक संघर्षमय आंदोलन छिड़ जाएगा। इसी के उत्तर में शारदा जी ने यह पत्र स्वामी जी को लिखा है—

लेकर आपके पास भेजता हूँ। मैं आपसे इस बात में पूर्ण सहमत हूँ कि काम पूर्ण शान्ति और धैर्य के साथ होना चाहिए और समाचारपत्रों में इसका बिल्कुल शोर नहीं होना चाहिए। श्रीमान् शिवनाथसिंह जी, ठाकुर भूरसिंह जी, मलसीसर वालों के पुत्र व ठाकुर हरिसिंह जी खाटूवाले इस कार्य में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। कृपा कर शुद्धि के लिए आप एक कार्यकर्त्ताओं की गुप्त सभा बना लें और श्रीमान् कुञ्जलाल जी इसका कार्य संचालन पहिले ही पहिले शेखावाटी में प्रारम्भ करेंगे। आपको अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। जिस प्रकार की परिस्थिति हो उसी के अनुकूल कुञ्जलाल जी कार्य करवावें। श्रीमान् स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने इन्हें आपकी तरफ ही व्यवस्था देखने भेजा है। इनके ठहरने, खाने-पीने, सफर करने आदि सब का प्रबन्ध कर दें। जब आपके यहाँ से २४ घंटे कार्य करने वाले स्थानिक पुरुष मिल जावेंगे तब सब व्यवस्था कर कर ये लौट जावेंगे। महीने, दो महीने, छै महीने जितने दिन चाहें इन्हें आप रखें। जितना इस कार्य में खर्च होगा वह अजमेर की हिन्दू शुद्धि सभा की शाखा से आपके पास आपके पत्र आने पर भेजा जावेगा।

भवदीय
चाँदकरण शारदा

(नगर-श्री पत्र सं० १५७)

नोट :—मैंने मलसीसर में अछूत पाठशाला खोलने एक अध्यापक भेजा है। कृपा कर दरियाफ्त करें कि उसने वहाँ जाकर पाठशाला खोली या नहीं।
चाँ० क०

यह पत्र कुं० चाँदकरण जी शारदा ने अजमेर से दिनांक ५-१२-२४ को स्वामी जी के नाम लिखा है—

काल हिन्दू संगठन का कार्य करता हूँ। आपकी हिन्दू कान्फ्रेंस सफल हो गई है। आपकी सेवा में भाषण भेजता हूँ। यथायोग्य सेवा लिखें। ऋषि शताब्दी पर आपके दर्शन मथुरा में होंगे ही।

भवदीय

(नगर-श्री, पत्र सं० ५६) चाँदकरण शारदा

राज्य की ओर से सार्वजनिक हित के महत्त्वपूर्ण मामलों में स्वामी जी से भी राय ली जाती थी। बीकानेर राज्य में पंचायत बोर्ड की स्थापना के सम्बन्ध में स्वामी जी की राय माँगी गई थी तो उन्होंने ता० ३०-११-२४ को राव बहादुर ठाकुर भूरसिंह जी को लिखा था कि आगरा अवध प्रान्त के पंचायत बोर्ड के कायदे-कानून मँगाकर मैंने देख लिए हैं, पंचायत बोर्ड से गरीबों को लाभ होगा। इसी सिलसिले में उन्होंने १-१२-२४ को श्री चाँदकरण जी शारदा को बड़ौदा राज्य के पंचायत बोर्ड के नियम भिजवाने के लिए लिखा था, जिसके उत्तर में शारदा जी ने उपरोक्त पत्र लिखा है।

राजस्थान के वरिष्ठ नेता अर्जुनलाल सेठी के कुछ पत्र

राजस्थान, मध्यभारत तथा अजमेर (मेरवाड़ा) प्रान्तीय
कांग्रेस कार्यालय, अजमेर ।

३-८-१९२२

पूज्य स्वामी जी, वन्देमातरम् ।

आपका पत्र प्राप्त हुआ । मैंने जब आपको पत्र लिखा था तब जिस भाव से प्रेरित मैं हुआ था, उसको आपने समझ लिया होगा । मुझे परवा किसी की नहीं, मैं ईश्वर की परवा करता हूँ ।...मैं आपको राजस्थान का एक महात्मा समझता हूँ । मेरी उत्कट अभिलाषा है कि आप और मैं तथा एक-दो अन्य आत्माएँ मिल कर कुछ ठोस महान् कार्य कर जाएँ ।...मैंने तो अपना कर्तव्य यह समझा कि गोपालदास जी को अपनी सफाई देकर जीवन-कर्म्म में उनकी सहायता से आगे बढ़ूँ । क्योंकि यदि आपके पवित्र हृदय-मन्दिर में मेरी जगह न हो तो मैं आपको आश्रयदाता होने की प्रार्थना कैसे कर सकता हूँ ।

स्वामी जी, मैं आपसे मिल कर राजस्थान में कार्य करने की नीति निश्चित करना चाहता हूँ । मेरा यह विचार है कि गोखले की "सर्वेन्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी" की तरह राजस्थान सेवक मंडल खोला जाय और हम एक राष्ट्रीय विश्व-विद्यालय अजमेर में खोलें। परन्तु इसके पूर्व पहली श्रेणी का कार्य शुरू करना आवश्यक है । मैं कम-से-कम २० युवकों को एक साल तक अपने पास आप लोगों के समय-समय के निरीक्षण में शिक्षा देना चाहता हूँ । उनको राजनैतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा प्रान्तीय भाषाओं का ज्ञान मुख्यतया दिया जाय और हो सके तो शस्त्र-विद्या भी कुछ-कुछ सिखा दी जाय । साथ-साथ बाहर उपदेश देने का व्यावहारिक बोध भी हो जायगा । मैं इसलिए घूमना चाहता हूँ और योग्य युवाओं को छाँट कर लाना चाहता हूँ । आप भी मेरे साथ हों । आपके संग से कई लाभ होंगे ।

राजस्थान सेवक मंडल की स्थापना सर्वश्री अर्जुनलाल जी सेठी, चाँदकरण जी शारदा व नृसिंहदेव जी सरस्वती ने की थी।

यह पत्र श्री अर्जुनलाल जी सेठी, प्रधानमंत्री, प्रा० कां० कमेटी ने जयपुर कैम्प से दिनांक २-१२-२४ को स्वामी जी के नाम लिखा है:--

जयपुर
(कैम्प)
२-१२-२४

श्रीयुत स्वामी गोपालदास जी की सेवा में
चूरू।

मान्यवर महाशय।

प्रान्त की ज़िला कमेटियों के निर्वाचित सदस्यों ने अपने ३०-१२-२४ के जलसे में नियमावली के अनुसार आपको कोआपशन से प्रान्तीय कमेटी का मेम्बर चुना है। आशा है कि आप राष्ट्र-सेवा के इस पुण्य भार को सहर्ष स्वीकार करेंगे।

रविवार ता० ७-१२-२४ को अजमेर दरगाह बाजार, खिलाफत आफिस में दिन के २ बजे प्रान्तीय कमेटी का जलसा होगा। एजण्डा इस प्रकार है--- (१) सन् १९२५ के लिए प्रान्तीय कमिटी के पदाधिकारियों का चुनाव, (२) प्रबन्धकारिणी कमेटी का निर्वाचन, (३) प्रान्त की ओर से ऑल-इ-का-कमेटी के मेम्बरों का चुनाव, (४) प्रान्त की ओर से नेशनल कांग्रेस के लिए डेलीगेटों का निर्वाचन। आशा है कि आप अवश्य पधारेंगे।

आप डेलीगेट होकर बेलगाँव पधारेंगे तो प्रान्त का गौरव बढ़ेगा।

भवदीय
अ० ल० सेठी
प्रधानमंत्री
प्रा० कां० कमेटी

यह पत्र प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी राजपूताना, मध्यभारत और अजमेर मेरवाड़ा के मंत्री श्री अर्जुनलाल जी सेठी ने स्वामी जी के नाम अजमेर से दिनांक २३-११-१९२५ को लिखा है—

निवेदन है कि नव-निर्वाचित प्रान्तीय कमेटी ने नियम विधान के अनुसार आपको प्रान्तीय कमेटी का सदस्य बनाया है और कमिटी प्रार्थना करती है कि इस देश-सेवा के कार्य को आप स्वीकार करेंगे एवं प्रान्त को कृतज्ञ करेंगे।

ता० २ दिसम्बर सन् १९२५, मंगलवार की रात्रि को ७ बजे प्रान्तीय कमिटी का अधिवेशन कमिटी के दफ्तर वाके मदारगेट में होगा जिसमें प्रान्तीय पदाधिकारी और ऑल इंडिया के मेम्बरों का चुनाव होगा। अवश्य पधारें।

(नगर-श्री, पत्र सं० २४७)

आपका सेवक
अर्जुनलाल सेठी
मंत्री

यह पत्र श्री अर्जुनलाल जी सेठी मंत्री, प्रा० कां० कमेटी ने अजमेर कार्यालय से दिनांक ५-५-२६ को श्री स्वामी जी के नाम लिखा है—

प्रा० कां० कमिटी कार्यालय
अजमेर
५-५-२६

निवेदन यह है कि "रा० म० अजमेर-मेरवाड़ा" प्रान्तीय कां० कमिटी का अधिवेशन तारीख १२ मई सन् १९२६ बुधवार की रात को ८ बजे से मौलवी मिर्जा अबदुल कादिर बेग के मकान पर अजमेर में होगा। एजण्डा निम्नलिखित है—

१. आगामी इलेक्शन में अजमेर-मेरवाड़े से एसम्बली के लिए प्रा० कां० कमिटी किसकी सिफारिश करे इस पर गौर और नामजदगी।
२. प्रा० कां० कमिटी के आमद और खर्च के हिसाब पर गौर और स्वीकृति।
   (क) तारीख १ अक्टूबर सन् १९२४ से ३० सितम्बर सन् १९२५ तक

३. प्रेसीडेण्ट की इजाजत से अन्य आवश्यकीय विषय भी उपस्थित किये जा सकते हैं ।

आपकी उपस्थिति आवश्यक है, आशा है आप नियत समय पर अवश्य पधारेंगे ।

(नगर-श्री पत्र सं० १९२)

भवदीय
अर्जुनलाल सेठी
मन्त्री प्रा० कां० कमिटी

यह पत्र अजमेर से श्री अर्जुनलाल जी सेठी ने कांग्रेस आफिस अजमेर से दिनांक १-७-२८ को स्वामी जी के नाम लिखा है--

ॐ

अजमेर
१-७-२८

स्वामीजी, वन्दे० ।

एक अर्से में आपको पत्र लिख रहा हूँ । आपके समाचार स्वा० नृसिंहदेव जी से मिलते रहते हैं ।

आपको विदित है मैं सारी उम्र हो गई बराबर देश-सेवा में लगा हुआ हूँ । अब मेरी उम्र ५० के करीब हो गई और मेरा पुत्र भी चल बसा । आजकल मैं अर्थकष्ट से बहुत ही घिर गया हूँ । मैं अपने सिद्धान्तों का कैसा कठोर हूँ, यह आप जानते हैं; इसी कारण न तो किसी लीडर का पुछल्ला हो सकता और न दूकानदारी ही चाहता । सब दरवाजे बन्द हो गये, ऐसी हालत में यही सूझा कि आप किसी उदार सज्जन से मेरी इस समय १००) रु० से सहायता करा दो तो महती कृपा हो ।

आखिर राजपूताना वालों को कुछ तो अपने कार्यकर्ताओं का भरण-पोषण करना चाहिए । विशेष क्या लिखूँ । असहाय दशा में आपको लिखा है ।

(नगर-श्री, पत्र सं० ८)

भवदीय
अर्जुनलाल सेठी
कांग्रेस आफिस
अजमेर

स्वामी जी एक सच्चे और विश्वासपात्र मित्र थे। उनके सहयोगी कार्यकर्त्ता और साथी मित्र उनमें पूर्ण विश्वास रखते थे और इसलिए अपने मन की बात उनके सामने निःसंकोच कह देते थे, और स्वामी जी भी भरसक अपने साथियों और मित्रों की सहायता करने की चेष्टा करते थे। उपरोक्त पत्र को पढ़कर स्वामी जी की आँखें अपने मित्र के कष्टों पर अवश्य छलछला आई होंगी लेकिन साथ ही उन्हें गर्व भी कम न हुआ होगा कि उनके साथी कितने सच्चे, दृढ़ और निस्पृही हैं। पुत्र-वियोग और आर्थिक कष्टों से घिर रहने पर भी सेठी जी की दृढ़ता स्पृहणीय है। वास्तव में ऐसे ही त्यागी और खरे कार्यकर्त्ताओं के बलिदानों से भारत को आजादी के दर्शन नसीब हो सके।

झंडा-कांड

२५ दिसम्बर सन् १६२६ से लाहौर में कांग्रेस का ४४वाँ अधिवेशन पं० जवाहरलाल जी की अध्यक्षता में शुरू हुआ । ३१ दिसम्बर की १२ बजे रात को भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के संबंध में प्रस्ताव पास किया गया । कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति ने निश्चय किया कि ता० २६ जनवरी १६३० को देश भर में स्वाधीनता दिवस मनाया जावे और एक ऐसा वक्तव्य भी प्रकाशित किया जिसे उस दिन देश के हर भाग में पढ़ कर दोहराने की आज्ञा दी । लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में गांधी जी ने ध्वजोत्तोलन सन्देश देते हुए १ जनवरी १६३० को कहा—"आइये आज इस झंडे के नीचे खड़े होकर हम इस बात की प्रतिज्ञा करें कि जब तक हमें पूर्ण स्वतंत्रता नहीं मिल जाएगी तब तक हम चैन से नहीं बैठेंगे......"इसके फलस्वरूप ता० २६ जनवरी सन् ३० को देश में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया ।

इस दिन महंत गणपतिदास जी, वैद्य भालचन्द्र जी, शर्मा यति रावतमलजी, घनश्यामदास जी पोद्दार व अन्य कुछ साथी स्टेशन की ओर भ्रमण के लिए गये थे । वैद्य भालचन्द्र जी की बगीची (जो धर्मस्तूप के नजदीक ही है) में बैठ कर सब लोगों ने धर्मस्तूप पर तिरंगा फहराने का विचार किया । स्टेशन जाकर एक आदमी रेलवे की झंडियों में से लाल व हरे रंग के दो टुकड़े ले आया और सफेद कपड़ा महंत जी ने अपने रूमाल से फाड़ कर दे दिया । कीकर के कांटों से झंडे को तैयार किया और एक सरकंडे में उसे फँसा कर धर्मस्तूप पर राष्ट्रीय गान गाते हुए फहरा दिया । नगर में यह खबर शीघ्र फैल गई और लोगों ने कहा कि चूरू स्वतंत्र हो गया ।

झंडा फहराने के बाद महंत जी व उनके कुछ साथी तो पहली गाड़ी से ही चले गये लेकिन पीछे से इसकी बहुत कड़ी प्रतिक्रिया हुई । राजगढ़ से नाजिम बी० पोचिया आ गये और बड़ी सरगर्मी से खोजबीन शुरू हुई । झंडा लगाने में शामिल शेष लोग भी पलायन कर गये । गिरफ्तारी तो कोई नहीं हो सकी लेकिन महंत जी के बड़े मन्दिर को जब्त कर लिया गया और स्वामीजी की पार्टी के ३ व्यक्ति सर्वश्री चन्दनमल जी बहड़, वैद्य शान्त शर्मा जी, और वैद्य भालचन्द्र जी को म्युनिसिपैलिटी की सदस्यता से पृथक कर दिया गया ।

महाराजा गंगासिंह जी भी स्पेशल ट्रेन से दिल्ली जाते हुए चूरू रुके

और उन्होंने "गाँधी के चेलों" को बहुत कड़ी चेतावनी दी। कुछ लोग कहते हैं और सर्वहितकारिणी सभा की ओर से लोकनेता स्व० जयनारायण जी व्यास को दिये गये अभिनन्दनपत्र में भी लिखा है कि धर्मस्तूप पर झंडा स्वामी जी के नेतृत्व में फहराया गया था, लेकिन यह सर्वथा गलत है। स्वामी जी उस वक्त चूरू में थे ही नहीं, कुंभ प्रयाग गये हुए थे और यदि वे ऐसा करते तो यह निश्चय है कि वे झंडा फहराने के बाद पलायन कदापि नहीं करते।

कुंभ प्रयाग से स्वामी जी बैजनाथ जी चले गये थे और उनका विचार वहाँ से दक्षिण-यात्रा पर जाने को था लेकिन जब उन्हें इस बात का पता लगा तो वे चूरू आ गये। उन दिनों उन्हीं के प्रयत्न से धर्मस्तूप के पास इन्द्रमणि पार्क के निर्माण की बात चल रही थी सो उन्होंने बीकानेर के तत्कालीन दीवान सर मनुभाई मेहता नाइट, सी० एस० आई० को इन्द्रमणि पार्क का शिलान्यास करने के लिए चूरू निमंत्रित किया। सर मनुभाई अपनी धर्मपत्नी व २ पुत्रियों हंसा मेहता आदि के साथ चूरू आये। स्वामी जी ने मेहता जी से पार्क का शिलान्यास करवाया और अनंतर धर्मस्तूप के ऊपर उनके तथा स्वामी जी के भाषण हुए। श्रीमती लेडी मेहता द्वारा सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला में कन्या शिल्पशाला का उद्घाटन करवाया गया जिसका निर्माण श्री घनश्यामदास जी पोद्दार चूरू निवासी ने अपनी स्व० माता जी श्रीमती मानादेवी की स्मृति में करवाया था।

शाम को सर्वहितकारिणी सभा के आगे विराट सभा हुई, जिसमें मेहता जी व स्वामी जी के भाषण हुए। स्वामी जी ने चूरू के विगत इतिहास और सभा के कार्यों पर कुछ प्रकाश डाला। झंडा-कांड की घटना का भी उन्होंने स्पष्टीकरण किया। उन्होंने उन राज-कर्मचारियों की खूब भर्त्सना की जो जन-सेवा के कार्यों के लिए भी लोगों को डराने-धमकाने और कष्ट देने से नहीं चूकते थे।

हटा दिया गया था उन पर फिर कभी मेम्बर न हो सकने की जो पाबन्दी लगा दी गई थी वह हटा दी । श्री घनश्यामदास जी बिड़ला ने भी इस कार्य में काफी सहयोग दिया था ।

उपरोक्त संदर्भ में यहाँ कुछ पत्र दिये जा रहे हैं---

निम्न पत्र स्वामी गोपालदास जी ने अपने अभिन्न मित्र और सहयोगी कार्यकर्त्ता श्री नृसिंहदेव जी सरस्वती को बैजनाथ जी से दिनांक २०-२-३० को लिखा है---

श्री स्वामी जी महाराज, नमोनमः ।

बहुत दिनों से आपका कोई कुशल समाचार नहीं आया । मैंने आपको एक पत्र प्रयाग से दिया था, उसका भी उत्तर नहीं आया । मैं प्रयाग कुम्भ मेले पर एक मास तक वहाँ ठहरा और फिर काशी विश्वविद्यालय देखता हुआ यहाँ आया हूँ । १०-१२ दिन यहाँ ठहरने का विचार है और एक विचार दक्षिण-यात्रा करने का भी है और साथ ही नेपाल-यात्रा का है । प्रयाग मेला इस वर्ष बहुत बड़ा हुआ, आप भी आते तो ठीक था । आपका विचार दक्षिण-यात्रा का फिर हो तो हमारे साथ चलने में बड़ा आनन्द आवेगा । आप मुझे इसका उत्तर शीघ्र दें । मेरा विचार यहाँ से लौटते समय सीधा देश आने का हो गया तो जयपुर होता हुआ आऊँगा, आपका पत्र आने पर । और सब आनन्द है ।

आपका---
स्वामी गोपालदास
ठि० सूरजमल नागरमल
मु० बैजनाथधाम

(नगर-श्री, पत्र सं० ४०६)

उपरोक्त पत्र के लिखने तक स्वामी जी को चूरू के झंडा-कांड की कोई सूचना नहीं मिली थी लेकिन सूचना मिलने पर वे चूरू आये और उन्होंने प्रयत्न करके महंत जी को बड़ा मन्दिर वापिस दिलवाया । इसके बाद उन्होंने चूरू से स्वामी नृसिंह देव जी को दो पत्र जयपुर लिखे जो निम्न हैं ।

श्री स्वामी जी महाराज, नमोस्तु ।

बहुत दिन से आपका कृपापत्र नहीं आया और मैं भी नहीं दे सका, इसका कारण यह हुआ कि यहाँ पर धर्मस्तूप के ऊपर कई एक अनसमझ आदमियों ने एक धजा लगा दी थी, २६ जनवरी को । उस पर राज के स्वार्थी कर्मचारियों ने अपना द्वेष निकालने के कारण अपनी पार्टी के ५-६ आदमियों का नाम जिनमें महन्त, शान्त, भाल आदि को लपेट लिया और यहाँ तक जाल रचा गया कि अचानक बड़े मन्दिर को और सारी चीजों को जब्त कर लिया । फिर इसमें भारी उद्योग किया तथा चूरू की जनता ने भी साथ दिया और पूरा आन्दोलन किया गया । इसका फल यह हुआ कि बीकानेर राज्य का दीवान खुद चूरू आकर सब बातें देखीं और मंदिर को वापिस दे दिया गया है । आप आजकल क्या करते हैं ? क्या विचार है ? कोई यात्रा होगी या नहीं ।

(नगर-श्री, पत्र सं० ४१०)

श्री मान्यवर स्वामी जी महाराज,

सादर नमोस्तु ।

आज आपका कृपापत्र मेरे पत्र के उत्तर में मिला । महंत आदि पर अभियोग तो लगा दिया था, पर गिरफ्तार किसी को नहीं किया । केवल मन्दिर जब्त तथा शान्त आदि तीन को म्युनिसिपल बोर्ड से अलग किया था । फिर दीवान साहब चूरू आये थे उनको असलियत समझाने पर मंदिर वापिस दे दिया और झगड़ा शान्त हो गया । आपका विचार आबू जाने का है सो ठीक है, मेरी भी इच्छा उसको देखने की है सो मैं यहाँ से जेष्ठ कृष्ण में जयपुर आ जाऊँगा सो साथ में चलेंगे । वर्तमान युद्ध में यदि विजयलक्ष्मी अवश्य ही सामने खड़ी हो तो आपको कायरता छोड़ कर कूद पड़ना चाहिये, नहीं शान्ति से समय व्यतीत कीजिएगा । और सब आनन्द है, सबने आपको नमस्ते कहा है ।

उन दिनों ब्रिटिश भारत में सत्याग्रह आन्दोलन जोरों से चल रहा था और महात्मा जी का इतिहास-प्रसिद्ध दाँडी-कूच हो चुका था और उन्होंने नमक कानून तोड़ दिया था। इसी सत्याग्रह संग्राम में कूद पड़ने का संकेत स्वामी जी ने उपरोक्त पत्र में किया है।

यह पत्र मास्टर श्री राम जी ने कलकत्ता से दिनांक २४-४-३० को स्वामी जी के नाम इसी प्रसंग में लिखा है—

ॐ

कलकत्ता
२४-४-३०

नमोनमस्ते।

आज मैंने बालचंद जी के पास जाकर वह समस्त चिट्ठी पढ़ी जो शान्त ने भाषणों की कापी समेत भेजी है। सर मनुभाई दीवान ने जो भाषण दिये हैं वह बुद्धिमत्तापूर्ण हैं। ब्रिटिश इंडिया में तो झंडा लगाना इन्होंने ठीक मान लिया है। दोनों जमीनों के लिए तथा टाऊनहाल के लिए एक प्रकार से मंजूरी-सी ही दे गये हैं। मजा तो इसी में है कि म्यूनि० का स्थान भी इन तीनों को पूर्ववत मिल जाए। आइंदा को प्रजा को तैयार करना जरूरी है।

और एक विशेषता और भी ध्यान में दी होगी, वह उस पार्टी की है जो साधारण समय तो जय ठाकुर जी की करते रहते हैं और विपत्ति के समय कहते नहीं चूकते कि अब की बार सभा की ईंट-ईंट उखाड़ दी जाएगी। यह लोग कितनी उछल-कूद मचाते हैं, कितनी शीरणी बाँटते हैं, वह भी देखने योग्य ही होती है।

राजपत्र गजट में जो अधिकारियों के सम्बन्ध में रिमार्क दिया हुआ है वह आइंदा के लिए है वा अभी जो शिकायतें आई हैं उनके सम्बन्ध में? यह भी एक खटका ही रह गया। मेरी समझ में तो दीवान साहब इस खटके को भी दूर कर देंगे। उन्होंने जो हुक्म महंत जी के बारे में लिखा है उसमें साफ-साफ Unauthorized order (अनओथोराइज्ड आर्डर) लिखा है, इससे पता चलता है कि नीचे वालों ने ही यह सब आज्ञा अंधाधुंध चला दी थी। उस दिन बिड़ला पार्क में कह भी गये थे कि मंदिर की जब्ती का हुक्म नहीं दिया है। गरमी तो बहुत पड़ती है, १०४ डिग्री तक रहती है।

श्रीराम

(नगर-श्री, पत्र सं० ११२).

सन् १९३१ में लंदन में दूसरी गोलमेज कान्फ्रेन्स हुई। उसमें महाराजा श्री गंगासिंह जी भी देशी राज्यों के प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए थे। इस सम्बन्ध में स्व० लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास के श्रद्धांजलि स्मृति-ग्रन्थ "धुन के धनी" में विद्वान् सम्पादक श्री सत्यदेव विद्यालंकार बीकानेर की तत्कालीन परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं—

बीकानेर राज्य की स्थिति जोधपुर राज्य से भी कहीं दमघोटू थी। १९२७ में बम्बई में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के वार्षिक अधिवेशन में व्यास जी[1] को उसकी राजपूताना शाखा का मंत्री नियुक्त किया गया था। राजस्थान के अनेक राज्यों में परिषद् के कुछ सदस्य बनाये गये थे। बीकानेर के स्वामी गोपालदास जी, श्री खूबराम जी सराफ और श्री सत्यनारायण जी सराफ आदि ने बड़े उत्साह से इस काम में उनका हाथ बटाया था। मुकदमे के दायर करने का मुख्य कारण यह था कि बीकानेर महाराजा गंगासिंह जी दूसरे गोलमेज सम्मेलन में शामिल होने के लिए जब लन्दन गये थे, तब अखिल भारतीय देशी राज्य-लोक परिषद् का एक विशेष शिष्ट-मण्डल भी लन्दन इस हेतु भेजा गया था कि वह राजाओं के मुकाबले में जनता के दृष्टिकोण को सम्मेलन के सदस्यों के सम्मुख उपस्थित्त करे। 'जन्मभूमि' के यशस्वी सम्पादक श्री अमृतलाल सेठ, सौराष्ट्र के सुप्रसिद्ध बैरिस्टर श्री चूडगर और पूना के प्रो० अभ्यंकर उस शिष्ट-मंडल में शामिल थे। उन्होंने बीकानेर और भोपाल राज्यों के सम्बन्ध में विशेष पैम्फलेट तैयार किये थे। महात्मा गाँधी के परामर्श पर भोपाल-सम्बन्धी पैम्फ-लेट को तो प्रकाशित नहीं किया गया, किन्तु बीकानेर सम्बन्धी पैम्फलेट को साइक्लोस्टाइल करके सम्मेलन के सदस्यों में बाँटा गया। गोलमेज सम्मेलन के अध्यक्ष लार्ड सेंकी ने वह पैम्फलेट महाराज गंगासिंह जी के सामने ठीक उस समय उपस्थित किया, जब वे देशी राज्यों के भारतीय संघ में शामिल होने की ब्रिटिश सरकार की योजना के समर्थन और निजाम हैदराबाद के दीवान सर अकबर हैदरी के विरोध में जोशीला भाषण दे रहे थे। उस पर उन्होंने यह भी लिख दिया कि "बीकानेर महाराजा को इसका जवाब देना चाहिए।" उस पैम्फलेट में बीकानेर राज्य के शासन की तीव्र आलोचना देखकर महाराजा आपे

---

१. श्री जयनारायण जी व्यास सन् १९१९ में जब मैट्रिक की परीक्षा देने के सिलसिले में दिल्ली गये थे, तब वहाँ घटी एक घटना से प्रभावित होकर सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में उतर पड़े थे, किन्तु स्वामी जी ने इससे एक युग पूर्व चूरू में सत्य-अहिंसा के सिद्धान्तों पर आधारित सर्वहित-कारिणी सभा की स्थापना कर दी थी।

से बाहर हो गये और लन्दन से लौटते-न-लौटते उन्होंने इस संगीन मुकदमे की भूमिका तैयार कर ली। अभियुक्तों की जिन प्रवृत्तियों को राज्य के लिए 'खतरनाक' बताया गया था वे विस्मयजनक थीं। १० मार्च १९३२[१] को नीचे की अदालत ने अभियुक्तों को दोषी ठहराकर मामला सेशन अदालत के सुपुर्द कर दिया। सेशन जज की अदालत जेल के अहाते में ही कायम की गई थी।[२] मानो, यह मुकदमा भी लाहौर में अमर शहीद सरदार भगतसिंह तथा उनके साथियों पर चलाये गये षड्यंत्र के समान ही भयानक था। वह भी वहाँ की बोस्टल जेल में ही बनाई गई विशेष अदालत में ही चलाया गया था। अभियुक्तों, विशेषतः श्री खूबराम जी सराफ, स्वामी गोपालदास जी और श्री सत्यनारायण जी सराफ पर राज्य की वक्रदृष्टि इसलिए थी कि उन्होंने लोकनायक श्री जयनारायण व्यास का साथ देकर राज्य में स्थान-स्थान पर अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के सदस्य बनाये थे, और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को दिये गए स्मरणपत्र पर हस्ताक्षर करवाये थे। लन्दन में जो पैम्फलेट बाँटा गया था, उसके लिए आवश्यक सामग्री व्यास जी ने अपने इन्हीं साथियों से जुटाई थी। बीकानेर महाराजा तो अपने राज्य में एक पत्ते का भी हिलना सहन नहीं कर सकते थे, उनको ये 'भयावह अथवा 'खतरनाक' प्रवृत्तियाँ कैसे सहन हो सकती थीं? यह मुकदमा बीकानेर राज्य की तत्कालीन दमघोटू स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश डालता है।[३]

को वे कतई ठेस पहुँचाना नहीं चाहते थे और न इस प्रकार पैम्फलेट बाँटने में उनकी सहमति ही थी। अस्वस्थ होने के कारण महाराजा सम्मेलन की समाप्ति के पूर्व ही बीकानेर लौट आये। पहली दिसम्बर सन् ३१ को गोलमेज सम्मेलन समाप्त हुआ और गांधी जी २८ दिसम्बर को बम्बई में उतरे। लेकिन इसके पूर्व ही ब्रिटिश सरकार का दमनचक्र घूमने लगा और गाँधी जी के पहुँचने से पहले ही पं० जवाहरलाल जी नेहरू और पुरुषोत्तमदास जी टंडन आदि प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। ४ जनवरी को बड़े तड़के महात्मा गाँधी और सरदार पटेल भी गिरफ्तार हो गये। तमाम कांग्रेस कमेटियाँ तथा उनसे सम्बन्ध रखने वाली दूसरी संस्थाओं को गैरकानूनी करार दिया गया और एक के बाद एक कठोरतर आर्डिनेंस निकाले गये।[1] इससे देशी राज्यों को भी दमन के लिए बढ़ावा मिला। इसी समय बीकानेर राज्य में पंजाब से आने वाले गेहूँ पर बड़ी भारी जकात लगाई गई व अन्य भी कई वस्तुओं पर जकात बढ़ाई गई। इसके विरोधस्वरूप चूरू में ११ जनवरी सन् ३२ को एक सार्वजनिक सभा हुई जिसने बीकानेर राज-विद्रोह और षड्यन्त्र केस के लिए तैयार किये गये बारूद के ढेर में आग लगा दी।

रोटी पर लगे इस भारी टैक्स के कारण जनता में बड़ा आक्रोश था। सेठ भालचंद जी कोठारी उन दिनों बीकानेर राज्य की लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य थे सो उनके सभापतित्व में ११ जनवरी को चूरू के उतराधे बाजार में एक सार्वजनिक सभा बुलाई गई। स्वामी जी तब बड़े मन्दिर में थे, शाम हो चली थी और वे हनुमानगढ़ी जाने की तैयारी में थे, तभी मालचंद जी कोठारी का जमादार स्वामी जी को बुलाने के लिए आया, किन्तु स्वामी जी नहीं गये क्योंकि वे जानते थे कि लोग क्षणिक जोश में आकर यह मीटिंग कर रहे हैं, जिसका कोई लाभ नहीं है। किन्तु स्वामी जी के बिना मीटिंग निष्प्राण लग रही थी। अतः गणपतराय ओझा उन्हें बुलाने के लिए बड़े मंदिर में आये, स्वामी जी बीड़ जाने की तैयारी में थे और खूँटी से साफा उतार कर सिर पर बाँध रहे थे, इतने में विश्वेश्वरदयाल जी खेमका भी स्वामी जी को लेने आ पहुँचे। उस दिन स्वामी जी की मीटिंग में जाने की इच्छा नहीं थी, उन्हें साफ तौर पर आशंका हो गयी थी कि इस मीटिंग का परिणाम अच्छा नहीं होगा। किन्तु दो भले आदमियों के बुलाने के लिए आ जाने पर स्वामी जी मीटिंग में शरीक हो गये।

सभापति के भाषण के बाद स्वामी जी उठे और उन्होंने बहुत सुन्दर और सारगर्भित भाषण दिया। इसके बाद सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास किया गया

---

१. राजनैतिक भारत, पृ० ८३-८४

जिसमें जकात माफ करने की प्रार्थना महाराजा से की गई और इस सम्बन्ध में महाराजा से एक डेपुटेशन के मिलने की आज्ञा माँगी गई। प्रस्ताव की प्रति महाराजा की सेवा में तार द्वारा प्रेषित की गई। एल० एन० बी० हाईस्कूल के हेडमास्टर ज्ञानचंद जी ने तार लिखा; सरदार विद्यालय के हेडमास्टर सोहनलाल जी सेवग व प्यारेलाल जी मास्टर ने सभा की कार्यवाही की रिपोर्ट स्वामी जी के भाषण सहित "प्रिंसली इंडिया" में प्रकाशनार्थ भेजी।

लेकिन मीटिंग का परिणाम स्वामी जी की आशंका के अनुसार सर्वथा प्रतिकूल निकला। तार पाकर महाराजा का गुस्सा एकदम बढ़ गया। कुछ उच्च राज्याधिकारी तो इसी अवसर की ताक में थे। उपयुक्त अवसर से लाभ उठाने के लिए वे उतावले हो उठे। मेजर महाराज मान्धातासिंह (सैलाना राज्य के राजा जसवंतसिंह जी के दूसरे पुत्र) ने इस मामले में विशेष दिलचस्पी ली। महाराजा से अख्तियार प्राप्त कर वे दल-बल सहित बीकानेर से चूरू की ओर चल पड़े। १३ जनवरी को मान्धातासिंह चूरू पहुँचे और राजकीय कोठी में उतरे। नगर के सेठ-साहूकारों व अन्य प्रतिष्ठितजनों को कोठी में बुलवाकर डराया-धमकाया गया। स्वामी जी तब हनुमानगढ़ी की बीड़ में थे। वैद्यशान्त शर्मा जी ने बतलाया कि मैं मान्धातासिंह के आने की खबर स्वामी जी को देने के लिए हनुमानगढ़ी गया, स्वामी जी दतौन कर रहे थे। मैंने उनसे कहा कि मान्धातासिंह आये हैं। सुनकर उन्होंने बड़ी बेपरवाही से संक्षिप्त उत्तर दिया, आने दो। शान्तजी कुछ और कहने लगे तो स्वामी जी ने कहा कि जब इतना डर लगता है तो मीटिंग क्यों बुलाई थी ?

तलाशी राजवी चन्द्रसिंह जी ने उनकी अनुपस्थिति में बड़ी सख्ती के साथ ली जो बारह बजे दोपहर से रात के १२ बजे तक होती रही। वैद्य भालचन्द्र जी शर्मा चूरू में नहीं थे तो उनके घर का ताला तोड़ कर तलाशी ली गई।

महंत गणपतिदास जी, वैद्य शान्त शर्मा जी और मास्टर ज्ञानचंद जी की भी तलाशियां हुई। स्वामी जी की तलाशी के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उसी रात को महाराजा गंगासिंह जी की स्पेशल चूरू होकर गुजरी और महाराजा ने चूरू के लोगों को सख्त धमकियाँ और कड़ी चेतावनियाँ दीं। स्वामी जी गिरफ्तार करके बीकानेर ले जाये गये, इसी प्रकार महंत गणपतिदास जी, वैद्य शान्त शर्मा जी और मास्टर ज्ञानचंद जी को गिरफ्तार करके बीकानेर पहुँचाया गया। चन्दनमल जी बहड़ को १५ जनवरी की शाम को गिरफ्तार किया गया। सत्यनारायण जी सराफ को १३ जनवरी की रात को रतनगढ़ में, खूबराम जी को भादरा में और बद्रीप्रसाद जी सरावगी तथा लक्ष्मीचंद जी सुराना को राजगढ़ में गिरफ्तार किया गया।

इन गिरफ्तारियों की गूँज सर्वत्र सुनाई दी। अनेक पत्रों ने इन खबरों को प्रमुखता से प्रकाशित किया। 'अर्जुन', (२० जनवरी) 'मिलाप', (२८ जनवरी) 'प्रताप', (२१-१-३२) 'प्रिंसली इंडिया', (३ फरवरी) 'लोकमान्य', और 'हिन्दुस्तान टाइम्स' आदि अनेक पत्रों में ये खबरें छपीं। 'लोकमान्य' (ता० २१-१-३२) ने लिखा---बीकानेर रियासत में गेहूँ की आयात पर १) रुपया जकात लगाई गई। इसके अलावा चीनी इत्यादि पर भी जकात बढ़ा दी गई है। इस नई जकात के लगते ही शहर में खलबली मच गई। जगह-जगह इसका तीव्र विरोध होने लगा। चूरू में इसका विरोध करने के लिए लेजिस्लेटिव एसेम्बली बीकानेर के मेम्बर सेठ भालचंद कोठारी के सभापतित्व में सर्वसाधारण की सभा की गई। उपस्थिति १००० से अधिक थी। सभापति जी ने अपना लेखित वक्तव्य पढ़ सुनाया जिसका आशय इस प्रकार था....। सभापति जी के बैठ जाने के उपरान्त स्थानीय वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता स्वामी गोपालदास जी ने बतलाया कि महाराज साहब, जो दुनिया के सामने अपने राज्य की लेजिस्लेटिव कौंसिल स्थापित करके प्रजा के प्रति जिम्मेदारी दिखाने का दावा करते हैं, यह कहाँ तक सत्य कहा जा सकता है? ऐसी-ऐसी असाधारण कार्रवाइयाँ अचानक हो गईं और कौंसिल के मेम्बरों को पता तक नहीं कि यह सब क्या हो रहा है। जैसा कि हमने यहाँ पर अनुभव किया है, अब दुनिया देख ले कि महाराजा साहब की स्थापित की हुई यह राजसभा किस मर्ज की दवा है। इसके अतिरिक्त स्वामी जी ने रियासत के प्राइम मिनिस्टर सर मनू भाई के दिये हुए आश्वासनों का जिकर करते हुए कहा कि जब प्राइम मिनिस्टर साहब यहाँ पधारे थे तो

उन्होंने साफ शब्दों में स्वीकार किया था कि बीकानेर की प्रजा को अगर कोई कष्ट है तो वह जकात का ही है और उससे भी प्रजा को बहुत शीघ्र मुक्त कर दिया जावेगा। प्रजा इसी शुभ-मुहूर्त के आगमन की आशा में टकटकी लगाये हुए थी कि यकायक उनकी आशाओं के बिलकुल प्रतिकूल यह निर्दय कर प्रजा के विरोध करने पर भी लगा दिया गया। इसे महाराजा साहब की प्रजा सहने में असमर्थ है।

इसके बाद सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास किया गया जिसमें महाराजा साहब से इस लगान को माफ फरमाने की प्रार्थना की गई तथा एक डेपुटेशन मिलने की भी आज्ञा माँगी गई। उपरोक्त प्रस्ताव की एक नकल तार द्वारा महाराजा साहब के पास भेज दी गई। परंतु इसका परिणाम बिलकुल विपरीत हुआ। ठीक तीसरे ही दिन रेवेन्यू ऑफीसर मान्धातासिंह पुलिस के दलबल के साथ कस्बा चूरू में आ धमके। प्रजा के हृदयों की दुःख-भरी आहों को भी निकलने से दबाने की कोशिश की गई। शहरवालों ने उनके सामने भी दुःख प्रकट किया परन्तु जवाब मिला कि तुम गोली चलाये बिना थोड़े ही रहोगे। जुबान हिलाने पर ही गोली का भय दिखलाया गया। इधर यह सब काम समाप्त होते-होते शहर में पुलिस ने नाकाबंदी आरंभ कर दी। प्रत्येक संस्था पर पुलिस का पहरा हो गया। फौरन स्वामी गोपालदास जी, वैद्य भालचन्द जी, बड़े मन्दिर के महंत गणपतिदास जी, पं० शान्ति शर्मा, चन्दनमल बहड़ तथा मास्टर ज्ञानचंद जी के घरों की तलाशियाँ लेने के लिए पुलिस सर्च वारंट लेकर आ पहुँची। वैद्य भालचंद जी के तो अनुपस्थिति में उनके घर के कोने-कोने की तलाशी ली गई परन्तु एक भी मनोवांछित वस्तु नहीं मिली...मुख्य करके मान्धाता सिंह जी की नजर भी उपरोक्त सज्जनों पर कई दिनों से थी। यह वही मान्धातासिंह हैं, जिनका फेवरेट होने के कारण बी० पोचिया के विरुद्ध इतनी शिकायत होने पर भी उस पर कुछ विचार नहीं किया जा रहा है। ऐसी अनुचित कार्रवाही के कारण जनता में घोर असंतोष व सनसनी फैली हुई है।[1]

पूरे तीन मास तक इन लोगों को विना मुकदमा चलाये हवालात और काल-कोठरियों में रखने के बाद १३ अप्रैल को उनके खिलाफ बीकानेर के डिस्ट्रिक्ट जज बाबू बृजकिशोर चतुर्वेदी की इजलास में निम्न ढंग पर इस्तगासा दायर किया गया—

कुँवर सबलसिंह जी, डिप्टी इन्सपेक्टर-जनरल आफ पुलिस राजश्री बीकानेर
—मुस्तगीस

वनाम

१. खूबराम वल्द रामनारायण, जात सराफ, साकिन भादरा।
२. सत्यनारायण वल्द घनश्यामदास, जात सराफ, साकिन भादरा वकील, साकिन जो रतनगढ़ में वकालत करता था।
३. गोपालदास स्वामी, चेला मुकन्ददास, साकिन चूरू।
४. चन्दनमल वल्द वंशीधर, जात ब्राह्मण, साकिन चूरू।
५. बद्रीप्रसाद वल्द मुन्नालाल, जात सरावगी, साकिन राजगढ़।
६. लक्ष्मीचन्द वल्द गुलजारीमल जात सुराणा, साकिन राजगढ़।
७. सोहनलाल वल्द आशाराम, जात सेवक—हेडमास्टर, एस० एस० विद्यालय चूरू।
८. प्यारेलाल वल्द डालचन्द, जात ब्राह्मण, साकिन फदरा (जिला मथुरा) हाल मास्टर, एस० एस० विद्यालय चूरू।

—मुलजिमान

जरायम जेर दफा ३७७ (ग), व १२४ (क) व १२० (ख), मजमूआ ताजीरात बीकानेर।

बयान इस्तगासा का आशय इस प्रकार है—

१. यह कि मुलजिमान खूबराम व गोपालदास ने बाहम व उन मालूम या नामालूम अशखास के साथ, कि जो रियासत बीकानेर के अन्दर या बाहर

पं० शान्त शर्मा जी का कथन है कि मालवीय जी ने डा० मुंजे को महाराजा गंगासिंह जी के पास यह समझाने के लिए भेजा था कि चूरू के स्वामी गोपालदास जी ने कोई षड्यंत्र नहीं रचा है, यह सब कुछ राज-कर्मचारियों की साजिश है, लेकिन सरकार ने उन्हें ससम्मान लौटा दिया।

हैं एक बहुत अरसे से साजिश मुजरिमान कर रखी थी। लेकिन सत्यनारायण मुलजिम, भतीजा खूबराम मुलजिम के मार्च सन् १६३१ के महीने में या उसके करीब वकालत करने के वास्ते कस्बा राजगढ़ में मुकीम होने के समय से नतीजा यह हुआ कि कुल आठों मुलजिमान मजकूरावाला के दरम्यान एक बाकायदा व बड़ी साजिश मुजरिमाना कायम हो गई और मुलजिमान मजकूरावाला ने आपस में और नीज व कुछ दूसरे अशखास के साथ साजिश की और नाजायज फैल नाजायज जरियों से कराये गये और श्रीजी साहब दाम इकबालहू व उनकी गवर्नमेंट की निस्बत नफरत या हिकारत पैदा की और खयालात बेदिली को उकसाया और इजाला हैसियत उर्फी के फैल किये।

२. यह कि मुलजिमान नं० १ लगायत ८ ने माह मई या जून सन् १६३१ ई० में या उसके करीब और उसके बाद वक्तन-फवक्तन कुछ अखबारों, मस्लन "प्रिंसली इंडिया" दिल्ली, "त्यागभूमि" अजमेर, "रियासत" दिल्ली वगैरह के सम्पादकों व अन्य शख्सों के साथ साजिश करके श्रीजी साहब बहादुर व उनकी गवर्नमेंट के खिलाफ राजविद्रोह फैलाने वाले, इज्जतहतक करने वाले व इजाला हैसियत उर्फी के कुछ लेख प्रकाशित कराये।

३. यह कि मुलजिमान नं० १ लगायत ६ ने एक शख्स रामस्वरूप शर्मा के साथ, कि जो सेक्रेटरी "कष्ट निवारक-समिति" आगरा के नाम से मशहूर है, साजिश की और रामस्वरूप मजकूर माह अगस्त सन् १६३१ ई० में या उसके करीब "खुली चिट्ठी नं० १ बहुजूर श्रीजी साहब बहादुर दाम इकबालहू राज श्री बीकानेर" के शीर्षक का एक लेख प्रकाशित कराने के वास्ते रियासत बीकानेर में आया और इसी गरज के लिए मुलजिमान ने इलाका रियासत हाजा के अन्दर लेख का मस्विदा तैयार किया और कराया जो माह सितम्बर सन् १६३१ ई० में या उसके करीब रियासत में व उसके बाहर प्रकाशित किया और तकसीम किया गया और श्रीजी साहब व गवर्नमेंट के खिलाफ राजविद्रोह व इजाला हैसियत उर्फी या इज्जतहतक के जुर्म का इर्तकाब किया।

कान्फ्रेंस आदि संस्थाओं ने चैलेंज तथा प्रस्ताव पास किये। लेकिन राज्य की तरफ से न तो उत्तर ही दिया गया और न अभियुक्तों को रियायत ही मिली।[1]

इस पर २६ अप्रैल सन् १९३२ को सर्वश्री गोपालदास जी, सत्यनारायण जी सराफ, प्यारेलाल जी, सोहनलाल जी, बद्रीप्रसाद जी, और चन्दनम[illegible] की ओर से इस आशय की दरखास्त प्राइम मिनिस्टर साहब को बजरिये साहब डिस्ट्रिक्ट जज सदर के दी गई—

यह कि मुलजिमान ३।। माह से जेर हिरासत हैं और यद्यपि वे कतई बेगुनाह व नाकरदा जरायम मजकूरावाला हैं फिर भी पुलिस ने झूठी रंग-आमेजी देकर इतने अर्से तक फर्जी तौर से कार्रवाई करके व इलाके में लोगों को तंग व जेरबार करके उनसे मनमाने बयान लिखवा कर एक साजिश की शकल मुकदमे को देकर जुमला मुलजिमान के खिलाफ निहायत ही संगीन जरायम के तहत इस्तगासा पेश किया है। दौरान तफतीश पुलिस तीन आला वकीलों के अलावा अफसरान पुलिस से भी मदद ले रही है लेकिन हमारे रास्ते में रोड़े अटका रही है। दौरान तफतीश पुलिस ने हमको अजहद व अमानुषिक तकलीफें देते हुए ऐलानियाँ तौर से यह कहा था कि "इस मामले में हम जैसा चाहेंगे वैसा ही होगा, कोई भी तुम्हारी मदद नहीं कर सकेगा।" हमारे वारिसान जो बगरज पैरवी आते हैं, उनको भी पुलिस तंग करती है और इसी वजह से यहाँ का रहने वाला कोई सीनियर वकील पैरवी नहीं करना चाहता। यह मुकदमा रियासत में अपने ढंग का पहला ही है और संघात्मक राज्य व्यवस्था के सवाल पर आश्रित है। मुकदमे में उच्च अफसरों की शहादतें होंगी सो यहाँ के वकील दबाव के कारण यथेष्ठ पैरवी न कर सकेंगे। मुकदमे में बड़े-बड़े पेचीदा राजनैतिक दस्तावेज भी पेश किये गये हैं, इसलिए हमें अपनी बेगुनाही साबित करने के लिए बाहर के वकील द्वारा पैरवी करवाने की इजाजत बख्शी जावे।

डिस्ट्रिक्ट जज ने दरखास्त प्रधानमंत्री के पास भेज दी किन्तु प्रधानमंत्री ने २७-४-३२ को इस आदेश के साथ वापिस कर दी कि मुलाजिमान की तरफ से बा० मुक्ताप्रसाद वकील मुकर्रिर हो चुके हैं, इसलिए इस दरखास्त पर किसी हुक्म के दिये जाने की जरूरत मालूम नहीं होती।[2]

---

१. बीकानेर राजद्रोह और षड्यन्त्र का मुकदमा, कुछ ज्ञातव्य बातें, पृ० ७६-७९।
२. वही, पृ० १२-१४।

लेकिन मुक्ताप्रसाद जी सिर्फ खूबराम जी की तरफ से वकील हुए थे। इसके बाद १२-५-३२ को सोहनलाल जी व प्यारेलाल जी की तरफ से दरखास्तें दी गई, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। इस पर चन्दनमल जी, बद्रीप्रसाद जी, स्वामी जी व सोहनलाल जी की तरफ से २७-५-३२ को एक और दरखवास्त इस आशय की दी गई—

हालाँकि बाबू मुक्ताप्रसाद वकील हाईकोर्ट के हुक्म से ला० खूबराम की पैरवी के लिए मुकर्रिर हुए थे लेकिन फिर भी उन पर नाजायज दबाव डालने के लिए सुलतानी गवाह लखमीचन्द सुराना से उनका नाम लिवाया गया है। हालाँकि लखमीचन्द को पुलिस ने अपनी हिरासत में बहुत समय तक रख कर मनमानी कहला ली और अक्सर तहरीरात भी उससे हिरासत के दौरान ही लिखवाई गई हैं। बा० सत्यनारायण के वकील बा० रघुबरदयाल के पीछे भी सी० आई० डी० के आदमी रहते हैं और अभियुक्तों के जो रिश्तेदार मिलने आते हैं उनके पीछे भी पुलिस रहती है और अच्छा सलूक नहीं करती। सत्यनारायण के पिता ला० घनश्यामदास जी को ता० २०-३-३२ को जब कि गोलमेज सभा की "स्टेट्स इन्क्वायरी कमेटी" के मौजिज मेम्बर बीकानेर में जाँच के लिए आये हुए थे तो मुलजिमान को बिला किसी हुक्म के जेल से इस खयाल से बुलाया कि मुलजिमान जेल के इन्तजाम और अपने साथ किये गये सलूक की बाबत कुछ कह न देवें और सबको अहाते अदालत में बुलाकर सिवाय सुलतानी गवाह के कमरों में बन्द कर दिया और ला० घनश्यामदास को इस शर्त पर रिहाई दी गई कि वह फौरन बीकानेर छोड़ जावे, हालाँकि उनके साथ सत्यनारायण की माता व चाची भी आई हुई थीं। इन बातों से वकील लोग इतने भयभीत हो गये हैं कि कोई वकील स्वतंत्रता-

साथ ही हम लोगों में से कइयों को कैद तनहाई की काल-कोठरियों में बन्द रखा गया और कइयों को तनहा बारगों में । मुलजिमान के साथ लाइन पुलिस में मनुष्यता से गिरा हुआ सख्ती का बर्ताव किया गया ।

खुद गवर्नमेण्ट ने भी इस मुकदमे को मामूली फौजदारी मुकदमा न समझते हुए, मि० वी० के० चतुर्वेदी साहब को स्पेशल मैजिस्ट्रेट इस मुकदमे के लिए मुकर्रिर किया है जो बार-एट ला हैं और दो लॉ ग्रेजुएट्स खासी तनख्वाह पर नौकर रखे हुए हैं । बड़े-बड़े अफसर पुलिस व डाइरेक्टर सेंट्रल इण्टेलीजेन्स व दीगर अफसरान माल इस मुकदमे की पैरवी में मसरूफ हैं अतः बाहर से कोई योग्य वकील पैरवी के लिए बुलाने की इजाजत फरमाई जावे ।[१]

लेकिन इस दरख्वास्त का भी कोई लाभ नहीं हुआ । इसी दिन श्री चन्दनमल जी बहड़ ने एक बड़ी लम्बी दरखास्त अदालत में पेश की, जिसमें १३ जनवरी से लगाकर पुलिस की ज्यादतियों और अत्याचारों का व्योरेवार विवरण प्रस्तुत करते हुए अदालत से प्रार्थना की कि इसकी तहकीकात फरमाई जावे और पुलिस के दुराचार व अन्याय की तरफ श्रीजी साहब व उनकी दयालु गवर्नमेण्ट की तवज्जह दिलाई जावे । इस दरखास्त को पढ़कर मनुष्य के रोंगटे खड़े हो जाते हैं । लेकिन इससे पुलिस और भी कुपित हो गई और फलस्वरूप उनकी तकलीफें और अधिक बढ़ गईं ।[२]

इसके बाद अन्य साथियों की ओर से अदालत में अनेक दरखास्तें दी गईं, लेकिन स्वामी जी ने पूर्ण असहयोग रखा । इस सम्बन्ध में "बीकानेर राजद्रोह और षड्यंत्र का मुकदमा, कुछ ज्ञातव्य बातें" में पृ० ६५-६६ पर लिखा है—

इन दरख्वास्तों में पाठक स्वामी गोपालदास जी के हस्ताक्षर नहीं पावेंगे । उनके हस्ताक्षर न करने का कारण यह है कि उन्होंने शुरू से ही सदा एक ही नीति का अवलम्बन किया है । वे अपने को बिलकुल निर्दोष समझते हैं और वर्तमान मुकदमे की सारी कार्रवाही को प्रहसन अथवा न्याय का एक अभिनय मात्र मानते हैं । इसके अलावा उनकी गिरफ्तारी के बाद से अब तक रियासत ने मुकदमे में जिस मनमानी से काम लिया है उससे उनकी धारणाओं की और पुष्टि हो गई है । उनका कथन है कि "यदि रियासत नहीं तो उसके कुछ बड़े सरकारी कर्मचारी उनसे बदला लेने पर तुले हुए हैं और स्वयं बीकानेर नरेश को भी उन्होंने अभियुक्तों के विरुद्ध भड़का दिया है । अगर रियासत को वास्तव में न्याय से इतना प्रेम है और वह हम लोगों को शुद्ध न्याय प्रदान करना चाहती

१. बीकानेर राजद्रोह और षड्यन्त्र का मुकदमा, कुछ ज्ञातव्य बातें; पृ० १६-२० ।
२. वही, पृ० २१-३४ ।

है तो हमें बाहर का वकील अपनी पैरवी के लिए नियुक्त करने देने, हर प्रकार की दूसरी कानूनी सुविधाएँ देने तथा रहन-सहन और खान-पान की मनुष्योचित सुविधाएँ देने से वह क्यों बार-बार इन्कार कर रही है ?" इस प्रकार स्वामी जी ने शुरू से ही अदालत से एक प्रकार का असहयोग ही कायम रक्खा है। अतएव उन्होंने इन दरख्वास्तों पर दस्तखत करने की आवश्यकता नहीं समझी।

मुकदमा १३ अप्रैल को जिला जज श्री बृजकिशोर चतुर्वेदी की अदालत में शुरू हुआ। पहले कुछ दिनों तक मुकदमा अदालत में चलता रहा लेकिन फिर बीकानेर सेन्ट्रल जेल के Show Room में ही अदालत लगने लगी। पत्रों द्वारा सरकार की सख्तियों के विरुद्ध आन्दोलन बराबर चलता रहा। 'राजस्थान-संदेश', 'कर्मवीर', 'ट्रिब्यून', 'प्रताप', 'हिन्द' 'राजस्थान', 'इंडियन डेलीमेल', 'विश्वमित्र', 'मिलाप', 'स्वतंत्र भारत', 'लोकमान्य', 'अर्जुन', 'रियासत', 'बाम्बे क्रोनिकल' आदि अनेक पत्रों में मुकदमे के हालात छपते रहते और सरकार की आलोचनाएँ होती रहतीं। स्थान-स्थान पर इसके विरोध में सभाएँ भी होतीं। ऐसी ही एक मीटिंग का विवरण देते हुए 'बॉम्बे क्रोनिकल' ने ता० १०-५-३२ को लिखा--

An informal meeting of the State subjects held under the presidency of G. D. Vyas in C. P. Tank Road, Bombay, resolved to convene a public meeting to voice the alleged grievances of Bikaner subjects and also to appoint a committee to wait in deputation on H.H. the Maharajah to place their grievances and demand their redress.

Prof. Abhyanker, who was the principal speaker at the meeting challenged H.H. to prosecute him, but not his subjects and protested against the alleged harsh treatment of political prisoners in Bikaner State. [१]

गोपालदास जी आदि कई सज्जन चूरू से इन्द्रमणि पार्क के टीबों को हटाने में व्यस्त थे। आज जो बारह शहरों में से एक नई चीज हरी-भरी चूरू में देखने को मिलती है वहाँ पर सिवाय टीबों के और कुछ नहीं था। जहाँ पर स्वामी गोपालदास जी ने पार्क की योजना कर कलकत्ते के ईडंन गार्डन का नमूना मरुभूमि में कर दिखाया। बड़े दुःख की बात है कि आज उन्हीं स्वामी को बीकानेर महाराज ने राजद्रोही मानकर बन्दी बना रखा है। महाराज को समझाने वाला नहीं कि ऐसे सत्पुरुष राजद्रोही होते तो यह लाखों रुपये चूरू की रौनकदारी में न लगवा कर आपके खिलाफ में लगाते।....

हम चूरू में जाकर एक अन्याय और क्या देखते हैं कि बीकानेर की पुलिस के दो-तीन अफसर जिनका नाम हम भूलते नहीं हैं जो भूरसिंह जैनारायण थे, वे लोगों को बुलाकर पूछ रहे थे और उनको धमकाते थे कि तुम लोग ऐसा कह दो कि स्वामी जी ने हड़ताल कराई इत्यादि। जहाँ तक हमें मालूम हुआ है चूरू के बाजार वालों ने स्वामी जी के विरुद्ध कुछ भी न कहा; सिर्फ ५-६ बदमाशों को खड़ा कर उन्हीं के बयान लिये गये।....

आप (महाराजा साहब) २५ वर्ष से चूरू नहीं पधारे हैं। इन वर्षों में इन परोपकारी सज्जनों ने चूरू की कैसी उन्नति की है, लाखों रुपये बाहर वालों से लाकर शहर की उन्नति में लगाये हैं फिर एक राजकर्मचारी जो दो रियासतों को बर्बाद करके आया है, उसके कहने पर इतना अन्याय नहीं करना चाहिये। महाराज साहब को यह जानना चाहिये कि उक्त कर्मचारी का अन्दरूनी द्वेष स्वामी जी से था जो कि वह निकाल रहा है, जिसके कारण रियासत बदनाम हो रही है।....

इस समय चूरू का तहसीलदार भी बड़ा ऊधम मचा रहा है, बेचारे जूँथामल घांघूँ वाले को और गणपतराम खेमका को नाहक बुलवा कर, जिनसे चला भी नहीं जाता है, पैर खारिज हैं, कष्ट दिया। सेठ श्री रुकमानंद जी बाघला, जो अपना स्वास्थ्य सुधारने को चूरू आये थे, जिन्होंने इन्द्रमणि पार्क स्वामी जी के कहने पर ५००००) रुपया लगा कर बना दिया, उनको भी बुलाकर तंग किया गया और वे सेठ गाँव को छोड़ कर चले गये। चूरू में आजकल खुफिया का तो खास जोर है। हमारे कपड़ों को देखकर हमारे पीछे हो गये थे, जब मालूम हुआ कि ये बराती हैं तब उन्होंने अपना रास्ता लिया।[1]

—सम्वाददाता

---

१. फाइल नं० १३१ सन् १९३२; राजस्थान अभिलेखागार, बीकानेर।

Swami Gopaldas ji Maharaj, is a saintly personality, The soul of social, religious and public life of Churu, a small town in the Bikaner State. He started many new activities of public welfare and well-being in Churu. He is a staunch social reformer and a lover and preacher of "Khaddar". His life was devoted entirely to the service and well-being of the people.....Sarva Hitkarini Sabha buildings, the public library and the Dharama-Stoop, which are the glories of Churu, are all the fruits of his industry and devotion to the cause.

Once Churu presented the sight of a desert village. But now the same Churu has been transformed into a modern small town owing mainly to the efforts of this one personality. He has caused to be constructed a very nice and beautiful public park in Churu costing many thousands of rupees. The State authorities also acknowledged his services to the public very frequently. He firmly advocated the removal of illiteracy from the Bikaner State. In this connection he caused many village and primary schools to be established in Churu and its neighbouring rural area. [१]

गासा दायर किया। मेरी उम्र ४६ वर्ष है। मैं रियासत में डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल ऑव पुलिस के ओहदे पर नियुक्त हूँ। सन् १६१४-१५ ई० में रियासत की गवर्नमेण्ट को इत्तिला मिली कि कस्बे चूरू में एक राज-विद्रोही सभा कायम हुई है। इस सभा का नाम सर्वहितकारिणी सभा था और मुलजिम स्वामी गोपालदास ने इसको स्थापित किया था। यह खबर मिलने पर राज्य ने इसकी तहकीकात के लिए एक कमेटी मुकर्रर की जिसके तीन सदस्य थे। कमेटी के सदस्यों में से दो मंत्रि-परिषद् के सदस्य भी थे। मैं खुद भी इस कमेटी के साथ चूरू गया था। कमेटी ने जाँच की तो मालूम हुआ कि यह एक राज-विद्रोही संस्था है। कमेटी के दफ्तर में तीन राज-विद्रोही नेताओं के फोटो भी टँगे हुए थे। यहाँ पर राज-विद्रोहियों से मेरा मतलब अंग्रेज सरकार के राज-विद्रोहियों से है। यह रिपोर्ट मिलने पर राज्य ने मुझको इस संस्था की खासतौर पर देख-रेख रखने का हुक्म दिया। आगे चलकर ऐसी ही एक सभा मुलजिम खूबराम ने कोशिश करके भादरा में कायम की। भादरा और चूरू दोनों जगह एक ही किस्म की सभाएँ थीं।

मुस्तगीस ने कहा—मार्च १६३१ में मुलजिम सत्यनारायण सर्राफ वकील, वकालत करने के लिए हिसार से राजगढ़ आकर रहने लगा। सत्यनारायण के राजगढ़ में आते ही आठों मुलजिमान के बीच श्रीजी साहब बहादुर व उनकी गवर्नमेंट के खिलाफ बाकायदा जबरदस्त साजिश कायम हो गई। इसके बाद इन सब लोगों ने तहरीरी व जबानी फैल कर के निशान तथा आँख से दीख सकने वाली शक्लें बनाकर सरकार के प्रति राजविद्रोह फैलाना शुरू कर दिया और महाराजा साहब की बेइज्जती की तथा उनके प्रति खयालात बेदिली पैदा करने के काम किये अथवा प्रचार के जरिये से कराये। ये लोग गैरइलाके में राज के खिलाफ लेख प्रकाशित करते थे, उदाहरणार्थ 'त्यागभूमि' 'राजस्थान-संदेश', 'प्रिंसली इंडिया', 'रियासत' वगैरा।

इसके अलावा इस्तगासे में इन लोगों के खिलाफ जो जुर्म दर्ज किये गये हैं, (राजद्रोह षड्यन्त्र और महाराजा के व्यक्तित्व को बदनाम और बेइज्जत करना) उनको पूरा करने के उद्देश्य से मुलजिमान ने रियासत के बाहर के निम्नलिखित व्यक्तियों को भी अपनी साजिश में मिलाया था —१. हरिभाऊ उपाध्याय, सम्पादक 'त्यागभूमि', २. देशराज, मंत्री 'राजस्थान संदेश' ३. अर्जुनलाल सेठी, ४. चाँदकरण शारदा, ५. मणिलाल कोठारी, ६. विजयसिंह पथिक, ७. अचलेश्वरप्रसाद शर्मा, मंत्री, कष्टनिवारक समिति, आगरा, ८. गोपाल पिल्ले, सम्पादक, 'प्रिंसली इंडिया, ६-रामस्वरूप शर्मा, आगरा, १०-जयनारायण व्यास, ११-आनन्द-

राज सुराणा, १२. नृसिंहदास, मंत्री, 'राजस्थान संदेश', १३. सम्पादक, 'रियासत दिल्ली आदि । रियासत के भी चूरू, भादरा राजगढ़, रतनगढ़, सरदारशहर वगैरा अनेक व्यक्तियों के साथ इन लोगों की साजिश थी । रियासत के बाहर नीचे लिखी संस्थाओं से इनकी साजिश थी——

१. लाहौर, दिल्ली और कराची की आल इंडिया काँग्रेस कमेटियाँ ।

२. इंडियन नेशनल काँग्रेस, अहमदाबाद ।

३. प्रान्तीय काँग्रेस कमेटी अजमेर और,

४. राजस्थान प्रजा परिषद्, अजमेर ।

काँग्रेस का मतलब खास जाति के लोगों की संस्था है ।

बयान खतम होने पर सत्यनारायण सराफ, पं० प्यारेलाल सारस्वत, सेठ बद्रीप्रसाद सरावगी और पं० सोहनलाल शर्मा इन चारों अभियुक्तों के वकील बा० रघुवरदयाल गोयिल ने मुस्तगीस से नीचे लिखा सवाल पूछा——

आपने अपने बयान में बतलाया है कि इन अभियुक्तों का आल इंडिया काँग्रेस कमेटी और इंडियन नेशनल काँग्रेस से सम्बन्ध था । आप बतला सकते हैं कि इन दोनों संस्थाओं में क्या फर्क है ?

जवाब——इन दोनों में यह फर्क है, आल इंडिया काँग्रेस कमेटी से मतलब सारे हिन्दुस्तान की काँग्रेस कमेटी है, परंतु इंडियन नेशनल काँग्रेस से मतलब किसी खास जाति की काँग्रेस से है जो किसी खास जगह के रहने वालों की है ।

जाने का फैसला दे दिया। पुलिस ने एक अभियुक्त लक्ष्मीचंद सुराना, राजगढ़-निवासी को मुलतानी गवाह बना लिया था, अतः उसे माफ कर दिया गया और शेष सात पर बीकानेर हाईकोर्ट के जज रायबहादुर डी० एन० नानावटी की अदालत में मुकदमा चला। इस अदालत की नियुक्ति विशेष रूप से सेशन अदालत के रूप में की गई थी।[1] सेशन कोर्ट में पहली पेशी १८ अगस्त सन् ३२ को हुई। अब कार्यवाही जेल में न होकर अदालत में होने लगी। लेकिन अभियुक्तों की बाहर से वकील बुलाने की माँग स्वीकृत नहीं हुई। बीकानेर के इस संगीन षड्यंत्र और राजद्रोह के मामले की ओर समूचे देश का ध्यान आकर्षित हो गया और अनेक पत्रों, वकीलों, नेताओं और संस्थाओं ने सक्रिय भाग लिया।

कलकत्ता के 'लोकमान्य' में इस सम्बन्ध में अनेक लेख प्रकाशित हुए। स्वामी जी के व्यक्तित्व से यह पत्र बहुत प्रभावित था। ता० २० जुलाई सन् ३३ को उसने लिखा कि अंत में स्वामी गोपालदास जी, जो सच्चे देशभक्त संन्यासी हैं उन्होंने अपने मुकदमे की पैरवी बन्दकर दी। २३ जुलाई के अंक में गाय के साथ स्वामीजी का बड़ा चित्र छपा। ३० जुलाई के 'अर्जुन' और "प्रताप" ने स्वामी जी के असहयोग की बात फिर दुहराई। इसी प्रकार "अर्जुन" ने भी अदालत में होने वाली प्रतिदिन की कार्यवाही प्रकाशित की और विशेष लेख छापे।[2]

२४ अगस्त को बम्बई में राजस्थान के प्रतिष्ठित व्यक्तियों की एक सभा राजा गोविन्दलाल जी पित्ती की अध्यक्षता में षड्यंत्र केस से उत्पन्न होने वाली स्थिति पर विचार करने के लिए हुई जिसमें श्री नृसिंहदास अग्रवाल (अजमेर), 'वेंकटेश्वर समाचार' के सम्पादक, महावीरप्रसाद एडवोकेट, श्री मदनमोहन लोहिया आदि भी शामिल थे। सभा में बीकानेर पोलिटिकल केस कमेटी बनाना निश्चित हुआ, जिसका हेड आफिस बम्बई में रखना तय हुआ। कमेटी का उद्देश्य अभियुक्तों को आवश्यक सुविधाएँ पहुँचाना रखा गया। राजा गोविन्दलाल जी कमेटी के प्रेजीडेण्ट तथा श्री नृसिंहदास जी, श्री निरंजन शर्मा, जमनादास जी अडूकिया, महावीरप्रसाद और कन्हैयालाल सेक्रेटरी नियुक्त हुए।[3]

गया कि अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद् के अन्तर्गत व उसके सहयोग से कार्य किया जाए; इसके लिए दस हजार रुपये एकत्र करने के लिए एक उप-समिति बनाई गई, जिसके सदस्य श्री रघुनाथप्रसाद जी परसाई (खंडवा), स्वामी नृसिंहदेव जी (जयपुर), श्री चाँदकरण जी शारदा (अजमेर), श्री ज्योतिप्रसाद जी एम० एल० सी० (हिसार), श्री जयनारायण जी व्यास (ब्यावर), श्री रतनलाल जी कलकत्ता और श्री बसंतलाल जी मुरारका चुने गये। प्रो० अभ्यंकर जी, चाँदकरण जी, महावीरप्रसाद जी, चिरंजीलाल जी व अन्य कुछ वकीलों ने बीकानेर जाने के लिए अपनी सेवा अर्पण की।[1] ३० अगस्त को मारवाड़ी विद्यालय, बम्बई में श्री जमनादास जी मेहता की अध्यक्षता में एक सभा हुई जिसमें इस केस का तीव्र विरोध किया गया।[2] देशभक्त अभियुक्तों की सहायता करने की अपील जो श्री पित्ती जी ने निकाली वह अनेक पत्रों में प्रकाशित हुई।

उधर अदालत में केस अपनी गति से चलता रहा। जेठमल तहसीलदार के बयान होने के बाद मुख्य बयान मालचंद जी कोठारी के हुए, लेकिन मालचंद जी को बहुत-कुछ ऊँच-नीच समझाकर व डरा-धमकाकर उनके बयान पुलिस ने इस ढंग पर करा लिये कि न तो केस पर बुरा असर पड़े और न मालचंद को सजा हो। मालचंद जी ने कहा कि ११ जनवरी की मीटिंग में मैं शरीक हुआ था कि जनता को गेहूँ की जकात श्री अन्नदाता जी की ओर से माफ की जाए। अन्नदाता जी को तार देने का प्रस्ताव था कि श्रीजी जकात बहुत है। प्रस्ताव में यह लिखा हुआ था कि श्रीजी से डेपुटेशन मिलने के लिए समय देने की प्रार्थना की जाए। गोपालदास ने स्पीच में यह प्रस्ताव किया था और सर्व-सम्मति से पास हुआ था या नहीं, याद नहीं है। मैंने (१३३) अपना लिखित

प्रस्ताव मंजूरा था और सभी ने इस प्रस्ताव के पक्ष में करीव-करीव राय दी थी। जब तक वे स्कूल में रही वोर्ड से एलाउंस पाती रही।[1]

अभियुक्तों ने अपनी सफाई में रियासत के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सिवाय लगभग ५० ऐसे व्यक्तियों को भी गवाहीं में वुला दिये जाने की प्रार्थना की जो रियासत से बाहर रहते थे और भारतवर्ष के सार्वजनिक जीवन में विशेष लोकप्रिय थे; यथा महात्मा गाँधी, कस्तूर वाई गाँधी, काका कालेलकर, जवाहरलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, सेठ जमनालाल वजाज, अब्दुलगफ्फार खाँ, सरोजिनी नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, वी०एस० पथिक, हरिभाऊ उपाध्याय, चाँदकरण शारदा, प्रो० अभ्यंकर, अमृतलाल सेठ, मणिलाल कोठारी, घनश्यामदास बिड़ला, सत्यमूर्ति, पोपट चूडगर बार एट ला, सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर, डॉ० सत्यपाल, डॉ० किचलू, वलवंतराय मेहता आदि। इनके अतिरिक्त 'रियासत', दिल्ली, 'त्यागभूमि', अजमेर, 'सैनिक', आगरा, 'मिलाप' लाहौर, 'अर्जुन' दिल्ली, 'प्रताप' कानपुर के सम्पादकों को भी गवाही में तलब किया।[2]

बीकानेर केस डिफेंस कमेटी की एक बैठक २३ सितम्बर को बम्बई में कृष्ण-निवास में हुई जिसमें देशी राज्य प्रजापरिषद् के अध्यक्ष श्री नृसिंह चिन्तामणि ने महाराजा बीकानेर को तार भेजा कि अभियुक्तों को पैरवी के लिए बाहर से वकील वुलाने की सहूलियत दी जाय। सभा में यह भी तय हुआ कि एक सुयोग्य वकील पैरवी करने के लिए भेजा जाय। यह सभा श्री पित्ती जी की अध्यक्षता में हुई और कमेटी में निम्नलिखित सदस्य शामिल किये गये, सर्वश्री पी० एल० चूडगर, बैरिस्टर राजकोट; रामेश्वरदास, सिरसा; चिरंजीलाल, करौली; बृजलाल वियाणी, अकोला; डी० वी० गोखले, पूना; सुमंत मेहता, बड़ौदा; मोहनलाल (बर्धवान) हीरालाल पारिख, अमरोली; रणजीत दास कपाड़िया; रामचंद्र वैद्य, भिवानी; फूलचंद शाह; सूर्यनारायण, उज्जैन; ठाकुरदास वकील, हिसार; शिवलाल, भावनगर; मटरूमल खेमका, फतहपुर; रामनारायण गोयनका, बम्बई; कन्हैयालाल मोदी; वसंतलाल धुलिया और ओंकारमल। सात सदस्यों की कार्यसमिति बनाई गई।[3]

पहली अक्तूबर को बीकानेर केस के विरोध में बम्बई में चौपाटी पर बॉम्बे क्रॉनिकल के सम्पादक श्री वी० जी० हार्निमैन के सभापतित्व में विराट सार्व-

जनिक सभा हुई।[१] २७ अक्टूबर को महाराजा के पास अनेक प्रमुख व्यक्तियों के हस्ताक्षरों से युक्त तार भेजा गया जिसमें मुकदमे पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का अनुरोध किया गया। हस्ताक्षर करने वालों में बा० रामानन्द चटर्जी (सम्पादक माडर्न रीव्यू), जमनालाल बजाज, श्री नृसिंह चिंतामणि केलकर, श्री अमृतलाल ठक्कर, प्रो० अभ्यंकर, पी० एल० चूडगर, अब्दुलरहमान मीठा, जमनादास द्वारकादास, डा० सुमंत मेहता, राजरत्न हरिलाल, गोविन्दजी अमरेली, गिजुभाई भावनगर, छोटेलाल गुतारिया, प्राणलाल मुंशी, प्रो० इन्द्र, ला० ज्योतिप्रसाद हुक्मचंद और केदारनाथ आदि।[२]

लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। केस अपने ढंग पर ही चलता रहा। २६-९ को *विश्वम्भरलाल से जिरह करते समय बा० मुक्ताप्रसाद जी वकील ने* दुबारा प्रश्न पूछते हुए कहा कि मेरा प्रश्न जायज है इसलिए पूछने दिया जाए। जज ने कहा कि तुम जिद्दी और बदतमीज हो। इस पर मुक्ताप्रसाद जी ने एतराज किया कि आप अपने शब्द वापिस लें अन्यथा मैं पैरवी नहीं करूँगा। जज ने लिखकर माँगा तो उन्होंने दे दिया और अदालत से चले गये। सातों अभियुक्तों ने खड़े होकर जज के व्यवहार का विरोध किया। चन्दनमल जी ने एक लिखित अर्जी भी इसके विरोध में दी और कहा कि आप हमारे साथ दुर्व्यवहार न करें, चाहे हमें फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दिया जाए।[३] खूबराम जी ने अनशन शुरू कर दिया जो जज के शर्त मान लेने पर तोड़ दिया गया।[४] जज ने अभियुक्तों से ७ नवम्बर को कहा कि सब को अपने लिखित बयान १३ नवम्बर तक पेश कर देने चाहिए।[५] इस पर सत्यनारायण जी ने फुलस्केप साइज के ५०० पृष्ठों में अंग्रेजी में टाइप किया हुआ अपना बयान पेश किया।[६]

यद्यपि कलकत्ते में रहनेवाले चूरू-निवासी आदर्श, सच्चे और परोपकारी नागरिक स्वामी गोपालदास जी को जेल में बंद रखने से बहुत दुःखी हैं, फिर भी हम (चूरू-निवासी) चाहते हैं कि महाराजा के व्यक्तित्व का खयाल करके चूरू की जनता महाराजा का स्वागत करे और उनसे प्रार्थना करे कि वे स्थानीय परिस्थिति का अध्ययन कर स्वामी जी के साथ न्याय करें। निवेदक—मूलचंद कोठारी, सागरमल मंत्री, श्रीचंद सुराना, तिलोकचंद सुराना, बिसेसरलाल खेमका, (सर्वहितकारिणी) सागरमल सिंघी, सागरमल वैद, जूरीमल वैद, जयराम खेमका, गुलाबराय खेमका, जयनारायण सरावगी।

किन्तु इतना सब होने पर भी कोई सुनवाई नहीं हुई तब केस के प्रति जनमत को अधिक जागृत करने के लिए स्थान-स्थान पर बीकानेर-केस-दिवस मनाये जाने का निश्चय किया गया। अखिल भारतवर्षीय देशी राज्य प्रजा परिषद् के महामंत्री ने १७ दिसम्बर के दिन बीकानेर-षड्यंत्र-केस-दिवस मनाने की अपील की और समूचे देश में स्थान-स्थान पर बीकानेर दिवस मनाया गया।

कलकत्ता में माहेश्वरी भवन में विराट सभा हुई जिसके सभापति श्री मूलचंद अग्रवाल हुए जिसमें बीकानेर दिवस में भाग लेना राजस्थानियों का आवश्यक कर्तव्य बतलाया गया।[२]

कलकत्ता में प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका के सभापतित्व में बीकानेर दिवस मनाया गया, कई हजार की उपस्थिति रही। बाबा नृसिंहदास ने प्रस्ताव किया और बसंतलाल जी मुरारका आदि के भाषण हुए।[३] The Bikaner day was celebrated with great enthusiasm here yesterday.[४]

बम्बई में आल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेन्स की ओर से सार्वजनिक रूप में बीकानेर दिवस मनाया जिसमें जामनगर प्रजामंडल, धांगध्रा प्रजामंडल,

---

१. फाइल नं० १४५ १९३३; राजस्थान अभिलेखागार, बीकानेर।
२. विश्वमित्र, १७-१२-३३; फाइल नं० ६२/१९३३ ,, ,, ,, ,,
३. अर्जुन, २१-१२-३३;
४. बॉम्बे क्रॉनिकल; फाइल नं० ३४; राजस्थान-अभिलेखागार, बीकानेर।

BOMBAY OBSERVES BIKANER DAY.
PROTEST AGAINST HARSH TREATMENT GIVEN TO UNDER TRIALS.

Mr. Amrit Lal Seth presided. The following message sent by Mr. K. F. Nariman was read at the meeting— After having gone through the papers in the Bikaner Conspiracy Case, I have no hesitation in fully endorsing the protests and sympathy expressed by Pt. Jawahar Lal and other responsible and accredited leaders and organisations. The fact that we are not able to enforce such reasonable, equitable and harmless demands of the prisoners shows the extent of our impotency and helplessness. २

स्केप सफों में लिखा था, परन्तु सिर्फ सजाएँ ही सुनाई गई। इस प्रकार मुक-दमा ११ से १२ बजे तक एक घंटे में खत्म हो गया। बीकानेर पोलिटिकल केस कमेटी के मंत्री बाबा नृसिंहदास और शहर के कई नवयुवक कोर्ट जा रहे थे परन्तु उन्हें अभियुक्त रास्ते में ही मिले। बाबाजी ने उन सब अभियुक्तों को कमेटी की तरफ से तथा अपनी तरफ से बधाई दी। फैसला सुनकर अभि-युक्तों ने कोर्ट को धन्यवाद दिया। सब के चेहरों पर तेज था। जब फैसला सुना दिया गया तो अभियुक्त "वन्दे मातरम्" "महात्मा गाँधी की जय", "राजस्थान जिन्दाबाद" के नारे लगाते हुए कोर्ट से जेल गये।[1]

The sentences are reported to have been announced in the Bikaner Conspiracy Case and it is added that the case was proceeding for the last nearly two years. There has been agitation against it throughout the country and a lengthy statement on it bearing the signatures of several leading personalities like Pt. Jawahar Lal Nehru, Seth Jamnalal Bajaj, Mr. Rāmanand Chatterji etc., was also issued.

यह सभा इन वीर देशभक्तों को उनकी सेवा, कष्ट-सहन और त्याग पर बधाई देती है।[1]

इसी प्रकार की अनेक सभाएँ स्थान-स्थान पर हुई। श्री जयनारायण जी व्यास ने बीकानेर षड्यंत्र केस पर एक विहंगम दृष्टि डालते हुए आगे के लिए क्या करना है, इस सम्बन्ध में एक लेख "अर्जुन" (ता० २१-१-३४) में प्रकाशित करवाया जिसका सार निम्न है—

देशी राज्य प्रजा परिषद् के जन्म के बाद बीकानेर नरेश और उनके अधिकारी बड़े चौकन्ने थे। वैसे तो कांग्रेसी नेताओं का आना ही बीकानेर के अधिकारी सहन नहीं कर सकते थे पर जब बीकानेर राज्य के कुछ सार्वजनिक कार्यकर्त्ता खुले तौर पर देशी राज्य प्रजा परिषद् और कांग्रेस में शामिल होने के लिए जाने लगे और इन संस्थाओं के कार्य में कुछ हाथ बटाने लगे तो बीकानेर के अधिकारी एकदम क्रुद्ध हो गये। बीकानेर अधिकारियों के रोष का एक कारण यह भी कहा जाता है कि कतिपय पत्रों में महाराज मानधातासिंह जी के खानगी व्यापार के सम्बन्ध में कुछ चर्चा हुई थी। महाराज का वहम अभियुक्तों में से कुछ पर था अतः कहते हैं कि अभियुक्तों के विरुद्ध मामला चलाने में उनका विशेष हाथ था।

स्वामी गोपालदास जी और खूबराम जी सराफ के उद्योग से चलने वाली संस्थाएँ बीकानेर राज्य में काफी सार्वजनिक जीवन उत्पन्न करती थीं। उनका भी कुचलना आवश्यक था, पर जब तक बीकानेर नरेश नहीं भड़कते तब तक यह काम मुश्किल था। नरेश को भड़काने का काम तो चालू ही था, सन् ३१ में दूसरी गोलमेज परिषद् से यह मौका मिल गया। इस मामले के अभियुक्त प्रतिष्ठित नागरिक हैं। स्वामी गोपालदास जी को चूरू की तरफ के लोग बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं। आपकी सर्वहितकारिणी सभा अधिकारियों की आँखों का काँटा बन रही थी। सर्वहितकारिणी सभा की सेवाओं को भी राज्याधिकारियों ने स्वीकार किया है।

ये लोग पूरे तीन मास तक पुलिस की हिरासत में रखे गये, कोई अभियोग नहीं लगाया गया और १३ अप्रैल सन् ३२ को इनके खिलाफ इस्तगासा पेश हुआ। १० अगस्त तक मुकदमा मजिस्ट्रेट की अदालत में चला, बाद में एक वर्ष और पाँच मास तक यह मुकदमा सेशन कोर्ट में रहा। सेशन कोर्ट में पहली पेशी १८ अगस्त सन् ३२ को हुई। स्वामी गोपालदास जी को छोड़—

---

१. फाइल नं० ७/१९३४; राजस्थान अभिलेखागार, बीकानेर।

कर बाकी सभी अभियुक्तों ने अदालत की कार्यवाही में भाग लिया। इस १५ जनवरी को सबको सजाएँ हो गई।

विचाराधीन कैदियों की हालत में इन अभियुक्तों को काफी कष्ट सहन करना पड़ा। अभियुक्तों को कानूनी और अन्य सुविधाएँ दिलाने के लिए हिन्दुस्तान भर में खूब आन्दोलन हुआ। देशी राज्य प्रजा परिषद् के मुख्य कार्यालय और राजपूताना प्रान्तीय कार्यालय के अतिरिक्त बीकानेर केस डिफेन्स कमेटी बम्बई ने लोकमत जागृत किया। कलकत्ते में भी एक कमेटी बनी और उसने बंगाल के गाँव-गाँव में इस केस की गैर-जब्तगियों और सख्तियों के विरुद्ध आवाज उठाई। बम्बई तथा अन्य भारतीय नगरों से विरोध हुआ। अमरेली, खंडवा और ब्यावर कान्फ्रेन्सों में अभियुक्तों के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए केस तथा अभियुक्तों के प्रति दुर्व्यवहार का विरोध किया गया। जोधपुर, कोटा और धौलपुर राज्य में भी विरोध सभाएँ हुई पर प्रजातंत्र शासन-पद्धति के भक्त बीकानेर नरेश और उनके अधिकारियों के कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। भारत के महान् नेताओं, यहाँ तक कि महात्मा गाँधी के पत्रों तक की लापरवाही कर दी गई।

अभियुक्तों को सजाएं हो चुकी हैं। वे जेल में दो साल तो सड़ ही चुके थे, ६ मास से ३ साल तक और सड़ेंगे। पर क्या देशी राज्यों के कार्यकर्ताओं को अब चुप हो जाना चाहिए . . . उस अवस्था में देशी राज्य प्रजा परिषद् और बीकानेर केस डिफेन्स कमेटी को कोई उचित कार्यक्रम सम्मिलित रूप से निर्धारित करना योग्य होगा।[1]

बाद में मास्टर मोहनलाल जी और प्यारेलाल जी को महाराजकुमारी के पुत्र होने की खुशी में २३ फरवरी को रिहा कर दिया गया।[2]

महाराजा गंगासिंह जी ने २१ फरवरी सन् १९३७ को जोधपुर के तत्कालीन अंग्रेज दीवान सर डोनाल्ड एम० फील्ड के नाम अपने ऐतिहासिक पत्र में इस बात को लिख कर बड़ी दूरदर्शिता का परिचय दिया था कि "राजाशाही के ये शानदार सतून और साम्राज्यवादी शासन की ऊँची इमारत आज के जन-

बीकानेर सेंट्रल जेल से लिखे गये पत्र

यह पत्र स्वामी गोपालदास जी ने बीकानेर सेण्ट्रल जेल से श्री रामवल्लभ सरावगी के नाम लिखा है—

रामवल्लभ, आपिस । १) टिकट २) रोकड़ी मिल गया है । फल-मिठाई खाकर चित राजी हुआ । मुक्ताप्रसाद जी की चिट्ठी पहोंच गई, तुम्हारा काम किया होगा ? क्या बात हुई लिखना, लिख कर इसके हाथ भेज देना और चूरू पहोंच कर उस चिट्ठी का पहोंच लिखना और साथ में जिन अखबारों में जो खबरें हमारे बारे की हो लेकर साथ में 'कर्मवीर' छापे की खबर हो तथा और कोई छापे की खबर हो लेकर रजिस्ट्री कराकर हरबंससिंह, ठिकाना सरदार दीनदयालसिंह जी का मकान कर देना, जेल के पास । और कोई बात रह गई हो, इसके हाथ लिख भेजना । हरबंससिंह के नाम की जगह जगजीतसिंह कर देना ठीक रहेगा ।

(नगर-श्री, पत्र सं० २६)

बीकानेर सेंट्रल जेल से लिखे हुए जो पत्र नगर-श्री को प्राप्त हुए हैं वे सब श्री रामवल्लभ सरावगी के नाम हैं । रामवल्लभ जी स्वामी जी के पूरे भक्त थे और साथ ही पड़ोसी भी; किन्तु कोई राजनैतिक कार्यकर्त्ता नहीं थे इसलिये इन पत्रों में वैसी कोई बात नहीं लिखी है । स्वामी जी का भी इन पर पूरा स्नेह था । एकाधिक पत्रों पर शायद जेलर के या अन्य किसी अफसर के हस्ताक्षर हैं जिससे ज्ञात होता है कि पहलेपहल पत्रों का सेंसर होता था बाद में स्वामी जी अन्य पते से पत्र मँगाने लगे थे । सभी पत्र सन् ३४/३५ के लिखे हुए हैं जिससे ज्ञात होता है कि १५ जनवरी सन् ३४ को सजा सुनाने के बाद ही पत्र लिखने की सुविधा दी गई । अधिकतर पत्र पेंसिल से लिखे हुए हैं, जिन्हें पढ़ने में बड़ी कठिनाई होती है ।

चिट्ठी पर ठिकाने में तुमने कोई गलती नहीं की है और खूबराम जी छूट गये, मुझे मेरे छूटने से अधिक खुशी हुई। अगर सब को छोड़कर मुझे सबसे पीछे छोड़ें तो मुझे और भी खुशी है। अभी तक दूसरों के वास्ते कोई हुक्म नहीं हुआ है। खूबराम जी दरबार से आज कल में मिलने वाले हैं। ता० ७-८ को सूरतगढ़ की तरफ बड़ा लाट आवेगा। दीवान मनुभाई ता० १ तक चला जावेगा।

महात्मा जी के मंदिर का श्री लक्ष्मीनाथ अपने ही ठीक करेगा, कोई चिन्ता नहीं है। बीड़ में बेर बहुत हैं तो मीठे बेर हो जावें तब तुड़ा कर एक सेर किसी आते जाते के हाथ भेज देना और स्वीटर के वास्ते लिख देना जेल के पते पर भेज दें। माने कुंभार को राम राम कह देना और कह देना किसी समय कोई रेल में मोको होवै तो मेरे से फिर कभी मिल ज्यावैगो। मन्दिर में बहार बनाने वालों को सब को राम राम। महात्मा जी १२ बजे रात तक मंदिर में रहा, बड़ी खुशी हुई। अन्नकूट भी बना देना। महात्मा जी को कह देना उस दिन दिन भर मन्दिर में रह कर लोगों से राम राम करें।

बाबू सूरजमल जी रतनगढ़ आ रहे हैं, कब तक ठहरेंगे ? महात्मा जी को कह देना उनसे ठीक समझें तो एक दिन मिलें और मेरी तरफ से उनको कह दें कि कभी ईश्वर की कृपा से आपसे मिलेंगे। और बाबू नागरमल का दुख भूल नहीं सकते। चिरंजीव चिरंजीलाल को आशिष और उनके सब कुटुम्ब की राजी खुशी जानना चाहता हूँ। मुझे बाबू सूरजमल का प्रेम बहुत याद आता है।

सफेद कनारी का धोती जोड़ा एक जो देशी गोरखपुर की तरफ से आते हैं किसी दुकानदार के हो तो तलाश रखना। धीरे-धीरे भेज देना। रामीबाई को राजी खुशी कह देना। उसका पत्र नहीं आया।

(नगर-श्री, पत्र सं० १८०)

उपरोक्त पत्र आत्मीयता से सराबोर है। खूबराम जी के जेल से छूट जाने पर स्वामी जी ने बड़ा हर्ष प्रकट किया है, साथ ही उन्होंने यह भी लिखा है कि यदि सारे साथियों को छोड़ने के बाद मुझे छोड़ें तो मुझे इससे और भी अधिक हर्ष होगा। महात्मा जी से तात्पर्य महंत गणपतिदास जी से है।

यह पत्र स्वामी गोपालदास जी ने बीकानेर जेल से दिनांक ६-११-३४ को श्री रामवल्लभ सरावगी के नाम लिखा है—

ओ३म्

६-११-३४

चिरं रामवल्लभ ! आनन्द मंगल हो। तेरा पत्र आज मिला। तुमने मेरे पत्र का उत्तर देर से दिया। आज की डाक में पत्र दिया है, अगर डाक तुमको ठीक समय मिल गई तब तो कार्तिक वदी १५ को सुबह ही मिल जावेगी; सो चानणमल की माँ आवे जब तो अन्नकूट का प्रसाद तथा बोरियां बीड़ से मँगा कर भेज देना और धोती जोड़ा जैसा मैंने लिखा है वैसा चूरू में मिले तो अब भेज देना, नहीं पीछे भेज देना, कोई जल्दी नहीं है। और कोई चीज की जरूरत नहीं है। आज दिन कलकत्ते से स्वीटर का पार्सल आ गया है, कल तक खोल कर देखें. . . .। पार्सल पर नाम चिरंजीलाल का है, ठिकाना जूट मिल एक्सचेंज प्लेस लिखा है। तुम किस के लिए भेजने को लिखा था, उनको पहुँच लिख देना।

खूबराम जी दरबार से मिल कर तीन तारीख को भादरा चले गये हैं फिर तारीख १६-११ तक बीकानेर आवेंगे और दरबार से फिर मिलेंगे। उन्होंने फिर मिलने को बुलाया है। अगर हो सके तो खूबराम जी भादरा से आते समय चूरू स्टेशन हो कर आ सकते हैं, तुमको मैं फिर लिखूंगा। उनका चूरू उतरना, ठहरना अभी ठीक नहीं है। और जैसी तेरी भावना और संकल्प है, वह मेरी भी है कि मैं सब के पीछे छूटूं तो बढ़िया है। फिर देखो ईश्वर की क्या इच्छा है। तेरा जो प्रेम मुझमें हो गया है यह बात स्वाभाविक ही अच्छी है और ऐसा ही होता है। जहाँ बिना स्वार्थ का सच्चा प्रेम और धर्म भाव होता है वहाँ पर मनुष्य की यही दशा हो जाती है, किसी के वश की बात नहीं है। सच्चे प्रेम में मस्त होकर बड़े-बड़े आदमी अपनी जान तक दे दी है और दूसरों के प्रेम, धर्म भाव में आकर अपने प्राणों को न्योछावर करते आये हैं।

महात्मा जी को अगर फिर जमन जी ने बुलाया है तो फिर समाचार देखने की क्या जरूरत है और अब मिलना चाहिये। कब तक ठहरेंगे लिखना। महात्मा जी की इच्छा है, जहाँ उनका चित्त लगे, रहो। मेरी समझ में बीड़ में

यह पत्र स्वामी गोपालदास जी ने बीकानेर जेल से दिनांक २६-११-३४ को श्री रामवल्लभ सरावगी के नाम लिखा है—

ओ३म्

२६-११-३४

चिरं रामवल्लभ, आनन्द मंगल हो ।

तुम्हारे पत्र सब मिल गये हैं, जेल के पते से कार्ड दिया था वह भी मिल गया था । बाबू सूरजमल जी तथा साथ में कई आदमी और भी मिल गये हैं और सबसे अधिक खुशी मुझे यह हुई कि महात्मा जी भी उनके साथ ही मिल गये । उनका दर्शन करके ३ साल की वियोगाग्नि जो हृदय को जला रही थी कुछ जल के छिड़कने से कुछ शान्त हुई । मगर संसार के विषय भोगने से अधिक बढ़ते हैं उसी तरह से महात्मा के दर्शन से हृदय की अग्नि और भी अधिक जग उठी है । और जिस दिन से वे लोग मिल कर चले गये हैं, उस दिन से रात दिन चित्त बेचैन रहता है । जिस समय वे लोग मिल रहे थे एक घंटा भर तो स्वर्गसुख-सा प्रतीत हुआ, परन्तु जब वे उठ कर चले गये तो बड़ी उदासी आ गई । खैर, संयोग वियोग तो होते ही रहते हैं, फिर संयोग होगा ।

महात्मा जी चूरू होंगे या रतनगढ़ गये होंगे, उनको पत्र पढ़ा देना । मुझे पता नहीं यहाँ से महात्मा जी कब गये और किससे मिले या नहीं । बाबू सूरजमल जी भी २५ ता० को उनसे मिलने की कहते थे । स्कूल के बारे में उनसे मिलने की कहते थे, मगर वे तो २३ ता० को ही यहाँ से चले गये थे । शायद उनसे मिलना नहीं हुआ । महात्मा जी से पूछ कर हाल लिखना, और बाबू रतनगढ़ कब तक ठहरेंगे ? मेरे जयनारायण की उनको तथा प्रिय नन्दलाल जी को पहोंचा देना और कह देना कि मुझसे मिलाई करके आप लोगों ने मेरा उपकार किया है । मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूँ । अगर आपको इस मेरे मिलने में कोई कष्ट हुआ हो, (मुझे कुछ सन्देह है) तो आप कुछ विचार न करें । और इसी प्रकार महात्मा जी को भी कोई विचार न करना चाहिये । ईश्वर सब ठीक कर रहा है । आप लोग कोई उदासी मन में न लावें और पत्र बराबर दें । हम लोगों ने जेल की सुविधा फिर मंजूर कर ली है और आपको पत्र एक जेल की मार्फत लिखूँगा, मगर आप इस पत्र का उत्तर उसी सरदार के नाम दें ।

चिरं रामवल्लभ, उस वक्त तेरे मिलने की मन में रह गई, साथ में होता तो ठीक रहता । जेसराज ने भी मिलने की हिम्मत कर ली, उसको राजी खुशी कह देना । जेसराज कहता था अभी कूवे की मंजूरी हुई नहीं है ।

रामवल्लभ, तेरे को पत्र लिखने में देर हो गई है। चन्दन की माता के साथ सूका पूड़ा पहुँच गया था, परन्तु आपका भेजा और भगवान का प्रसाद होने के कारण अमृत-सा मालूम हुआ। परन्तु बीड़ के मीठे बेर मुझे पूरे न मिल सके, कुछ नमूना मुझे मिला, जिससे पता लगा, बेर आप लोगों ने बड़े प्रेम से भेजे थे। चन्दन की माता ने भूल की, नहीं तो मुझे मिल जाते। अब कोई मौका मिले तो थोड़ा फिर भेजना और धोती जोड़ा कोई मिले तो भेज देना। कोई जल्दी नहीं है।

एक मेरा कम्बल है, लाल इमली मिल का बना हुआ है, बड़ा-बड़ा फळवा है, रंग का भगवाँ सा है। शायद मंदिर में या रामीबाई के पास हो, किसी आते के साथ भेज देना। स्वीटर की पहुँच कलकत्ते लिख दी होगी, किसने भेजा था, लिखना। मंदिर का काम ठीक होता होगा। शान्त शर्मा जी दूधवा हैं, या चूरू आये हैं? *उनको कहना छोटी लड़की के हाथ झंडा देकर जलूस कब तक निकालोगे?* अब तीन साल में और भी झंडा उठाने वाली पैदा हुई होंगी?

महात्मा जी, आप भी अपने भाव पत्र में समय-समय पर कुछ प्रकट करने की कृपा किया करें। मेरा चित्त प्रसन्न होता है। मिलाई के समय आपको देख कर मेरा जी भर आया था, इस वास्ते आपको कुछ कह भी नहीं सका। दूसरे दिन बाबू के साथ के ५-४ सज्जन फिर जेल में आये थे और मुझे याद किया था, परन्तु मिल नहीं सके। मैं उनका प्रेम अच्छी तरह समझता हूँ। कोई चिन्ता नहीं है। सब लोगों को राम-राम कह देना। रामलाल ब्राह्मण को तथा ठाकुरसी बजाज को राम राम। कुंजीलाल बजाज वर्तमान है या नहीं? माने कुंभार को राम राम, छोगजी कड़वासर को राम राम!

In 1934 he (Surajmalji) came to visit Swami Gopal Das, a co-convict with us in Bikaner Jail. We were the first political prisoners and in the case against us Maharajah Bikaner was personally taking great interest and the impression had been going strong in the State that whosoever would dare be friendly to us, would merit the odium of the Great Autocrat as Maharajah Shri Sir Ganga Singhji was then known to be.

The quality of the food upset him and when in answer to a query of his, he was told that this was the food and it had known no variations in the case of these prisoners, a short of pity took hold of him......and the next day evening he saw the six hundred convicts of the Bikaner Jail being given a sumptuous dinner.[१]

यह पत्र स्वामी जी ने बीकानेर सेंट्रल जेल से दिनांक १३-१-३५ को श्री रामवल्लभ सरावगी, चूरू के नाम लिखा है--

ओ३म्

१३-१-३५

चिरं रामवल्लभ, आनन्द मंगल हो। हम लोग सब प्रसन्न हैं। अभी कोई उपवास नहीं करता है और न अभी करने की जरूरत है। बीड़ के दरख्त सर्दी से जले तो नहीं हैं? पत्र का जवाब उसी पते पर देना। जरूरत हुई तो तुमको बुलाऊँगा। इसलिए कृपा कर तुम पत्र जल्दी देना और महात्मा जी के हाथ से लिखा कर जल्दी देना। ५-४ दिन हुए टाड राजस्थान पुस्तक तथा बोरिया कोई आदमी जेल में दे गया है, मुझे मिल गया है, परन्तु यह मालूम नहीं कौन आदमी दे गया है। मैंने जयदेव जी को...लिखा था, उनने भेजा होगा। जयदेव जी चूरू हैं या चले गये, लिखना। सर्वहितकारिणी का जलसा अच्छा हो गया होगा। महात्मा जी मंदिर में आराम से होंगे। मैंने एक पत्र बालजी को कलकत्ते लिखा था, उसका उत्तर चूरू आया हो तो भेज देना और मैं प्रसन्न हूँ। इन दिनों में मेरे

१. श्री सूरजमल जालान स्मृति ग्रंथ पृ० २१४।

बीमार होने की कोई खबर उड़ी थी क्या ? वह कैसे उड़ी ? मैं राजी हूँ। किसी अखबार में कोई खबर होगी, लिखना। पत्र जल्दी उसी सरदार के नाम से देना। नेता जी को उसके पत्र का उत्तर दे दिया था, मिला होगा ? बीड़ का क्या हाल है, सर्दी में जला तो नहीं है।

(नगर-श्री, पत्र सं० २२२)

स्वामी जी को जेल में भी 'बीड़' (गोचर-भूमि) के वृक्षों की चिंता लगी रहती थी कि जाड़े के मारे कहीं जल तो नहीं गये हैं। महंत जी की चिंता भी वे विशेष रूप से करते थे, क्योंकि स्वामी जी के संसर्ग में आने का ही यह फल था कि उनका मंदिर जब्त हो गया था, स्वामी जी इसके लिए अपने को भी जिम्मेवार समझते थे। जेल में भी उन्हें इतिहास-ग्रन्थों के अवलोकन का चाव रहता था और इसीलिए उन्होंने टाड-राजस्थान मँगवाया था।

यह पत्र स्वामी गोपालदास जी ने बीकानेर सेंट्रल जेल से श्री रामवल्लभ सरावगी को लिखा है--

ओ३म्

चिरंजीव रामवल्लभ, आशीर्वाद। पत्र तुम्हारा मिल गया है। विश्वेश्वर लाल जी से मैं रूबरू मिलकर फोगला, सांगरी, कमंडलु ले लिये हैं। मैं तुमको और विश्वेश्वरलाल जी को धन्यवाद देता हूँ कि मुझे ये चीजें भेजी हैं। मैं कल दीवान साहब से मिला था, सारी बातें हुई हैं। १०-५ दिन में इसका नतीजा निकलेगा सो तुम लोगों को मालूम हो जावेगा। मन्दिर का काम ठीक चलता होगा।

चिरं हनुमान, आशीर्वाद। श्री जयनारायण जी और उनके सब पुत्र राजी खुशी होंगे। उनके कभी राम राम नहीं आते और मोहनलाल बजाज प्रसन्न होगा। चिरंजीव लक्ष्मीनारायण, आशीर्वाद। तेरी राजी खुशी का पढ़ कर चित्त प्रसन्न हुआ और तुम चूरू में कब से आये हो ? चिरं केदारनाथ सिंघी राजी होगा, वह कहाँ है ? चन्दनमल ने आशीर्वाद कहा है। गालाराम सेवक को नमस्ते,

स्व० संत मानीनाथ जी

चूरू के लोगों को स्वामी जी बहुत प्यार करते थे और जेल में भी उनकी कुशल-क्षेम पूछते रहते थे। स्व० मानीनाथ जी महाराज के प्रति स्वामी जी के मन में बड़ा सम्मान था और वे उन्हें सच्चा संत समझते थे। चूरू पिंजरापोल से उत्तर की ओर इन्होंने बड़ी संख्या में वृक्ष लगाये थे, ग्रीष्मऋतु में ये रात को स्वयं वृक्षों में पानी देते थे। गोचरभूमि को किसी तरह से हानि पहुँचाना इन्हें सह्य नहीं था। चूरू और आस-पास के क्षेत्र में स्व० मानीनाथ जी महाराज की बड़ी मान्यता है।

यह पत्र स्वामी गोपालदास जी ने बीकानेर सेण्ट्रल जेल से श्री रामवल्लभ सरावगी के नाम लिखा है—

ओ३म्

चिरंजीव रामवल्लभ, आशीर्वाद। तेरा दो पत्र मिला, पढ़ कर समाचार जाने। और समाचार यह है कि आजकल में श्री दरबार साहब से मिलने की बातचीत हो रही है। दीवान साहब पूरी चेष्टा कर रहे हैं, दीवान साहब से बहुत सी बातें हुई हैं और आजकल में जो नतीजा होगा उसकी सूचना मैं तुमको तार

से दूँगा और सबको राम राम। चिरं दुर्गादत्त को आशिष। मानीनाथ जी को जयनाथ जी की। सब मित्र तथा याद करने वालों को राजी खुशी कह देयो और कोई विशेष समाचार या बात हो तो मुझे जल्दी पत्र देना। इस चिट्ठी का समाचार अभी प्रकट मत करना।

शुभचिंतक
गोपालदास

(नगर-श्री, पत्र सं० २८)

कहा जाता है कि महाराज गंगासिंह जी जब स्वामी जी से मिले तो उन्होंने स्वामी जी से कहा कि तुम माफी माँग लो तो तुम्हें छोड़ा जा सकता है। इस पर स्वामी जी ने उत्तर दिया कि मैंने तो कोई अपराध नहीं किया, इसलिए माफी किस बात के लिए माँगूँ। महाराजा ने भी इस बात को अनुभव किया और सजा की अवधि पूरी होने से बहुत पहले उन्हें जेल से मुक्त कर दिया।

यह पत्र स्वामी गोपालदास जी ने दिनांक ५-२-३५ को बीकानेर जेल से श्री रामवल्लभ सरावगी के नाम लिखा है—

ओ३म्

ता० ५-२-३५

चिरंजीव रामवल्लभ, आनन्द मंगल हो। ता० १०-१ का लिखा हुआ आपका पत्र मुझे ठीक समय पर मिल गया था जिसको आज महीना भर होने में आया है और उसका उत्तर भी मैंने उसी समय दे दिया था सो भी तुमको मिला होगा, परन्तु फिर कोई पत्र आज तक मुझे नहीं मिला, सो मालूम होता है हमारा पत्र उसके घर में ही कहीं पड़ा होगा। महीना भर होने में आया, चिन्ता हो रही है, पत्र बहुत जल्दी जेल के पते पर दे देना।

महात्मा जी प्रसन्न होंगे, मन्दिर में रहते होंगे, कथा-वार्ता होती होगी।

गर्मी बहुत पड़ी, बीड़ में दरख्त जल गये होंगे, परन्तु सुना है वर्षा कुछ हुई है, इससे जल्दी हरा होगा। रामीबाई को नमस्ते, तेरा पत्र नहीं आयेगा तब तक मैं भी नहीं लिखूंगा।

महात्मा जी ! मोदी जी ने लिखा है, जेल के अनुभव से आपको व्यवहार-चतुर होकर बाहर आना चाहिये तथा धोखेबाजों से सावधान रहना चाहिये। जीवन भर जिन लोगों की आपने सेवा की वे लोग समय पर काम नहीं आये, इत्यादि। मुझे इसका बहुत अनुभव है और होता जाता है, मगर कोई बात किसी के वश की नहीं है।

(नगर-श्री, पत्र सं० ८०)

इस पत्र में भी स्वामी जी ने गोचर-भूमि के वृक्षों के लिए ही चिंता प्रगट की है। स्वामी जी का यह सहज स्वभाव था कि उनके साथ दुष्टता करने वालों को भी वे क्षमा कर देते थे और सहज भाव से फिर उनका विश्वास कर लेते थे। इसके लिए उन्हें कष्ट भी उठाना पड़ा लेकिन जैसा कि उन्होंने अपने पत्र में लिखा है ऐसा उनका स्वभाव ही बन गया था।

यह पत्र स्वामी गोपालदास जी ने बीकानेर जेल से श्री रामवल्लभ सरावगी के नाम लिखा है—

ओ३म्

चिरं० रामवल्लभ, आनन्द मंगल हो। बीकानेर से चूरू पहुँचकर तुमने चिट्ठी दी थी वह मिल गई थी, उसका उत्तर मैंने दिया था। आज २०-२५ दिन हो गये फिर तो हमारे कोई पत्र नहीं आया। मुझे बड़ी चिन्ता है कि तुमने महात्मा के पिलाणी को जाने का लिखा था, फिर वहाँ से आये या नहीं, क्या बात हुई ? आज तक कुछ उत्तर नहीं आया, मुझे बड़ी चिन्ता है। इस पत्र को देखते ही उसी पते पर चिट्ठी देना और सब समाचार लिखना।

ता० १७ चली गई। एक खूबराम जी को छोड़ दिया बाकी तीन हम अभी हैं। यह अनुमान है कि हमारा फैसला भी जल्दी होगा। एक-एक आदमी को छोड़ने का विचार है। मेरी अरंडी और परसाल भेजी वह सोड़ किसी सागे की विद से जरूर भेज देना और एक ऊनी स्वीटर जो लाल इमली का बनाया हुआ है, कलकत्ते किसी को लिख देना कि बीकानेर जेल के पते पर भेजेगा। महात्मा जी पिलाणी से आये होंगे, उनका सब हाल लिखना।

बीड़ में तुम गया होगा, अभी तो हरियाली आछी होगी। मानीनाथ जी को जयनाथ जी की कह देना। आजकल में कोई लेख निकला हो किसी अखबार में तो काट कर भेज देयो। आजकल शान्त शर्मा और मालचन्द कहाँ हैं। मंदिर का काम ठीक होता होगा। मेरा विचार है मंदिर का छत्तर कोई बाहर का चोर तो नहीं ले गया होगा। रामीबाई को मंदिर में बुलाकर राजी खुशी कह देना और वह कोई चिट्ठी दे तो साथ में भेज देइयो। तेरे घर में सब बालक राजी होंगे। हम लोग राजी हैं। उस अमर जी राजपूत को हाईकोर्ट से फाँसी की सजा हुई है। परंतु अभी अपील कौंसिल में चल रही है। कई वर्षों से यहाँ फाँसी की सजा बंद थी, मगर अब फिर शुरू करते हैं। दीवान साहब तो ५-७ दिन में चले जायेंगे, आँकी जगह कौन होगा, पता नहीं है।

कारावास-मुक्ति के बाद

कुंअर चांदकरण जी शारदा का पत्र--

ओ३म्

कुंवर चांदकरण शारदा
ऐडवोकेट

शारदा भवन
अजमेर १४-७-३५

प्रिय भ्राता मान्यवर सज्जन शिरोमणि श्री स्वामी गोपालदास जी महाराज सादर सप्रेम नमस्ते। आज आपका कृपापत्र श्रीमान् देशभक्त खूबराम जी सर्राफ के मार्फत प्राप्त कर अत्यन्त हर्ष हुआ। यहाँ आपके त्याग और तप के पश्चात् कठिन कारावास से छुटकारे पर हम सबने अत्यन्त हर्ष मनाया। हम सब आपको हार्दिक बधाई देते हैं। *हमें अभिमान है कि आप जैसे त्यागी और तपस्वी अभी* तक भारतमाता का मुख उज्ज्वल करने के लिए वीर भूमि राजस्थान उत्पन्न कर रही है। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आपको दीर्घायु करे ताकि आप देश और धर्म की अधिकाधिक सेवा कर सकें। मेरी राय में कुछ समय के लिए आप विश्राम करें। और तत्पश्चात् देशकाल देखकर जो परम पवित्र वैदिक धर्म के अनुकूल कर्तव्यपथ हो उसका अनुसरण करें...

भवदीय प्रियभ्राता
चाँदकरण शारदा

(नगर-श्री, पत्र सं० ४०७)

शायद जून सन् १९३५ में स्वामी जी को जेल से मुक्त कर दिया गया। इस पर चूरूवासियों ने तो महान् हर्ष मनाया ही, समूचे राजस्थान में, कलकत्ता और बम्बई आदि महानगरों में भी हर्ष की लहर दौड़ गई। स्वामी जी के सहयोगी भक्त और प्रशंसक जहाँ भी थे वहीं उन्होंने खुशियाँ मनाई।

उपरोक्त पत्र में श्री चाँदकरण जी शारदा ने अपने हृदय के उद्गार प्रकट किये हैं।

स्वामी जी के जेल से छूट कर चूरू आने के सम्बन्ध में ठाकुरसीदास जी बजाज

मेरा श्री चूरू को यह अंतिम प्रणाम है और वास्तव में फिर वे कभी चूरू नहीं आये और लक्ष्मणझूला में ही उनका स्वर्गवास हुआ।

यह पत्र श्री बद्रीप्रसाद जी सरावगी ने कटनी से दिनांक ७-७-१९३५ को श्री स्वामी जी के नाम लिखा है——

पूज्यवर श्रीयुत स्वामी जी,
सादर सविनय प्रणाम।

अपरंच पत्र आपका आज दिन मिला, पढ़ कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आपके आदेशों को हृदय में धारण किया। आपने लिखा ५-७ दिन में कलकत्ता जाने का विचार है सो जाना, बड़ी खुशी की बात है, लेकिन इस तुच्छ सेवक की भी तरफ ख्याल करके कृपया दर्शन जरूर देते जाना। मेरे को पूर्ण अभिलाषा है, आशा है अवश्य पूर्ण करेंगे। भैया शिवबक्सराय जी वगैरह का भी पूर्ण आग्रह है। ऐसा न हो कि आप सीधे निकल जाएँ और हम लोग चातक बूँद की तरह तरसते ही रह जाएँ। यदि उचित समझो और आवश्यकता हो तो वैसा लिखना, मैं अलाहाबाद आपके सामने लिवाने के लिए आ जाऊँ। रास्ता का विवरण इस प्रकार है——

१. चूरू से अलाहाबाद तक तो वही रास्ता कलकत्ता जाने वाला है ही।
२. अलाहाबाद से अगर आप तोफान मेल से सवेरे ही अलाहाबाद पहुँचें तो उसी वक्त छोंकी स्टेशन से बम्बई मेल मिलेगा जो सीधा आपको कटनी पहुँचा देगा १॥ बजे करीबन दुपहर को।
३. अलाहाबाद से छोंकी तक एक टुकड़ा सेटल डाक का मेल देने को उसी वक्त वहीं से जाता है।

इसी भाँति रास्ता है, अलाहाबाद से कटनी तक, आने-जाने की तकलीफ आपको अवश्य होगी, लेकिन उसकी तरफ ख्याल न करके मुझको दर्शन देने का ख्याल अवश्य रखना। यहाँ से आपको बम्बई मेल में बैठा देंगे जो सीधा हवड़ाह आपको उतारेगा, रास्ते में कहीं बदली करने का काम नहीं है। कटनी पहुँचने के समय की पहले से ही सूचना अवश्य कर देना। यहाँ पर आपकी कृपा से सब कुशल मंगल है। पूज्य महंत जी से प्रणाम वंचना। दास पर कृपादृष्टि बनी रहे। पत्रोत्तर शीघ्र देना, इतिशुभम्।

श्री चन्दनमल जी बहड़

वाईं ओर से सर्वश्री चिरंजीलाल ओझा, मास्टर--
प्यारेलाल और सोहनलाल शर्मा ।

कारावास से मुक्ति के बाद स्वामी जी कुछ दिन चूरू ठहरे और फिर बनारस आदि स्थानों से होते हुए कलकत्ता को रवाना हुए। श्री बद्रीप्रसाद जी की स्वामी जी के प्रति बड़ी आस्था रही है अतः उन्होंने स्वामी जी से सानुरोध प्रार्थना की है कि आप कलकत्ता जाते हुए मुझे भी कृपा करके दर्शन अवश्य दें। बद्रीप्रसाद जी के आग्रह में पूर्ण आत्मीयता हिलोरें मार रही है।

स्वामी जी २८ जुलाई को बनारस पहुँचे थे और कुछ दिनों बाद कलकत्ता पहुँचे। इस महानगरी में पहुँचने पर आपका अभूतपूर्व स्वागत किया गया। स्टेशन पर स्वामी जी का स्वागत करने के लिए बहुत बड़ी संख्या में लोग पहुँचे। शान्त शर्मा जी का कथन है कि हवड़ा का फाटक खोल दिया गया और बड़ी धूमधाम से स्वामी जी का स्वागत हुआ। स्टेशन से बहुत बड़े जुलूस के साथ स्वामी जी की सवारी चली। उन्हें सुराना भवन में ठहराया गया। सभी उनका अभिनन्दन करने को उत्सुक थे। १५ अगस्त के 'लोकमान्य' ने स्वामी जी का स्वागत करने के लिए सबका आवाहन करते हुए एक मार्मिक अपील निकाली जिसका अंग्रेजी अनुवाद यों है—

Swami Gopal Dasji, the well-known heroic worker and Sadhu of Churu (Bikaner) has arrived in our city these days and is putting up at the Surana Bhavan. He has got inherently a vow of public service and did not budge off his way even after undergoing hardships of jail for a pretty long period of 3½ years. We accord him a hearty welcome in our city. It is hoped that other local public organisations would also arrange for his due reception.'[1]

१. File 12-1935; Cuttings relating to Swami Gopal Das; Rajasthan Archives, Bikaner.
(बीकानेर के सम्बन्ध में छपने वाली खबरों की प्रत्येक कतरन महाराजा साहब के अवलोकनार्थ पेश की जाती थीं। अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य भाषा की खबरों का अंग्रेजी अनुवाद उनके समक्ष पेश होता था। उपरोक्त अनुवाद उन्हीं फाइलों से लिया गया है।)

ॐ

सिद्धश्री चूरू शुभस्याने स्वामी गोपालदास जी जोग लिखी सहडोल धनराज, महावीर प्रसाद का श्री जुहार बंचना। . . . पुज्य स्वामी जी सेती नथमल केदारप्रसाद केन पावाधोक वंचना धनेमान सेती और बद्रीप्रसाद कटनं है सो वहाँ से चिट्ठी आपको देवैगो सो जानना। पुज्य महंत जी से पालागं कहना, लिखी नथमल का पावाधोक वंचना।

और पुज्य स्वामी जी से केदार का प्रणाम वंचना। आपकी दया से हम सब लोग परम कुशल हैं। आपके दर्शनों की हार्दिक इच्छा लाग रई छै। दर्शन होना ईश्वराधीन है। मैं आपका एक जीवन चरित्र लिख कर प्रकाशित करना चाहता हूँ। इसमें आपसे कुछ सहयोग चाहता हूँ सो अगर आप इस काम में मुझे सहयोग दे सकें तो मैं इस कार्य को जल्दी पूरा कर सकूँगा। इस कार्य को शुरू तो कर दिया है। अगर आप कटनी आते तो यह काम सहज ही में पूरा हो जाता, मुझे ऐसा अनुभव होता है। आप कुछ थोड़ा सहयोग देंगे तो मैं अपने कर्तव्य को सफल बना सकूँगा।

(नगर-श्री, पत्र सं० १८८) आपका
केदार वि० सरावगी

स्व० श्री केदारप्रसाद जी सरावगी की हार्दिक इच्छा थी कि स्वामी जी का जीवनचरित्र लिखा जाए। इसके लिए उन्होंने कुछ सामग्री भी एकत्र कर ली थी और कार्य शुरू हो गया था, लेकिन दुर्दैव से उनका असामयिक निधन हो जाने से यह कार्य अधूरा रह गया। बहुत खुशी की बात है कि उनके बड़े भाई श्री बद्रीप्रसाद जी सरावगी ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन की व्यवस्था करके

यह पत्र चूरू के श्री बद्रीप्रसाद जी जैन ने कटनी से दिनांक ७-११-३५ को स्वामी जी के नाम लिखा है---

कटनी, जंक्शन
७-११-३५

पूज्य स्वामी जी,

सादर प्रणाम। अपरंच पत्र आपका आज दिन मिला, समाचार जाना। सहडोल से भी चिट्ठी गई लिखी, आपने भी बदला दिया लिखा सो जाना। गोपाष्टमी का मेला यहाँ सानन्द सम्पूर्ण हुआ। यहाँ की गौशाला को २५ वर्ष हो गये थे सो इस साल गोशाला की जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई थी।

मंदिर के लिए लिखा कोशिश हो रही है सो जब अधिकार प्राप्त हो जावे लिखना अवश्य और सभा का तथा पुत्री पाठशाला का कार्य बहुत अच्छी तरह होता लिखा सो जाना, बड़ी खुशी की बात है। आपके हाथ में कार्य आ गया है तो फिर दिनोंदिन उन्नति होगी अवश्य, ऐसी आशा है। यहाँ पर सब आनन्द-पूर्वक हैं, कृपादृष्टि बनाये रखना। भूल-चूक के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। अगर कोई बन गई हो तो बालक जानकर क्षमा कर देना। मेरे योग्य कार्य अवश्य लिखना।

(नगर-श्री, पत्र सं० ६२)

आपका सेवक
बद्रीप्रसाद जैन
कटनी

जिनमें कई पट्टे व सर्वहितकारिणी सभा व गौशाला की हुंडियाँ थीं, और सन्दुक टूटे हुए लौटाये गये।[1]

सारा मामला तय हो जाने पर भी खुफिया के भूत उनके पीछे लगे ही रहते थे। मन्दिर में आज कौन आया, कितनी देर ठहरा इस सब की रिपोर्ट वे लिखते रहते थे जिससे स्वामी जी के पास आने में लोग झिझकते थे और बहुत कम आ पाते थे। इस बात से स्वामी जी बड़े खिन्न रहते थे और फिर कुछ समय के लिए स्वर्गाश्रम की ओर चले गये।

जेल से आने के वाद स्वामी जी का वक्तव्य—

कारावास-मुक्ति के वाद स्वामी जी का एक वक्तव्य "राजस्थान" २ सितम्बर सन् १९३५ के अंक में छपा था, इसमें स्वामी जी के आध्यात्मिक विचारों की सुन्दर अभिव्यक्ति है। "राजस्थान" का वह अंक तो प्राप्य नहीं है, उसके अंग्रेजी अनुवाद का कुछ अंश राजस्थान अभिलेखागार, बीकानेर से प्राप्त कर यहाँ दिया जा रहा है—

Wonderful and inscrutable are the ways of God. The remarkable accounts of these marvellous ways are always to be seen in the Puranik anecdotes, but man does not derive any benefit from this, nor has he unswerving faith in them. Today a person drinks fresh milk in a fine silver cup from his servant and the next day the same person is seen taking dry and coarse bread with water in an iron plate. All these are the manifestations of the mysterious ways of God. Reputations and reproach, happiness and hardship, feelings or lack of these are all in man's life at his will.

If there be no change in life at all, it would be of no value and only in distress there is good life. Some poet says, "There is no happiness like calamity if it be for a short duration." A person learns many lessons in times of distress. I have also got short experience of calamitous days during my past life, as a sequel to which my conviction in the existence of God has become all the

---

१. File No. 12-1935; Cuttings relating to Swami Gopal Dass; Rajasthan Archives, Bikaner.

more firm. I had to pass life in jail for the last 3½ years of which there was no likelihood nor any cause. One idea that comes to my mind is that life in jail is like that of an ascetic.

The restrained and simple life, which is not acquired outside even with endeavour by thousand ways is spontaneous in jail life. In forbidding a patient not to take certain thing, even if threat of death be held out, he does not leave off the thing and nor can he live with restraint. Thousands die for not practising self-control, but a person passes year after year in jail by taking only bread and pulses. Neither any weakness is felt in *his body nor has he any mental worry. Surely life in* jail is very pitiful and merciless. Every moment a man has to be cautious, hence a person learns many lessons from this, but that person alone can receive many instructions and grows in experience, who has suffered no moral degradation at heart. Moral degradations is the chief cause for mental worry of a person. I have a bitter experience of this.

I observed many things during three and a half years of jail life and experienced that in howsoever great danger the life of a person may be there is no fear if God helps. God protects at the moment of distress indeed.

When I was inside I had no anxiety, but as the time of release from jail approached, there was some excitement in the working of mind. I began to remember friends and to recollect again and again the affection for Churu and attachment with the public institutions there .. Having arrived in Churu after three and a half

यह पत्र राजस्थान के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री अचलेश्वरप्रसाद जी शर्मा ने स्वामी जी के नाम दिनांक २८-१-३६ को अकोला (वरार) से लिखा है--

नव-राजस्थान

संचालक--
श्री ब्रिजलाल बियाणी
संपादक--
श्री रामनाथ 'सुमन'
रामगोपाल माहेश्वरी
बी० ए०, एल-एल० बी०

अकोला (बरार)
ता० २८-१-१९३६

स्वामी जी महाराज,

सादर नमस्कार ।

आशा है आप मुझे भूले न होंगे। मैं 'सैनिक' को छोड़कर गत एक माह से यहाँ आ गया हूँ। मुझे अत्यंत खेद है कि मैं इच्छा रहते हुए भी आपको अब तक पत्र न दे सका। आपकी सादगी, निर्भयता, सौम्यता तथा विवेक बुद्धि ने मेरे दिल पर गहरी छाप लगा दी है।

क्या आप सरदारशहर निवासी श्री नेमीचंद जी आंचलिया को जानते हैं? करीब १½ महीना पूर्व वे मुझे जोधपुर में मिले थे। मेरा उनसे कोई परिचय नहीं था, फिर भी वे मेरा पता पूछते हुए मेरे यहाँ आये। उन्होंने कहा कि वे स्वामी जी से परिचित हैं। तत्पश्चात् उन्होंने मुझे उन पत्रों को पढ़कर सुनाया जिन्हें बक्कौल उनके बीकानेर नरेश की सेवा में भेजा गया था। अगर आप मुझे श्री आंचलिया जी के हालचाल से वाकिफ करायेंगे तो मैं आपका बड़ा एहसानमन्द होऊँगा।

आपका स्वास्थ्य तो ठीक है न? क्या कार्यक्रम है आजकल आपका? कुछ दिन पूर्व मैंने "राजस्थान" में आपका एक लेख पढ़ा था। उसमें आपने शायद अपने जेल-जीवन का हाल लिखा था। क्या आप "नव-राजस्थान" के लिए भी किसी विषय पर लेख भेजने की कृपा करेंगे? आपके नाम से "नव-राजस्थान" भिजवाने का मैंने प्रबन्ध कर दिया है। कृपाभाव बनाये रखिये। परिचित मित्रों को वन्दे कहिये और मेरे योग्य सेवा हो तो लिखिये।

(नगर-श्री, पत्र सं० १६८)

श्री अचलेश्वर प्रसाद जी शर्मा सन् १६२६ में "तरुण राजस्थान" में श्री जयनारायण जी व्यास के सहायक के रूप में आये थे और श्री जयनारायण जी ने सन् ३२ में इन्हें बीकानेर षड्यन्त्र के मुकदमे के समाचार भेजने के लिए नियुक्त किया था।[1] स्वामी जी की सादगी, निर्भयता और सौम्यता आदि गुणों से ये बहुत प्रभावित हुए थे। जेल से आने के बाद "राजस्थान" में उनके वक्तव्य को पढ़ कर उन्होंने "नव-राजस्थान" के लिए भी लेख भेजने का अनुरोध किया है।

लक्ष्मणझूला व फूलचट्टी से लिखे पत्र

यह पत्र स्वामी गोपालदास जी ने फूलचट्टी से दिनांक १४-८-३७ को श्री रामवल्लभ सरावगी के नाम लिखा है—

ओ३म्

फूलचट्टी
१४-८-३७

पत्र तुम्हारा आया नहीं सो देना चाहिये और महन्त जी यात्रा से आ गये हैं। शरीर कुछ ढीला हो गया है सो यहाँ से सोमवार को रवाने होकर पचेरी होते हुए चूरू पहोंच जाएँगे। मेरा विचार भी १०-१५ दिन में बैजनाथ जी की तरफ जाने का है। चूरू में जुबिली की तैयारी होती होगी और तहसीलदार वृद्धिचन्द आदमी भला होगा। आजकल सी० आई० डी० वाले पूछते हैं या नहीं? सब को राम-राम; ठाकुरसी बजाज को राम-राम। जयनारायण सरावगी को राम-राम। भानीनाथ जी मिलता होगा, उनको जयनाथजी की कह देना। यह पत्र केदार सरावगी को तथा रामीबाई को भेज देना।

(नगर-श्री, पत्र सं० ३६)

शुभचिंतक
गोपालदास

स्वर्गाश्रम जाने के बाद स्वामी जी अधिकतर लक्ष्मणझूला और फूलचट्टी ही रहे, बीच में एक बार काश्मीर भी हो आये। लक्ष्मणझूला और फूलचट्टी से लिखे हुए स्वामी जी के जो पत्र प्राप्त हुए हैं, वे सब श्री रामवल्लभ सरावगी के नाम हैं और पूर्ण स्पष्ट हैं। स्वामी जी के लक्ष्मणझूला चले जाने के बाद भी श्री रामबल्लभ जी ही मन्दिर की सार-सँभाल करते थे।

फूलचट्टी
७-११-३८

मन्दिर में अन्नकूट आछी तरह कर दिया है तथा २४) आया सो ठीक है। खर्च लग कर बचत कितनी रही ? मंदिर में पुजारी की तनखा ५) मासिक की आमदनी तो जरूर होनी चाहिये। और रामवल्लभ एक काम करना कि कालूराम मेहरी वाला चूरू में बीमार सुना है सो उसे घर जाकर मेरी तरफ से पूछना कि उसको क्या तकलीफ है ? और क्या हालत है ? कौन इलाज करता है, क्या बीमारी है ? उसको कह देना मुझे सब समाचारों का पत्र लिखे।

शुभचिंतक
गोपालदास

(नगर-श्री, पत्र सं० २२५)

स्वामी गोपालदास जी

मेरे पास कलकत्ते से भी चिट्ठी आई है कि चूरू जाकर अनाथ गौओं का जो प्रबन्ध किया है तथा रुपया चन्दे का हुआ है उनकी सँभाल करना चाहिये, परंतु मैं अभी विचार करता हूं, अभी पकाई चूरू आने की नहीं है।

गोपालदास

यह पत्र स्वामी गोपालदास जी ने लक्ष्मणझूला से दिनांक २२-११-३८ को श्री रामवल्लभ सरावगी के नाम लिखा है--

ओ३म्

चिरंजीव रामवल्लभ, आनन्द रहो। पत्र तुम्हारा.ठीक समय मिल गया है। आसिये पुजारी की वावत लिखा सो ठीक है, आजकल आदमी सब ऐसे हैं, अपना मतलब देखते हैं। जैसा है उसी को निभाना चाहिये और जहाँ तक हो अपने आदमी तथा नौकर को बनाना चाहिये, बिगाड़ना नहीं। अगर आसिये ब्राह्मण को दो पीसा आमदनी हो तो अच्छी बात है, आखिर गरीब ब्राह्मण है।

श्री मानीनाथजी तथा सब नाथों को मेरा हाथ जोड़ कर जयनाथ जी को कह देना और बीड़ में पालो तथा जांटी छांगना चाहे हैं सो इस बारे में मैं तो कोई भी राय नहीं दे सकूँ। मैं तो बीड़ का मालिक श्री मानीनाथ जी को समझता हूँ। वह कहें उसी तरह करना चाहिये। बाकी यह बात नाथ जी को समझाना चाहिये कि यह अकाल का समय है और मौका ऐसा आ गया है तो झाड़ी तथा जांटी छांग कर गौओं को चरावें तो कोई हर्ज नहीं है। परन्तु श्री मानीनाथ जी को नाराज कर के अगर कोई काम किया तो खैर नहीं है। इस महात्मा साधु ने बीड़ की जो सेवा की है कोई करने वाला पैदा नहीं हुआ है और बाकी सागरमल जी मंत्री समझदार हैं।

प्रिय गणपत ओझा, जयनारायण ! तेरे पग में ऐसा क्या दर्द हो गया जो जाता नहीं ? अब आराम आ गया होगा, नहीं मैं दवाई लिख भेजूंगा। चिट्ठी देना।

गोपालदास

(नगर-श्री, पत्र सं० २७)

ओ३म्

चिरं रामवल्लभ,

आज पत्र मिला, २-४ दिन से मेरा शरीर ठीक नहीं है, ज्वर आ गया था, अब ठीक हो जाऊँगा। तुम मुझे बराबर बुलाते हो परंतु मुझसे चूरू में कोई सेवा लेना चाहे तो आ सकता हूँ, बाकी इस प्रकार मेरा आना व्यर्थ है। मैं आप लोगों से अधिक समझता हूँ। सेठ सागरमल जी ने जो लिखाया वह ठीक है, उनका प्रेम है, कहीं मिलें तो जयनारायण कह दें, पत्र फिर दूंगा। चिरं रिधकरण[1], तुम सभा का काम करते हो, मुझे सब पता है, तुम्हारी काम करने की अवस्था है, बाकी मंत्रियों को दोष देना ठीक नहीं, ऐसा ही होता आया है, सब को जयनारायण।

(नगर-श्री, पत्र सं० ४००)

गोपालदास

यह पत्र स्वामी जी ने महाप्रयाण के लगभग एक माह पूर्व ज्वर की हालत में लिखा है, लेकिन इसमें भी उनकी सेवा भावना हिलोरें ले रही हैं कि यदि चूरू में मुझसे कोई सेवा लेना चाहे तो आ सकता हूँ। अन्यथा आने का कोई लाभ नहीं है। सेवा-रहित जीवन को वे व्यर्थ समझते थे।

अन्तिम पत्र और महाप्रयाण

स्वामी गोपालदास जी ने अपना यह अंतिम पत्र पौष शुक्ल ५ वि० सं० १९९५ को लक्ष्मणझूला से महन्त गणपतिदास जी के नाम लिखवा कर इसके नीचे अपने हस्ताक्षर कर दिये हैं। बचपन में ही जनसेवा की जो भावना उनकी आत्मा में अंकुरित हुई थी और जिसके लिए उन्होंने अपना सारा जीवन होम दिया वही सेवा-भावना उनके इस "वसीयतनामे" में मुखरित हो रही है।

अन्तिम समय उनके चित्त में पूर्ण शान्ति थी, किसी प्रकार की सांसारिक इच्छा और संकल्प-विकल्प उनके मन में नहीं था। गंगा-तट पर शरीर छोड़ने की उनकी इच्छा थी जो पूरी होने जा रही थी। केवल त्यागी और कामना-रहित व्यक्ति ही इतनी शान्ति से महाकाल का वरण कर सकते हैं। इस प के लिखे जाने के १३वें दिन माघ कृष्ण ३ वि० सं० १९९५ को स्वामी जी र्ण शान्ति के साथ महाप्रयाण कर अमरत्व को प्राप्त हो गये।

॥ श्री ॥

लक्ष्मणझूला
मिती पौष सुदी ५ सम्वत १९९५ वि०
मंगलवार

श्रीमान् महन्त गणपतिदास जी——

आज मैं यह एक अन्तिम चिट्ठी लिखाता हूँ और इस समय मेरी जो अन्तिम इच्छा है वह प्रकट करता हूँ। इसके अनुसार आप कार्य करना जी——

१. मुझे निश्चय हो गया है कि अब शरीर नहीं रहेगा, इसलिए आप अपने प्रयोग को कभी नहीं बिगाड़ना। जिस समय आपके पास में यह चिट्ठी पहुँचे उस समय बाबू नन्दलाल जी को बुलाकर कह दें कि उन रुपयों में से एक सौ रुपयों की दवाई लक्ष्मणझूला की डिसपेन्सरी को भेज देना जो कि डिसपेन्सरी से लिस्ट जावे उसके मुताबिक और पचास रुपया रोकड़ी फूलचट्टी के ब्रह्मचारी देवीदयाल जी के नाम भेज देवें। और यह चिट्ठी जब आपके पास पहुँचे तो उसी समय यह समाचार लिख दें सो चूरू के साधु और पांच-चार सौ

न्योता दे देवें। अगर आप की इच्छा चूरू और कड़वासर बाहर के साधुओं को बुलाने की इच्छा हो, आप इस काम में स्वतंत्र हैं, जैसा जी में आवे वैसा कर सकते हो। गर्मी के मौसम में दो-चार जगह प्याऊ जंगल में लगा देना। इस के ऊपर मेरी एक इच्छा यह है कि यहाँ लक्ष्मणझूला की एक पाठशाला अच्छी है और बहुत से ब्राह्मणों के बच्चे संस्कृत-हिन्दी विद्या पढ़ते हैं। यह पाठशाला महन्त रामउदारदास जी के प्रबन्ध में है। इसके वास्ते मेरी पहिले भी इच्छा थी परन्तु संयोग नहीं हुआ। इसलिए मैं चाहता हूँ कि मेरी यह अन्तिम इच्छा बाबू बन्शीधर जी बाबू नन्दलाल जी व चिरंजीव मोहनलाल जी आपस में विचार कर दश रुपया मासिक की सहायता शुरू करवा दें। जब तक काम अच्छा चलता रहे, तब तक आप देते रहें, इस काम में आप सदा के वास्ते कोई बन्धन में नहीं हैं। अन्त में इतना और लिखता हूँ कि आप श्रीमानों ने मेरे साथ में इतना पूरा प्रेम निभाया, इसके लिए मुझे खुशी है। आशा है आप महन्त जी के साथ भी वैसा ही बर्ताव करते रहेंगे। और मेरा चित्त इस समय तक बहुत प्रसन्न है और मन में किसी प्रकार का संकल्प नहीं है। गंगा-तट पर शरीर छोड़ने की मेरी बहुत इच्छा थी, वह पूरी हो जावेगी। आप लोग सब आनन्द-मंगल में रहें और फलते-फूलते रहें।

(नगर-श्री, पत्र सं० ४०६) गोपालदास

यह ऊपर की चिट्ठी मैंने लिखाई

रोगी नें आराम हो जावेगो। बाकी यह तो यही कहवे हैं कि शरीर छूट जावे तो ठीक है, गंगा को किनारो है। मंदिर की सँभाल राखियो। चिट्ठी तुम्हारे पास बराबर जाती रहवेगी या इन्हांने कह दी गई है। शांत शर्मा जी के लड़के शरदचरण ने मेरा राम-राम कुहा दियो।

(नगर-श्री, पत्र सं० २६)

मि० माघ वदी १

(स्वामी जी के अंतिम समय में उनके अभिन्न मित्र मास्टर श्रीराम जी लक्ष्मणझूला में स्वामी जी के पास रहे, यह पत्र उनके स्वर्गारोहण से तीन दिन पहले का लिखा हुआ है, स्वामी जी की हालत दिन पर दिन गिरती जा रही थी अत: श्रीराम जी ने कलकत्ता जाकर वैद्य शान्त शर्मा जी के साथ एक अच्छे डाक्टर को भेजने की व्यवस्था की थी लेकिन इसी बीच स्वामी जी स्वर्ग सिधार गये।)

मैं ७ को काशी आया। द्वारकादास गोस्वामी को सब वृतान्त सुनाया और डाक्टर शुक्ल को लक्ष्मणझूले भेजने को राजी किया। मैं ८ ता० को कलकत्ता को रवाना हो गया। ९ ता० को वहाँ पहुँच कर शान्त जी से मिला, उनको चिट्ठी सौंप दी और कह दिया नन्दलाल जी को यह चिट्ठी दे दो। वह देर से दुकान पर पहुँचे। उनसे मिलकर लक्ष्मणझूले पर स्वामी गोपालदास के लिए पूरा प्रबन्ध कराने का समाचार मनीराम जी काली कमली वाले को भिजवाया। रुपये-पैसे की कोई तकलीफ न रहे। और स्वामी जी की चिट्ठी में जैसा लिखा गया था, १०० रु० महंत रामोदारदास के औषधालय को तथा ५० रु० फूलचट्टी को भेजने की व्यवस्था कराई गई। शान्त शर्मा भी जाने को तैयार हो गये। वह कल ११ ता० को देहरादून एक्सप्रेस से रवाना होने को तैयार हो गये थे। आज की डाक से हिन्दू सेवा सदन का डाक्टर भी लक्ष्मण-झूला जाने को तैयार था, परन्तु कल तार आ जाने से डाक्टर को नहीं भेजा गया।

कल ९-१-३९ को मैं सायंकाल महंत जी से भी हस्पताल में मिला। सब बातें उनसे हो गई हैं। स्वामी जी ने तो अपनी चिट्ठी में यही इच्छा प्रगट की है कि अनुमान ४०० वा ५०० नूँता देकर जिमा देना। यदि कड़वासर के भी स्वामियों को जिमाने की इच्छा हो तो महंत जी की मर्जी और गर्मी में जेठ के महीने में तीन-चार जगह पो (प्याऊ) भी लगाने की इच्छा प्रगट की है। मुझसे भी जबानी यही कहा था। मेरे जाने से उनको बहुत शान्ति मिल गई थी। हमें भी आखिर में मिलना हो गया। उन्होंने यह भी कहा था कि अब मेरी इच्छा यही है कि मेरा शरीर गंगा-किनारे छूटे। अनुमान ५० रु० लादुराम जी खेमानी के पास लग गया था, २५-३० रु० और भी लगा होगा सो उन्हें भेजेंगे।

श्रीराम शर्मा

([illegible] पत्र सं० ८२)

यह पत्र स्वामी जी के स्वर्गवास के पश्चात् लक्ष्मणझूला से श्री सन्त सेवा-श्रम व महर्षि-कुल ब्रह्मचर्य्याश्रम के संस्थापक फलाहारी बाबा महन्त राम-उदारदास जी ने दिनांक १५-१-३६ को श्री महंत गणपतिदास जी के नाम लिखा है—

श्रीमान् महन्त गणपतिदास जी, सादर दण्डवत—पत्र मिला। भंडारा यहाँ भी १७ (वें) दिन ही होगा, जिसमें करीब ३० या ३५ रु० लगेंगे। यहाँ पर भी श्री स्वामी जी प्रतिष्ठित रूप में ही विराजमान रहे, उनके जीते-जी तो श्रीमान मास्टर जी आश्रम में जो रहते हैं उनको ही सीरा-पूरी का भोजन करा दिया था अतः उनका शरीर पूरा होने पर यहाँ भंडारा न हो तो जरा बुरा सा-प्रतीत होता है। आगे आपकी राय हो वैसा करना पड़ेगा। जो सामान हमारे आश्रम में स्वामी जी का मौजूद था उसकी लिस्ट तो हम भेज रहे हैं, बाकी फूलचट्टी में जो उनका सामान है उसको मैंने मँगाने की चिट्ठी ब्रह्मचारी देवीदयाल जी को दी थी। उन्होंने लिखित उत्तर भेज दिया है कि मास्टर श्रीराम जी या महन्त गणपतिदास जी का समाचार न आवेगा या उनमें से कोई यहाँ न आवेगा, सामान यहीं पर बन्द पड़ा रहेगा। हम भी उस कुटिया को खोलेंगे नहीं।

हमारे आश्रम की पाठशाला के बाबत श्री स्वामी जी ने १० रु० मासिक अपने इष्ट-मित्रों से भिजवाते रहने के लिए लिखा सो यह स्वामी जी की इस आश्रम पर कृपा थी। मेरा प्रेम तो थोड़े ही दिन से स्वामी जी से हुआ था। उनकी इस समय की मृत्यु यहाँ के लोगों के लिए बहुत दुखदाई हुई। उन्होंने यहाँ जो कार्य उठा रखा था उसकी पूर्ति करने की उनकी अन्त तक अभिलाषा रही।

स्वामी गोपालदास जी के सामान की लिस्ट जो उनके मौजूद लक्ष्मणझूला में था—

(१)

अरंडी नग १
चोला नग २
चद्दर नग १ सूती
बण्डी नग १
धोती नग २
कुरता नग १
चश्मा नग १
रूमाल नग १
कम्बल नग १ ऊनी
तौलिया नग १
साफा सिर पर बाँधने का नग १
चादरा नग १
धोती नग १
गलीचा नग १ जो सेठ लादूराम जी के प
बटुआ नग १ जिसमें छै पैसा है
घड़ी नग १ दुर्गी माई के पास
फाउण्टेनपेन नग १ था, जिसको बनारस का

(२)

१ स्वेटर
१ धोती नई
१ लकड़ी हाथ की
बस्तीराम चूरू से आया था वह ले गया।

(नगर-श्री, पत्र सं० १६८)

उपरोक्त पत्र स्वामी जी की सादगी और त्याग-वृत्ति का मुँह बोलता प्रमा है। पहनने-ओढ़ने के कपड़े-लत्तों के अतिरिक्त उनके बटुवे स सिर्फ छः पैर का निकलना उनके दारिद्र्य का नहीं, उनके उत्सर्ग और अपरिग्रह का उदघो कर रहा है।

यह पत्र महंत श्री गणपतिदास जी ने श्री रामवल्लभ सरावगी तथा ठाकुरसीदास बजाज के नाम स्वामी जी का मेला करने के सम्बन्ध में लिखा है—

रामवल्लभ तथा ठाकरसीदास बजाज से महंत गणपतिदास का राम-राम ंचना। अपरंच स्वामी जी को धोखो तो भोत भारी हुयो, इसो भरोसो तो ो नहीं, परन्तु परमात्मा की मरजी इसी ही थी, कुछ जोर चालै नहीं। ज्यादा दुख की बात यह हुई कि अन्त समय में उनसे न मिलना हुआ और न उनकी सेवा कर सके, परन्तु अब तो आगे की बात ही करनी चाहिए। मेरो शरीर तो आणै लायक है नहीं इस वास्तै सारो मेळै को काम थां नैही करणो पड़सी सो चूरू कड़वासर की हद करना। मेरी समझ में ५०० साधु तो बाहर गांवों के आ जावेंगे और सवा सौ करीब चूरू के हो जावेंगे बाकी चार सौ पाँच सौ ब्राह्मण चूरू के जिमाने चाहिएं। साधु जो बाहर गांव के आवें उनको रात-रात में गुड़ का सीरा जिमाना और सबेरे सबके वास्ते लाडू और थारै जचै तो पकोड़ी सागै कर देना। जादा अडंगो तो ऊँटाँ को फूस को होवैगो। पहांड़ वालांनै चिठी देय कर बुला लेयो और चूरू के स्वामियां कोनेग, बालभोग मन्दिराँवालाँ नै देणो पड़ै है, रामावत, नीमावत और निरंजनी तीनों को सो प्रहला दिये नें पूछ कर दे देयो और कोटवाल नै बुलाकर न्यूता दिवा देयो, बालभोग दे देयो। और जमनदास को छोटो छोरो रामदास नै गद्दी बिठला देयो, चादर पहाड़वालां से उढ़ा देयो। कड़वासर के महंत सें भी चादर-पगड़ी स्वामी जी की तरफ से उढ़ा देयो, पीछै अपनी तरफ से पहाड़वालां सें उढ़ा देयो। यो खर्चो ६००-७०० रु० को बिचारो है सो इससे ज्यादा अपने को लगाना नहीं है। कर्म-काण्ड १२ को झूलै पर करा दियो है, भंडारो भी करा दियो है। रमनचन्द जी पर चिठी भेजी है सो रुपये उनसे ले आयो, सलासूत उनसे भी कर लेयो। वे भी पक्के समझदार आदमी हैं। माघ सुदी ३ सोमवारी मेळ होगी और मगलवारी सतरी मेळो होवैगो। अठै रुपिया किसी से लेना नहीं है। उनके स्मारक बनाने की बात है सो जानना। सारो काम भुगता देयो। मन्दिर को कागज पत्तर तुम्हारै हायवसु सभालकर राखना।

मन्दिर की जब्ती का निमित्त अपने को ही मानते थे। यदि उनका स्वयं का मन्दिर जब्त हुआ होता तो वे इसकी रत्ती भर भी परवाह नहीं करते। लेकिन राज्य सरकार ने स्वामी जी की मौजूदगी में मन्दिर नहीं दिया। स्वामी जी का देहावसान हो जाने से सरकार का सारा खटका दूर हो गया और उसने दिनांक २५-७-३६ को बड़ा मन्दिर महंत जी को सौंप दिया। यह बात श्री मोहनलाल जी जालान के एक पत्र से ज्ञात हुई जो उन्होंने श्री रावतमल जी पारख के नाम लिखा था जो सर्वहितकारिणी सभा की फाइल में मौजूद है।

स्वामी जी का स्मारक बनाने के लिए यों तो उनके निधन के बाद से ही विचार चल रहा था किन्तु सन् ५३ में "स्व० स्वामी गोपालदास स्मारक समिति" का निर्माण हुआ जिसमें निम्नलिखित सज्जन चुने गये—

श्री नन्दलाल जी भूंवालका, कलकत्ता, (सभापति)
श्री मोहनलाल जी जालान (फर्म सूरजमल जी नागरमल—कलकत्ता)
श्री रावतमल जी पारख (कलकत्ता)
श्री कृष्णदयाल जी जालान (कलकत्ता)
श्री रामनिवास जी बागला (कलकत्ता)
श्री दाऊदयाल जी (मुनीम—मोतीलाल
श्री राधाकृष्ण जी बुधिया, (रांची)
श्री डेडराज जी मड्ढा, (कलकत्ता)
श्री घनश्यामदास जी, (कलकत्ता)
श्री केदारनाथ जी सरावगी (बम्बई)
श्री शोभाराम जी कोलिंडेवाला, "
श्री भगवानदास जी खेमका, चूरू
श्री ऋद्धिकरण जी मड्ढा, चूरू
श्री भैरूंदान जी मड्ढा, चूरू
श्री जयनारायण जी खेमका, चूरू
श्री शुभकरणजी गोयनका, चूरू
श्री हनुमानप्रसाद जी सरावगी, चू
श्री तोलाराम जी बजाज, चुरू
श्री महंत गणपतिदास जी, चुरू
श्री वैद्य शान्त शर्मा जी, चुरू
श्री मास्टर श्रीराम जी, चुरू
श्री नारायणदास जी गोयनका, चुरू

योजना तो एक बहुत सुन्दर स्मारक तैयार करवाने की बनी थी और जब इतने गण्यमान्य सज्जन समिति में शामिल थे तो स्मारक की उत्कृष्टता में सन्देह का कोई कारण ही नहीं था, किन्तु खेद है कि वह योजना पूर्ण न हो सकी।

अन्त में जब श्री जयनारायण जी खेमका चूरू नगरपालिका के अध्यक्ष और श्री सुबोधकुमार जी अग्रवाल उपाध्यक्ष थे तब नगरपालिका ने सर्वहित-कारिणी सभा और किले के बीच वाले चौक में स्वामी जी की मूर्ति-स्थापन का निर्णय लिया और तदनुसार मकराने की सुन्दर मूर्ति वहाँ स्थापित की गई, जिसका अनावरण लोकनायक स्व० श्री जयनारायण जी व्यास (प्रेसीडेंट, राज-स्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी) के हाथों १७ अगस्त सन् १९५६ को हुआ। इस चौक का नाम गोपाल चौक और सर्वहितकारिणी सभा के आगे से स्टेशन तक जाने वाली सड़क का नाम गोपाल मार्ग रखा गया।

स्वामी जी का जीवन-चरित्र तैयार करने के लिए भी कई बार प्रयत्न किये गये, किन्तु सफल न हो सके। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कलकत्ता द्वारा भी प्रयत्न किया गया। "भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम का इतिहास" तैयार कराने के सिलसिले में भी प्रयत्न हुआ। सर्वहितकारिणी सभा की ओर से भी चेष्टा की गई, पर स्वामी जी का जीवन-चरित्र प्रकाशित न हो सका।

किन्तु हर्ष का विषय है कि चूरू की नवोदित संस्था "नगर-श्री" द्वारा स्वामी जी का यह प्रेरणास्पद जीवन-चरित्र तैयार होकर आपके समक्ष प्रस्तुत हो रहा है।

स्वामी गोपाल:

मैं आजकल स्वातंत्र्य की आवाज चारों ओर ही सुनता हूँ, पर यदि स्वतंत्रत पर अंकुश न रहे तो वह उच्छृंखलता का रूप धारण कर लेती है। राजा का भ यही कर्तव्य है, प्रजा और राजा दोनों को स्वकर्तव्य पालन में परस्पर सहायत देनी चाहिए। अभिषेक के समय राजा शपथ लेता है कि मैं प्रजा का रक्षण करूंगा, नहीं तो मेरा पुण्य नष्ट होगा, इत्यादि। प्रजा का भी यही फर्ज है।

धर्मस्तूप पर कुछ व्यक्तियों ने स्वतंत्रता का झंडा लगाया था, इससे श्री अन्नदाता तथा हम ऑफिसरों को दुःख तथा आश्चर्य हुआ था क्योंकि यहाँ स्वतंत्रता के झंडे को खड़ा करने का क्या अर्थ होता है। ब्रिटिश प्रदेश में तो झंडे के लगने का पूर्ण स्वतंत्रता ही अर्थ है। हमारे देश के पूर्व इतिहासों में यह बात मिलती है कि भारत में प्रजासत्ता का राज्य जगह-जगह था, पर बिना राजा सत्य का पालन नहीं हो सकता। ब्रिटिश इंडिया में तो स्वतंत्रता का आन्दोलन ठीक है, पर यहाँ के लिए ठीक नहीं, क्योंकि यहाँ इसकी कोई आवश्यकता नहीं। यहाँ आपको हर प्रकार की सुविधाएँ हैं। अभी अन्नदाता ने अपने उद्‌गार प्रकट किये थे जिसमें राजा प्रजा का सेवक है आदि शब्द कहे थे। मैं आप लोगों के भाव अच्छी तरह से जान सका इसके लिए मैं आपका उपकृत हूँ।[1]

अवसर ही न आवें, ऐसा इन्तजाम करूँगा तथा आप लोगों को भी शान्ति से काम लेना चाहिए।

मैं महिला बोर्डिंग की मांग पर तो बहुत ही प्रसन्न हूँ पर साथ ही साथ इस बात को जानना चाहता हूँ कि इस जिम्मेदारीपूर्ण कार्य के लिए आपके समाज की तरफ से तैयारी है या नहीं। इस बात की स्पष्ट जानकारी करने पर सरकार इस मांग पर सहानुभूति रखेगी, यह सरकार की खास नीति है। पर बोर्डिंग की निर्माण-चिन्ता के साथ-साथ इसकी जिम्मेवारी पर पूरा ध्यान होना चाहिए और यदि जल्दी ही इस बात की पुष्टि हो गई तो मैं इसकी आवश्यकता को अनुभव करता हुआ मदद करूँगा। हिन्दू अनाथ विधवाओं के लिए तो ऐसी संस्थाओं का होना परमावश्यक और उपयोगी है।

मैं चूरू को खासतौर पर इस बात के लिए धन्यवाद देता हूँ कि स्टेट में अनिवार्य शिक्षा के लिए पहले-पहल यहीं से मांग की गई थी। पर यदि वैसे ही कन्याओं के लिए भी अनिवार्य शिक्षा की मांग यहीं से की जाय तो आपके लिए बड़े यश की बात होगी क्योंकि बीकानेर की तरह यहाँ भी ट्रेण्ड अध्यापिकायें हों तथा अनेक कलाओं मे उन्हें शिक्षित किया जाय और नर्सेज आदि बनने को प्रोत्साहित किया जाय तो उनके लिए बहुत कल्याणकारी सिद्ध होगा और इस प्रकार आप लोगों के बहुत से मनोरथ सिद्ध हो सकेंगे।[१]

महिला शिलपशाला के उद्घाटनोत्सव पर स्वागताध्यक्ष श्री स्वामी गोपालदास की वक्तृता—

सभापति महोदय, श्रीमती मेहता, बाइयो तथा नागरिकगण!

चूरू के लिए आज का दिन महान् आनन्द का है कि आज प्रात:काल से ही राज्य तथा प्रजा दोनों के सहयोग से यह मंगलमय अवसर प्राप्त हुआ है और शुभकार्य संपादन देखने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ है। श्रीमती मेहता ने आज जो महिला शिल्प-भवन का उद्घाटन किया है इसके लिए चूरू की प्रजा को गौरव है।

चूरू को आवाद हुए आज लगभग सवा तीन सौ वर्ष हो चुके हैं। आज तक इसमें बहुत से प्रसिद्ध कार्य हो चुके हैं और हो रहे हैं। यह वही चूरू है जिसमें एक समय लड़ाई के वक्त सोने और चाँदी के गोले चले थे जो आज भी राज्य के स्मारक-वस्तु-भंडार में रखे हुए हैं। यही वह चूरू है जिसकी प्रसिद्धि के कारण विदेशों में मारवाड़ी व्यापारीगण चूरूवाले नाम से प्रसिद्ध हैं, यह हमारी रियासत के लिए बड़े यश की बात है। इसी चूरू में आपकी यह सर्वहित-कारिणी सभा है जो सैकड़ों सर्वहितकारी कार्य कर चुकी तथा कर रही है। लेकिन इसको अपने उद्देश्यो के पालन में आप तथा राज्य की सहानुभूतिपूर्ण मदद से ही यह सफलता प्राप्त हो सकी और होगी। प्लेग के समय की सेवा तथा अपने अधीन पब्लिक संस्थाओं के भव्य भवन तथा उनके कार्यों का संचालन आप लोगों के सामने है।

बाबू रामकिशनजी बागला के खर्चे से प्रबन्ध किया था और वरावर करती रहती है। इसी सभा ने हमारी रियासत के 'खारेड़' के गाँवों में कुंड, कुएँ, तालाव वगैरह की बनवाई, खुदवाई का वहुत सा काम किया है, उस सभा का मकान आपके सामने खड़ा हुआ है। इस सभा को अव दो-चार दिनों में ही तेईसवें वर्ष में पदार्पण करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। इसके लिए मैं यह भविष्य-वाणी करता हूँ कि सभा भविष्य में भी वहुत उपयोगी कार्यों को करती हुई उन्नति करती चली जाएगी, किन्तु आवश्यकता है आप लोगों के तथा राज्य के हार्दिक सहयोग की।

इतने वर्षों में इसके विषय में वहुत-सी गलतफहमियाँ कुछ स्वार्थी तथा सिद्धान्तहीन व्यक्तियों के द्वारा फैलाई गई, जिससे सभा के ऊपर विपत्ति के वादल मँडराते रहे। पर जव मौका आया तो सत्य की ही विजय हुई है और ऐसा यह दसवाँ मौका है। यह समय विकासवाद का है, आप लोग हर कार्य में कर्तव्य-परायणता के साथ सत्यतापूर्ण हार्दिक दिलचस्पी लेते रहें।

यद्यपि कहने की कुछ आवश्यकता नहीं थी तो भी चूंकि श्रीमानों ने प्रातः-काल पार्क के शिलारोपण के समय राष्ट्रीय झंडे के विषय में कुछ शब्द कहे थे, इसलिए मुझे इस विषय में कुछ कहने की आवश्यकता पड़ रही है। दरअसल वात ऐसी है कि राज्य के तो नहीं किन्तु कुछ ऐसे अफसरों के विरूद्ध प्रजा अवश्य आन्दोलन या असंतोष प्रकट करती है जो कि बेमतलब महज मामूली-मामूली वातों पर जनता को डराने-धमकाने एवं हर तरह की क्रूरता से फिजूल पीड़ित करने में ही अपना रौव रखते हैं और ऐसा करते वे न तो अपनी उस शुद्ध जिम्मेवारी का ही खयाल करते और न अन्याय-अधर्म होने का डर ही अपने दिल में रखते हैं।

मुझको ही नहीं चूरू की प्रजा मात्र को यही शुभ आशा थी कि मौजूदा-म्युनिसिपल वोर्ड वहुत से अच्छे और स्थायी जनहित के कामों को कर दिखायेगा। पर खेद है कि वे सारे के सारे मनसूबे इस कल्पित घटना के कारण एकबारगी स्थगित हो गये यानी वे कार्यकर्त्ता मेम्बर लोग जिन्होंने श्रीजी साहव वहादुर की गवर्नमेण्ट द्वारा प्रदत्त अधिकारयुक्त कानून-कायदों के आधार पर चलाना चाहा था और उनके हृदय में पब्लिक की सेवा करने की ज्वलंत भावना थी, पर वाइस प्रेसीडेण्ट वा प्रेसीडेण्ट वोर्ड के भावों की तुच्छता के कारण किसी भी तरह का सुन्दर काम करना उनके लिए मुश्किल ही नहीं असंभव हो गया।

यही कारण है कि यदि आज कोई पूछ बैठे कि म्युनिसिपल वोर्ड चूरू का दफ्तर कहाँ है तो वह चूरू की तहसील के दफ्तर के एक कोने में रखी हुई छोटी-सी वक्स में मिलेगा, जो वास्तव में एक लज्जा की वात है। स्थान की इस

असुविधा को हटाने के लिए उन्होंने ही एक "टाउनहाल" आफिस तथा पब्लिक के लिए आज के जैसे शुभ उत्सवों को मनाने के लिए सुन्दर स्थान बनवाने की गरज से प्रस्ताव पास कराया था और जब तक ऐसा भवन तैयार न हो जाय बोर्ड के कार्यालय को बाकायदा चलाने के लिए भाड़े पर या वैसे ही कोई स्थान शहर में लेने की तजवीज की थी। पर अब तक अपनी जिम्मेवारी को न समझने वाले तुच्छ मनोवृत्ति वाले कुछ आफिसरों के कारण ऐसे कई कार्य न हो सके। क्योंकि वे ऐसे प्रस्तावों से राज्यद्रोह तथा बेमतलब ही अपमान समझ बैठते हैं।' मैं उन ओफिसरान को दृढ़ता की साथ राय दूंगा कि उन्हें अपनी ऐसी ढिठाई छोड़नी चाहिये और पब्लिक के कार्यकर्त्ताओं का जो कि राज्य की सहानुभूति के साथ-साथ काम करना चाहते हैं और किया है, मान करना और इस तरह उन्हें प्रोत्साहन देकर जनता का उपकार करना चाहिये।

मैंने श्रीमानों से मिलकर बहुत संतोष प्राप्त किया है और मुझे आशा है कि पब्लिक भी यह जानकर खुश है कि हमारे माननीय दीवान साहब यहाँ की वास्तविक परिस्थिति से पूरी तौर पर वाकिफ हो गये हैं, तथा और भी जिन बातों से इन्हें आप लोग वाकिफ करवाना चाहते हों तो प्रत्यक्ष रूप में कहें न कि गुमनाम अर्जियों-जैसी चेष्टाओं से। मैं ऐसी चेष्टा को घृणास्पद समझता हूँ। साथ ही आप लोगों की इस बात को भी श्रीमानों के समक्ष पेश कर देना चाहता हूँ कि स्थानीय म्यु० बोर्ड में पाँच सीटें गवर्नमेण्ट द्वारा मनोनीत की जाती हैं उनमें से एक भी सीट उस अग्रवाल समाज के लिए अब की दफा नहीं दी गई जो इस शहर में ओसवाल, माहेश्वरी दोनों समाजों से बड़ी तादाद में है। इसमें भी यदि कोई कारण है तो वह स्थानीय आफिसरों की ही गड़बड़ी का सन्देह है। अन्त में मेरी यही प्रार्थना है कि आप सब लोग भविष्य में भी इसी तरह शुभ उत्सव मनाते रहें और राजा-प्रजा के कर्तव्यों का पालन परस्पर में करते हुए कल्याण का मार्ग निर्माण करते रहें।[1]

इन्द्रमणि पार्क पर लगा हुआ शिलालेख

।। श्रीहरिः ।।

इन्द्रमणि पार्क

श्रीमान सेठ रुकमानंद जी बागला ने अपनी स्वर्गीया पुत्री इन्द्रमणि बाई के स्मारक में सर्वहितकारिणी सभा के उद्योग से इस पार्क को बनाया। जिसका शिलारोपण श्री १०८ बीकानेर राज्य के प्रधानामात्य (दीवान) सर मनुभाई नंदशंकर मेहता के टी०, सी०एस० आई प्राइम मिनिस्टर के हाथों से वैसाख शुक्लनवमी संवत् १९८७ को कराया गया।

शुभम्

(इन्द्रमणि पार्क के द्वार पर उपरोक्त शिलालेख के अंग्रेजी अनुवाद का दूसरा शिलालेख भी लगा है।)

Indramani Park.

Shriman Seth Rukmanandji Bagla
Laid out this Park
in commemoration of his daughter Indramani Bai, through the efforts of the Sarva Hit Karini Sabha. Sir Manu Bhai Nand Shankar Mehta, Kt.C.S.I. Prime Minister Bikaner State laid its foundation stone on Baisakh Shukla 9 (Naumi) Sambat 1987.

गाछर की बीड़ हनुमान वाटिका पर लगा हुआ शिलालेख

लेफ्टीनेंट जनरल हिज हाईनेस महाराजाधिराज राजराजेन्द्र नरेन्द्र-शिरोमणी महाराजा श्री सर गंगासिंह जी बहादुर जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, जी० सी० वी० ओ०, जी० वी० ई०, के० सी० वी०, ए० डी० सी०, एल-एल० डी०, बीकानेर ने स्वर्गीय सेठ हरिबक्स जी भावसिंहका के प्रयत्न एवम् सर्वहितकारिणी सभा चूरू के उद्योग से चूरू की प्रजा की भलाई के निमित्त यह बीड़ (१३७०।।-३) तेरह सो साढ़े सत्तर बीघा तीन बिस्वा गोओं के चरने के लिए संवत १६७८ विक्रमी में पुण्यार्थ छोड़ दिया। इसकी व्यवस्था के लिए स्वामी गोपालदास जी के अनुरोध से ३०००) रुपया बीड़ के स्थायी कोष में स्वर्गीय सेठ हरिबक्स जी भावसिंहका ने प्रदान किये और उनके सुपूत्रों ने उनकी अंतिम इच्छानुसार यह श्री हनुमान वाटिका निर्माण कराई। इसका शिलारोपण मिती माघ शुक्ला ५ सं० १६८० वि० को तथा इसकी प्रतिष्ठा मिती फाल्गुन शुक्ला २ सं० १६८१ वि० को कराई गई

पीथाणै जोहड़ै पर लगा हुआ गोचर-भूमि सम्बन्धी शिलालेख

श्रीगोपाल गिरधारी

श्री स्वामी गोपालदास जी की आज्ञा से श्रीमान सेठ रुकमानन्द जी राधा-कृष्ण बागला ने श्री नरेन्द्र-शिरोमणि महाराजाधिराज श्रीगंगासिंह जी बहादुर की सरकार से प्रार्थना करके यह बीड़ बीघा ३३०० इस पीथाणै जोहड़ै सै आथुण उतराध-पूर्व की तरफ गोचर-भूमि के वास्ते धर्मार्थ छुड़वाया और इस रेतीली जमीन को उपजाऊ बनाने तथा सदा के वास्ते इसकी रक्षा करने के खर्च का कुल भार अपने ऊपर उठाकर इस पुण्य कार्य्य में . . . दान किया मिती वैसाख कृष्ण १ संवत १९८५

दोहा

गहरी लाली देखकर फूल गुमान भरे ।।१।।
कितएक बाग जहान में, लग-लग सूख गये ।।२।।

बाजरा ।)४ मोठ ऽ८ गेहूँ ।)५ ज्वार ।)८ गुड़ ६।। खाँड ऽ३ तेल ऽ२।
घृत ऽ०।। ≡

(उपरोक्त शिलालेख में मोठ का भाव ऽ८ लिखा है, लेकिन दस सेर का तौल सूचित करने वाली (।ऽ) खड़ी पाई शायद खोदने में भूल से छूट गई है।)

सर्वहितकारिणी सभा की वर्तमान व्यवस्था

पिछले कुछ वर्षों से सभा की व्यवस्था व आर्थिक हालत बहुत खराब हो गई थी, सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला पर भी इसका बुरा असर पड़ा। तत्कालीन व्यवस्थापकों ने तब नगर के नवयुवक कार्यकर्त्ता श्री सीताराम सरावगी को कार्य सँभालने और सभापति का पद ग्रहण करने के लिए राजी किया। हर्ष है कि इन्होंने सभा की स्थिति को सुधारने में पूर्ण रुचि ली। विशेषकर इनका ध्यान पुत्री पाठशाला के विकास की ओर अधिक रहा और इनके उद्योग से लगभग चालीस हजार रुपये नवनिर्माण में लगे। छात्राओं की संख्या भी काफी बढ़ गई। गत वर्ष की प्रगति को देखकर नगर के गण्यमान्य व्यक्तियों का भी संस्था की सुरक्षा और इसके विकास की ओर ध्यान गया है तथा इस वर्ष नया चुनाव करवाते हुए सर्वहितकारिणी पुत्री पाठशाला को हायर सेकेण्डरी स्कूल बनाने का प्रयास शुरू किया गया है। हायर सेकेण्डरी स्कूल के लिए अतिरिक्त कमरे बनवाने के लिए श्री मोहनलाल जी गोयनका ने १५०००) रु० का अनुदान देना स्वीकार किया है।

वर्तमान पदाधिकारी निम्न हैं---सभापति श्री मोहनलाल गोयनका, उपसभापति श्री किशोरीलाल गोयनका और संयुक्त सभापति श्री मोहरसिंह राठौड़। मंत्री श्री सीताराम सरावगी, उपमंत्री श्री श्यामसुन्दर बगड़िया, कोषाध्यक्ष श्री श्रीगोपाल गोयनका, हिसाब-परीक्षक श्री गोरधनदास खेमका। कार्य-समिति के सदस्य सर्वश्री अभयसिंह सुराना, चिरंजीलाल भार्वसिहका, सोहनकुमार बाँठिया, गोपीराम गोयनका, हरीराम टांईवाला, सुबोधकुमार अग्रवाल, बासुदेव अग्रवाल, रामलाल शर्मा, सोमदेव शर्मा, डा० ओमप्रकाश, साँवरमल गोयनका, चिरंजीलाल ओझा, विश्वेश्वरदयाल गुप्ता, प्रतिनिधि शिक्षा-विभाग।

इसके अन्तर्गत पुस्तकालय-वाचनालय समिति, पुत्री पाठशाला समिति, और कबीर पाठशाला समिति कार्य कर रही हैं जिनमें अन्य कार्यकर्त्तागण भी शामिल हैं। राज्य सरकार से भी सहायता मिलती है।

विलम्ब से प्राप्त संदेश और श्रद्धांजलियाँ

मेरे पूजनीय संरक्षक---

पूज्यपाद स्वामी गोपालदास जी के सम्बन्ध में मेरा कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखलाने के समान है। उन्हें इस प्रदेश का गाँधी कहा जाए तो भी अत्युक्ति न होगी। श्रद्धेय स्वामी जी ने इस लोक में रह कर न केवल साधु समाज को ही गौरवान्वित किया, बल्कि उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को मानव कल्याण में लगा कर सार्थक बनाया। स्वाभिमानी, कर्मठ और सत्यनिष्ठ स्वामी जी ने जिन लोक हितकारी कार्यों को किया वह उनकी जीव-मात्र के प्रति परोपकार की भावनाओं का प्रतीक है।

स्वामी जी मेरे तो पूजनीय संरक्षक ही थे। मेरी शिक्षा-दीक्षा भी उन्हीं की देख रेख में हुई और उनका हार्दिक स्नेह मुझ पर सदैव बना रहा। बीकानेर षड्यंत्र केस में उन्हें जो यंत्रणा दी गई, उसकी उन्हें जरा भी परवाह नहीं थी, किन्तु बड़े मन्दिर को जब्त करके मुझे मन्दिर से निष्कासित कर देने का उन्हें बड़ा दुःख रहा। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि मन्दिर मुझे वापिस मिल जाए।

निम्बार्क सम्प्रदाय की गद्दी के महंत होते हुए भी वे आर्य समाज की प्रणाली को समयोचित मानते थे। शुद्धिकरण में उनका बड़ा योग रहा। लेकिन उस जमाने में कुछ धूर्त लोग ऐसे समाज सेवकों पर आर्यसमाजी नास्तिक होने का दोष लगा कर धर्म भीरु धनिकों को बहकाते थे। चूरू के सेठ राधाकृष्ण जी बागला के पुत्र के विवाहोत्सव पर सेठ रुक्मानंदजी राधाकृष्ण बागला की ओर से सभी स्थानीय सार्वजनिक संस्थाओं को दान दिया गया था। लेकिन चूंकि सेठों के नजदीक कुछ महानुभावों ने स्वामी जी को आर्य समाजी नास्तिक घोषित कर रखा था, इसलिए सर्वहितकारिणी सभा को कोई अनुदान नहीं दिया गया। पर बाद में जब सेठों को वास्तविकता का पता लगा तो उन्हें बड़ा पश्चाताप हुआ और वे स्वामी जी के परम भक्त बन गये। तब एक दिन स्वामी जी ने सेठों से हँसी में कहा कि आपने अन्य सब संस्थाओं को अनुदान दिया, लेकिन सर्वहितकारिणी को टाल दिया, इसलिए अब दुगना अनुदान देना होगा। इस

पर सेठों ने खेद प्रकट करते हुए कहा कि नहीं महाराज, जुर्माना और ब्याज मिला कर चौगुना देंगे, तभी हमारी भूलका कुछ प्रायश्चित होगा। बाद में सेठों ने स्वामी जी के कहने पर बहुत बड़ी धन राशि सार्वजनिक हित के कार्यों में व्यय की।

सन् २३ में बाबू घनश्यामदास जी बिड़ला ने स्वामी जी को शिमले बुलाया था। अपने अनुज और शिष्य के रूप में स्वामी जी मुझे भी साथ ले गये थे। दैवी सम्पदा से युक्त दो महान् व्यक्तियों का यह अपूर्व मिलन था। स्वामी जी के 'बाल गोठिये' एवं सहयोगी मास्टर श्रीरामजी भी तब वहाँ थे। स्वामी जी वहाँ १० दिन तक रहे। हिन्दू धर्म के अनन्य उपासक एवं रक्षक देवस्वरूप स्व० श्री जुगुलकिशोर जी स्वामी जी को बहुत अधिक मानते थे। कलकत्ता में मारवाड़ियों के वयोवृद्ध नेता स्व० जयनारायण जी पोद्दार स्वामी जी में परम श्रद्धा रखते थे। चूरू के राँची निवासी श्री गंगाप्रसाद बुधिया कुछ दिनों तक श्रद्धापूर्वक स्वामी जी के पास चूरू में सेवा कार्यों में रत रहे और उसी का यह परिणाम हुआ कि वे आज भी स्वामी जी की शिक्षाप्रणाली से तन मन धन से राँची में सेवा कार्य में संलग्न हैं।

रतनगढ़ के सेठ सूरजमल जी जालान और नन्दलाल जी भुवालका बहुत धन संपन्न होते हुए भी बड़े सरल स्वभाव, सेवाभावी उदार सज्जन थे और स्वामी जी के पूर्ण भक्त थे। स्वामी जी के सत्परामर्श और प्रेरणा से उन्होंने अनेक सार्वजनिक हित के कार्य किये। जिस वक्त सूरजमल जी ने बीकानेर जेल में स्वामी जी को भोज दिया, उस वक्त मैं भी उनके साथ था। जेल का वह मिलन अभूतपूर्व था। उसके बाद सूरजमल जी ने बहुत प्यार से मुझे अपने साथ रक्खा। जब भी मुझे उदास देखते, तभी कहते कि आप चिन्ता क्यों करते हैं? स्वामी जी तो तपस्वी हैं और कृष्ण जन्म स्थान में तपस्या कर रहे हैं। आपको मन्दिर की इच्छा है तो आपके मन्दिर से भी बड़ा दूसरा मन्दिर बनवा दूं? स्व० सूरजमल जी के सुपुत्र श्री मोहनलाल जी जालान आज भी मुझसे वैसा ही स्नेह रखते हैं।

स्वामी जी ने अपना संपूर्ण जीवन ही लोक-कल्याण और देशसेवा में लगाया था। ऐसे तपस्वी को खोकर न केवल चूरू, बल्कि समूचा राजस्थान नेतृत्व विहीन सा हो गया। ऐसे महापुरुष का जीवन चरित्र अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाया, यह एक बहुत ही खटकने वाला अभाव था और साथ ही हमारी अक-

संस्था का द्योतक थी ! लेकिन अब मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि चूरू की नवोदित संस्था नगर-श्री द्वारा स्वामी जी का पावन जीवनचरित्र प्रकाशित हो रहा है। नगर-श्री अपने जीवन के उषाकाल में ही जिन सत्कार्यों की ओर अग्रसर हुई है वे सब वास्तव में स्तुत्य हैं। स्वामी जी का जीवनचरित्र निश्चय ही हम सबके लिए और भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्पद एवं मार्ग-दर्शक होगा। श्री बदरीप्रसाद जी सरावगी, श्री गंगाप्रसाद जी बुधिया, श्री मोहनलाल जी जालान एवं अन्य जिन महानुभावों ने इसके प्रकाशन में सहयोग देकर अपने कर्तव्य को निबाहा है, वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं नगर-श्री चूरू के इस कार्य की हृदय से शुभकामना प्रकट करते हुए श्रद्धेय स्वामी जी को सादर श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

स्वामी गोपालदासजी एक आदर्श कर्त्तव्यपरायण जन सेवक थे। अपने जीवन के ४० वर्षों में राजस्थान की उन्नति के लिए नाना प्रकार के कष्ट उन्होंने सहे। साधारण घर में जन्म लेकर भी अपनी निजी कठिनाइयों के ख्याल नहीं कर देश सेवा में ही लगे रहे। यह आदर्श भावी पीढ़ी के लिए उन्होंने उपस्थित किया। नगर-श्री द्वारा उनका जीवनचरित्र प्रकाशित हो रहा है, उसका मैं अभिनन्दन करता हूँ।

ईश्वरदास जालान एम० एल० ए०,
४७, जकरिया स्ट्रीट, कलकत्ता-७

ता० १३-६-६८

स्वर्गीय स्वामी गोपालदास जी से मेरा प्रत्यक्ष मिलने का काम तो एक या दो दफे ही पड़ा है, किन्तु मुझे अपने चूरू और रतनगढ़ के मित्रों से स्वामी जी की प्रवृत्तियों और गतिविधियों की जानकारी बराबर मिला करती थी जिसे सुनकर मेरे मन में स्वामी जी के प्रति सदा श्रद्धा की भावना रही। स्वामी जी ने चूरू क्षेत्र की तथा चूरू को निमित्त बना कर सारे भारतवर्ष की जितनी सेवा की उतनी अपने तरफ के क्षेत्रों में तो किसी दूसरे व्यक्ति ने नहीं की, ऐसा निर्विवाद कहा जा सकता है। सामाजिक सुधार, शिक्षा और सांस्कृतिक, रोगी सेवा, राजनैतिक जागृति आदि सारे ही क्षेत्रों में उनकी अनुपम देन थी। वे एक तरफ जनता के विनम्र सेवक थे तो दूसरी तरफ प्रचंड योद्धा भी थे। अपने आस-पास रहने वाले लोगों में श्री स्वामी जी ने निर्भयता का मंत्र फूंक कर एक नव जीवन ज्योति प्रज्वलित की थी। आज की पीढ़ी के लोगों को उनके जीवन से सीखने को काफी मिल सकता है। ईश्वर करे हम लोग तथा आने वाली पीढ़ी उनकी जीवन घटनाओं से प्रेरणा प्राप्त करें।

"रघुबीर निवास
सीतामऊ (मलावा)
मई १८, १९६८

संस्कृत कवि का यह कथन "जनपदहितकर्तात्यज्यते पार्थिवेंद्रैः" स्व० स्वामी गोपालदास जी पर पूर्णतया घटित होता है। पूरी सूझ-बूझ और प्रशंसनीय दूरदर्शिता के साथ उन्होंने कोई साठ वर्ष पहले चूरू-शेखावाटी क्षेत्र की उपेक्षित पिछड़ी हुई जनता में जन-जागरण के महत्वपूर्ण परन्तु कंटकाकीर्ण कार्य का सूत्रपात किया था। उन्होंने इस प्रकार जनजीवन-रूपी समुद्र का मंथन प्रारंभ किया और उससे निकले राजकीय विरोध, दण्ड तथा निरन्तर उत्पीड़न के कालकूट को स्वयं पीकर भावी पीढ़ियों के लिए अमृत के रूप में अनेकानेक प्रेरणादायक संस्थाएँ तथा स्फूर्तिकारक अनुकरणीय इतिहास छोड़ गये। आज जब स्वामी गोपालदास जी के सत्प्रयत्नों का सुफल जन-साधारण को सुलभ होने लगा है तब उस प्रेरक के प्रति समुचित श्रद्धांजलि अर्पित करना उचित ही नहीं सर्वथा अनिवार्य भी हो गया है। परन्तु श्रद्धांजलि अर्पित करके ही हमारे कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती है। हमारे लिए यह भी अत्यावश्यक है कि उनके द्वारा तब स्थापित अनेकानेक संस्थाओं को सुदृढ़, प्राणवान् और चिर-स्थायी बना दें, जिससे भावी पीढ़ियाँ भी उनसे निरन्तर लाभ उठाती रहें। स्व० स्वामी गोपालदास जी ने कैसी कठिनाइयों का सामना कर क्या कुछ किया यह जानने के लिए सारी प्राप्य समकालीन सामग्री का संग्रह, संरक्षण और गहराई के साथ अध्ययन की ओर पूरा-पूरा ध्यान दिया जा रहा है यह संतोषजनक बात है। मैं इन सारे आयोजनों की पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

—डा० रघुबीरसिंह

आपकी राय

चूरू चित्र-दर्शन के अवलोकनार्थ समय-समय पर गण्यमान्य सज्जन पधारते रहते हैं। चित्र-दर्शन का अवलोकन करने वाले महानुभावों की राय में यह एक बहुत ही आवश्यक और उपयोगी प्रवृत्ति है। दर्शकों की सम्मतियों में से कुछ :

नगर-श्री चूरू द्वारा आयोजित "चित्र-दर्शन" प्रदर्शिनी का मैंने दिनांक १ अक्तूबर सन् १६६६ ई० को अत्यन्त मनोयोगपूर्वक अवलोकन किया। चूरू क्षेत्र के अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन ऐतिहासिक स्थलों, भव्य, रमणीय एवं नयनाभिराम भवनों, उद्यानों, सरोवरों तथा अन्यान्य दर्शनीय स्थलों, स्मारकों, ध्वंसावशेषों तथा गण्यमान्य विशिष्ट व्यक्तियों के अत्यन्त मनोरम एवं नयनाभिराम चित्रों के साथ-साथ इस प्रदर्शिनी में अनेक पत्रों, अभिलेखों आदि का भी संग्रह किया गया है, जिससे इसकी उपादेयता में असंदिग्ध रूप से अभिवृद्धि हो जाती है। इस प्रदर्शिनी में प्रदर्शित सामग्री से चूरू क्षेत्र के लुप्त इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

शिखरचन्द्र कोचर

वरिष्ठ व्यवहार एवं अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश

आज चूरू चित्र-दर्शन देखने का अवसर प्राप्त हुआ। कई पुराने अलभ्य चित्र देखने को मिले जिनका ऐतिहासिक महत्व है। यह प्रयास प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय है। ऐसा प्रयत्न हर शहर में होना चाहिए। अति सुन्दर है।

चन्दनमल वैद

६-१०-६६

(ट्रांसपोर्ट एवं पावर मिनिस्टर राजस्थान)

यहां के इतने महत संकलन को देख करमैं बहुत प्रभावित हुआ, बहुत ही उपयोगी संकलन है। ऐसा व्यवस्थित संकलन बहुत कम देखने को मिलता है। चूरू के बारे में जनता अँधेरे में है, यहां की सब सामग्री को प्रकाश में लाना चाहिए।

विमल भाई
१६-११-६६
(पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६)

स्थानीय इतिहास का संकलन एवं चित्रमय दर्शन स्वयं एक ऐतिहासिक कार्य है। समय आने पर इस महान् प्रयत्न का मूल्यांकन होगा। चित्रमय दर्शन रुचिकर है और ज्ञान की वृद्धि करने वाला है। इसका सुचारु रूप से प्रकाशन प्रान्तीय हित का कार्य है।

गोपालसिंह
निरीक्षण अधिकारी
राजस्थान राज्य समाज कल्याण बोर्ड--जयपुर
१०-१२-६६

इस प्रकार का आयोजन चूरू निवासियों के लिए गौरव की बात है। इससे हमें प्रेरणा मिलती है कि हम अपने पूर्वजों द्वारा अंकित मार्गों का अनुकरण कर अपनी जन्मभूमि चूरू के इतिहास को गौरवमय बनावें।

हनुमान सरावगी
(वाइस प्रेसीडेंट, लायन्स क्लब, राँची)

जहाँ तक मेरा अनुभव है किसी नगर के निवासी ने अपने नगर की ऐतिहासिक छानबीन की सचित्रता को इतनी सुन्दरता से शायद ही प्रदर्शित किया होगा। इस मौलिक महत्वपूर्ण और आदर्श कार्य में इन्होंने कितना श्रम किया होगा, इसका अनुमान इनके कार्यों को अपनी आँखों से निरीक्षण करने के बाद सही रूप में लग जाता है।

भारत व्यास

इस संस्थान की कार्यविधि से मैं बड़ा प्रभावित हुआ। कितना सुन्दर हो कि ऐसे ही संस्थान हमारे क्षेत्र के प्रत्येक नगर में स्थापित हों।

चूरू के जो व्यक्ति यहाँ पधारें इस संस्था को अवश्य देखें।

गंगाप्रसाद बुधिया

नगर-श्री चूरू के संग्रहालय को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। थोड़े ही समय में चूरू के इतिहास और उसके मुख्य नागरिकों का बड़ा सुन्दर दिग्दर्शन होता है। आशा है यह संस्था चूरू का इतिहास लिखकर उसके अतीत पर और अधिक प्रकाश डालने में शीघ्र ही सफल होगी।

रामगोपाल सरीन
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
२६-१०-६७

नगर-श्री चूरू संग्रहालय नैं देख आणंद तो हुयो ही पण साथै गौरव ई थोड़ो कोनी हुयो। वठा री सामग्री नैं देख जूना राजस्थान री घणीं-घणीं वातां नवी होय आँखियाँ आगै आयगी, तवारीख रा त्याग, बळ अर आंजस सूं भरियोड़ा चितराम एक नवी उमंग दी। उण तवारीख माथै शोध करणो, आज रा जुग में, आज री नवी पीढ़ी में एक नवी जाल भरणो है। म्हनै उम्मेद ई नीं पूरो भरोसो है, वीरां री भोम ईं चूरू रा सिरदार इण संग्रहालय नैं मस्यो पूरो करण नैं आपरी ताकत लगासी।

रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

राजपूताना-मध्यभारत सभा नागपुर के स्वीकृत प्रस्ताव; कुं० चाँदकरण शारदा।
कटिंग्स ऑव वर्नाक्यूलर एण्ड इंगलिश न्यूजपेपर्स, १९२१-३०; सुराना पुस्तकालय चूरू।
इकोनॉमिक्स ऑव दि डेजर्ट (चूरू जिला) टाइप्ड प्रति; श्री देवीसिंह यादव,
बीकानेर राजपत्र, सर्वहितकारिणी सभा व अन्य संस्थाओं का रेकार्ड, विभिन्न-पत्र-पत्रिकाएँ,
स्वामी गोपालदास जी सम्बन्धी अनेक पत्र व अन्य सामग्री तथा अन्य फुटकर सामग्री जो विभिन्न संस्थाओं और सज्जनों द्वारा सधन्यवाद प्राप्त हुई।
देशी राज्य शासन, श्री भगवानदास केला।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर से प्राप्त सहायक सामग्री—

File No. B4|1914; Huzur Department Sarva Hit-Karni Sabha Churu.

File No. 33 of 1924.

File No. 25 of 1925; H.H. Personal cuttings.

File No. 131 of 1932; Seditious case against certain persons in Bikaner State, Press cuttings relating to—

File No. 62 of 1933. Vernacular cuttings, July-December.

File No. 34 of 1933.

File No. 145 of 1933.

File No. 7 of 1934; Judgement in the Bikaner Conspiracy Case, Vernacular cuttings relating to.

File No. 105 of 1934.

File No. 15 of 1934.

File No. 12 of 1935; Cuttings relating to Swami Gopal Das.

नगर-श्री चूरू

द्वारा

जन्म भूमि चूरू की गौरव-गाथा शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है। यह गाथा इस क्षेत्र के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक और साँस्कृतिक गतिविधियों का इतिहास होगा, जो प्राचीन सिक्कों, शिलालेखों, ताम्रपत्रों, रुक्कों, पट्टों, परवानों, ख्यातों व इतिहास-ग्रंथों आदि के पुष्ट प्रमाणों पर आधारित होगा।

चूरू जिले से सम्बन्धित जो भी ऐतिहासिक सामग्री या जानकारी आपके पास हो वह कृपया नगर-श्री को भिजवा कर इस गौरव-गाथा को सुन्दरतम बनाने में भागीदार बनें।

भारत के गण्यमान्य इतिहासज्ञ

डॉ० रघुवीर सिंह एम० ए०, डी० लिट्०

की

—सम्मति—

यह विशेष हर्ष और प्रसन्नता का विषय है कि नगर-श्री, चूरू, चूरू जिले का एक बृहत इतिहास तैयार करवा रही है, जिसमें उस क्षेत्र की राज-नैतिक, सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक गति-विधियों आदि का विस्तृत विवरण क्रमबद्ध इतिहास के रूप में प्रस्तुत किया जावेगा।

इस इतिहास के प्रथम खण्ड का बहुत कुछ अंश देखा। उसे तैयार करने में यथासाध्य सारी प्रकाशित तथा ज्ञात आधार-सामग्री का उप-योग किया गया है। यही नहीं विगत इतिहास की अधिकाधिक प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से इस क्षेत्र के प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों, पुराने खण्डहरों, पत्थरों तथा मिट्टी के टीलों और यत्र-तत्र प्राप्य शिला-लेखों की देख-भाल कर उपयोगी आधार सामग्री को एकत्र किया गया है और तत्संबंधी और भी खोज और प्रयत्न चल रहे हैं। पुराने कागज-पत्रों, बहियों-पोथियों, ख्यातों-वार्ताओं आदि विभिन्न प्रकार की आधार-सामग्री को भी देखा जा रहा है। अब तक प्राप्य जानकारी को यों सुव्यव-स्थित क्रमानुक्रम से प्रस्तुत कर भावी संशोधकों का महत्त्वपूर्ण मार्ग निर्दे-शन किया है। यही नहीं इस क्षेत्र के भावी योजनाबद्ध विकास का कार्य-क्रम बनाने में भी यह ग्रंथ उपयोगी होगा।

इस प्रकार इस इतिहास ग्रंथ को तैयार करवा कर नगर-श्री चूरू ने अन्य क्षेत्रों के लिये अनुकरणीय आदर्श और ध्येय प्रस्तुत किया है। मैं यही चाहूँगा कि इस ग्रंथ को शीघ्रातिशीघ्र पूरा तैयार करवा कर इसे सुन्दर रूप-सज्जा और छपाई-सफाई के साथ प्रकाशित करवा दिया जावे।

रघुवीर सिंह

नवम्बर २७, '६८

अपनी आजादी के निमित्त किये गये शानदार संघर्षों के गौरवशाली अध्याय आप जन्मभूमि चूरू की गौरव गाथा में पढ़ेंगे--

ठा० स्योजीसिंह

युद्ध में लोहा और सीसा समाप्त हो जाने पर अपनी आजादी की रक्षा के लिए चाँदी के गोले चलाकर इतिहास में बेजोड़ मिसाल कायम करने वाले चूरू ठा० स्योजीसिंह ।

आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व चूरू राजस्थान का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था। कर्नल जेम्स टॉड ने भी इस बात को मुक्तकंठ से स्वीकार किया है।

उस जमाने में जब आधुनिक व्यापार-शैली का विकास नहीं हुआ था तब चूरू के सेठों ने बीमा व्यवसाय का प्रारंभ कर के व्यापार को एक नई दिशा दी थी। यहाँ के कुशल उद्योगपतियों की कोठियाँ देश के विभिन्न व्यापारिक केन्द्रों में चलती थीं। चूरू के सुप्रसिद्ध सेठ मिर्जामल जी पोद्दार महाराजा रणजीतसिंह जी के बैंकर थे और उनके दरबार में मिर्जामल जी को पूर्ण सम्मान प्राप्त था। इसी प्रकार चूरू के ही सेठ रायबहादुर भगवानदास जी बागला ने मारवाड़ियों में प्रथम करोड़पति होने का गौरव प्राप्त किया था।

चूरू के औद्योगिक विकास की गौरवशाली गाथा आपको चूरू के इतिहास

पर मसूरी-चम्बा मोटर मार्ग पर स्थित है। यह क्षेत्र बांज, बुराँस देवदार के सघन वृक्षों से आच्छादित है। यहाँ से एक ओर जहाँ हिमाल की पर्वत श्रृंखलाओं का बहुत ही आकर्षक दृश्य दिखाई देता है वहीं दूसर तरफ दून घाटी का दृश्य भी बड़ा मन मोहक लगता है। यहाँ का शान्त वातावरण क्लान्त मन के लिए निश्चित रूप से औषधि का कार्य करता है फिल्म जगत के विख्यात कलाकार निर्माता निर्देशक राज कपूर को यह स्थान अतिप्रिय है। उन्होंने यहाँ कुछ फिल्मों की शूटिंग भी की है। यहाँ आवास के लिए २० शय्याओं का आवास गृह है जिसमें रात्रि निवास व भोजन की उचित व्यवस्था है। गढ़वाल मंडल विकास निगम द्वारा धनोल्टी व सुरकंडा के लिए संचालित भ्रमणों का भी आयोजन किया जाता है।

सुरकंडा

धनोल्टी से ८ किलो मीटर आगे मसूरी-चम्बा मार्ग पर कद्दूखाल तक मोटरीय यातायात की सुविधा है। कद्दूखाल से २ कि० मी० की चढ़ाई चढ़कर सुरकंडा पहुँचा जाता है। चढ़ाई थकाने वाली है किन्तु चारों ओर का नजारा मनमोहक है। सुरकंडा में भगवती सुरेश्वरी का मन्दिर है। मन्दिर दस हजार फीट की ऊँचाई पर है। इस स्थान की मान्यता सिद्ध पीठ के रूप में है। पहले यहाँ बलि देने की प्रथा थी किन्तु अब वह बन्द हो गई। स्थानीय व्यक्तियों के अतिरिक्त दूर मैदानी क्षेत्रों के दर्शनार्थी भी यहाँ पूजा-अर्चना हेतु आते हैं। गंगा दशहरे को यहाँ पर भारी मेला लगता है।

यहाँ का प्राकृतिक वैभव वर्णनातीत है। दस हजार फीट ऊँचे इस रमणीक शिखर पर पहुँचते ही पर्यटक प्रकृति के नयनाभिराम दृश्यों को देखकर आत्म विस्मृत हो जाते हैं। उत्तर की ओर से पर्वतराज हिमालय के हिमराजित श्रृंग मानो आलिंगन करने को आतुर हों। शिखर की

वानस्पतिक हरियाली देखकर आँखें उसका सौन्दर्यपान करते नहीं अघातीं। प्रकृति प्रेमियों का शिखर से लौटने का मन ही नहीं करता।

नागटिब्बा

मसूरी से नाग टिब्बा ५५ किलो मीटर दूर टिहरी जनपद के जौनपुर विकास खंड में दस हजार फीट की ऊँचाई पर है। यहाँ पर नाग देवता का मन्दिर है। यहाँ तक पहुंचने के लिए मसूरी से थत्यूड़ तक (३४ कि० मी०) बस यातायात उपलब्ध है। यहाँ से ७ कि० मी० पर देवलसारी है। जहाँ वन विभाग का विश्राम भवन आवास के लिए उपलब्ध है। देवलसारी से नागटिब्बा १४ कि० मी० है। देवलसारी में आवास की कोई सुविधा नहीं है। पर्यटक या तो टेन्ट में रहते हैं या लौटकर देवलसारी आते हैं। नागटिब्बा से हिमालय एवं आसपास के चित्ताकर्षक दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं।

जनपद देहरादून

सहस्त्रधारा

देहरादून से सहस्त्रधारा १४ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ तक जाने के लिए बस की सुविधा है। निजी वाहन से भी यहाँ जाया जा सकता है। यह प्राकृतिक सौन्दर्य एवं गन्धक युक्त पानी के झरने के लिए विख्यात है। बताया जाता है कि इस पानी के स्नान से चर्म रोग दूर होते हैं। पर्यटकों के आवास के लिए यहाँ पर पर्यटक विश्राम गृह तथा सा० नि० वि० का निरीक्षण भवन है।

टपकेश्वर महादेव

शहर से ५ किलो मीटर की दूरी पर यह प्रसिद्ध शिवालय है। नगर बस सेवा यहाँ तक जाने के लिए हर समय उपलब्ध रहती है। यहाँ की विशेषता प्राकृतिक शिवलिंग और चट्टान के छेद से शिवलिंग के ऊपर टपकता जल है। शिवरात्रि को यहाँ भारी मेला लगता है।

लिए नगर बसों की सुविधा उपलब्ध है। निजी वाहनों के द्वारा भी जा सकते हैं। यह एक गुम्बदनुमा घाटी है जो दोनों ओर से कठोर चट्टानों से घिरी है। चट्टानों पर अनेक छोटे-छोटे छेद हैं। इस घाटी में दोपहर में भी धूप के दर्शन नहीं होते। घाटी में अत्यन्त ठण्डा पानी बहता है। पिकनिक के लिए यह स्थान बहुत आनन्ददायक है।

लक्ष्मणसिद्ध

देहरादून से १२ किलोमीटर की दूरी पर देहरादून-ऋषिकेश मार्ग पर लक्ष्मणसिद्ध का मन्दिर है। कहते हैं इस स्थान पर लक्ष्मणसिद्ध नाम के एक सन्त पुरुष ने तपस्या कर सिद्धि पाई थी। आमतौर पर लोग रविवार के दिन इस सिद्ध पीठ पर श्रद्धा सुमन अर्पण करने जाते हैं। सभी प्रका के वाहन मन्दिर तक जा सकते हैं।

तपोवन

देहरादून-रायपुर रोड़ पर नगर से ६ किलोमीटर की दूरी पर य साधना स्थली है। यहाँ तक जाने के लिए ४ किलोमीटर तक वाहन क सुविधा है तथा २ किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। स्थान अत्यन्त रमणीय है। तप्त कुण्ड एवं खंडित किले के भग्नावशेष दर्शनीय हैं।

डाक पत्थर

देहरादून-चकरौता मार्ग पर देहरादून से ४५ किलोमीटर की दूरी पर यमुना जल विद्युत परियोजना का मुख्य स्थल है। यमुना नदी पर बाँध के दृश्य के कारण अत्यन्त रमणीक एवं लोकप्रिय है। सुन्दर हरित घास का मैदान व उद्यान दर्शनीय है। यहाँ तक पहुँचने के लिए देहरादून से नियमित बस सेवायें उपलब्ध हैं।

वन अनुसंधान शाला

देश का यह प्रसिद्ध संस्थान नगर से ५ किलोमीटर दूर देहरादून-चकरौता मार्ग पर घने वृक्षों के बीच में स्थित है। इस संस्थान में वन सम्बन्धी अनुसधान कार्य होता है। भवन देखने योग्य है। वन में पैदा होने वाली अनेक वस्तुओं का प्रदर्शनालय, पुष्प वाटिका, कागज मिल, वनस्पति उद्यान व हिरन वाटिका दर्शनीय हैं।

कालसी

यह ऐतिहासिक स्थल देहरादून से ५० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सम्राट अशोक का पाली भाषा में लिखा-शिला लेख कालसी का मुख्य आकर्षण है जो पुरातत्त्व विभाग के संरक्षण में है।

चकरौता

देहरादून से ९२ किलो मीटर की दूरी पर बसा चकरौता अपनी नैसर्गिक छटा के लिए प्रसिद्ध है। बांज, बुराँस तथा अन्य उच्च स्तरीय पादपों से घिरा यह पर्वतीय पर्यटक स्थल समुद्र की सतह से २१३५ किलो मीटर की ऊँचाई पर स्थित हैं। चकरौता की स्थापना का श्रेय भी अंग्रेजों को जाता है। कर्नल ह्यूम ने ब्रिटिश सैनिकों के लिए सन् १८६६ ई० में इसे बसाया था। स्वास्थ्य वर्धक स्थान होने के साथ-साथ चकरौता सैलानियों का स्वर्ग है। हिमालय का मनोरम दृश्य तथा चारों ओर का प्राकृतिक सौन्दर्य यहाँ दर्शकों का मन मोह लेता है। चकरौता के निकट ही अन्य दर्शनीय स्थलों में देवबन व टाइगर फाल प्रसिद्ध हैं। चकरौता में आवास आदि की सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

लाखामण्डल

लाखा मण्डल जाने के लिए दो मार्ग हैं। एक देहरादून से कालसी होकर और दूसरा मसूरी से यमुना पुल होकर। मसूरी से लाखा मण्डल की दूरी ७५ किलो मीटर है। मसूरी से कुवा (७१ कि० मी०) तक मोटर मार्ग की सुविधा है। कुवा से ट्राली द्वारा यमुना नदी को पार करना पड़ता है। पुल पार कर कुछ चढ़ाई चढ़कर लगभग ११०० मीटर की ऊँचाई पर ऐतिहासिक लाखा मंडल है।

कथा है कि यहीं पर कोरवों ने पाण्डवों को जलाने के लिए लाक्षागृह का निर्माण किया था। लाक्षागृह गाँव से उत्तर की ओर कुछ दूरी पर है। कहते है यहां से एक सुरंग कहीं निकली है जिसके रास्ते पांडव बच निकले थे।

लाखा मंडल का मुख्य आकर्षण यहाँ के कलात्मक मन्दिर और अनेक मूर्तियां है। यहां शिव, विष्णु, परशुराम और पांचों पाण्डवों के मन्दिर

हैं। मूर्तियों का यहाँ संग्रहालय है। ये मन्दिर और मूर्तियाँ पुरातात्त्विक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। ये मूर्तियाँ ८ वीं से १६वीं सदी तक की बताई जाती हैं। लाखा मण्डल में जो पुरावशेष उपलब्ध हैं उनसे पता चलता है कि यह स्थान प्राचीन काल में कला और संस्कृति का केन्द्र रहा होगा। यहाँ एक विशाल शिवलिंग मिला है जिसके आकार को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जिस मन्दिर में यह स्थापित रहा होगा वह बड़ा विशाल रहा होगा।

जनपद उत्तरकाशी

हरकीदून

उत्तरकाशी जिले में ३५६६ मीटर की ऊँचाई पर स्थित हरकीदून प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य का खजाना है। घाटी में प्रवेश करते ही प्रकृति के नयनाभिराम दृश्य मोह लेते हैं। देवदारू के सघन वन, पक्षियों की चहचाहट और मृग शावकों की उछल-कूद तन को गुदगुदा देते हैं। प्रकृति प्रेमियों का यह स्वर्ग है।

हरकीदून पथारोहियों के लिए अत्यन्त रोमांचकारी पर्यटक स्थल है। यहाँ तक पहुँचने के लिए देहरादून अथवा मसूरी से पर्यटक नौगाँव पहुँचते हैं। नौगाँव से पुरोला—जरमोला—मोरी होते हुए नैटवाड़ तक मोटर मार्ग की सुविधा है। नैटवाड़ से लगभग ४५ किलो मीटर पैदल यात्रा है जो कि अत्यन्त आनन्ददायक है। नैटवाड़ से तालुका और ओसला होते हुए हरकीदून की यात्रा अब काफी सरल हो गई है। हरकीदून की घाटी पंचगाई और फतेह पर्वत के पाद प्रदेश में स्थिर है। टौंस नदी इसे हिमालय प्रदेश से अलग करती है। नैटवाड़ में रुपिन व सुपिन नदियों का संगम है। जहाँ से टौंस नदी का जन्म होता है।

हरकीदून जाने के लिए सबसे अच्छा मौसम अगस्त-सितम्बर माना जाता है जबकि इस घाटी में भाँति-भाँति के फूल खिले रहते हैं और स्वर्गीय आनन्द की अनुभूति होती है। इस घाटी को यदि "ईश्वर की घाटी" कहें तो अत्युक्ति न होगी।

डोडीताल

देवदार, बांज, बुरांस व चीड़ के सघन बन के मध्य प्रकृति की गोद में बसा डोडीताल उत्तरकाशी से ३२ किलो मीटर की दूरी पर है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई ३०२४ मीटर है। उत्तरकाशी से ४ किलो मीटर गंगोरी तक मोटर मार्ग का सफर है। गंगोरी से ७ कि० मी० कल्याणी तक जीप द्वारा मार्ग तय किया जा सकता है। इसके बाद अगोडा होकर २१ कि० मी० पैदल चलकर डोडीताल पहुँचते हैं। स्वच्छ जल वाला प्रकृति की गोद में बसा ट्राउट मछलियों से युक्त डोडीताल प्रकृति प्रेमियों को हर मौसम में आकर्षित करता है।

नचिकेता ताल

यह ताल जनपद उत्तरकाशी की पट्टी धनारी के पंचाणगाँव व फोल्ड गाँव के मध्य स्थित है। ताल हमेशा जल पूरित रहता है। उत्तरकाशी से लम्वगाँव जाने वाली सड़क पर चौरंगी खाल तक वस का सफर है। चौरंगीखाल से पैदल चलना पड़ता है। ताल बाँज बुरांस के सघन वृक्षों के मध्य है। स्थान चित्ताकर्षक है।

हर्सिल

उत्तरकाशी-गंगोत्तरी मार्ग पर उत्तरकाशी से ७६ कि० मी० की दूरी पर हर्सिल एक अत्यन्त रमणीक स्थान है। समुद्रतल से इसकी ऊँचाई २५६१ मीटर है। हर्सिल सेव के बगीचों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। जल-वायु स्वास्थ्य वर्धक है।

जनपद टेहरी

अब बलि प्रथा १६७० से बन्द हो गई है । मन्दिर का जीर्णोद्धार भी करा दिया गया है । चैत्र एवं आश्विन के नवरात्र में यहाँ भारी मेला लगता है ।

धार्मिक भावना वाले यात्रियों के अलावा यहाँ सैलानियों के लिए भी अच्छा पर्यटक स्थल है । २७५६ मीटर ऊँचे इस स्थान से हिमालय की पूरी शृंखला दिखाई देती है ।

पर्यटकों के लिए गढ़वाल मण्डल विकास निगम ने यहाँ नैखरी में एक २० शय्याओं वाला आवास गृह बना दिया है । जो बहुत ही रमणीक स्थान पर बना है । नैखरी में एक कृत्रिम सरोवर भी है । चन्द्रवदनी जाने के लिए श्रीनगर-टिहरी मार्ग के कांडीखाल नामक स्थान से भी एक पैदल मार्ग (८ कि० मी०) जाता है । इसी प्रकार एक मार्ग टिहरी-अंजनीसैण होकर भी है ।

श्री भुवनेश्वरी महिला आश्रम

देव प्रयाग-टिहरी मोटर मार्ग पर देव प्रयाग से ३२ कि० मी० की दूरी पर यह आश्रम स्थित है । स्वामी मन्मथन नामक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता ने सन् १६७७ में इस आश्रम की स्थापना की है । आरम्भ में यह आश्रम निराश्रित महिलाओं की सेवा के लिए बनाया गया था किन्तु अब यह उत्तराखण्ड में महिला जागरण, श्वेत क्रान्ति, हरित क्रान्ति, वैकल्पिक ऊर्जा, शिक्षा, पर्यावरण तथा सामाजिक चेतना का प्रमुख केन्द्र बन गया है । इसके कलात्मक भवन फलोद्यान एवं पुष्प वाटिका देखने लायक हैं ।

कूजापुरी

ऋषिकेश-टिहरी मार्ग पर नरेन्द्र नगर से मोटर मार्ग द्वारा ६ किलो मी० की दूरी पर कूजापुरी है । यहाँ पर भगवती दुर्गा का मन्दिर है । समुद्र की सतह से यह स्थान १६४५ मी० ऊँचा है । चारों ओर का दृश्य अत्यन्त मोहक है । हिमालय[1] की बर्फीली चोटियाँ यहाँ से स्पष्ट दिखाई देती हैं । ऋषिकेश, हरिद्वार व देहरादून का दृश्य भी यहाँ से बड़ा आकर्षक लगता है ।

देवप्रयाग से एक मोटर मार्ग भागीरथी के किनारे-किनारे जाजल घाटी में ऋषिकेश-टिहरी मार्ग से मिलता है। इसी मार्ग पर छ हजार फीट की ऊँचाई पर गजा एक सुन्दर पर्यटक स्थल है। यहाँ बांज, बुरांस व चीड़ के सघन वन हैं। गजा जाने के लिए चम्बा से भी एक मार्ग जाता है। इसी मार्ग पर पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय का प्रसिद्ध रानीचौरी परिसर है। बादशाही थौल इस मार्ग पर एक दर्शनीय स्थल है।

पँवालीकांठा

समुद्र की सतह से ३९६३ मीटर की ऊँचाई पर पुराने गंगोत्री-त्रियुगी नारायण मार्ग पर स्थित है। अब पँवाली कांठा जाने के लिए टिहरी से घनसाली होते हुए घुत्तु तक एक मोटर मार्ग गया है। घुत्तु से पँवाली तक १५ किलो मी० का पैदल सफर है। एक दूसरा पैदल मार्ग चिरविटिया से भी पँवाली कांठा गया है। सैलानियों को वास्तव में यही मार्ग अपनाना चाहिए। इस मार्ग पर रास्ते के दृश्य अत्यन्त मोहक हैं। बांज बुरांस व देवदार के सघन वनों के अतिरिक्त सुन्दर बुग्याल (हरी घास के मैदान) यहाँ देखने को मिलते हैं।

पँवाली का प्राकृतिक वैभव देखते ही बनता है। जड़ी बूटियों का यहाँ विशाल भण्डार है। रंग-बिरंगे फूलों का यहाँ कुदरती बगीचा है। पर्यटकों को यहाँ अगस्त-सितम्बर में जाना चाहिए। रात्रि निवास के लिए यहाँ काली कमली की धर्मशाला है। पर्यटकों को खाद्य सामग्री अपने साथ ले जानी चाहिए, यहाँ कोई दुकान नहीं है। ग्रीष्म और बरसात में यहाँ गूजर रहते हैं। उनसे दूध पर्याप्त मात्रा में मिल सकता है।

चिरविटिया

टिहरी-तिलवाड़ी मोटर मार्ग पर तिलवाड़ा से ३२ किलो मीटर की दूरी पर बांज, बुरांस के सघन वन के मध्य यह रमणीक स्थान है। चारों ओर का दृश्य सुभावना है। निकट ही राजकीय सेब का बगीचा व आलू फार्म है। यहाँ से एक पैदल मार्ग राजखूंगा पर्वत तथा दूसरा पँवालीकांठा को गया है। यहाँ चाय एवं खाने के लिए अच्छे होटल हैं।

खतलिंग ग्लेशियर

पर्यटकों के स्वर्ग खतलिंग ग्लेशियर की ऊँचाई समुद्र की सतह से ३७१७ मीटर है। खतलिंग पथारोहण अत्यन्त रोमांचकारी है। टिहरी से घुत्तु तक ६० किलो मीटर मोटरमार्ग की सुविधा है। घुत्तु से पूरी यात्रा पैदल की है। घुत्तु से रीह, गंगी, कल्याणी, भेलबागी होकर ४५ किलो मीटर का पैदल सफर तय कर खतलिंग पहुँचते हैं। यही भिलंगना नदी का उद्गम स्थल है, खतलिंग पहुँचकर दर्शक चारों ओर के नजारों को देखकर आत्मविभोर हो जाते हैं। देवप्रयाग क्षेत्र के भूतपूर्व विधायक पं० इन्द्रमणि बडोनी ने आठवें दशक में खतलिंग तक पर्यटकों की टोलियाँ ले जाने का कार्य शुरु किया है। आज खतलिंग विश्व पर्यटन के नक्शे पर आ गया है।

सहस्त्रताल

निर्मल जल वाला यह दिव्य सरोवर समुद्रतल से ४५७२ मीटर की ऊँचाई पर है। खतलिंग के रास्ते रीह से सहस्त्रताल का रास्ता कटता है, रीह से यह लगभग २१ किलो मीटर है। यहाँ छोटे-बड़े कई तालों का समूह है। यहाँ की प्राकृतिक छटा निराली है। यहाँ ब्रह्म कमल तथा अन्य कई प्रकार के पुष्प खिलते हैं। यह तीर्थ स्थान माना जाता है। माह भाद्रपद में यहाँ भेड़ों का मेला लगता है।

महासर ताल

३६७५ मी० की ऊँचाई पर यह ताल खतलिंग से ६ कि० मी० की दूरी पर है। इस ताल का पानी भी अत्यन्त निर्मल व पारदर्शी है। चहुँ ओर का दृश्य लुभावना है।

खैट पर्वत

टिहरी जनपद की धारमंडल एवं दुगमन्दार पट्टियों के मध्य ३०३० मीटर ऊँचा खैट पर्वत आछरियों (अप्सराओं) के पर्वत (डांडा) के रूप में अब तक विख्यात था किन्तु १९८३ में प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता प्रेमदत्त नौटियाल 'कामिड' के अथक प्रयास से प्रकृति की यह क्रीड़ास्थली पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है। सन् १९८४ में पर्वत के शिखर

पर दुर्गा का एक भव्य मन्दिर भी बना दिया गया है। साथ ही धर्मशाला एवं सरोवर का भी निर्माण जनता के सहयोग से हो गया है। किंवदन्ती है कि खैट पर्वत पर अप्सराएँ रहती थीं। जिन्होंने जीतू बगड्वाल नामक युवक का हरण किया था।

खैंट पर्वत से चारों ओर का दृश्य मनोमुग्धकारी है। बांज, बुरांस, राई, थुसेर के सघन वृक्षों का यहाँ साम्राज्य है। यहाँ तक पहुँचने के लिए घोंटी नामक मोटर स्टेशन से साढ़े आठ कि० मी० पैदल चलना पड़ता है। घोंटी पहुँचने के लिए श्रीनगर अथवा टेहरी से बस पकड़नी पड़ती है।

माणिकनाथ

टिहरी जनपद की पट्टी डागर एवं कोटिफैंगुल पट्टियों के मध्य २२७५ मी० की ऊँचाई पर यह रमणीक स्थान है। कथा है कि गोरखपंथी गुरु माणिक नाथ ने यहाँ तप किया था। शिखर पर एक मन्दिर है। मन्दिर से अष्ट धातु की गुरु माणिक नाथ की कीमती मूर्ति कुछ वर्ष पूर्व चोर ले गये हैं। यहां पानी का एक कुण्ड चट्टान के अन्दर है। यहाँ जाने के लिए श्रीनगर-टिहरी मार्ग के मगरौं नामक पड़ाव से रास्ता जाता है। दूसरा रास्ता पट्टी डागर के पाली गांव से जाता है। माणिक नाथ के निकट तांबे की खान बताई जाती है। स्थान बड़ा रमणीक है। हिमालय और भिलंगना घाटी का मोहक दृश्य यहाँ से दिखाई देता है।

जनपद चमोली

देवरियाताल

देवरियाताल जनपद चमोली में ऊखीमठ से ८ कि० मी० की दूरी पर है। यह दूरी पथारोहण से तय की जाती है। दूसरा रास्ता ऊखीमठ-गोपेश्वर वाले मोटर मार्ग के मस्तूरा नामक स्थान से जाता है। मस्तूरा से देवरियाताल केवल ४ कि० मी० है। २४३८ मीटर ऊँचाई पर सघन वन के मध्य स्थित देवरियाताल सैलानियों का स्वर्ग है। इस ताल की परिधि ७४४ मी० है। सामने खड़े चौखम्बा की छाया जब इस ताल में पड़ती है तो बड़ा चित्ताकर्षक दृश्य उपस्थित हो जाता है। बदरीनाथ तथा केदार के हिमधवल शृंग यहाँ से अत्यन्त लुभावने लगते हैं। एक लोक कथा के अनुसार बाणासुर की कन्या उषा अपनी सहेलियों के साथ जल क्रीड़ा के लिए इस सरोवर में जाती थी।

रूपकुण्ड

यह रहस्यमय सरोवर समुद्र की सतह से ५०२० मी० की ऊँचाई पर त्रिशूल पर्वत की गोद में स्थित है। इसके चारों ओर मानव कंकाल मिले हैं। जिसके सम्बन्ध में विभिन्न मत हैं। कोई इन्हें जनरल जोरावर सिंह की फौज के अस्थि अवशेष बताते हैं तो किन्हीं का कहना है कि यात्रियों का दल बर्फानी तूफान में दब गया था। बहरहाल रूप कुण्ड अभी रहस्य के घेरे में है। यहाँ तक पहुँचने के लिए कर्णप्रयाग से थराली-देवाल होते हुए मंदोली तक मोटर मार्ग की सुविधा है। इससे आगे बाण गाँव होते हुए ६१ कि० मी० पैदल चलकर रूप कुण्ड पहुँचा जाता है। रूपकुण्ड हर मौसम में चारों ओर बर्फ से ढका रहता है। बंगाली पर्यटक यहां काफी मात्रा में जाते हैं। रूपकुण्ड के लिए अल्मोड़ा से ग्वालदम होकर भी मार्ग गया है।

बेदनी बुग्याल

प्रकृति का यह सौन्दर्यस्थल रूपकुण्ड के रास्ते पर बाण गाँव से १५ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ शान्ति और नीरवता का साम्राज्य

है। मीलों तक मखमली घास और रंग-बिरंगे पुष्प खिले रहते हैं। कहते हैं कि वेदों की रचना यहीं हुई थी। इसके मध्य में वैदनी कुण्ड व मन्दिर है जिसमें प्राचीन मूर्तियाँ देखने योग्य हैं।

औली बुग्याल

जोशीमठ से १३ कि० मी० की दूरी पर यह अलौकिक स्थल है। ाधुतट से २७६० मी० ऊँचा औली बुग्याल प्रकृति प्रेमियों का स्वर्ग है। ाव जोशीमठ से औली तक जाने के लिए रज्जु मार्ग का निर्माण हो रहा ।। साथ ही शीतकालीन खेल स्कीइंग (वर्फ पर फिसलने) की भी यहाँ यवस्था कर दी गई है। इससे औली का आकर्षण और भी बढ़ गया है।

ग्वालदम

कर्णप्रयाग-अल्मोड़ा मार्ग पर थराली से २१ किलो मीटर दूर सिंधुतट से १८२६ मीटर ऊँचा ग्वालदम चमोली और अल्मोड़ा जनपद की सीमा पर विद्यमान है। बाँज बुराँस व देवदार के वनों से घिरा बड़ा ही रमणीक स्थान है। यहाँ से हिमालय की चोटियाँ और जनपद अल्मोड़ा की घाटियां दृष्टिगोचर होती हैं। अल्मोड़ा तथा देहरादून व हरिद्वार से सीधे वस सेवा उपलब्ध है।

आदि बदरी

कर्णप्रयाग-रानीखेत मोटर मार्ग पर कर्णप्रयाग से २१ किलो मीटर की दूरी पर यह प्राचीन देवस्थल है। उत्तराखण्ड के ५ वदरियों में से एक है। यहाँ पर १६ मन्दिरों का एक समूह है। इनमें कुछ मन्दिर अत्यन्त प्राचीन हैं। इनका शिल्प भी उत्तराखण्ड के अन्य मन्दिरों से भिन्न है।

चांदपुर गढ़ी

कर्णप्रयाग-रानीखेत मार्ग पर यह प्राचीन गढ़ी कर्णप्रयाग और आदि बदरी के बीच में है। गढ़वाल कि पँवार वंशीय राजा कनकपाल की प्राचीन राजधानी के अवशेष यहाँ विद्यमान हैं। कहते हैं पंवार वंश का यह शक्तिशाली गढ़ था। महाराजा कनकपाल पंवार वंश का प्रथम शासक था।

नन्दादेवी पशुविहार

एवरेस्ट के वाद नन्दादेवी शिखर भारत का सर्वोच्च शिखर है। नन्दादेवी ने विश्व के अनेक पर्वतारोहियों का आह्वान किया है। कई दल इस चोटी पर चढ़ने में सफल भी हुए हैं। सन् १९८१ में गढ़वाल की साहसी वेटी कु० हर्षवन्ती विष्ट ने भी नन्दादेवी पर चढ़ने में सफलता पाई है।

इसी नन्दा देवी के पाद प्रदेश में सुन्दर पशुविहार है जिसमें कई प्रकार के वन्य पशु विहार करते हैं। इस पशु विहार की ऊँचाई ४५०० मी० है जबकि नन्दादेवी शिखर की ऊँचाई ७३१७ मी० है। नन्दादेवी पशुविहार के लिए पथारोही जोशीमठ से लाटा तक बस द्वारा जाते हैं। लाटा से पद यात्रा आरम्भ होती है। यहाँ से लाटाखरक-धरांसी-रामणी होते हुए नन्दादेवी पशुविहार की दूरी ५३ कि० मीटर है। मार्ग कष्ट साध्य है। साहसी पथारोही ही यहाँ जाने का साहस करते हैं। पशुविहार का नाम अब संजय गाँधी के नाम पर रखा गया।

दुगलबीटा

यह रमणीक स्थल गोपेश्वर-ऊखीमठ मार्ग पर ४१ किलो मीटर की दूरी पर सघन वन के बीच स्थित है। सा० नि० वि० का आलीशान विश्राम स्थल ब्रिटिश काल का बना हुआ है। नाना प्रकार के पुष्प और पशुपक्षी यहाँ मिलते हैं। चौखंबा का दृश्य यहाँ से देखा जा सकता है। तुंग नाथ के लिए यहीं से रास्ता जाता है। पर्यटकों का यह स्वर्ग है।

जनपद पौड़ी

कार्बेट नेशनल पार्क

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का पशु विहार कार्बेट नेशनल पार्क पौड़ी जनपद के दक्षिण पूर्व में रामगंगा के किनारे समुद्र की सतह से ४०० मी० की ऊँचाई पर अवस्थित है। इसकी स्थापना सन् १९३५ में की गई थी। प्रसिद्ध शिकारी जिम कार्बेट के नाम पर इसका यह नाम रखा गया। रामनगर से इसकी दूरी ५० कि० मी० है। कोटद्वार से भी यहाँ मार्ग गया है।

अनेक प्रकार के वन्य जन्तु यहाँ बड़ी मात्रा में हैं। यहाँ का उद्यान बहुत ही आकर्षक है। शेर, हाथी, चीते, हिरण आदि पशुओं का स्वच्छन्द विचरण यहाँ देखने लायक है। सभी आधुनिक सुविधाएँ यहाँ विद्यमान हैं। इसके निकट ही कालागढ़ बाँध देखने योग्य है।

कण्व आश्रम

कण्वाश्रम कोटद्वार से ९ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। मोटाढांग-हल्दूखाता-कलालघाटी होते हुए यहाँ पहुँचा जाता है। प्राचीनकाल में महर्षि कण्व का सुविख्यात विश्वविद्यालय यहीं था, जहाँ काफी बड़ी संख्या में छात्र विद्याध्ययन के लिए आते थे, यहीं शकुन्तला और भरत का जन्म स्थान माना जाता है। मालिनी नदी के किनारे पेड़ पौधों के झुरमुट में बसा यह स्थान अत्यन्त रमणीक है। यह तपोवन जैसा लगता है। यहाँ तक पहुँचने के लिए कोटद्वार से बसें आसानी से मिल जाती हैं। संपूर्णानंद जी के मुख्यमन्त्री काल में सम्वत् २०१२ वि० में श्री जगमोहनसिंह नेगी ने यहाँ पर एक चबूतरे का शिला न्यास किया था। आज यह स्थान पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन चुका है। बसन्त पंचमी को यहाँ भारी मेला लगता है, प्रसिद्ध पत्रकार श्री ललित प्रसाद नैथानी ने इसके विकास के लिए बहुत प्रयास किया है।

सिद्धबली

कोटद्वार से डेढ़ किलो मीटर की दूरी पर खोह नदी के किनारे सिद्धबली का प्रसिद्ध मन्दिर है। इस मन्दिर में बहुत दूर-दूर से दर्शनार्थी बड़ी संख्या में आते हैं। मन्दिर देखने योग्य है।

लैन्सडाउन

कोटद्वार से ४० कि० मी० की दूरी पर समुद्र की सतह से १७०६ मी० ऊँचे लैंसडाउन की स्थापना का श्रेय अंग्रेजों को जाता है। इसका नाम पहले कालौं डांडा था। वर्तमान नाम इसका वायसराय लार्ड लैंस डाउन के नाम पर रखा गया है। यहाँ सन् १८८७ में गढ़वाल राइफल्स की स्थापना की गई थी। तब से यह गढ़वाल राइफल्स का मुख्यालय होने के साथ-साथ प्रकृति की गोद में बसा एक सुन्दर पर्यटक स्थल भी है। बाँज

बुराँस व देवदार के सघन वनों के बीच यह नगरी सैलानियों का स्वर्ग है। यहाँ से हिमालय के नयनाभिराम दृश्य दिखाई देते हैं। कालेश्वर महादेव का मन्दिर प्रसिद्ध है, यहाँ का सैनिक स्मारक दर्शनीय है।

ज्वालपादेवी

कोटद्वार-पौड़ी मार्ग पर पश्चिमी नयार नदी के किनारे पर ज्वालपा-धाम स्थित है। पौड़ी से इसकी दूरी ३३ किलो मीटर है। यहाँ पर देवी का दर्शनीय मन्दिर है। नवरात्र में यहाँ दर्शनार्थियों की भारी भीड़ रहती है। यहाँ एक संस्कृत पाठशाला भी है। गढ़वाल मण्डल विकास निगम ने यहाँ पर एक पर्यटक आवास गृह भी बना दिया है।

पौड़ी

गढ़वाल मण्डल का मुख्यालय होने के साथ-साथ अपनी आकर्षक छटा के कारण पौड़ी आज सैलानियों का केन्द्र बन गया है। सिन्धुतट से १८१४ मीटर की ऊँचाई पर बसा पौड़ी श्रीनगर से २९ किलो मीटर की दूरी पर है।

सन् १८४० ई० में अंग्रेजों ने इसे ब्रिटिश गढ़वाल का मुख्यालय बनाया था। इससे गढ़वाल की राजधानी श्रीनगर थी। हिमालय का जो भव्य दृश्य यहाँ से दिखाई देता है वह अन्य किसी स्थान से दुर्लभ है। एकबार प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरागांधी कंडोलिया के मैदान में भाषण देते समय हिमालय का दृश्य देखकर मन्त्र मुग्ध हो गई थीं। यहाँ के देवदार बांज व बुराँस के वृक्ष पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यवर्धक है। क्यूंकालेश्वर का प्राचीन मन्दिर यहाँ देखने योग्य है। सभी आधुनिक सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध हैं।

देवलगढ़

श्रीनगर से लगभग १२ कि० मी० की दूरी पर श्रीनगर-खिर्सू मार्ग पर यह प्रसिद्ध शक्तिपीठ है, यहाँ भगवती राजराजेश्वरी का प्राचीन मन्दिर है। उनियाल जाति के ब्राह्मण इसके पुजारी हैं। यह देवी गढ़वाल

नरेशों की भी कुलदेवी है। पँवार वंश के ३७ वें राजा ने श्रीनगर से पूर्व अपनी राजधानी यहीं बसाई थी। यहाँ सत्यनाथ का मन्दिर भी दर्शनीय है। वैशाखी को देवलगढ़ में भारी मेला लगता है। भारत के महान राजनीतिज्ञ हिमालय के वरद पुत्र उ० प्र० के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा का गाँव बुधाणी इसी के निकट है।

खिर्सू

पौड़ी से १६ कि० मी० की दूरी पर खिर्सू अत्यन्त रमणीक स्थान है। बांज बुराँस के सघन जंगल के मध्य यह स्थान विकास खण्ड का मुख्यालय होने के साथ-साथ सेवों के लिए भी प्रसिद्ध है। हिमालय का दृश्य यहाँ से बड़ा चित्ताकर्षक लगता है। यह एक स्वास्थ्यवर्धक स्थान है।

बिनसर

दूधातोली पर्वत के पाद प्रदेश में पौड़ी से लगभग ६३ कि० मी की दूरी पर बिनसर स्थित है। देवदास के घने जंगल के मध्य बिनसर देवता का प्राचीन मन्दिर वस्तुकला का अनोखा नमूना है। सिन्धुतट से इसकी ऊँचाई २७५६ मी० के लगभग है।

नीलकंठ

लक्ष्मण झूला से पैदल मार्ग से आठ कि० मी० की दूरी पर १५५० मी० ऊँचाई पर नीलकंठ महादेव का विशाल मन्दिर है। यह मनोरम और स्वास्थ्यवर्धक जलवायु वाला स्थान है। साधुओं का सिद्ध स्थल भी माना जाता है। पतित पावनी गंगा का दृश्य यहाँ से बहुत ही मनोरम लगता है। अब फूलचट्टी होते हुए कुछ दूरी तक मोटर मार्ग की भी सुविधा हो गई है। धार्मिक भावना वाले यात्री यहाँ सावन भादों में जाते हैं।

बिल्वकेदार

यह स्थान श्रीनगर से ५ कि० मी० दक्षिण की ओर कीर्तिनगर के सामने है। खांडव नदी और अलकनन्दा का लुभावना संगम है। शिव का प्राचीन मन्दिर है। शिव और अर्जुन का किरातर्जुन युद्ध यहीं पर हुआ था। पैदल यात्रा के दिनों में यह यात्रियों का मुख्य पड़ाव था।

मुण्डनेश्वर

पौड़ी-कांसखेत-सतपुली मार्ग पर विकासखंड कल्जीखाल में समुद्र की सतह से १८०० मी० की ऊँचाई पर बड़ा रमणीक स्थान है। यहाँ के प्राचीन मन्दिर में प्रतिवर्ष मेला लगता है।

तड़ासर

लैंसडाउन से लगभग २१ कि० मी० दूर देवदार वृक्षों के मध्य तड़ासर महादेव का प्राचीन मन्दिर है। स्थान रमणीक है। वातावरण अत्यन्त शान्तिमय है।

मसूरी से केदारनाथ

(टिहरी, घनसाली व चिरबिटिया होकर)

स्थान	ऊँचाई (मी०)		दूरी (कि०मी)
मसूरी	१६२१		०
धनोल्टी	२२५८		२६
चम्बा	१५२४		५५
टेहरी	७७०		७६
गडोलिया	७७०		९३
घनसाली	९७६		१११
चिरबिटिया	२१३४		१४२
तिलवाड़ा	६७१		१८४
अगस्त्यमुनि	७६२		१९४
कुण्ड	९७६		२०९
गुप्तकाशी	१४७९		२१४
नारायण कोटि	१५००		२१७
फाटा	१६०१		२२८
रामपुर	१६४६		२३७
सोनप्रयाग	१८२९		२४०
गौरीकुण्ड	१९२२		२४५
रामवाड़ा	२५९१	(पैदल)	२५२
गरुड़चट्टी	३२६२	(पैदल)	२५६
श्री केदारनाथ	३५८३	(पैदल)	२५९

मसूरी से बदरीनाथ

(टिहरी, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग होकर)

स्थान	ऊँचाई (मी०)	दूरी कि०मी०)
मसूरी	१९२१	०
धनोल्टी	२२५८	२६
चम्बा	१५२४	५५
टेहरी	७७०	७६
श्रीनगर	५७९	१३६
रुद्रप्रयाग	६१०	१७०
घोलतीर	६४५	१८०
गौचर	७९०	१९०
कर्णप्रयाग	७९५	२०१
नन्दप्रयाग	९१४	२२१
चमोली	१०६९	२३१
बिरही	११००	२३९
पीपलकोटि	१३११	२४८
गरुड़ गंगा	१३७२	२५३
हेलंग	१५२४	२६५
जोशीमठ	१८९०	२७९
विष्णुप्रयाग	१३७२	२८९
पाण्डुकेश्वर	१८२९	३०३
देवदर्शनी	३१०१	३२५
श्री बदरीनाथ	३११०	३२७

नैनीताल से बदरीनाथ

(रानीखेत होकर)

स्थान	ऊँचाई (मी०)	दूरी (कि० मी०)
नैनीताल	१८२६	०
भुवाली	१८००	११
रानीखेत	१८२६	५६
द्वाराहाट	१३१३	६७
चौखुटिया	१००२	११८
पाण्डुखाल	१७५०	१३८
गैरसैण	१३१३	१५६
कर्णप्रयाग	७६५	२१२
नन्दप्रयाग	६१४	२३२
चमोली	१०६६	२४२
पीपल कोटी	१३११	२६१
जोशीमठ	१८६०	२६२
पाण्डुकेश्वर	१८२६	३१६
हनुमानचट्टी	२२८६	३२५
श्री बदरीनाथ	३११०	३४०

त से बदरीनाथ

(अलमोड़ा होकर)

स्थान	ऊँचाई (मी०)	दूरी (कि० मी०)
नैनीताल	१८२९	०
भुवाली	१८००	११
अलमोड़ा	१६४६	६५
कौसानी	१८९०	११६
बैजनाथ	११०८	१३५
ग्वालदम	१९४०	१४९
कर्णप्रयाग	७९५	२१८
नन्दप्रयाग	९१४	२४०
चमोली	१०६९	२५०
बिरही	११००	२५८
पीपलकोटी	११३१	२६७
गरुड़ गंगा	१३७२	२७२
टंगणी	१६७७	२७८
हेलंग	१५२४	२८४
जोशीमठ	१८९०	२९८
विष्णुप्रयाग	१३७२	३०८
गोविन्दघाट	१८२९	३१८
पाण्डुकेश्वर	१८२९	३२२
हनुमानचट्टी	२२८६	३३१
श्री बदरीनाथ	३११०	३४६

उत्तराखण्ड के कुछ प्रसिद्ध पर्वत शिखर

शिखर का नाम	ऊँचाई (मीटरों में)
नन्दादेवी	७८१८
कामेट	७७५८
माणा	७२७४
चौखंबा	७१४०
त्रिशूल	७१२२
दूनागिरी	७०६८
पंचचूली	६६०५
चंगबंग	६८६६
नन्दाकोट	६८६३
मृगथूनी	६८५७
गंगोत्तरी	६६७२
पंवालीधार	६६६५
शिवलिंग	६५४४
नीलकंठ	६५९७
कीर्तिस्तंभ	६४०२
बन्दरपूंछ	६३१७
नन्दाघूंटी	६३१४
स्वर्गारोहिणी	६२५४
हनुमान	६०७६

२५

कुछ प्रसिद्ध तीर्थों की नामावली

आज के युग में मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि उसे अधिक विस्तार से पढ़ने का और सभी जगह घूमने का समय नहीं है। अतः अपने देश की संस्कृति, सिद्ध क्षेत्रों, दिव्य देशों, प्रधान तीर्थों और विभिन्न धर्मों के संबंध में सारांश में कुछ जानकारी प्राप्त कर लेना उचित होगा।

(क) द्वादश ज्योतिर्लिंग

(१) सोमनाथ (२) मल्लिकार्जुन

(३) महाकालेश्वर (४) ओंकारेश्वर

(५) केदारनाथ (६) भीम शंकर

(७) विश्वनाथ (८) त्र्यम्बकेश्वर

(९) वैद्यनाथ (१०) नागेश्वर

(११) रामेश्वर (१२) घुश्मेश्वर

ये १२ ज्योतिर्लिंग भारत में विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। इनमें केदारनाथ उत्तराखण्ड (गढ़वाल) में है। इनका स्मरण करने से सात जन्मों के पाप नष्ट होते हैं, ऐसा कहा गया है। (शि० पु० ज्ञा० सं० अ० ३८)

(ख) २१ गणपति क्षेत्र

भारत में २१ प्रधान गणपति क्षेत्र बताए गए हैं। जिनके नाम नीचे दिये गये हैं।

१. मोरेश्वर	६. पाली	११. सिद्धटेक	१६. लेह्याद्रि
२. प्रयाग	७. पारिनेर	१२. राजनगांव	१७ वेरोल
३. काशी	८. गंगा मसले	१३. विजयपुर	१८. पद्मालय
४. कलम्ब	९. राक्षस भुवन	१४. कश्यपाश्रम	१९. नामल गांव
५. अदोष	१०. येऊर	१५. जलेशपुर	२०. राजूर
			२१. कुंभ कोणम

(ग) शंकराचार्य द्वारा स्थापित ४ प्रधान पीठ

(१)	ज्योतिष्पीठ	(जोशीमठ गढ़वाल में)
(२)	गोवर्धनपीठ	(जगन्नाथ पुरी में)
(३)	शारदा पीठ	(द्वारका में)
(४)	शृंगेरीपीठ	(मैसूर में)

(घ) १०८ दिव्य शिव क्षेत्र

भूमि पर स्थित १०८ दिव्य शिव क्षेत्र बताये गए हैं। जिनमें केदार, कूर्मेश्वर (गन्धमादन पर) और त्रिपुरान्तक (कूर्मांचल में) उत्तराखण्ड में हैं। —(ललितागम, ज्ञानपाद, शिवलिंग, प्रादुर्भाव पटल)

(ङ) १०८ दिव्य देश

आलवार सन्तों की दिव्य सूक्तियों के अनुशीलन करने पर १०८ दिव्य देशों की चर्चा मिलती है। (दिव्य देश वह होता है जो प्राकृत न होकर दिव्य-चिन्मय हो)

इनमें देव प्रयाग, तिरुप्पिरिदि (जोशीमठ) और बदरिकाश्रम गढ़वाल में हैं। [स्वामी राघवाचार्य जी—तीर्थांक (कल्याण)]

(च) १०८ दिव्य शक्ति स्थान

पुराणों के अनुसार भगवती दुर्गा के १०८ दिव्य शक्ति स्थान बताये गये हैं। भगवती दुर्गा इन स्थानों पर विभिन्न नामों से प्रसिद्ध है इनमें १६ स्थान उत्तराखण्ड हिमालय में हैं। जो इस प्रकार हैं—

१. कामाक्षी (गंधमादन पर्वत पर)
२. कामचारिणी (मंदराचल पर)
३. मार्गदायिनी (केदारनाथ में)
४. नन्दा (हिमालय पर्वत पर)
५. त्रिसंध्या (कुब्जाभ्रक में)
६. रतिप्रिया (गंगाद्वार में)
७. भीमा (हिमाद्रि में)
८. उर्वशी (वदरीवन में)
९. मन्मथा (हेमकूट पर्वत पर)
१०. निधि (कुबेर गृह—अलकापुरी में)
११. शिवकारिणी (अच्छोद सरोवर)
१२. कुमुदा (मानसरोवर में)
१३. कुमारी (मायापुरी में)
१४. काला (चन्द्रभागा तट पर)
१५. मंगला (गंगा तट पर)
१६. मृगावती (यमुनातट पर)

(देवी भागवत ७।३।५५-८४; मत्स्य पुराण १३।२६-५६)

मोक्षदायिनी सप्त पुरियां

काशी काञ्ची च मायाख्या त्वयोध्या द्वारवत्यपि।
मथुरावन्तिका चैताः सप्तपुर्योऽत्र मोक्षदाः॥

काशी, कांचीपुरम, मायापुरी, (हरिद्वार) अयोध्या, द्वारावती, मथुरा और अवन्ती (उज्जैन) ये सात मोक्ष देने वाली पुरियां कही गई हैं।

चार धाम

भारत के चारों कोनों (चारों दिशाओं) में चार धाम प्रसिद्ध हैं।

१. श्री बदरीनाथ—यह धाम उत्तर दिशा में हिमालय में नर-नारायण पर्वत के नीचे है।

२. श्री द्वारका—द्वारकाधाम पश्चिम में गुजरात राज्य में समुद्र के किनारे है।

३. श्री जगन्नाथपुरी—यह पूर्व दिशा में प्रसिद्ध धाम है। यह उड़ीसा राज्य में है।

४. श्री रामेश्वर—यह दक्षिण दिशा में प्रसिद्ध धाम है। यह मद्रास राज्य में सागर तट पर है।

(छ) २७४ शैव स्थल

तमिल भाषा के पेरिया पुराण के अनुसार भारतवर्ष में २७४ शैव स्थल हैं। इनमें ५ उत्तराखण्ड (हिमालय) में हैं। जो निम्न प्रकार हैं :—

(१) इन्द्रकील पर्वतम
(२) गौरी कुण्डम
(३) केदारम
(४) कैलाश पर्वत
(५) अगस्त्यम् पलिल

(ज) १०८ दिव्य विष्णु स्थान

विष्णु पुराण के अनुसार विष्णु के १०८ दिव्य स्थान हैं। जिनकी महात्माओं ने पूजा की है। इनमें—श्री रंग, श्री मुष्ण, वेंकटस्थल, हरिक्षेत्र नैमिष, तोताद्रि, पुष्कर और बदरिकाश्रम इन आठ स्थानों पर भगवान के श्री विग्रह स्वयं प्रकट हुए हैं।

(झ) ५१ शक्तिपीठ

तंत्रचूड़ामणि के अनुसार भारतवर्ष में ५१ शक्तिपीठ हैं। शक्तिपीठ वे स्थान हैं [जहाँ जहाँ भगवान शिव द्वारा मृत सती को ले जाते हुए उनके अंग गिरे थे। इन स्थलों पर एक एक शक्ति तथा एक एक भैरव प्रकट हुए।

(ञ) वल्लभाचार्य की चौरासी बैठकें

भारतवर्ष में श्री वल्लभाचार्य की चौरासी बैठकें हैं। जिनमें बदरिकाश्रम, केदारनाथ, व्यासाश्रम और व्यासगंगा उत्तराखण्ड में हैं। ये बैठकें उन स्थानों पर स्थापित की गईं जहाँ जहाँ श्री आचार्य जी ने यात्राओं में श्रीमद्भागवत का सप्ताह पारायण किया। आचार्य जी उत्तराखण्ड (गढ़वाल) में सम्वत् १५६८ में आए थे। देव प्रयाग में श्री चक्रधर जोशी के पास आचार्य जी के हस्ताक्षर वाला एक कागज है।

(ट) भारत के प्रधान बौद्ध तीर्थ

१. लुम्बिनी—बुद्ध का जन्म स्थान, यह नेपाल की तराई में है।

२. बुद्ध गया—यहाँ बुद्ध ने बोध प्राप्त किया था। गया से ७ मील दूर है।

३. सारनाथ—यहाँ से बुद्ध ने अपने धर्म का उपदेश दिया था। बनारस छावनी से ६ मील दूर है।

४. कुशीनगर—यहाँ बुद्ध का निर्वाण हुआ था। यह स्थान देवरिया सदर स्टेशन से २१ मील है।

(ठ) भारत के प्रधान दिगम्बर जैन तीर्थ

जैन सम्प्रदाय के दो प्रमुख भेद हैं—दिगम्बर और श्वेताम्बर। प्रमुख जैन धर्म के अधिकतर तीर्थों को दोनों सम्प्रदाय मानते हैं। यहाँ केवल दिगम्बर जैन तीर्थों की सूची दी जा रही है।

१. अयोध्या, २. श्रावस्ती, ३. कौशांबी, ४. वाराणसी, ५. सिंहपुर, ६. चन्द्रपुर, ७. खखुंद, ८. रत्नपुर, ९. कम्पिल, १०. हस्तिनापुर, ११. सौरीपुर १२. मथुरा, १३. अहिच्छत्र १४. सम्मेद शिखर १५. पावापुर १६. राजगृह १७. चंपापुर १८. खण्डगिरि १९. कैलाश पर्वत, २०. गिरनार २१. मांगी-तुंगी २२. गजपन्था, २३. कुंथलागिरि २४. श्रवण वेलगोला २५. मूलबिद्री, २६. कारकल २७. केशरियाजी २८. श्री महावीर जी २९. सिद्धवर कूट ३०. बड़वानी ३१. मुक्तागिरि ३२. थूवन जी ३३. देवगढ़, ३४. अहार ३५. पपौरा ३६. कुण्डलपुर ३७. नैनागिरि, ३८. दोणगिरि ३९. खजुराहो ४०. सोनागिरि।

(श्री कैलाश चन्द्र शास्त्री—कल्याण (तीर्थाङ्क)

जैन धर्म के २४ तीर्थङ्कर

१. श्री ऋषभ	१३. श्री विमल
२. श्री अजित	१४. श्री अनन्त
३. श्री संभव	१५. श्रीधर्म
४. श्री अभिनन्दन	१६. श्री शान्ति
५. श्री सुमति	१७. श्री कुन्थु
६. श्री पद्मप्रभ	१८. श्री अर
७. श्री सुपार्श्व	१९. श्री मल्लि
८. श्री चन्द्रप्रभ	२०. श्री मुनि सुव्रत
९. श्री पुष्पदन्त	२१. श्री नमि
१०. श्री शीतल	२२. श्री नेत्री
११. श्री श्रेयास	२३. श्री पार्श्व
१२. श्री वासुपूज्य	२४. श्री महावीर

भारत के १२ प्रधान देवी विग्रह

१. कामाक्षी	—	काञ्चीपुर
२. भ्रामरी	—	मलयगिरि में
३. कुमारी	—	मालावार (केरल) में
४. अम्बा	—	आनर्त (गुजरात) में
५. महालक्ष्मी	—	करवीर (कोल्हापुर) में
६. कालिका	—	मालवा (उज्जैन) में
७. ललिता	—	प्रयाग में
८. विन्ध्यवासिनी	—	विन्ध्यगिरि
९. विशालाक्षी	—	वाराणसी में
१०. मंगलावती	—	गया में
११. सुन्दरी	—	बंगाल में
१२. गुह्यकेश्वरी	—	नेपाल में

(त्रिपुरा रहस्य, माहात्म्य खं० अ० ४८/७१-७५)

संदर्भ ग्रंथ

१. उत्तराखण्ड यात्रा दर्शन— डा० शिव प्रसाद डबराल

२. उत्तराखण्ड का इतिहास— ,,

३. केदार खण्ड (गढ़वाल)— ,,

४. अलकनन्दा उपत्यका— ,,

५. उत्तराखण्ड के भौटान्तिक— ,,

६. उत्तराखण्ड के पशुचारक— ,,

७. गढ़वाल का इतिहास— पन्डित हरिकृष्ण रतूड़ी

८. नरेन्द्र हिन्दू लौ— ,,

९. तपोभूमि उत्तराखण्ड— महीधर शर्मा

१०. बदरीनाथ दर्शन— प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

११. गंगा यमुना के नैहर में— विष्णु प्रभाकर

१२. गंगोत्तरी दर्शन— डा० महावीरसिंह गलहोत

१३. उत्तराखण्ड एक सर्वेक्षण— सं० डा० गोविन्द चातक

१४. कुमायूँ का इतिहास— पं० बदरीदत्त पाण्डे

१५. ऋगवेद— सातवलेकर भाष्य

१६. अथर्व वेद— ,, ,,

१७. गढ़वाल की लोकधर्मीकला— मोहनलाल बाबुलकर

१८. हिमालय में मतमतांतर— मोहनलाल बाबुलकर

१९. हिमालय का इतिहास— डा० मदनचन्द्र भट्ट

२०. केदारखण्ड— बम्बई संस्करण

२१. हिमालय की गोद में— महावीर प्रसाद पोद्दार

२२. उत्तराखण्ड की यात्रा— सेठ गोविन्द दास
२३. महाभारत— गीताप्रेस संस्करण
२४. कुमार संभव— महाकवि कालिदास
२५. किरातार्जुनीयम— भारवि
२६. रामायण प्रदीप— मेधाकर शास्त्री
२७. मानोदय— भरत कवि
२८. हिमालय परिचय— महापंडित राहुल सांकृत्यायन
२९. श्री शंकराचार्य— बलदेव उपाध्याय
३०. पुराण साहित्य— वैभिन्न प्रकाशन
३१. कनक वंश महाकाव्य— बालकृष्ण भट्ट
३२. तीर्थाङ्क (कल्याण)— गीताप्रेस
३३. पुराणों में गंगा— दयाशंकर दुबे
३४. उत्तरापथ की एक झांकी— उमराव सिंह रावत
३५. कादम्बरी— बाण भट्ट
३६. काल आफ बदरीनाथ— गोविन्द प्रसाद नौटियाल
३७. हिमालयन डिस्ट्रिक्ट— एटकिन्सन
३८. होलि हिमालय— ओकले
३९. एक्सप्लोरेशन इन तिब्बेट— प्रणवानन्द
४०. गढ़वाल एनशियन्ट एण्ड माडर्न पातीराम
४१. कस्टमरी लॉ इन कुमायूँ— पन्नालाल
४२. वेलि आफ गॉड्स— परिपूर्णानन्द पैन्यूली
४३. श्री बदरीनाथ टेंपल ऐक्ट— राजकीय प्रकाशन

४४. गढ़वाल सेटलमेंट रिपोर्ट—

४५. ऐट द फीट आफ बदरीनाथ— एस. एल. मल्होत्रा

४६. फुट पाथ्स आफ इण्डियन हिस्ट्री— मिस्टर निवेदिता

४७. गजेटियर आफ गढ़वाल डिस्ट्रिक्ट— वाल्टन

४८. वेस्टर्न तिवेट एण्ड ब्रिटिश बोर्डर लैंड— शेरिंग

४९. वेलि आफ फ्लावर्स— स्माइथ

५०. रिपोर्ट आन द पिलग्रिम रूट— आदम्स

५१. गढ़वाल में कौन कहां— महीधर शर्मा बड़थ्वाल

५२. गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां— भक्त दर्शन

५३. उत्तराखण्ड परिचय— रमेश दत्त उनियाल

५४. देवभूमि यात्रापर्यटन पर्वतारोहण विशेषांक रामप्रसाद वहुगुणा

५५. गढ़वाली लोकमानस— डा. शिवानंद नौटियाल

५६. वसुधारा (चण्डीगढ़)— स० वलराज जोशी

५७. असंख्य भारतीयों की आस्था का केन्द्र वदरीनाथ—धर्मानन्द उनियाल—(लेख अमर उजाला में)

५८. चारों धाम यात्रा महात्म्य— विशालमणि शर्मा

५९. उत्तराखण्ड तीर्थ महात्म्य— पं. कुलानन्द शर्मा

६०. सर्वोच्च हिन्दू तीर्थ तुंगनाथ—धर्मानन्द उनियाल (लेख-तरुण हिन्दी में)

प्रेमलाल भट्ट (लेख-मासिकी)

भैरवदत्त शास्त्री

सच्चिदानन्द भारती

१८८+३२=३२०]

६४. हिमालय दर्शन— सं. वेणीशंकर शर्मा

६५. श्री बदरीनाथ महायोजना—नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग (उ० प्र०)

६६. विचित्र नाटक— गुरु गोविन्द सिंह

मूलतः पत्रकार; नाटक एवं उपन्यास को छोड़कर हिन्दी की लगभग सभी विधाओं में रचनायें प्रकाशित। पुस्तक रूप में अब तक छोटी बड़ी केवल 7 पुस्तकें छपी हैं। आठवीं पुस्तक "बदरी-केदार की ओर" आपके हाथ में। चर्चित पुस्तकें—"देश के सच्चे सपूत" (चार संस्करण) और "गढ़वाल दर्शन"। आकाशवाणी से हिन्दी तथा गढ़वाली वार्तायें एवं कवितायें प्रसारित। अनेक सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध। सम्प्रति गढ़वाल मण्डल में फ्री लांसर पत्रकार।

आगामी रचनाय :

1—उत्तराखण्ड के दर्शनीय स्थल

2—रण बाँकुरे गढ़वाली

3—विद्रोही सुमन

उत्तराखण्ड यात्रा का नक्शा